विषय-वस्तु

भाग - ए :

1.	प्रस्तावना			
2.	कार्यान्वयन के प्रति दृष्टिकोण, प्रभावी तारीख और समांतर प्रयोग			
3.	मानदंड लागू करने का दायरा			
4.	पूंजी निधि			
	4.1	सामान्य		
	4.2	टीयर 1 पूंजी के तत्व		
	4.3	टीयर II पूंजी के तत्व		
	4.4	पूंजी से कटौतियां		
5.	**ऋण जोखिम के लिए पूंजी भार**			
	5.1	सामान्य		
	5.2	देशी सम्प्रभु (सोवरेन) संबंधी दावे		
	5.3	विदेशी सम्प्रभु संबंधी दावे		
	5.4	सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं (पीएसई)संबंधी दावे		
	5.5	बहुपक्षीय विकास बैंक (एमडीबी), अंतर्राष्ट्रीय निपटान बैंक(बीआइएस) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) संबंधी दावे		
	5.6	बैंकों पर दावे		
	5.7	प्राथमिक व्यापारियों संबंधी दावे		
	5.8	कंपनियों संबंधी दावे		
	5.9	विनियामक फुटकर संविभागों में शामिल दावे		
	5.10	आवासीय संपत्ति से प्रतिभूत दावे		
	5.11	वाणिज्यिक स्थावर संपदा द्वारा प्रतिभूत दावे		
	5.12	अनर्जक परिसंपत्तियां (एनपीए)		
	5.13	विनिर्दिष्ट श्रेणियां		
	5.14	अन्य परिसंपत्तियां		
	5.15	तुलनपत्रेतर मदें		
		5.15.1	सामान्य	
		5.15.2	गैर-बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदें	
		5.15.3	बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदें	
		5.15.4	वर्तमान एक्सपोज़र पद्धति	
		5.15.5	असफल लेनदेन	
	5.16	प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र		
		5.16.1	सामान्य	
		5.16.2	पूंजीगत निधियों में से प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र की कटौती	
		5.16.3	अव्यक्त समर्थन	
		5.16.4	बाह्य रेटिंग लागू करना	
		5.16.5	जोखिम भारित प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र	
		5.16.6	तुलनपत्रेतर प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र	
		5.16.7	ऋण जोखिम कम करने के तत्व की पहचान	
		5.16.8	चलनिधि सुविधाएं	

		5.16.9	पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र	
6.	**बाह्य ऋण मूल्यांकन**			
	6.1	पात्र ऋण रेटिंग एजेंसियां		
	6.2	बाह्य रेटिंग लागू करने की व्याप्ति		
	6.3	मैपिंग प्रक्रिया		
	6.4	दीर्घावधि रेटिंग		
	6.5	अल्पावधि रेटिंग		
	6.6	मांगी न गयी रेटिंग का इस्तेमाल		
	6.7	बहुविध रेटिंग मूल्यांकनों का इस्तेमाल		
	6.8	निर्गमकर्ता/अन्य दावों पर निर्गम रेटिंग लागू होना		
7.	**ऋण जोखिम कम करना**			
	7.1	सामान्य सिद्धांत		
	7.2	कानूनी निश्चितता		
	7.3	ऋण जोखिम कम करने की तकनीकें - संपार्श्विकीकृत लेनदेन		
		7.3.2	समग्र ढांचा और न्यूनतम शर्तें	
		7.3.4	समग्र दृष्टिकोण	
		7.3.5	पात्र वित्तीय संपार्श्विक	
		7.3.6	पूंजी अपेक्षा की गणना	
		7.3.7	हेयरकट	
		7.3.8	रिपो/रिवर्स रिपो प्रकार के लेनदेनों के लिए पूंजी पर्याप्तता ढांचा	
	7.4	ऋण जोखिम कम करने की तकनीकें - तुलन पत्र के अंतर्गत तकनीकें		
	7.5	ऋण जोखिम को कम करने की तकनीकें - गारंटियां		
		7.5.4	गारंटियों के लिए परिचालन अपेक्षाएं	
		7.5.5	गारंटियों के लिए अतिरिक्त परिचालन अपेक्षाएं	
		7.5.6	पात्र गारंटीदाताओं (काउंटर-गारंटीदाता) का वर्ग	
		7.5.7	जोखिम भार	
		7.5.8	आनुपातिक कवर	
		7.5.9	मुद्रा विसंगति	
		7.5.10	सम्प्रभु गारंटियां तथा काउंटर गारंटियां	
	7.6	परिपक्वता विसंगति		
		7.6.2	परिपक्वता की परिभाषा	
		7.6.3	परिपक्वता विसंगति के लिए जोखिम भार	
	7.7	सीआरएम तकनीकों के समूह के संबंध में व्यवहार		
8.	बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भार			
	8.1	प्रस्तावना		
	8.2	बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भार का दायरा		
	8.3	ब्याज दर जोखिम के लिए पूंजी भार की माप		
	8.4	ईक्विटी जोखिम के लिए पूंजी भार की गणना		
	8.5	विदेशी मुद्रा जोखिम के लिए पूंजी भार की गणना		
	8.6	बाज़ार जोखिमों के लिए पूंजी भार का योग		
	8.7	गैर-तरल स्थितियों के लिए कार्रवाई		
9.	परिचालन जोखिम के लिए पूंजी प्रभार			

	9.1	परिचालन जोखिम की परिभाषा	
	9.2	गणन पद्धतियां	
	9.3	मूल निर्देशक दृष्टिकोण	
भाग - ख : पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया (स्तम्भ 2)			
10	पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया की भूमिका		
11	उन्नत जोखिम प्रबंध की आवश्यकता		
12	भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया (एसआरईपी) तथा बैंकों की आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया (आइसीएएपी) के लिए दिशानिर्देश		
	12.1	पृष्ठभूमि	
	12.2	भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एसआरईपी का संचालन	
	12.3	आइसीएएपी का संरचनात्मक पहलू	
	12.4	आइसीएएपी परिणामों की समीक्षा	
	12.5	आइसीएएपी प्रबंधन और निर्णय लेने की संस्कृति का अभिन्न अंग होगा	
	12.6	समानुपातिकता का सिद्धांत	
	12.7	नियमित स्वतंत्र समीक्षा और वैधीकरण	
	12.8	आइसीएएपी एक भविष्यमुखी प्रक्रिया होगी	
	12.9	आइसीएएपी एक जोखिम धारित प्रक्रिया होगी	
	12.10	आइसीएएपी के अंतर्गत दबाव परीक्षण और परिदृश्य विश्लेषण शामिल होगा	
	12.11	आइसीएएपी के लिए पूंजी मॉडलों का प्रयोग	
13	चुनिंदा परिचालनात्मक पहलू		
भाग -ग : बाज़ार अनुशासन			
14.	**बाज़ार अनुशासन के लिए दिशानिर्देश**		
	14.1	सामान्य	
	14.2	उपयुक्त प्रकटीकरण सुनिश्चित करना	
	14.3	लेखांकन प्रकटीकरण के साथ संबंध	
	14.4	प्रकटीकरणों की व्याप्ति तथा बारंबारता	
	14.5	वैधीकरण	
	14.6	महत्ता	
	14.7	स्वामित्व संबंधी (प्रोप्राइटरी) तथा गोपनीयता संबंधी सूचना	
	14.8	सामान्य प्रकटीकरण सिद्धांत	
	14.9	मानदंड लागू करने का दायरा	
	14.10	प्रकटीकरण की प्रभावी तारीख	
	14.11	पिलर III में संशोधन	
	14.12	प्रकटीकरण अपेक्षाएं	
	सारणी डीएफ -1	लागू किये जाने का दायरा	
	सारणी डीएफ -2	पूंजी ढांचा	
	सारणी डीएफ - 3	पूंजी पर्याप्तता	
	सारणी डीएफ - 4	ऋण जोखिम : सभी बैंकों के लिए सामान्य प्रकटीकरण	
	सारणी डीएफ - 5	ऋण जोखिम : मानकीकृत दृष्टिकोण के अधीन संविभागों के लिए प्रकटीकरण	

	सारणी डीएफ - 6	ऋण जोखिम कम करना : मानकीकृत दृष्टिकोणों के लिए प्रकटीकरण	
	सारणी डीएफ - 7	प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र : मानकीकृत विधि के लिए प्रकटीकरण	
	सारणी डीएफ - 8	ट्रेडिंग बही में बाज़ार जोखिम	
	सारणी डीएफ - 9	परिचालन जोखिम	
	सारणी डीएफ -10	बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम (आइआरआरबीबी)	
	अनुबंध		
अनुबंध 1		नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे के कार्यान्वयन में प्रगति की सूचना देनेवाली समांतर प्रयोग रिपोर्ट का फार्मेट	
अनुबंध 2		टीयर 1 पूंजी के रूप में शामिल किए जाने हेतु नवोन्मेषी ऋण लिखतों पर लागू शर्तें	
अनुबंध 3		बेमीयादी असंचयी अधिमान शेयरों के संबंध में लागू शर्तें	
अनुबंध 4		अपर टीयर II पूंजी के रूप में शामिल किये जाने के लिए ऋण लिखतों के संबंध में लागू शर्तें	
अनुबंध 5		उच्च्तर टीयर II पूंजी के भाग के रूप में पात्रता के लिए बेमीयादी संचयी अधिमान शेयर (पीसीपीएस)/प्रतिदेय असंचयी अधिमान शेयर (आरएनसीपीएस)/ प्रतिदेय संचयी अधिमान शेयर (आरसीपीएस) पर लागू शर्तें	
अनुबंध 6		लोअर टीयर II पूंजी के भाग के रूप में पात्रता के लिए अधीनस्थ ऋण पर लागू शर्तें	
अनुबंध 7		मानक आस्तियों के प्रतिभूतिकरण के संबंध में दिशानिर्देश से उद्धरण	
अनुबंध 8		ऋण जोखिम कम करने के संबंध में उदाहरण	
अनुबंध 9		ब्याज दर डेरिवेटिव और ऑप्शन के संबंध में बाज़ार जोखिमों के लिए पूंजी प्रभार की माप	
अनुबंध 10		स्तंभ II के अंतेर्गत बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम (आइआरआरबीबी) की माप की विधि का एक उदाहरण	
अनुबंध 11		मानकीकृत ब्याज दर आघात	
अनुबंध 12		मानकीकृत ढाँचे का एक उदाहरण	
अनुबंध 13		ब्‌ाज दर जोखिम माप की तकनीकें	
अनुबंध 14		पर्यवेक्षीय प्राधिकारियों द्वारा ब्याज दर जोखिम पर निगरानी	
अनुबंध 15		आइसीएएपी दस्तावेज की निदर्शी रूपरेखा	
अनुबंध 16		शब्दावली	
अनुबंध 17		समेकित परिपत्रों की सूची	

मास्टर परिपत्र - पूंजी पर्याप्तता और बाज़ार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश- नए पूंजी पर्याप्तता ढाँचे का कार्यान्वयन

भाग ए : न्यूनतम पूंजीगत आवश्यकताओं पर दिशानिर्देश

1. प्रस्तावना

1.1 पूंजी पर्याप्तता के संबंध में बैंकिंग पर्यवेक्षण संबंधी बासल समिति (बीसीबीएस) के ढांचे में तुलन पत्र और गैर-तुलनपत्र कारोबार में विभिन्न प्रकार की आस्तियों में ऋण जोखिम को ध्यान में रखा गया है । इस ढांचे को अपनाने के लिए तथा बैंकों के पूंजी आधार को भी सुदृढ़ करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक ने अप्रैल 1992 में यह निर्णय लिया कि भारत में पूंजी पर्याप्तता उपाय के रूप में बैंकों (विदेशी बैंकों सहित) के लिए एक जोखिम आस्ति अनुपात प्रणाली लागू की जाए । मुख्यतः उक्त प्रणाली के अंतर्गत तुलन पत्र आस्तियों, गैर-निधि आधारित मदों और अन्य गैर-तुलन पत्र एक्सपोज़र को निर्धारित जोखिम भार दिये जाते हैं तथा बैंकों को जोखिम भारित आस्तियों और अन्य एक्सपोज़र के योग के निर्धारित अनुपात के बराबर निरंतर अक्षत न्यूनतम पूंजी निधि रखनी पड़ती है । बीसीबीएस द्वारा 1996 में जारी "बाज़ार जोखिमों को शामिल करने के लिए पूंजी समझौते में संशोधन" के अनुसार बाज़ार जोखिमों के लिए पूंजी भार रखने के संबंध में रिज़र्व बैंक ने जून 2004 में दिशानिर्देश जारी किये हैं ।

1.2 बीसीबीएस ने 26 जून 2004 को "पूंजी की माप और पूंजी मानक के संबंध में अंतरर्राष्ट्रीय सहमति : एक संशोधित ढांचा" जारी किया । नवंबर 2005 में संशोधित ढांचे को अद्यतन करते हुए उसमें व्यापार गतिविधियों तथा 'दोहरे चूक' प्रभाव के ट्रीटमेंट को शामिल किया गया तथा जून 2006 में ढांचे का एक परिपूर्ण रूप जारी किया गया जिसमें पूंजी के घटकों को तथा बाज़ार जोखिम को शामिल करने हेतु पूंजी समझौते में 1996 में किये गये संशोधन को शामिल किया गया । संशोधित ढांचे में पूंजी अपेक्षा के प्रति उल्लेखनीय रूप से अधिक संवेदनशील रवैया अपनाया गया है। संशोधित ढांचे में ऋण जोखिम और परिचालन जोखिम के लिए पूंजी अपेक्षाएं निर्धारित करने के लिए कई विकल्प दिये गये हैं ताकि बैंक और पर्यवेक्षक अपने परिचालनों और वित्तीय बाजारों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त दृष्टिकोण अपना सकें ।

2. कार्यान्वयन के प्रति दृष्टिकोण, प्रभावी तारीख और समांतर प्रयोग

2.1 संशोधित ढांचे में तीन स्तंभ हैं जो एक दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं। ये तीन स्तंभ हैं : न्यूनतम पूंजी अपेक्षाएं, पूंजी पर्याप्तता की पर्यवेक्षीय समीक्षा और बाज़ार अनुशासन। ढांचे में स्तंभ 1 के अंतर्गत ऋण जोखिम के लिए पूंजी अपेक्षा की गणना के लिए तीन स्पष्ट विकल्प तथा परिचालन जोखिम के लिए पूंजी अपेक्षा की गणना के लिए तीन अन्य विकल्प दिये गये हैं। ऋण और परिचालन जोखिमों के लिए ये विकल्प अधिकाधिक जोखिम संवेदनशीलता पर आधारित हैं ताकि बैंक उस दृष्टिकोण को अपना सकें जो बैंक के परिचालनों के विकास की अवस्था के सर्वाधिक उपयुक्त हो। ऋण जोखिम के लिए पूंजी की गणना करने के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण, मूल आंतरिक रेटिंग आधारित दृष्टिकोण और उन्नत आंतरिक रेटिंग आधारित दृष्टिकोण नामक विकल्प उपलब्ध हैं। परिचालन जोखिम के लिए पूंजी की गणना के लिए उपलब्ध विकल्प हैं - मूल निर्देशक दृष्टिकोण, मानकीकृत दृष्टिकोण और उन्नत माप दृष्टिकोण।

2.2 रिज़र्व बैंक का लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ संगति और समरूपता बनाये रखना है। इसे ध्यान में रखते हुए भारत में सभी वाणिज्य बैंक (स्थानीय क्षेत्र बैंक और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) ऋण जोखिम के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण तथा परिचालन जोखिम के लिए मूल निर्देशक दृष्टिकोण अपनाएंगे। बाज़ार जोखिमों के लिए पूंजी अपेक्षा की गणना के लिए बैंक मानकीकृत कालावधि दृष्टिकोण का प्रयोग करते रहेंगे।

2.3 **प्रभावी तारीख :** भारत में परिचालन करनेवाले विदेशी बैंकों तथा भारत के बाहर परिचालनात्मक मौजूदगी वाले भारतीय बैंकों ने 31 मार्च 2008 से संशोधित ढांचे के अंतर्गत उपर्युक्त चयनित दृष्टिकोणों को अपनाया है । अन्य सभी वाणिज्य बैंक (स्थानीय क्षेत्र बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) 31 मार्च 2009 तक संशोधित ढांचे के अंतर्गत उपर्युक्त दृष्टिकोण अपना चुके हैं ।

2.4 **समांतर प्रयोग :** संशोधित ढांचे में संक्रमण को आसान बनाने के लिए तथा बैंकों को अपनी प्रणाली और रणनीति को तदनुरूप बनाने का एक मौका देने के लिए बैंकों को सूचित किया गया था कि वे संशोधित ढांचे का समांतर प्रयोग करें । बैंकों के बोर्डों को समांतर प्रयोगों के परिणामों की तिमाही आधार पर समीक्षा करनी चाहिए । समांतर प्रयोग की विशेषताएं निम्नानुसार हैं ।

i) बैंकों को पूंजी पर्याप्तता संबंधी विवेकपूर्ण दिशानिर्देशों - वर्तमान दिशानिर्देश तथा संशोधित ढांचे के दिशानिर्देश - दोनों को निरंतरता के आधार पर लागू करना चाहिए तथा दोनों दिशानिर्देशों के अंतर्गत जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) की गणना करनी चाहिए ।

ii) दोनों दिशानिर्देशों के अंतर्गत बैंक के सीआरएआर का विश्लेषण बैंक के बोर्ड के पास तिमाही अंतराल पर सूचित किया जाना चाहिए । इस प्रयोजन के लिए बैंक **अनुबंध-I** में दिया गया रिपोर्टिंग फॉर्मेट अपनाएं ।

iii) जून, सितंबर और दिसंबर को समाप्त तिमाहियों के लिए निर्धारित फार्मेट में तिमाही रिपोर्टें, बोर्ड के विधिवत् अनुमोदन के बाद प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग, केंद्रीय कार्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, विश्व व्यापार केंद्र, कफ परेड, कोलाबा, मुंबई - 400 005 को इस प्रकार भेजी जाएं, कि वे संबंधित तिमाही की समाप्ति के एक महीने के भीतर प्राप्त हो जाएं । मार्च में समाप्त तिमाही के संबंध में रिपोर्ट तिमाही की समाप्ति से दो महीने के भीतर भेजी जानी चाहिए । जिन मामलों में रिपोर्ट के बोर्ड द्वारा अनुमोदन में अधिक समय लगने की संभावना हो, वहां बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक को रिपोर्ट की अग्रिम प्रति भेज सकते हैं तथा बाद में रिपोर्ट पर बोर्ड की टिप्पणी/ प्रतिक्रिया/ मार्गदर्शन, यदि कोई हो, तो उससे अवगत करा सकते हैं ।

2.5 **संशोधित ढांचे के अंतर्गत अन्य दृष्टिकोण अपनाना:** ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×¸£¸ ¤¸¸¬¸¥¸ II □¸Â□¸½ ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ œ¸¢£ˆÅ¢¥œ¸÷¸ „››¸÷¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸¡¸½ □¸¸›¸½ ¬¸½ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸ú ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ ™®¸÷¸¸, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸Ï¤¸¿š¸ □¸Â□¸½ ˆ½Å ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ „››¸¡¸›¸ ÷¸˜¸¸ ƒ¬¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ „ž¸£÷¸ú ‚¿÷¸££¸«’ïú¡¸ œ¸Ï¨¸¼¢î¸ ˆÅ¸½ š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿

£‰¸÷¸½ íº‡ □¸º¥¸¸ƒÄ 2009 Ÿ¸½¿ ¡¸í ¨¸¸¿Ž›¸ú¡¸ ¬¸Ÿ¸□¸¸ Š¸¡¸¸ ¢ˆÅ ž¸¸£÷¸ Ÿ¸½¿ „››¸÷¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¥¸¸Š¸» ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ ¬¸Ÿ¸¡¸ ,›¸º¬¸»□¸ú ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅú □¸¸‡— ƒ¬¸¬¸½ ¤¸ÿˆÅ †µ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ,¸¾£ œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ „››¸÷¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸□¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ Ÿ¸¸Á”¥¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ (,¸ƒ‡Ÿ¸‡) ,œ¸›¸¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸¸½□¸›¸¸ ¤¸›¸¸ ¬¸ˆ½¿ÅŠ¸½ ,¸¾£ ƒ¬¸ í½÷¸º ÷¸¾¡¸¸£ú ˆÅ£ ¬¸ˆ½¿ÅŠ¸½—

2.5.1 ,œ¸½¢®¸÷¸ ,¸š¸¸£ž¸»÷¸ ,¸Âˆ Å”õ½, ‡Ÿ¸¸,ƒ‡¬¸ ,¸¾£ ˆÅ¸¾©¸¥¸ „››¸¡¸›¸ ,¸¢™ ¬¸¢í÷¸ ,¸¨¸©¡¸ˆÅ œÏ¸¾Ô¸¸½¢Š¸ˆÅú¡¸ ,¸¾£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸ ¬¸¿£□¸›¸¸ ¢›¸¢Ÿ¸Ä÷¸ ˆÅ£›¸½ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¥¸Š¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¬¸Ÿ¸ž¸¢¨¸÷¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ˆÅ¸½ š¸¡¸¸› Ÿ¸½¿ £‰¸÷¸½ íº‡ ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»»¿□¸ú Ÿ¸¸œ¸› ˆ½Å ¢¥¸‡ „››¸÷¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ ¥¸¸Š¸» ˆÅ£›¸½ í½÷¸º ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰¸÷¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ,¸º¬¸»□¸ú ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅú Š¸¡¸ú í¾ À

Ç Å. ¬¸ ¿¿ .	´¢«’ˆÅ¸½µ¸	¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×¸£¸ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ž¸½□¸½ □¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ ,¸¨¸½™›¸ ˆÅú ,¸£¿¢ž¸ˆÅ ÷¸¸£ú‰¸	ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ×¸£¸ ,›¸ºŸ¸¸½™›¸ ¢™¡¸½ □¸¸›¸½ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ ÷¸¸£ú‰¸
ˆÅ .	¤¸¸□¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ Ÿ¸Á”¥¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ (,¸ƒ‡Ÿ¸‡)	1 ,œÏ¾¥¸ 2010	31 Ÿ¸¸□¸Ä 2011
‰ ¸.	œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ Ÿ¸¸›¸ˆÅúˆ¼Å÷¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸	1 ,œÏ¾¥¸ 2010	30 ¢¬¸÷¸¿¤¸£ 2010
Š¸ .	œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ „››¸÷¸ Ÿ¸¸œ¸›¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸	1 ,œÏ¾¥¸ 2012	31 Ÿ¸¸□¸Ä 2014
‹¸.	†µ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ ª½µ¸ú ¢›¸š¸¸Äµ¸ ,¸š¸¸¢£÷¸ (,¸ƒ,¸£¤¸ú) ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ (¤¸º¢›¸¡¸¸™ú ,¸¾£ „››¸÷¸ ,¸ƒ,¸£¤¸ú)	1 ,œÏ¾¥¸ 2012	31 Ÿ¸¸□¸Ä 2014

2.5.2 ÷¸™›¸º¬¸¸£, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸»¢□¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ ¢ˆÅ ¨¸½ ¤¸¸¬¸¥¸ II ™¬¸÷¸¸¨¸½□¸ Ÿ¸½¿ œ¸¢£ˆÅ¢¥œ¸÷¸ Ÿ¸¸›¸™¿”¸½¿ ˆÅ¸½

š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸÷¸½ í°‡ „œ¸¡¸ºÄÆ÷¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ‚›¸º¬¸»□¸ú ˆ½Å ‚›¸º¬¸¸£ „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚œ¸›¸ú ÷¸¾¡¸¸£ú ˆÅ¸ ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ ‚¸ˆÅ¥¸›¸ ˆÅ£½¿ ‚¸¾£ ‚œ¸›¸½ ¤¸¸½"Ä ˆ½Å ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ ¬¸½ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¥¸½¿ ¢ˆÅ Æ¡¸¸ ¨¸½ ˆÅ¸½ƒÄ „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸›¸¸ □¸¸í÷¸½ íÿ— „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸›¸½ ˆÅ¸ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¥¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¤¸ÿˆÅ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ‚›¸º¬¸»□¸ú ˆ½Å ‚›¸º¬¸¸£ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ í½÷¸º ¡¸˜¸¸¬¸Ÿ¸¡¸ íŸ¸¬¸½ ¬¸¿œ¸ˆÄÅ ˆÅ£½¿— ¡¸¢™ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ ‚¸ˆÅ¥¸›¸ ˆÅ¸ œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸ ¡¸í ™©¸¸Ä‡ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ „œ¸¡¸ºÄÆ÷¸ ÷¸¸£ú‰¸¸½¿ ÷¸ˆÅ „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ¥¸¸Š¸» ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¸¨¸½™›¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ ›¸íì í¾ ÷¸¸½ ¤¸ÿˆÅ ‚œ¸›¸ú ÷¸¾¡¸¸£ú ˆ½Å ‚¸š¸¸£ œ¸£ ˆÅ¸½ƒÄ „œ¸¡¸ºÆ÷¸ œ¸£¨¸÷¸úÄ ÷¸¸£ú‰¸ ˆÅ¸ □¸º›¸¸¨¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾—

2.5.3 ¡¸í ›¸¸½' ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸‡ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¡¸í ¢¨¸ˆÅ¥œ¸ í¸½Š¸¸ ¢ˆÅ ¨¸½ ‚œ¸›¸½ ¢¨¸¨¸½ˆÅ ¬¸½ ‡ˆÅ ¡¸¸ ‚¢š¸ˆÅ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¬¸¿¨Š¸¸½ô ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚œ¸›¸ú ÷¸¾¡¸¸£ú ˆ½Å ‚›¸º¬¸¸£ „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸‡Â ÷¸˜¸¸ ‚›¡¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¬¸¿¨Š¸¸½ô ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸£¥¸÷¸£ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ □¸¸£ú £‰¸½¿ ‚¸¾£ ¡¸í ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ ›¸íì í¸½Š¸¸ ¢ˆÅ ¬¸ž¸ú □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¬¸¿¨Š¸¸½ô ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ íú ¬¸¸˜¸ „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸¡¸¸ □¸¸‡— ÷¸˜¸¸¢œ¸‚ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ˆÅ¸½ƒÄ ž¸ú „››¸÷¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ‚œ¸›¸¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¢›¸¨¸¸¡¸Ä ³œ¸ ¬¸½ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸ œ¸»¨¸Ä ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ œ¸Ï¸œ÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡—

3. <u>मानदंड लागू करने का दायरा</u>

संशोधित पूंजी पर्याप्तता मानदंड समान रूप से सभी वाणिज्य बैंकों (स्थानीय क्षेत्र बैंक और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) पर लागू होंगे, एकल स्तर (वैश्विक स्थिति) और समेकित स्तर - दोनों रूपों मे। समेकित बैंक की परिभाषा उन संस्थाओं के समूह के रूप में की गयी है जहां एक लाइसेन्स प्राप्त बैंक नियंत्रक संस्था है । समेकित बैंक के अंतर्गत छूट प्राप्त संस्थाओं को छोड़कर, उसके नियंत्रणाधीन समूह की सभी संस्थाएं शामिल होंगी। 25 फरवरी 2003 के परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 72/21.04.018/2001-02 द्वारा समेकित विवेकपूर्ण रिपोर्टें तैयार करने के संबंध में दिशानिर्देश दिये गये हैं। इन दिशानिर्देशों के अनुसार समेकित बैंक, समूह की ऐसी कंपनियों को छोड़ सकता है जो बीमा कारोबार में और वित्तीय सेवाओं से असंबद्ध कारोबार में लगी हों। समेकित बैंक को बैंक पर लागू न्यूनतम जोखिम भारित आस्ति के प्रति पूंजी अनुपात (सीआरएआर) निरंतरता के आधार पर रखना चाहिए।

4. <u>पूंजी निधि</u>

4.1 सामान्य

4.1.1 बैंकों से यह अपेक्षा है कि वे निरंतरता के आधार पर 9 प्रतिशत न्यूनतम जोखिम भारित आस्तियों के प्रति पूंजी अनुपात (सीआरएआर) रखेंगे। रिज़र्व बैंक प्रत्येक बैंक के संबंधित जोखिम घटकों और आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन को ध्यान में रखेगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बैंक द्वारा रखी गयी पूंजी बैंक की समग्र जोखिम प्रोफाइल के अनुरूप है। इसमें अन्य बातों के साथ-साथ बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम, चलनिधि जोखिम, संकेंद्रण जोखिम और अवशिष्ट जोखिम सहित विभिन्न जोखिमों की पहचान करने, उनका मूल्यांकन करने/माप करने, उनकी निगरानी और नियंत्रण करने के संबंध में बैंक की जोखिम प्रबंध प्रणाली की प्रभावशीलता शामिल है। तदनुसार, रिज़र्व बैंक प्रत्येक बैंक की संबंधित जोखिम प्रोफाइल और उसकी जोखिम प्रबंध प्रणालियों के आधार पर ढांचे के स्तंभ 2 के अंतर्गत न्यूनतम पूंजी अनुपात का उच्चतर स्तर निर्धारित करने पर विचार करेगा । इसके अलावा, नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे के स्तंभ 2 की अपेक्षाओं के अनुसार बैंकों से न्यूनतम अपेक्षा से कहीं अधिक उच्चतर स्तर पर परिचालन की अपेक्षा है।

4.1.2 संशोधित ढांचे के कार्यान्वयन के बाद बैंकों द्वारा रखी जानेवाली न्यूनतम पूंजी की एक विवेकपूर्ण न्यूनतम सीमा[1] होगी, जो निम्नलिखित राशियों में से उच्चतर राशि होगी -

(क) संशोधित ढांचे के अंतर्गत रखी जानेवाली अपेक्षित न्यूनतम पूंजी

(ख) ऋण और बाज़ार जोखिमों के लिए बासल I ढांचे के अनुसार रखी जानेवाली अपेक्षित न्यूनतम पूंजी का एक विनिर्दिष्ट प्रतिशत। यह विनिर्दिष्ट प्रतिशत सारणी 1 में दर्शायी गयी स्थिति के अनुसार उत्तरोत्तर घटेगा ।

सारणी 1 - विवेकपूर्ण न्यूनतम सीमा

	मार्च 2008 को समाप्त वित्तीय वर्ष*	मार्च 2009 को समाप्त वित्तीय वर्ष*	मार्च 2010 को समाप्त वित्तीय वर्ष*
विवेकपूर्ण न्यूनतम सीमा (ऋण और बाज़ार जोखिमों के लिए वर्तमान (बासल I) ढांचे के अनुसार की गयी गणना के अनुसार न्यूनतम पूंजी अपेक्षा के प्रतिशत के रूप में)	100	90	80
* 31 मार्च 2009 से संशोधित ढांचे को कार्यान्वित करनेवाले बैंकों के लिए संबद्ध अवधि मार्च 2009, 2010 और 2011 होगी ।			

बैंकों में बासल II कार्यान्वयन की गुणवत्ता ओर परिशुद्धता के आधार पर न्यूनतम पूंजी सीमा की पर्याप्तता और उसकी आवश्यकता की समीक्षा अप्रैल 2010 में की गयी और यह निर्णय लिया गया कि न्यूनतम सीमा को अगली सूचना तक जारी रखा जाए । तदनुसार भारत में कार्यरत विदेशी बैंक और भारत के बाहर परिचालन मौजूदगी वाले भारतीय बैंक उपर्युक्त 3 वर्ष की अवधि (अर्थात् 31 मार्च 2010) के बाद भी समांतर प्रयोग जारी रखेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि उनकी बासल II की न्यूनतम पूंजी अपेक्षा बासल I ढांचे के अनुसार ऋण और बाजार जोखिम के लिए गणना की गयी न्यूनतम पूंजी अपेक्षा के 80 प्रतिशत से उच्चतर बनी रहेगी [2]। अन्य सभी वाणिज्य बैंक भी उपर्युक्त पैरा 4.1.2 के अनुसार निर्धारित विवेकपूर्ण न्यूनतम सीमा का अनुपालन सुनिश्चित करते रहेंगे ।

[1] ¢¨¸¨¸½ˆÅœ¸»µ¸Ä ¬¸úŸ¸¸ □¸¸£ú £‰¸›¸½ ˆÅú ,¨¸©¡¸ˆÅ÷¸¸ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ž¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ,¸¨¸¢š¸ˆÅ ³œ¸ ¬¸½ ˆÅ£½Š¸¸—

[2] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 7 ,œÏ¾¥¸ 2010 ˆÅ¸ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸. ¬¸¿. ¤¸úœ¸ú. ¤¸ú¬¸ú.87/21.06.001/2009-10 ™½‰¸½¿—

4.1.3 बैंकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे एकल और समेकित स्तर पर कम-से-कम 6% का टीयर I सीआरएआर रखें । जो बैंक इस स्तर से कम रख रहे हैं, उन्हें यह अनुपात 31 मार्च 2010 तक अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए ।

4.1.4 बैंक को टीयर 1 सीआरएआर और कुल सीआरएआर की गणना निम्नलिखित रूप में करनी चाहिएः

पात्र टीयर I पूंजी निधि[3]

टीयर I सीआरएआर =---

ऋण जोखिम जो.भा.आ. + बाज़ार जोखिम जो.भा.आ. + परिचालनगत जोखिम जो.भा.आ

*जो. भा. आ. = जोखिम भारित आस्तियां

पात्र कुल पूंजी निधि[4]

कुल सीआरएआर =---

ऋण जोखिम जो.भा.आ. + बाज़ार जोखिम जो.भा.आ. + परिचालनगत जोखिम जो.भा.आ

4.1.5 पूंजी निधि मोटे तौर पर टीयर I और टीयर II पूंजी के रूप में वर्गीकृत की जाती है। टीयर II पूंजी के तत्वों को पैराग्राफ 4.4 में उल्लिखित कटौती/समायोजन के बाद अधिकतम टीयर I पूंजी के 100 प्रतिशत तक पूंजी निधि माना जाएगा ।

4.2 टीयर I पूंजी के तत्व

4.2.1 भारतीय बैंकों के टीयर I पूंजी में निम्नलिखित तत्व होंगे :

i) प्रदत्त इक्विटी पूंजी, सांविधिक आरक्षित निधियां और अन्य प्रकट मुक्त आरक्षित निधियां, यदि कोई हों;

ii) आस्तियों की बिक्री से उत्पन्न अधिशेष से बनी पूंजी आरक्षित निधियां;

iii) टीयर I पूंजी में शामिल होने की पात्र नवोन्मेषी निरंतर ऋण लिखतें जो **अनुबंध 2** में विनिर्दिष्ट विनियामक अपेक्षाओं का अनुपालन करती हैं;

iv) **अनुबंध-3** में निर्दिष्ट विनियामक अपेक्षाओं का अनुपालन करने वाले बेमीयादी गैर-संचयी अधिमान शेयर (पीएनसीपीएस); और

v) टीयर I पूंजी में शामिल करने के लिए समय-समय पर सामान्यतः रिज़र्व बैंक द्वारा अधिसूचित कोई अन्य प्रकार के लिखत ।

4.2.2 लेखांकन मानक 11 (संशोधित 2003) : 'विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन के प्रभाव' को लागू करने से उत्पन्न विदेशी मुद्रा रूपांतरण आरक्षित निधि पूंजी निधियों की पात्र मद नहीं होगी ।

4.2.3 भारत स्थित विदेशी बैंकों के लिए टीयर I पूंजी में निम्नलिखित तत्व शामिल होंगे -

---

3 ˆºÅ¥¸ 'ú¡¸£ 1 œ¸»¿□¸ú ¢›¸¢š¸, □¸¸½ ›¸¨¸¸½›Ÿ¸½«¸ú ¢›¸£¿÷¸£ †µ¸ ¢¥¸‰¸÷¸¸½¿ ˆÅú ¢¨¸¨¸½ˆÅœ¸»µ¸Ä ¬¸úŸ¸¸ ˆ½Å ‚š¸ú›¸ í¸½Š¸ú — ƒ¬¸Ÿ¸½¿ ¬¸½ 'ú¡¸£ 1 œ¸»¿□¸ú ¬¸½ ˆÅ'¸¾÷¸ú ˆÅ¸½ ‹¸'¸¡¸¸ □¸¸‡Š¸¸ —

4 œ¸¸°¸ 'ú¡¸£ I œ¸»¿□¸ú ¢›¸¢š¸ ,¸¾£ œ¸¸°¸ 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú ¢›¸¢š¸ ˆÅ¸ ¡¸¸½Š¸, □¸¸½ ›¸¨¸¸½›Ÿ¸½«¸ú 'ú¡¸£ I ¢¥¸‰¸÷¸¸½¿, ,œ¸£ 'ú¡¸£ 2 ¢¥¸‰¸÷¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ,š¸ú›¸¬˜¸ †µ¸ ¢¥¸‰¸÷¸¸½¿ ˆÅú ¢¨¸¨¸½ˆÅœ¸»µ¸Ä ¬¸úŸ¸¸ ˆ½Å ,š¸ú›¸ í¸½Š¸¸— ƒ¬¸Ÿ¸½¿ 'ú¡¸£ I ,¸¾£ 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú ˆÅú ˆÅ'¸¾¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‹¸'¸¡¸¸ □¸¸‡Š¸¸ —

(i) प्रधान कार्यालय से प्राप्त ब्याज मुक्त निधि, जिसे भारतीय बहियों में अलग खाते में पूंजी पर्याप्तता मानदंड की पूर्ति के विनिर्दिष्ट प्रयोजन के लिए रखा गया है ।

(ii) भारतीय बहियों में रखी गयी सांविधिक आरक्षित निधियां

(iii) भारतीय बहियों में रखा गया विप्रेषणीय अधिशेष जो जब तक बैंक भारत में कारोबार करता है, तब तक प्रत्यावर्तनीय नहीं है।

(iv) भारत में आस्तियों की बिक्री से उत्पन्न अधिशेष से बनी पूंजी आरक्षित निधि जिसे अलग खाते में रखा जाता है और जो जब तक बैंक भारत में कारोबार करता है, तब तक प्रत्यावर्तनीय नहीं है ।

(v) संपत्ति के अधिग्रहण के प्रयोजन से विदेश से प्रेषित ब्याज-मुक्त निधि, जिसे भारतीय बहियों में अलग खाते में रखा गया है ।

(vi) भारत में परिचालन करनेवाले विदेशी बैंकों द्वारा टीयर I पूंजी में शामिल करने हेतु विदेशी मुद्रा में प्रधान कार्यालय उधार, जिनमें अनुबंध 2 में विनिर्दिष्ट विनियामक अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया हो और

(vii) टीयर I में शामिल करने के लिए समय-समय पर रिज़र्व बैंक की विनिर्दिष्ट अनुमति से कोई अन्य मद

टिप्पणी :

(i) विदेशी बैंकों से यह अपेक्षा है कि वे रिज़र्व बैंक को इस आशय का वचन दें कि भारत में जब तक कारोबार करते हैं तब तक 'पूंजी आरक्षित निधि' और 'भारत में रखा विप्रेषणीय अधिशेष' विदेश नहीं भेजेंगे। इसके बाद ही यह मद टीयर 1 पूंजी के अंतर्गत शामिल होने की पात्र होगी।

(ii) इन निधियों को 'पूंजी निधि' के अंतर्गत 'जोखिम भारित आस्ति के प्रति पूंजी अनुपात अपेक्षा की पूर्ति के लिए भारत में रखी गयी राशि' नामक एक अलग खाते में रखा जाना चाहिए ।

(iii) एक लेखा परीक्षक से इस आशय का प्रमाण पत्र भी रिज़र्व बैंक को प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि ये निधियां, कर मूल्यांकन के बाद या कर अपील पर निर्णय के बाद प्रधान कार्यालय को विप्रेषण करने योग्य अधिशेष हैं तथा कर या अन्य किसी आकस्मिक निधि के प्रावधान की प्रकृति की निधियां इनमें शामिल नहीं हैं ।

(iv) प्रधान कार्यालय/विदेशी शाखाओं के पास अंतर-कार्यालय खाते में यदि कोई निवल जमा शेष राशि, हो तो उसे पूंजी निधि नहीं माना जाएगा। हालांकि, यदि प्रधान कार्यालय खाते में कोई नामे शेष राशि हो तो उसे पूंजी के विरुद्ध प्रतिसंतुलित करना चाहिए ।

4.2.4 <u>पात्र टीयर I पूंजी की सीमा</u>

(i) नवोन्मेषी बेमीयादी ऋण लिखत, जो टीयर I पूंजी में शामिल होने के पात्र हैं, पिछले वित्त वर्ष के 31 मार्च की स्थिति के अनुसार कुल टीयर I पूंजी के 15 प्रतिशत तक सीमित होंगे। उपर्युक्त सीमा पिछले वित्त वर्ष के 31 मार्च की स्थिति के अनुसार टीयर I पूंजी की राशि में से गुडविल, डीटीए और अन्य अमूर्त आस्तियों को घटाकर लेकिन निवेश को घटाने के पहले प्राप्त की जाएगी, जैसा कि पैराग्राफ 4.4 में अपेक्षित है।

(ii) किसी भी समय टीयर 1 अधिमान शेयर अर्थात् नवोन्मेषी टीयर 1 लिखतों सहित बेमीयादी गैर-संचयी अधिमान शेयरों की बकाया राशि कुल टीयर 1 पूंजी के 40 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी । उपर्युक्त सीमा टीयर 1 पूंजी की राशि में से गुडविल और अन्य अमूर्त आस्तियों को घटाकर परंतु नीचे पैरा 4.4.6 के अनुसार निवेश को घटाने के पहले प्राप्त राशि पर आधारित होगी । 40 प्रतिशत की समग्र सीमा से अधिक जारी किये गये टीयर 1 अधिमान शेयर टीयर II पूंजी के लिए निर्धारित सीमा के अधीन उच्चतर टीयर II पूंजी में शामिल किये जाने के पात्र होंगे । तथापि, निवेशकों के अधिकार और दायित्व अपरिवर्तित रहेंगे ।

(iii) सीमा से अधिक नवोन्मेषी लिखत/पीएनसीपीएस टीयर II पूंजी के लिए निर्धारित सीमा के अधीन टीयर II के अंतर्गत शामिल किये जाने के पात्र होंगे ।

4.3 टीयर II पूंजी के तत्व

4.3.1 पुनर्मूल्यांकन आरक्षित निधियां

ये आरक्षित निधियां अप्रत्याशित हानि की स्थिति में सहायक सिद्ध होती हैं, लेकिन इनकी प्रकृति उतनी स्थायी नहीं होती और इन्हें 'मुख्य (कोर) पूंजी' नहीं माना जा सकता । बैंक की आस्तियों में जिन आस्तियों का कम मूल्यांकन रहता है, यथा बैंक परिसर, उनके पुनर्मूल्यांकन से पुनर्मूल्यांकन आरक्षित निधियां बनती हैं। अप्रत्याशित हानि की स्थिति में किस हद तक पुनर्मूल्यांकन आरक्षित निधियों पर भरोसा किया जा सकता है, यह मुख्यतया संबंधित आस्तियों के बाज़ार मूल्य के संबंध में लगाये गये अनुमान की विश्वसनीयता, कठिन बाजार परिस्थितियों में अथवा विवश होकर उसे बेचने की स्थिति में मूल्य में होनेवाली गिरावट, उपर्युक्त मूल्यों पर वस्तुतः बेचने की संभावना, पुनर्मूल्यांकन के कर परिणाम आदि पर निर्भर करता है। अतः यह विवेकपूर्ण होगा कि पुनर्मूल्यांकन आरक्षित निधियों को टीयर II पूंजी में शामिल करने के लिए उनके मूल्य में 55% की कटौती की जाए। ऐसी आरक्षित निधियों को तुलनपत्र में पुनर्मूल्यांकन आरक्षित निधियों के रूप में दर्शाना होगा।

4.3.2 सामान्य प्रावधान और हानि आरक्षित निधियां

ऐसी आरक्षित निधियों को टीयर II पूंजी में शामिल किया जा सकता है, बशर्ते उन्हें किसी विनिर्दिष्ट आस्ति के मूल्य में वास्तविक क्षरण या संभावित हानि के लिए न रखा गया हो तथा वे अप्रत्याशित हानि के लिए उपलब्ध हों। सामान्य प्रावधान और हानि आरक्षित निधियों को टीयर II पूंजी का भाग बनाने पर विचार करने के पहले इस बात का पर्याप्त रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए कि सभी ज्ञात हानियों और अनुमानित संभावित हानियों के लिए पर्याप्त प्रावधान किए गए हैं। बैंकों को यह अनुमति दी गयी है कि वे 'मानक आस्तियों पर सामान्य प्रावधान' 'अस्थायी

प्रावधान'[5] 'कंट्री एक्सपोज़र के संबंध में प्रावधान', 'निवेश आरक्षित निधि लेखा' तथा अनर्जक आस्तियों की बिक्री से होनेवाले अधिक प्रावधान को टीयर II पूंजी में शामिल कर सकते हैं, परंतु कुल जोखिम भारित आस्तियों की अधिकतम 1.25 प्रतिशत की सीमा तक ही इन पांच मदों को टीयर II पूंजी में शामिल किया जाएगा ।

4.3.3 <u>मिश्र ऋण पूंजी लिखत</u>

इस संवर्ग के अंतर्गत अनेक ऋण पूंजी लिखत आते हैं जिनमें कुछ इक्विटी की और कुछ ऋण की विशेषताएँ रहती हैं। हर एक की खास विशेषता रहती है जो पूंजी के रूप में उसकी गुणवत्ता को प्रभावित करती है। जहाँ ये लिखत इक्विटी जैसे होते हैं, खासकर तब जब वे निरंतरता के आधार पर हानि की स्थिति में बिना परिसमापन आरंभ किये समर्थन प्रदान कर सकें, वहाँ उन्हें टीयर II पूंजी में शामिल किया जा सकता है। भारत में बैंकों को ईक्विटी और ऋण दोनों की मिश्रित विशेषताओं वाले ऋण पूंजी लिखतों के माध्यम से जुटायी गयी निधियों को उच्चतर टीयर II पूंजी में शामिल करने की अनुमति है बशर्ते लिखत **अनुबंध 4** में विनिर्दिष्ट विनियामक अपेक्षा को पूरा करता हो। भारतीय बैंकों को **अनुबंध 5** में निहित दिशानिर्देशों के अनुसार विद्यमान कानूनी प्रावधानों के अधीन बेमीयादी संचयी अधिमान शेयर (पीसीपीएस), प्रतिदेय गैर-संचयी अधिमान शेयर (आरएनसीपीएस) और प्रतिदेय संचयी अधिमान शेयर (आरसीपीएस) उच्चतर टीयर II पूंजी के रूप में जारी करने की अनुमति है।

4.3.4 <u>अधीनस्थ ऋण</u>

टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने के लिए पात्र होने हेतु उक्त लिखत पूर्णतः प्रदत्त, बेजमानती, अन्य ऋणदाताओं के दावों के अधीन, प्रतिबंधात्मक शर्तों से मुक्त होने चाहिए तथा धारक की पहल से अथवा भारतीय रिज़र्व बैंक की सहमति के बिना प्रतिदेय नहीं होने चाहिए। अधिकांशतः उनकी परिपक्वता नियत होती है और जैसे ही वे परिपक्वता की ओर आगे बढ़ते हैं, टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने के लिए उन पर प्रगामी बट्टा लागू किया जाना चाहिए। 5 वर्ष से कम अवधि की प्रारंभिक परिपक्वता वाले लिखत अथवा जिनकी 1 वर्ष की परिपक्वता शेष है ऐसे लिखत टीयर II पूंजी के भाग के रूप में शामिल नहीं किए जाने चाहिए। टीयर II पूंजी के रूप में माने जाने हेतु पात्र अधीनस्थ ऋण लिखत **अनुबंध 6** में विनिर्दिष्ट विनियामक अपेक्षाओं की पूर्ति करेगा ।

4.3.5 <u>नवोन्मेषी बेमीयादी ऋण लिखत (आइपीडीआइ) और बेमीयादी गैर-संचयी अधिमान शेयर (पीएनसीपीएस)</u>

टीयर 1 पूंजी के 15 प्रतिशत से अधिक आइपीडीआइ [देखें अनुबंध 2, पैरा 1(ii)] को टीयर II पूंजी के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है तथा पैरा 4.2.5 [देखें अनुबंध 3, पैरा 1.1] में निर्धारित 40 प्रतिशत की समग्र सीमा से अधिक जारी पीएनसीपीएस को टीयर II पूंजी के लिए निर्धारित सीमा के अधीन उच्चतर टीयर II पूंजी के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है ।

---

[5] ¢›¸¨¸¥¸ ,›¸□¸ÄˆÅ ,¸¢¬÷¸ œÏ¸œ÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸ˆÅ¥¸ ,›¸□¸ÄˆÅ ,¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸½ ‡½¬¸½ œÏ¸¨¸š¸¸›¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‹¸'¸›¸½ ˆÅ¸ ¢¨¸ˆÅ¥œ¸ 1 ,œÏ¾¥¸ 2009 ¬¸½ „œ¸¥¸¤š¸ ›¸íì í¾ — ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 25 Ÿ¸¸□¸Ä 2009 ,¸¾£ 9 ,œÏ¾¥¸ 2009 ˆ½Å œ¸¢£œ¸°¸ ÇÅŸ¸©¸À ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸. ¬¸¿. ¤¸úœ¸ú. ¤¸ú¬¸ú. 118 ,¸¾£ 122/21.04.048/2008-09 ™½‰¸½¿ —

4.3.6 अन्य किसी प्रकार का लिखत जो सामान्यतः रिज़र्व बैंक समय-समय पर टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने के लिए अधिसूचित करता है।

4.3.7 टीयर II पूंजी पर सीमाएं

टीयर II पूंजी के अन्य घटकों के साथ उच्चतर टीयर II लिखत, टीयर I पूंजी के 100 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। उक्त सीमा साख, डीटीए और अन्य अमूर्त परिसंपत्तियों को घटाने के बाद परंतु निवेशों को घटाने के पहले की टीयर I राशि पर आधारित होगी।

4.3.8 निम्नतर टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने हेतु पात्र अधीनस्थ ऋण लिखत सभी कटौतियों के बाद वाली टीयर I पूंजी के 50 प्रतिशत तक सीमित होगा ।

4.4 पूंजी से कटौतियां

4.4.1 चालू अवधि की अमूर्त परिसंपत्तियां और हानियां तथा पिछली अवधियों से आगे लाई गई अमूर्त परिसंपत्तियां और हानियां टीयर I पूंजी से घटाई जानी चाहिए।

4.4.2 निम्नानुसार गणना की गयी आस्थगित कर परिसंपत्ति (डीटीए) टीयर I पूंजी में से घटायी जानी चाहिएः

i) संचित हानियों से संबद्ध डीटीए; और

ii) आस्थगित कर देयताओं (डीटीएल) को घटाकर डीटीए (संचित हानियों से संबद्ध डीटीए को छोड़कर)। जहां डीटीएल डीटीए (संचित हानियों से संबद्ध डीटीए को छोड़कर) से अधिक हैं वहां उक्त आधिक्य न तो मद (i) के साथ समायोजित किया जाएगा और न ही टीयर 1 पूंजी में जोड़ा जाएगा।

4.4.3 पैरा 5.16.1 में यथा परिभाषित, मानक परिसंपत्तियों के प्रतिभूतीकरण के समय **बिक्री पर होनेवाले लाभ** को **यदि लाभ माना जाता है** तो उसे पूर्णतया टीयर I पूंजी में से घटाया जाना चाहिए। मानक परिसंपत्तियों के प्रतिभूतीकरण संबंधी दिशानिर्देशों के अनुसार बैंकों को विशेष प्रयोजन हेतु बनी कंपनी द्वारा जारी प्रतिभूतियों की अवधि के दौरान संबंधित लाभ का परिशोधन करने की अनुमति है। परिशोधन प्रक्रिया के माध्यम से लाभ-हानि लेखे में इस प्रकार निर्धारित लाभ की राशि को घटाने की आवश्यकता नहीं है।

4.4.4 बैंकों को चाहिए कि वे नीचे विनिर्दिष्ट सीमा तक समेकित पूंजी में पूर्णतः स्वाधिकृत से कम बैंकों, प्रतिभूति अथवा अन्य वित्तीय कंपनियों के समेकन से उत्पन्न अल्पसंख्यकों के हितों को मान्यता न दें :

(i) पूर्णतः स्वाधिकृत से कम स्वाधिकृत सहायक संस्था की पूंजी, जो उस संस्था के लिए विनियामक न्यूनतम से अधिक है, में अल्पसंख्यक के हित की सीमा

(ii) यदि संबंधित सहायक संस्था के लिए कोई विनियामक पूंजी अपेक्षा नहीं है तो उस संस्था के लिए मानी गई न्यूनतम पूंजी अपेक्षा उक्त संस्था की जोखिम भारित परिसंपत्तियों का 9 प्रतिशत ली जाए।

4.4.5 पैरा 5.16.2 में यथाविनिर्दिष्ट प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र को विनियामक पूंजी से घटाया जाएगा और जहां स्पष्ट रूप से अन्यथा प्रावधान हो उसे छोड़कर, उक्त कटौती टीयर 1 से 50

प्रतिशत और टीयर II से 50 प्रतिशत करनी होगी। पूंजी में से कटौतियों की गणना, संबद्ध प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के लिए रखे गए किसी निर्दिष्ट प्रावधान को घटाकर की जाए।

4.4.6 वित्तीय सहायक संस्थाओं और संबद्ध संस्थाओं में निवेश के मामले में पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन हेतु निम्नानुसार कार्रवाई होगी :

(i) पूंजी प्रयोजन के लिए बैंक के साथ समेकित न की गई वित्तीय कंपनियों (बीमा कंपनियों सहित) की चुकता इक्विटी, अर्थात् इक्विटी शेयरों, में 30 प्रतिशत से अधिक किए गए निवेश और उन कंपनियों में विनियामक पूंजी स्तर के लिए पात्र अन्य लिखतों में किए गए निवेश टीयर 1 पूंजी में से 50 प्रतिशत और टीयर II पूंजी में से 50 प्रतिशत पर **पूर्णतः** घटाए जाएं। (30 प्रतिशत से कम के निवेशों के लिए कृपया पैरा 5.13.7 देखें।)

(ii) बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बहुमत अधिकृत वित्तीय कंपनियां, जो पूंजी प्रयोजनों के लिए समेकित नहीं हैं और जिनके लिए विनियामक पूंजी स्तर के लिए पात्र इक्विटी और अन्य लिखतों में किए निवेश घटाए गए हैं, अपनी विनियामक पूंजी अपेक्षाओं की पूर्ति करती हैं। समेकन न की गई कंपनी की विनियामक पूंजी अपेक्षा में किसी कमी की स्थिति में, उक्त कमी को टीयर I पूंजी में से 50 प्रतिशत और टीयर II पूंजी में से 50 प्रतिशत पूर्णतः घटाया जाए।

4.4.7 पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए वित्तीय संस्थाओं के रूप में मानी जाने वाली संस्थाओं की एक निर्देशक सूची निम्नानुसार हैं :

- बैंक
- म्यूचुअल फंड
- बीमा कंपनियां
- गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां
- आवास वित्त कंपनियां
- मर्चेंट बैकिंग कंपनियां
- प्राथमिक व्यापारी

4.4.8 पैरा 4.4.6 के अनुसार घटाए गए निवेशों को छोड़कर निम्न पैरा 4.4.9 में सूचीबद्ध सभी प्रकार के लिखतों, जो अन्य बैंकों/वित्तीय कंपनियों/गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं/ प्राथमिक व्यापारियों द्वारा जारी किए गए हैं और निवेशिती कंपनी के लिए पूंजी स्तर हेतु पात्र हैं, में किए गए किसी बैंक के सकल निवेश निवेशकर्ता बैंक की पूंजी निधियों (समायोजनों के बाद टीयर I तथा टीयर II पूंजी का जोड़) के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होने चाहिए। इस सीमा से अधिक किया गया निवेश टीयर I पूंजी में से 50 प्रतिशत और टीयर II पूंजी में से 50 प्रतिशत घटाया जाएगा। **वित्तीय संस्थाओं/गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों/प्राथमिक व्यापारियों** द्वारा जारी, पूंजी स्तर के लिए पात्र ईक्विटी अथवा लिखतों में किए गए निवेश, जो 10 प्रतिशत की उपर्युक्त सीमा के भीतर हैं और इसलिए पूंजी निधियों से नहीं घटाए गए हैं, पर 100% जोखिम भार अथवा संबद्ध लिखतों के लिए दिए गए श्रेणी निर्धारण को जितना जोखिम भार लागू है उतना जोखिम भार, इनमें से जो भी अधिक हो वह लागू होगा। जहां तक **अनुसूचित बैंकों** की

ईक्विटी और अन्य पूंजी स्तर हेतु पात्र लिखतों में 10 प्रतिशत की उपर्युक्त सीमा के भीतर निवेश का संबंध है, उनपर पैरा 5.6.1 के अनुसार जोखिम भार लगाया जाएगा । इसके अलावा, **गैर-अनुसूचित बैंकों** के मामले में, जहां सीआरएआर नकारात्मक हो गया है, उपर्युक्त 10 प्रतिशत सीमा के भीतर पूंजी हेतु पात्र लिखतों में किया गया निवेश भी पैरा 5.6.1 के अनुसार टीयर 1 पूंजी से 50 प्रतिशत और टीयर II पूंजी से 50 प्रतिशत पर पूर्णतया घटाया जाएगा ।

4.4.9 निम्नलिखित लिखतों में किए बैंकों के निवेश उपर्युक्त पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत की विवेकपूर्ण सीमा में शामिल होंगे :

- क) ईक्विटी शेयर;
- ख) बेमीयादी असंचयी अधिमान शेयर;
- ग) नवोन्मेषी बेमीयादी ऋण लिखत;
- घ) उच्चतर टीयर II बांड
- ङ) उच्चतर टीयर II अधिमान शेयर (पीसीपीएस, आरएनसीपी, आरसीपीएस)
- च) गौण ऋण लिखत
- छ) पूंजी के रूप में अनुमोदित अन्य कोई लिखत

4.4.10 किसी बैंकिंग सहायक/सहयोगी कंपनी द्वारा अपने मूल बैंक द्वारा जारी ईक्विटी अथवा गैर-ईक्विटी विनियामक पूंजी लिखतों में किये गये निवेश को, ऐसी कंपनी सहायक कंपनी के एकल आधार पर पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन करने के लिए सहायक कंपनी की विनियामक पूंजी में से टीयर 1 और टीयर II दोनों पूंजी में से 50 प्रतिशत घटाया जाना चाहिए ।तथापि गैर-बैंकिंग वित्तीय सहायक/सहयोगी कंपनी द्वारा अपने मूल बैंक की विनियामक पूंजी में निवेश पर ऐसी सहायक/सहयोगी कंपनी पर लागू संबंधित विनियामकों के विनियामक पूंजी मानदंड के अनुसार विनियामक कार्रवाई लागू होगी ।

5. ऋण जोखिम के लिए पूंजी भार

5.1 सामान्य

मानकीकृत दृष्टिकोण के अंतर्गत पात्र बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दिया गया रेटिंग अधिकांशतः ऋण जोखिम के मापन को आधार देगा। रिज़र्व बैंक ने ऐसी बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सियों को अभिनिर्धारित किया है जो संशोधित ढांचे के अधीन विनिर्दिष्ट पात्रता मानदंडों की पूर्ति करती हैं। बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा, इन दिशा-निर्देशों में दी गई रूपरेखा के अनुसार पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए जोखिम भार निर्धारित करने हेतु चुनी गईं बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सियों पर निर्भर कर सकते हैं।

5.2 देशी सम्प्रभु (सोवरेन) संबंधी दावे

5.2.1 केंद्र सरकार संबंधी निधि आधारित तथा निधीतर आधारित, दोनों दावों पर शून्य जोखिम भार लागू होगा। केंद्र सरकार से गारंटीप्राप्त दावों पर शून्य जोखिम भार लागू होगा।

5.2.2 राज्य सरकारों को बैंकों द्वारा दिया गया प्रत्यक्ष ऋण/ओवरड्राफ्ट एक्सपोज़र, यदि कोई हो तथा राज्य सरकार की प्रतिभूतियों में निवेश पर शून्य जोखिम भार लगेगा । राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत दावों पर 20 प्रतिशत जोखिम भार लगेगा ।

5.2.3 केंद्र सरकार के एक्सपोज़र संबंधी दावों पर लागू जोखिम भार, भारतीय रिज़र्व बैंक, निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम तथा लघु उद्योगों के लिए ऋण गारंटी निधि न्यास संबंधी दावों पर भी लागू होगा। भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम (ईसीजीसी) संबंधी दावों पर 20 प्रतिशत जोखिम भार लागू होगा।

5.2.4 सीधे दावों तथा गारंटी दावों दोनों के लिए उपर्युक्त जोखिम भार तब तक लागू होगा जब तक वे 'मानक'/अर्जक परिसंपत्तियों के रूप में वर्गीकृत हैं। जहां ये सम्प्रभु एक्सपोज़र अनर्जक के रूप में वर्गीकृत होते हैं, वहां अनर्जक परिसंपत्तियों पर लागू जोखिम भार उन्हें लागू होगा, जिनके बारे में पैरा 5.12 में विस्तृत जानकारी दी गयी है।

5.2.5 "कृषि ऋण माफी योजना, 2008 के अंतर्गत भारत सरकार से प्राप्य राशि" नामक खाते में बकाया राशि भारत सरकार पर दावा मानी जाएगी और पूंजी पर्याप्तता मानदंडों के लिए उस पर शून्य जोखिम भार लगेगा । तथापि, ऋण राहत योजना के अंतर्गत आनेवाले खातों की बकाया राशि उधारकर्ता पर दावा मानी जाएगी और मौजूदा मानदंडों के अनुसार उस पर जोखिम भार लगाया जाएगा ।

5.3 विदेशी सम्प्रभु संबंधी दावे

5.3.1 विदेशी सम्प्रभु संबंधी दावों पर अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेन्सियों द्वारा उन सम्प्रभुओं/सम्प्रभुओं के दावों को दिये गये रेटिंग[6] के अनुसार निम्नानुसार जोखिम भार लागू होगा :

सारणी 2 : विदेशी सम्प्रभु संबंधी दावे - जोखिम भार

एस एंड पी*/ फिच रेटिंग	AAA से AA	A	BBB	BB से B	B से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
मूडी का रेटिंग	Aaa से Aa	A	Baa	Ba से B	B से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
जोखिम भार	0%	20%	50%	100%	150%	100%

* स्टैंडर्ड एंड पुअर

5.3.2 विदेशी सम्प्रभु की देशी मुद्रा में मूल्यवर्गित दावे, जिनकी पूर्ति उस सम्प्रभु के अधिकार क्षेत्र[7] में जुटाए गए उसी मुद्रा के संसाधनों से की गयी है, पर शून्य प्रतिशत जोखिम भार लागू होगा ।

---

[6] œ¸½¢£¬¸ ¢¬˜¸÷¸ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¬'½' ¤¸ÿ˜Å ˆÅú ©¸¸‰¸¸ ×¸£¸ ¡¸»‡¬¸ "ï½{¸£ú ¢¤¸¥¸ Ÿ¸½¿ ¢›¸¨¸½©¸ œ¸£ ¢™¡¸¸ ¸¸›¸½¨¸¸¥¸¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£¸ ¢›¸¢š¸¡¸›¸ ˆÅú Ÿ¸º¡¸ ¸¸í½ ˆÅ¸½ƒÄ ž¸ú í¸½¸ "ï½{¸£ú ¢¤¸¥¸ ˆÅ¸½ ™ú Š¸¡¸ú £½¢'¿Š¸ ˆ½Å ,¸š¸¸£ œ¸£ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ ¸¸‡Š¸¸, ¸¾¬¸¸ ¢ˆÅ ¬¸¸£µ¸ú 2 Ÿ¸½¿ ™©¸¸Ä¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ —

[7] „™¸í£µ¸¸˜¸Ä À ¡¸¢™ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¬'½' ¤¸ÿ˜Å, ›¡¸»¡¸¸Á˜ÄÅ ˆ½Å ,Ÿ¸£úˆÅú "¸Á¥¸£ Ÿ¸½¿ Ÿ¸»¥¡¸¨¸¢Š¸Ä÷¸ ¬¸¿¬¸¸š¸›¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸½ ¢›¸¨¸½©¸ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸ú¡¸›¸ íº¸ í¸½ ÷¸¸½ ›¡¸»¡¸¸Á˜ÄÅ ¢¬˜¸÷¸ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¬'½' ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ©¸¸‰¸¸ ×¸£¸ ,Ÿ¸£úˆÅ›¸ ‰¸¸{¸¸›¸¸ ¢¤¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢ˆÅ‡ ¢›¸¨¸½©¸ œ¸£ ©¸»›¡¸ œ¸Ï¢÷¸©¸÷¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ¥¸Š¸½Š¸¸, ¸¸í½ ™¸¨¸½ ˆÅ¸ £½¢'¿Š¸ ˆºÅŽ ž¸ú Æ¡¸¸½¿ ›¸ í¸½ — ¡¸¢™ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¬'½' ¤¸ÿˆÅ, ›¡¸»¡¸¸Á˜ÄÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ˆÅ¸½ƒÄ ,Ÿ¸£úˆÅ›¸ "¸Á¥¸£ Ÿ¸»¥¡¸¨¸Š¸Ä ˆ½Å ¬¸¿¬¸¸š¸›¸ ›¸íì íÿ ÷¸¸½ „Æ÷¸

5.3.3 तथापि, यदि भारतीय बैंकों की विदेशी शाखाओं की बहियों के ऐसे दावों के संबंध में कोई मेज़बान (होस्ट) पर्यवेक्षक अधिक सतर्क व्यवहार चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे पूंजी पर्याप्तता की गणना के लिए मेज़बान देश के पर्यवेक्षकों द्वारा विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं को अपनाएं ।

5.4 सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं (पीएसई) संबंधी दावे

5.4.1 देशी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं संबंधी दावों पर उसी प्रकार जोखिम भार लगेगा जो कंपनियों संबंधी दावों पर लागू है।

5.4.2 विदेशी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं संबंधी दावों पर जोखिम भार अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दिए गए निर्धारण के अनुसार निम्नानुसार होगा :

सारणी 3 : विदेशी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं संबंधी दावे - जोखिम भार

एस एंड पी/ फिच रेटिंग	AAA से AA	A	BBB से BB	BB से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
मूडी का रेटिंग	Aaa से Aa	A	Baa से Ba	Ba से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
जोखिम भार (%)	20	50	100	150	100

5.5 बहुपक्षीय विकास बैंक (एमडीबी), अंतर्राष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआइएस) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) संबंधी दावे

बीआइएस, आइएमएफ संबंधी दावों तथा बीसीबीएस द्वारा मूल्यांकित निम्नलिखित पात्र बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) संबंधी दावों को न्यूनतम पूंजी पर्याप्तता अपेक्षाओं की पूर्ति करनेवाले अनुसूचित बैंकों संबंधी दावों जैसा ही समझा जाएगा और उनपर समान रूप से बीस प्रतिशत जोखिम भार लगेगा :

क) विश्व बैंक समूह : आइबीआरडी और आइएफसी
ख) एशियाई विकास बैंक
ग) आफ्रिकी विकास बैंक
घ) यूरोपीय बैंक फॉर रिकन्स्ट्रक्शन एंड डेवलपमेंट
ङ) इंटर-अमेरिकन डेवलपमेंट बैंक
च) यूरोपीय निवेश बैंक
छ) यूरोपीय निवेश निधि
ज) नॉर्डिक निवेश बैंक
झ) कैरिबियन विकास बैंक
ञ) इस्लामिक विकास बैंक और
त) काउन्सिल ऑफ यूरोप डेवलपमेंट बैंक

¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ „Æ÷¸ ¬¸¸£µ¸ú 2 Ÿ¸½¿ ™©¸¸Ä‡ Š¸‡ ‚›¸º¬¸¸£ ‰¸{¸¸›¸¸ ¢¤¸¥¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¢™‡ Š¸‡ £½¢’¿Š¸ ¬¸½ ¢›¸¢©¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ ¸¸‡Š¸¸ —

इसी प्रकार, रोग-प्रतिरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्त सुविधा (आइएफएफआइएम) संबंधी दावों पर भी 20 प्रतिशत जोखिम भार लगेगा।

5.6 बैंकों पर दावे

5.6.1 भारत में निगमित बैंकों तथा भारत में कार्यरत विदेशी बैंकों की शाखाओं पर *उपर्युक्त पैरा 4.4.6 , पैरा 4.4.8 और पैरा 4.4.10 में उल्लिखित दावों, जिन्हें पूंजी से घटाया जाता है, को छोड़कर* अन्य दावों पर निम्नानुसार जोखिम भार लगाया जाएगा :

सारणी 4 : भारत में निगमित बैंकों तथा भारत में कार्यरत विदेशी बैंकों की शाखाओं पर दावे

निवेशिती बैंक के सीआरएआर का स्तर (प्रतिशत में) (जहां उपलब्ध हो)	जोखिम प्रभार			
	सभी अनुसूचित बैंक (वाणिज्य, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, स्थानीय क्षेत्र बैंक तथा सहकारी बैंक)		सभी गैर-अनुसूचित बैंक (वाणिज्य,क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, स्थानीय क्षेत्र बैंक तथा सहकारी बैंक)	
	उपर्युक्त पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत सीमा के भीतर निवेश (प्रतिशत में)	सभी अन्य दावे (प्रतिशत में)	उपर्युक्त पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत सीमा के भीतर निवेश (प्रतिशत में)	सभी अन्य दावे (प्रतिशत में)
1	2	3	4	5
9 तथा उससे अधिक	100 प्रतिशत अथवा लिखत या काउंटर पार्टी की रेटिंग के अनुसार लगाया गया जोखिम भार , इनमें जो भी उच्चतर हो	20	100 प्रतिशत अथवा लिखत या काउंटर पार्टी की रेटिंग के अनुसार लगाया गया जोखिम भार , इनमें जो भी उच्चतर हो	100
6 से < 9	150	50	250	150
3 से < 6	250	100	350	250
0 1 से < 3	350	150	625	350
ऋणात्मक	625	625	पूरी कटौती*	625

*टीयर 1 और टीयर II पूंजी में से प्रत्येक में से 50% की दर से कटौती की जाए।

<u>टिप्पणियां</u>

i) उन बैंकों के मामले में जहां भारतीय रिज़र्व बैंक ने कोई पूंजी पर्याप्तता मानदंड निर्धारित नहीं किया है, उधारदाता /निवेशक बैंक निवेशिती बैंक से अपेक्षित जानकारी प्राप्त कर वाणिज्य बैंकों को यथा लागू पूंजी पर्याप्तता मानदंडों का उपयोग करके आनुमानिक आधार पर संबंधित सहकारी बैंक के सीआरएआर की गणना कर सकता है। यदि ऐसे आनुमानिक आधार पर सीआरएआर की गणना करना संभव नहीं हो तो निवेशक बैंक के संपूर्ण एक्सपोज़र पर निवेशक बैंक के जोखिम बोध के अनुसार, 350 अथवा 625 प्रतिशत का जोखिम भार एक समान रूप से लगाया जाए।

ii) उन बैंकों के मामले में जहां पूंजी पर्याप्तता मानदंड वर्तमान में लागू नहीं होते हैं वहां उनके पूंजी-पात्रता वाले लिखतों में निवेश का अभी प्रश्न नहीं उठेगा। तथापि, यदि वे भविष्य में ऐसे कोई पूंजी लिखत जारी करते हैं जिनमें निवेश करने के लिए अन्य बैंक पात्र है तो उपर्युक्त सारणी के स्तंभ 2 तथा 4 उन पर लागू होंगे।

5.6.2 विदेशी बैंकों संबंधी दावों पर जोखिम भार अंतर्राष्ट्रीय ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दिए गए रेटिंग के अनुसार निम्नानुसार होगा।

सारणी 5 : विदेशी बैंकों संबंधी दावे - जोखिम भार

एस एंड पी/ फिच रेटिंग	AAA से AA	A	BBB	BB से B	B से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
मूडी का रेटिंग	Aaa से Aa	A	Baa	Ba से B	B से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
जोखिम भार	20%	50%	50%	100%	150%	50%

विदेशी बैंकों की भारतीय शाखाओं के एक्सपोज़र, जिसे विदेश स्थित प्रधान कार्यालय अथवा किसी अन्य देश में बैंक की शाखा द्वारा गारंटी/काउंटर-गारंटी दी गयी हो, मूल विदेशी बैंक पर दावे माने जाएंगें और उपर्युक्त सारणी 5 के अनुसार उनपर जोखिम भार लगेगा ।

5.6.3 तथापि, किसी बैंक के ऐसे दावे जो 'देशी'[8] विदेशी मुद्रा में मूल्यवर्गित हैं और उसी अधिकार क्षेत्र में जुटाए गए उसी मुद्रा के संसाधनों से पूरे किए गए हैं, पर 20 प्रतिशत जोखिम भार लगेगा बशर्ते संबंधित बैंक के विनियामक (कों) द्वारा विनिर्दिष्ट न्यूनतम सीआरएआर का वह बैंक पालन करता हो।

5.6.4 तथापि, यदि कोई मेज़बान पर्यवेक्षक भारतीय बैंकों की विदेशी शाखाओं की बहियों में ऐसे दावों के लिए अधिक सतर्क व्यवहार चाहता है तो बैंकों को चाहिए कि वे पूंजी पर्याप्तता के लिए मेज़बान पर्यवेक्षक द्वारा निर्धारित अपेक्षाओं को अपनाएं।

5.7 प्राथमिक व्यापारियों संबंधी दावे

प्राथमिक व्यापारियों संबंधी दावों पर उसी प्रकार जोखिम भार लगेगा जैसा कंपनियों संबंधी दावों पर लगता है।

5.8 कंपनियों , आस्ति वित्त कंपनियों और गैर-बैंकिग वित्त कंपनियाँ- इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनियों संबंधी दावे

5.8.1 कंपनियों[9] संबंधी दावों, जिनमें आस्ति वित्त कंपनियों और गैर-बैंकिग वित्त कंपनियाँ- इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनियों[10] पर एक्सपोज़र पर जोखिम भार सेबी के पास पंजीकृत तथा भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा मान्यता प्राप्त रेटिंग एजेन्सियों की ओर से दिए गए निर्धारण के अनुसार होगा। निम्नलिखित सारणी कंपनियों, आस्ति वित्त कंपनियों और गैर-बैंकिग वित्त कंपनियाँ- इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनियों संबंधी दावों पर लागू जोखिम भार दर्शाती है।

---

[8] „™¸í£µ¸¸˜¸Ä À ž¸¸. ¬'½. ¤¸ÿˆÅ ˆÅú œ¸¾¢£¬¸ ¢¬˜¸÷¸ ©¸¸‰¸¸ ˆÅ¸ ¤¸ú‡›¸œ¸ú œ¸¸¢£¤¸¸¬¸ œ¸¾¢£¬¸ œ¸£ ¡¸»£¸½ Ÿ¸½¿ Ÿ¸»¥¡¸¨¸¢Š¸Ä÷¸ ¢ˆÅ¬¸ú ™¸¨¸½ œ¸£, ¢□¸¬¸ˆÅ¸ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ ž¸¸. ¬'½. ¤¸ÿˆÅ, œ¸¾¢£¬¸ ˆÅú ¡¸»£¸½ Ÿ¸»¥¡¸¨¸¢Š¸Ä÷¸ □¸Ÿ¸¸£¸¢©¸ Ÿ¸½¿ ¬¸½ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾, 20 œ¸Ï¢÷¸©¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ¥¸Š¸½Š¸¸, □¸¸í½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ™¸¨¸½ ˆÅ¸ £½¢'¿Š¸ ˆºÅŽ ž¸ú Æ¡¸¸½¿ ›¸ í¸½; ¤¸©¸÷¸½Ä ¤¸ú‡›¸œ¸ú œ¸¸¢£¤¸¸¬¸ œ¸Ï€¸›¬¸ ˆ½Å ,œ¸›¸½ ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ/œ¸¡¸Ä¨¸½®¸ˆÅ ×¸£¸ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«' ›¡¸»›¸÷¸Ÿ¸ ¬¸ú,¸£‡¸£ ˆÅ¸ ,›¸ºœ¸¸¥¸›¸ ˆÅ£÷¸¸ í¸½— ¡¸¢™ ¤¸ú‡›¸œ¸ú œ¸¸¢£¤¸¸¬¸ ›¡¸»›¸÷¸Ÿ¸ ¬¸ú,¸£‡¸£ ˆÅ¸ „¥¥¸¿‹¸›¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾, ÷¸¸½ „œ¸¡¸ºÄÆ÷¸ ¬¸¸£µ¸ú 4 Ÿ¸½¿ ™©¸¸Ä‡ Š¸‡ ,›¸º¬¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ í¸½Š¸¸ —

[9] ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ™¸¨¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸ŸœÏž¸º', `¤¸ÿˆÅ', `¢¨¸¢›¸¡¸Ÿ¸ˆÅ ûºÅ'ˆÅ£', `,¸¨¸¸¬¸ú¡¸ ¤¸¿š¸ˆÅ, `,›¸□¸ÄˆÅ œ¸¢£¬¸¿œ¸¢÷÷¸¡¸¸¿' □¸¾¬¸ú ƒ›¸ ¢™©¸¸¢›¸™½Ä©¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ,¥¸Š¸ ¬¸½ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«' ª½¢µ¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ,š¸ú›¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸½ í½÷¸º œ¸¸°¸ ‡Æ¬œ¸¸½{¸£ ˆÅ½ Ž¸½"õˆÅ£ ¬¸ž¸ú ¢›¸¢š¸ ,¸š¸¸¢£÷¸ ,¸¾£ ¢›¸š¸ú÷¸£ ,¸š¸¸¢£÷¸ ‡Æ¬œ¸¸½{¸£ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ—

[10] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 12 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.74/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

सारणी 6 : भाग क - कंपनियों संबंधी दीर्घावधि दावे - जोखिम भार

देशी रेटिंग एजेन्सियां	AAA	AA	A	BBB	BB और उससे नीचे	रेटिंग न किए हुए
जोखिम भार	20%	30%	50%	100%	150%	100%

सारणी 6 : भाग ख - कंपनियों संबंधी अल्पावधि दावे - जोखिम भार

अल्पावधि रेटिंग				जोखिम भार
केअर	क्रिसिल	फिच	इकरा	
पीआर 1+	पी 1+	एफ 1+(आइएनडी)	ए 1 +	20%
पीआर 1	पी 1	एफ 1(आइएनडी)	ए 1	30%
पीआर 2	पी 2	एफ 2(आइएनडी)	ए 2	50%
पीआर 3	पी 3	एफ 3(आइएनडी)	ए 3	100%
पीआर 4और पीआर 5	पी 4 और पी 5	एफ4/एफ5(आइएनडी)	ए 4 / ए 5	150%
रेटिंग नहीं	रेटिंग नहीं	रेटिंग नहीं	रेटिंग नहीं	100%

टिप्पणी : आस्ति वित्त कंपनियों पर किए गए दावों के संबंध में जोखिम भार आस्ति वित्त कंपनियों की ऋण रेटिंग के अनुसार जारी रहेगा, परंतु जिन दावों पर नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे के अंतर्गत 150 प्रतिशत का जोखिम भार लगता है, उसे घटाकर 100 प्रतिशत के स्तर पर लाया जाएगा ।

रेटिंग न की गई कंपनी संबंधी किसी दावे को ऐसा जोखिम भार न लगाया जाए जो उसके निगमन के देश को लगाये गए जोखिम भार से कम हो।

5.8.2 समग्र चूक के अनुभव के कारण जहां उच्चतर जोखिम भार अपेक्षित है वहां रेटिंग न किए गए दावों के लिए मानक जोखिम भार रिजर्व बैंक बढ़ा सकता है। पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया के एक भाग के रूप में, रिज़र्व बैंक इस पर भी विचार करेगा कि विभिन्न बैंकों द्वारा रखे गए कंपनियों के रेटिंग न किए दावों की ऋण की गुणवत्ता के कारण मानक जोखिम भार 100 प्रतिशत से उच्चतर लगाया जानाा चाहिए या नहीं।

5.8.3 ऐसी कंपनियों में, जिनका दायित्व या तो संबंधित बैंक द्वारा अकेले या अन्य बैंकरों/ ऋणदाताओं के साथ मिलकर पुनर्रचित/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, छुपे अंतर्निहित जोखिम के उच्चतर घटक को दर्शाने की दृष्टि से इन कंपनियों के संबंध में रेटिंग न किए गए मानक /अर्जक दावों पर उच्चतर जोखिम भार लगाया जाना चाहिए। ऐसा तब तक किया जाएगा जब तक कि संशोधित अनुसूची के अधीन ब्याज की पहली अदायगी/मूलधन देय हो जाने की तारीख से एक वर्ष के लिए संशोधित भुगतान अनुसूची के अधीन संतोषजनक कार्यनिष्पादन नहीं होता । लागू जोखिम भार 125 प्रतिशत होगा।

5.8.4 अनिवासी कंपनियों संबंधी दावों पर अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दिए गए रेटिंग के अनुसार निम्नानुसार जोखिम भार लगाया जाएगा।

सारणी 7 : अनिवासी कंपनियों संबंधी दावे - जोखिम भार

एस एंड पी/ फिच रेटिंग	AAA से AA	A	BBB से BB	BB से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
मूडी का रेटिंग	Aaa से Aa	A	Baa से Ba	Ba से नीचे	रेटिंग नहीं किया गया
जोखिम भार	20%	50%	100%	150%	100%

5.9 विनियामक फुटकर संविभागों में शामिल दावे

5.9.1 निम्न पैरा 5.9.3 में सूचीबद्ध सभी चार मानदंडों की पूर्ति करनेवाले दावों (निधि आधारित और निधीतर आधारित दोनों शामिल) को विनियामक पूंजी प्रयोजनों के लिए फुटकर दावों के रूप में माना जाए और किसी विनियामक फुटकर संविभाग में शामिल किया जाए । इस संविभाग में शामिल दावों पर 75% जोखिम भार लगाया जाए । इसमें अनर्जक परिसंपत्तियों के लिए, निम्न पैरा 5.12 में दिये गये दावों को शामिल न किया जाए ।

5.9.2 निम्नलिखित निधि आधारित और निधीतर आधारित दोनों दावों को विनियामक फुटकर संविभाग से बाहर रखा जाएगा :

(क) प्रतिभूतियों में (जैसे बांडों और ईक्विटी में) निवेशों के ज़रिए एक्सपोज़र, चाहे सूचीबद्ध हो या न हो;

ख) उस सीमा तक बंधक ऋण, जिस सीमा तक वे आवासीय संपत्ति[11] से प्रतिभूत दावों अथवा वाणिज्य स्थावर संपदा[12] द्वारा प्रतिभूत दावों के रूप में समझे जाने के लिए पात्र हैं;

(ग) बैंक के अपने स्टाफ के लिए दिए गए ऋण और अग्रिम जो सेवानिवृत्ति के लाभों और/या फ्लैट/मकान के बंधक द्वारा पूरी तरह सुरक्षित हैं ।

(घ) वैयक्तिक ऋणों और क्रेडिट कार्ड प्राप्य राशियों सहित उपभोक्ता ऋण

(ड.) पूंजी बाज़ार एक्सपोज़र

(च) उद्यम पूंजी निधि

5.9.3 पात्रता मानदंड

(i) *<u>अभिमुखता मानदंड</u>* - एक्सपोज़र एकल व्यक्ति या व्यक्तियों को अथवा किसी छोटे कारोबार को एक्सपोज़र (निधि आधारित और निधीतर आधारित)है : इस वाक्यांश के अंतर्गत उल्लिखित व्यक्ति ऐसा विधिक व्यक्ति होगा जो संविदा करने के लिए सक्षम होगा और इसमें एकल व्यक्ति, हिंदू अविभक्त परिवार, भागीदारी फर्म, न्यास, प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां, पब्लिक लिमिटेड कंपनियां, सहकारी समितियां आदि शामिल होंगी, परंतु वह केवल इन तक ही सीमित नहीं होगा। छोटा कारोबार वह है जिसका कुल औसत वार्षिक टर्नओवर 50 करोड़ रुपये से कम है। टर्नओवर मानदंड मौजूदा कंपनियों के मामले में पिछले तीन वर्ष के औसत के साथ, नई कंपनियों के मामले में अनुमानित टर्नओवर के साथ और जिन्होंने अब तक तीन वर्ष पूरे नहीं किए

[11] ,¸¨¸¸¬¸ú¡¸ ¬¸¿œ¸¢÷÷¸ ¬¸½ œÏ¢÷¸ž¸»÷¸ ™¸¨¸¸½¿ ˆ½Å ³œ¸ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸□¸½ □¸¸›¸½ í½÷¸º œ¸¸°¸ ¤¸¿š¸ˆÅ †µ¸ œ¸¾£¸ 5.10 Ÿ¸½¿ í¾¿ —

[12] œ¸¾£¸ 5.11.1 Ÿ¸½¿ ¡¸˜¸¸ œ¸¢£ž¸¸¢«¸÷¸ —

हैं, ऐसी कंपनियों के लिए वास्तविक और अनुमानित दोनों टर्नओवर के साथ संबद्ध होगा ।

(ii) *उत्पाद मानदंड* - एक्सपोज़र (निधि आधारित और निधीतर आधारित दोनों) निम्नलिखित में से किसी एक रूप का होता है : परिक्रामी ऋण और स्वीकृत अधिकतम ऋण सहायता (ओवरड्राफ्ट सहित), मीयादी ऋण और पट्टा (अर्थात् किस्त ऋण और पट्टा, छात्र ऋण तथा शैक्षिक ऋण) और छोटे कारोबार की सुविधाएं और प्रतिबद्धताएं ।

(iii) *विविधीकरण मानदंड* - बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विनियामक फुटकर संविभाग का पर्याप्त रूप से इस स्तर तक विविधीकरण किया गया है कि संविभाग का जोखिम कम हो गया है और 75% का जोखिम भार उपयुक्त है। इसे हासिल करने का एक मार्ग यह है कि एक प्रतिपक्ष को सकल एक्सपोज़र समग्र विनियामक फुटकर संविभाग के 0.2 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। **'सकल एक्सपोज़र'** से तात्पर्य है तीन अन्य मानदंडों को अलग-अलग रूप से पूरा करनेवाले सभी प्रकार के ऋण एक्सपोज़रों (अर्थात् ऋण और प्रतिबद्धताएं) की कुल राशि (अर्थात् ऋण जोखिम कम करने के किसी परिणाम को हिसाब में न लेते हुए)। इसके अतिरिक्त 'एक प्रतिपक्ष' का अर्थ है एक अथवा अनेक कंपनियां जो एकल लाभार्थी (उदाहरण के लिए, किसी छोटे कारोबार के मामले में जो अन्य छोटे कारोबार से संबद्ध है, बैंक के दोनों कारोबारों के सकल एक्सपोज़र पर संबंधित सीमा लागू होगी) के रूप में समझी जाती हैं। बैंक सकल एक्सपोज़र की गणना के लिए समूह एक्सपोज़र की संकल्पना का समुचित उपयोग कर सकते हैं। उन्हें इस मानदंड का सख्त अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रणालियां विकसित करनी चाहिए। जोखिम भार लगाने के प्रयोजन के लिए विविधीकरण मानदंड का मूल्यांकन करते समय समग्र विनियामक फुटकर संविभाग से फुटकर ऋणों के अंतर्गत आनेवाली अनर्जक परिसंपत्तियों को बाहर रखा जाना चाहिए ।

(iv) *अलग-अलग एक्सपोज़रों का निम्न मूल्य* - एक प्रतिपक्ष को दिया गया अधिकतम सकल फुटकर एक्सपोज़र 5 करोड़ रुपये की कुल प्रारंभिक सीमा से अधिक नहीं होना चाहिए ।

5.9.4 कुल प्रारंभिक सीमा के अनुपालन का पता लगाने के प्रयोजन के लिए सभी प्रकार के तुलन पत्रेतर एक्सपोज़रों सहित, निधि आधारित और निधीतर आधारित सभी सुविधाओं के लिए एक्सपोज़र का अर्थ होगा मंजूर सीमा या वास्तविक बकाया राशि, इनमें से जो भी अधिक हो । मीयादी ऋणों और ईएमआइ आधारित सुविधाओं के मामले में, जहां मंजूर राशियों के किसी हिस्से के पुनः आहरण की गुंजाइश नहीं है वहां एक्सपोज़र से तात्पर्य होगा वास्तविक बकाया।

5.9.5 इन एक्सपोज़रों के लिए चूक के अनुभव के संदर्भ में रिज़र्व बैंक फुटकर संविभाग को दिए जोखिम भार का आवधिक अंतराल पर मूल्यांकन करेगा। पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया के भाग के रूप में रिज़र्व बैंक इसपर भी विचार करेगा कि अलग-अलग बैंकों द्वारा रखे गए विनियामक फुटकर दावों की ऋण गुणवत्ता को 75% से उच्चतर मानक जोखिम भार की आवश्यकता होनी चाहिए या नहीं ।

5.10 आवासीय संपत्ति से प्रतिभूत दावे

5.10.1 ऐसी आवासीय संपत्ति जो उधारकर्ता के कब्जे में है या होगी या जो किराये पर दी है, के बंधक द्वारा पूर्णतः प्रतिभूत, आवासीय संपत्ति प्राप्त करने के प्रयोजन से अलग-अलग व्यक्तियों को दिए गए ऋण पर निम्नानुसार जोखिम भार लगाया जाएगा, बशर्ते बोर्ड द्वारा अनुमोदित मूल्यांकन नीति के आधार पर मूल्य के प्रति ऋण का अनुपात (एलटीवी) 75% से अधिक न हो। एलटीवी अनुपात की गणना भाज्य में खाते की कुल बकाया राशि (अर्थात् मूल धन + उपचित ब्याज + ऋण संबंधी अन्य प्रभार जिसमें से कुछ भी घटाया न हो) और भाजक में संबंधित बैंक को बंधक दी हुई आवासीय संपत्ति का वसूली योग्य मूल्य को रखकर प्रतिशत के रूप में की जानी चाहिए ।

ऋण की राशि	जोखिम भार
30 लाख रुपये तक	50%
30 लाख रुपये और उससे अधिक	75%

5.10.2 आवासीय संपत्ति प्राप्त करने के लिए दिए गए जो उधार उपर्युक्त मानदंड की पूर्ति करते हैं परंतु जिनका एलटीवी अनुपात 75% से अधिक है, उनपर 100 प्रतिशत जोखिम भार लगेगा।

5.10.3 आवासीय संपत्ति द्वारा प्रतिभूत अन्य सभी दावों पर प्रतिपक्षी को अथवा जिस प्रयोजन के लिए बैंक ने वित्त प्रदान किया है उसे लागू जोखिम भार में से उच्चतर जोखिम भार लगेगा।

5.10.4 पुनर्रचित आवास ऋण पर ऊपर पैरा 5.10.1 के अनुसार निर्धारित जोखिम भार पर 25 प्रतिशत का अतिरिक्त जोखिम भार लगाया जाना चाहिए ।

5.10.5 आगे ऋण देने हेतु मध्यस्थ कंपनियों को दिये गये ऋण/एक्सपोज़र आवासीय संपत्ति द्वारा प्रतिभूत दावों के अंतर्गत शामिल किये जाने के लिए पात्र नहीं होंगे परंतु वे कंपनियों संबंधी दावों के रूप में या विनियामक फुटकर संविभाग में शामिल दावों के रूप में, जो भी लागू हो, माने जाएंगे ।

5.10.6 उपर्युक्त पैरा 5.10.1 में दर्शाए गए एक्सपोज़रों द्वारा समर्थित बंधक आधारित प्रतिभूतियों में किये गये निवेश प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र संबंधी दिशानिर्देशों से नियंत्रित होंगे (देखें निम्न पैरा 5.16)।

5.11 वाणिज्यिक स्थावर संपदा द्वारा प्रतिभूत दावे

5.11.1 वाणिज्यिक स्थावर संपदा द्वारा प्रतिभूत दावों को इस प्रकार परिभाषित किया गया है- "निधि आधारित और निधीतर आधारित ऐसे एक्सपोज़र जो वाणिज्यिक स्थावर संपदाओं (कार्यालय की बिल्डिंग, फुटकर स्थान, बहुदेशीय वाणिज्य परिसर, बहु-पारिवारिक आवासीय भवन, बहु-किरायाकृत वाणिज्य परिसर, औद्योगिक या गोदाम का स्थान, होटल, भूमि अर्जन, विकास और निर्माण कार्य आदि) संबंधी बंधकों द्वारा प्रतिभूत हैं।" विशेष आर्थिक क्षेत्र के गठन के लिए या विशेष आर्थिक क्षेत्रों में इकाइयों (जिसमें स्थावर संपदा शामिल है)के अर्जन के लिए कंपनियों के प्रति एक्सपोज़र, को भी वाणिज्यिक स्थावर संपदा एक्सपोज़र माना जाएगा।

5.11.2 उपर्युक्तानुसार परिभाषित वाणिज्यिक स्थावर संपदा द्वारा प्रतिभूत दावों पर 100 प्रतिशत जोखिम भार लगेगा ।

5.11.3 उपर्युक्त पैरा 5.11.1 में दिये गये अनुसार एक्सपोज़रों द्वारा समर्थित बंधक आधारित प्रतिभूतियों (एमबीएस) में किये गये निवेश प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़रों संबंधी दिशानिर्देशों से नियंत्रित होंगे । देखें निम्न पैरा 5.16 ।

5.12 **अनर्जक परिसंपत्तियां (एनपीए)**

5.12.1 अनर्जक परिसंपत्ति (पैरा 5.12.6 में उल्लिखित पात्र आवासीय बंधक ऋण को छोड़कर) के <u>बेज़मानती हिस्से</u> पर, <u>विनिर्दिष्ट प्रावधानों</u> (आंशिक राइट-ऑफ सहित)<u>को घटाकर</u>, निम्नानुसार जोखिम भार लगेगा :

(i) जब विनिर्दिष्ट प्रावधान एनपीए की बकाया राशि के 20% से कम है तब 150% जोखिम भार;

(ii) जब विनिर्दिष्ट प्रावधान एनपीए की बकाया राशि के कम-से-कम 20% है तब 100% जोखिम भार;

(iii) जब विनिर्दिष्ट प्रावधान एनपीए की बकाया राशि के कम-से-कम 50% है तब 50% जोखिम भार;

5.12.2 जोखिम भार निर्धारित करने हेतु अनर्जक परिसंपत्तियों में विनिर्दिष्ट प्रावधान के स्तर की गणना के लिए किसी एकल प्रतिपक्षी का सारा निधीकृत एनपीए एक्सपोज़र (पात्र सम्पार्श्विक का मूल्य घटाए बिना) भाजक में लिया जाए ।

5.12.3 अनर्जक परिसंपत्ति के प्रतिभूति समर्थित भाग को परिभाषित करने के प्रयोजन के लिए पात्र संपार्श्विक वही होगा जिसे ऋण जोखिम को कम करने के प्रयोजन के लिए मान्यता दी गयी है (पैराग्राफ 7.3.5)। अतः पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजनों के लिए अनर्जक परिसंपत्ति के प्रतिभूति समर्थित भाग की गणना करते समय संपार्श्विक के अन्य प्रकार जैसे भूमि, भवन, संयंत्र, मशीन, वर्तमान परिसंपत्तियां आदि को ध्यान में नहीं लिया जाएगा ।

5.12.4 उपर्युक्त के अलावा, जहां कोई अनर्जक परिसंपत्ति निम्नलिखित प्रकार के सम्पार्श्विक द्वारा पूर्णतः सुरक्षित है, जिन्हें ऋण जोखिम को कम करने के प्रयोजनों के लिए स्वतंत्र रूप से अथवा अन्य पात्र संपार्श्विक के साथ मान्यता नहीं दी गयी है, वहां बकाया राशि के 15 प्रतिशत प्रावधान होने पर विशिष्ट प्रावधानों को घटाकर 100 प्रतिशत जोखिम भार लागू होगा :

(i) भूमि तथा भवन जिनका विशेषज्ञ मूल्यांकक द्वारा मूल्यांकन किया गया है तथा मूल्यांकन तीन वर्ष से अधिक पुराना नहीं है, तथा

(ii) अच्छी स्थिति में संयंत्र तथा मशीन जिनका मूल्य उधारकर्ता के लेखा-परीक्षित तुलनपत्र जो अठारह महीनों से अधिक पुरानी नहीं है, में दिखाए गए मूल्यह्रासित मूल्य से अधिक नहीं है।

5.12.5 उपर्युक्त संपार्श्विकों को (पैराग्राफ 5.12.4 में उल्लिखित) केवल वहां मान्यता होगी जहां उसकी बिक्री से प्राप्त राशि लेने के लिए बैंक के पास स्पष्ट हक है तथा उस राशि का वे बैंक को देय राशियों की वसूली के लिए विनियोग कर सकते हैं। संपार्श्विक के प्रति बैंक के हक का यथोचित प्रलेखन होना चाहिए । मानकीकृत दृष्टिकोण के अंतर्गत और कहीं भी संपार्श्विकों के इन प्रकारों को मान्यता नहीं दी गई है ।

5.12.6 पैराग्राफ 5.10.1 में यथापरिभाषित आवासीय संपत्ति द्वारा प्रतिभूति समर्थित दावे, जो अनर्जक परिसंपत्ति है, को विशिष्ट प्रावधानों को घटाकर 100% पर जोखिम भारित किया जाएगा । यदि ऐसे ऋणों में विशिष्ट प्रावधान बकाया राशि के कम-से -कम 20 प्रतिशत है लेकिन 50% से कम हैं, तो विशिष्ट प्रावधानों को घटाकर ऋण पर लागू जोखिम भार 75 प्रतिशत होगा । यदि विशिष्ट प्रावधान 50 प्रतिशत अथवा उससे अधिक है तो लागू जोखिम भार 50 प्रतिशत होगा ।

5.13 विनिर्दिष्ट श्रेणियां

5.13.1 उद्यम पूंजी निधियां, जिन्हें उच्च जोखिम एक्स्पोज़र समझा जाता है, पर निधि आधारित तथा निधीतर आधारित दावों पर 150 प्रतिशत का उच्चतर जोखिम भार लागू होगा ।

5.13.2 रिज़र्व बैंक यथासमय उच्च जोखिम एक्सपोज़र के रूप में निर्धारित किसी अन्य दावे में उच्चतर जोखिम को देखते हुए 150 प्रतिशत अथवा उच्चतर जोखिम भार लागू करने का निर्णय ले सकता है ।

5.13.3 व्यक्तिगत ऋण और क्रेडिट कार्ड प्राप्य राशियों सहित लेकिन शैक्षिक ऋण रहित उपभोक्ता ऋण पर 125 प्रतिशत का उच्चतर जोखिम भार अथवा काउंटर पार्टी के बाहरी रेटिंग (अथवा उसका अभाव) के कारण अपेक्षित उच्चतर जोखिम भार (125 प्रतिशत से अधिक) लागू होगा। चूंकि सोना और स्वर्ण आभूषण पात्र वित्तीय संपार्श्विक हैं, सोना और स्वर्ण आभूषण द्वारा सुरक्षित व्यक्तिगत ऋण के मामले में काउंटर पार्टी एक्सपोज़र की गणना पैरा 7.3.4 के अनुसार परिपूर्ण दृष्टिकोण के अंतर्गत की जाएगी । 'जोखिम कम करने के बाद एक्सपोज़र मूल्य' पर 125 प्रतिशत का जोखिम भार लगेगा ।

5.13.4 'पूंजी बाज़ार एक्सपोज़र' पर 125 प्रतिशत का जोखिम भार अथवा काउंटर पार्टी के बाहरी रेटिंग (अथवा उसका अभाव) के कारण अपेक्षित जोखिम भार इनमें **जो भी उच्चतर हो** लागू होगा ।

5.13.5 आस्ति वित्त कंपनियों और एनबीएफसी-आइएफसी को छोड़कर "जमा स्वीकार नहीं करनेवाली प्रणालीगत दृष्टि से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-एनडी-एसआइ)" पर दावे पर 100 प्रतिशत का समरूप जोखिम भार लगेगा, चाहे दावे की राशि कुछ भी हो तथा कंपनी की रेटिंग की गयी हो अथवा नहीं की गयी हो ।(आवास वित्त कंपनियों और एनबीएफसी-आइएफसी[13] पर दावे के जोखिम भार के लिए पैरा 5.8.1 देखें) ।

5.13.6 गैर-वित्तीय संस्थाओं की प्रदत्त इक्विटी में सभी निवेश जिन्हें बैंक के साथ पूंजी प्रयोजन के लिए समेकित नहीं किया गया है को 125 प्रतिशत जोखिम भार लगाया जाएगा।

5.13.7 वित्तीय संस्थाओं (बैंकों को छोड़कर, जिनके संबंध में पैरा 5.6 में चर्चा की गयी है)जिन्हें बैंक के साथ पूंजी प्रयोजनों के लिए समेकित नहीं किया गया है की प्रदत्त इक्विटी में सभी निवेशों पर , यदि निवेश निवेशिती संस्था की ईक्विटी के 30 प्रतिशत तक है तो उस पर 125 प्रतिशत जोखिम भार अथवा काउंटर पार्टी की बाहरी रेटिंग (अथवा उसका अभाव) के कारण अपेक्षित जोखिम भार, इनमें से जो भी अधिक है, लागू होगा। ऐसी वित्तीय संस्थाओं की

---

[13] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 12 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.74/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

प्रदत्त इक्विटी में निवेश पर ,जिन्हें 'पूंजी बाजार एक्सपोज़र' से विनिर्दिष्ट रूप से छूट दी गयी है, 100 प्रतिशत जोखिम भार लगेगा ।

5.13.8 अन्य बैंकों के ईक्विटी से इतर पूंजी हेतु पात्र लिखतों में बैंकों के निवेश पर पैरा 5.6.1 के अनुसार जोखिम भार लगाया जाना चाहिए।

5.14 <u>अन्य परिसंपत्तियां</u>

5.14.1 बैंक के अपने स्टाफ को ऋण तथा अग्रिम जो अधिवर्षिता लाभों तथा/अथवा फ्लैट/मकान के बंधक द्वारा पूर्णतः समर्थित हैं पर 20 प्रतिशत जोखिम भार लागू होगा। चूंकि फ्लैट/मकान पात्र संपार्श्विक नहीं है और चूंकि बैंक सामान्यतः केवल सेवा की समाप्ति के समय अधिवर्षिता लाभों का समायोजन करके देयताओं की वसूली करते हैं, इसलिए बकाया राशि का कोई भी समायोजन किए बिना रियायती जोखिम भार लागू किया जाएगा । यदि स्टाफ सदस्य से देय राशियों के संबंध में बैंक के पास कोई पात्र संपार्श्विक है तो उस स्टाफ सदस्य की बकाया राशि को, नीचे पैराग्राफ 7 में दर्शाए गए अनुसार अनुमत सीमा तक समायोजित किया जाए।

5.14.2 बैंक के अपने स्टाफ को दिए गए अन्य ऋण तथा अग्रिम विनियामक खुदरा संविभाग के अंतर्गत शामिल किए जाने के लिए पात्र होंगे और इसलिए उन पर 75 प्रतिशत जोखिम भार लागू होगा ।

5.14.3 बैंकों द्वारा केंद्रीय काउंटर पार्टियों के पास रखी गयी जमाराशियों पर केंद्रीय काउंटर पार्टियों के स्वरूप के अनुसार उपयुक्त जोखिम भार लगेगा । भारतीय समाशोधन निगम (सीसीआइएल) के मामले में जोखिम भार 20 प्रतिशत होगा और अन्य केंद्रीय काउंटरपार्टियों के मामले में उन संस्थाओं को दी गयी रेटिंग के अनुसार होगा ।

5.14.4 अन्य सभी परिसंपत्तियों पर एक समान 100% जोखिम भार लागू होगा ।

5.15 तुलनपत्रेतर मदें

5.15.1 <u>सामान्य</u>

i) कुल जोखिम भारित तुलनपत्रेतर ऋण एक्सपोजर की गणना बाज़ार संबद्ध तथा गैर-बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदों के जोड़ के रूप में की जाती है। किसी तुलनपत्रेतर मद जिससे ऋण एक्सपोज़र होता है की जोखिम भारित राशि की गणना सामान्यतः द्वि-स्तरीय प्रक्रिया द्वारा की जाती है :

   (क) लेनदेन की परिकल्पित (नोशनल) राशि को विशिष्ट ऋण परिवर्तन गुणक द्वारा गुणा करके अथवा वर्तमान एक्सपोज़र पद्धति को लागू करके ऋण समतुल्य राशि में परिवर्तित किया जाता है, तथा

   (ख) प्राप्त ऋण समतुल्य राशि को काउंटर पार्टी पर लागू अथवा जिस प्रयोजन से बैंक ने वित्त दिया है, उस पर लागू अथवा परिसंपत्ति के प्रकार पर लागू, इनमें से जो भी अधिक हो, जोखिम भार द्वारा गुणा किया जाता है।

ii) जहां तुलनपत्रेतर मद, पात्र संपार्श्विक अथवा गारंटी द्वारा समर्थित है वहां पैराग्राफ 7 में वर्णित ऋण जोखिम को कम करने संबंधी दिशानिर्देश लागू किए जाए ।

5.15.2 <u>गैर-बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदें</u>

i) गैर-बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मद, जैसे प्रत्यक्ष ऋण स्थानापन्न व्यापार तथा कार्य निष्पादन से संबंधित आकस्मिक मदें तथा कुछ ड्रॉडाऊन के साथ प्रतिबद्धताएं, अन्य प्रतिबद्धताएं आदि के संबंध में ऋण समतुल्य राशि, उस विशिष्ट लेनदेन की संविदाकृत राशि का संबंधित ऋण परिवर्तन गुणक (सीसीएफ) के साथ गुणा करके निर्धारित की जाएगी ।

ii) जहां गैर-बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मद एक अनाहरित अथवा आंशिक रूप से अनाहरित निधि आधारित सुविधा[14] है, वहां तुलनपत्रेतर गैर-बाज़ार संबद्ध ऋण एक्सपोज़र की गणना करने में शामिल की जानेवाली अनाहरित प्रतिबद्धता की राशि उक्त प्रतिबद्धता का ऐसा अधिकतम अप्रयुक्त हिस्सा है जो परिपक्वता की शेष अवधि के दौरान आहरित किया जा सकता है। किसी प्रतिबद्धता का कोई भी आहरित हिस्सा बैंक के तुलन पत्र के ऋण एक्सपोज़र का भाग होता है।

iii) तुलनपत्रेतर सुविधाएं प्रदान करने की अपरिवर्तनीय प्रतिबद्धताओं के मामले में मूल परिपक्वता की गणना प्रतिबद्धता के प्रारंभ से संबद्ध सुविधा समाप्त होने के समय तक की जाएगी। उदाहरण के लिए, 6 माह के प्रलेखी साख पत्र जारी करने हेतु 12 महीने की मूल परिपक्वतावाली अपरिवर्तनीय प्रतिबद्धता को 18 महीने की मूल परिपक्वता वाली प्रतिबद्धता समझा जाता है। तुलनपत्रेतर सुविधाएं प्रदान करने की अपरिवर्तनीय प्रतिबद्धताओं पर लागू होनेवाले दो ऋण परिवर्तन गुणकों (सीसीएफ) में से निम्नतर सीसीएफ लागू किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, 15 महीनों की मूल परिपक्वता वाली अपरिवर्तनीय प्रतिबद्धता (50 प्रतिशत-सीसीएफ) पर छः महीने के प्रलेखी साख पत्र (20 प्रतिशत-सीसीएफ) जारी करने के लिए निम्नतर सीसीएफ अर्थात् प्रलेखी साख पत्र पर लागू सीसीएफ अर्थात् 20 प्रतिशत लागू होगा ।

iv) गैर-बाज़ार से संबद्ध तुलनपत्रेतर लेनदेन के लिए ऋण परिवर्तन गुणक निम्नानुसार हैंः

सारणी 8 : ऋण परिवर्तन गुणक - गैर-बाजार आधारित तुलनपत्रेतर मदें

क्र. सं.	लिखत	ऋण परिवर्तन गुणक (प्रतिशत में)

---

[14] „™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ (ˆÅ) 100 ¥¸¸‰¸ ².ˆÅú ›¸ˆÅ™ †µ¸ ¬¸º¢¨¸š¸¸ (□¸¸½ ¢¤¸›¸¸ ©¸÷¸Ä ¢›¸£¬÷¸ ›¸íì ˆÅú □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾) ˆ½Å Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸½ Ÿ¸½¿ □¸í¸ ,¸í¢£÷¸ ¢í¬¬¸¸ ². 60 ¥¸¸‰¸ ¿ í¾, 40 ¥¸¸‰¸ ²œ¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ,›¸¸í¢£÷¸ ¢í¬¬¸½ œ¸£ 20 œÏ¢÷¸©¸÷¸ ˆÅ¸ ¬¸ú¬¸ú‡œ¸€ ¥¸¸Š¸» í¸½Š¸¸ (□¸»¿¢ˆÅ †µ¸ ¬¸º¢¨¸š¸¸ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸÷¸À ¨¸«¸Ä Ÿ¸½¿ ‡ˆÅ ¤¸¸£ ¬¸Ÿ¸ú®¸¸/›¸¨¸ú"ˆÅ£µ¸ ˆ½Å ,š¸ú›¸ í¸½÷¸ú í¾) 8 ¥¸¸‰¸ ²œ¸¡¸¸½¿ (40 ¥¸¸‰¸ ².ˆÅ¸ 20 œÏ¢÷¸©¸÷¸) ˆÅú †µ¸ ¬¸Ÿ¸÷¸º¥¡¸ £¸¢©¸ œ¸£ ,›¸¸í¢£÷¸ ¢í¬¬¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸¢£÷¸ œ¸¢£¬¸¿œ¸¢÷÷¸ œÏ¸œ¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆÅ¸„¿'£œ¸¸'úÄ/£½¢'¿Š¸ ˆÅ¸½ ¥¸¸Š¸» „¢□¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ¥¸Š¸¸¡¸¸ □¸¸‡Š¸¸ — ,›¸¸í¢£÷¸ ¢í¬¬¸½ (. 60 ¥¸¸‰¸ ²) œ¸£ ˆÅ¸„¿'£œ¸¸'úÄ/£½¢'¿Š¸ ˆÅ¸½ ¥¸¸Š¸» □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ¥¸Š¸½Š¸¸ —

(‰¸) ‡ˆÅ ¤¸"õú œ¸¢£¡¸¸½□¸›¸¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ 700 ˆÅ£¸½"õ ².ˆÅ¸ Ÿ¸ú¡¸¸™ú †µ¸ Ÿ¸¿□¸»£ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ¢□¸¬¸½ ÷¸ú›¸ ¨¸«¸Ä ˆÅú ,¨¸¢š¸ ˆ½Å ™¸¾£¸› ÇÅ¢Ÿ¸ˆÅ ³œ¸ ¬¸½ „œ¸¡¸¸½Š¸ Ÿ¸½¿ ¥¸¸¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — Ÿ¸¿□¸»£ú ˆÅú ©¸÷¸½ô ÷¸ú›¸ ¬÷¸£¸½¿ Ÿ¸½¿ ,¸í£µ¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ,›¸ºŸ¸¢÷¸ ™½÷¸ú íÿ - œ¸í¥¸½ ¬÷¸£ Ÿ¸½¿ 150 ˆÅ£¸½" ². õ, ™»¬¸£½ Ÿ¸½¿ ². 200 ˆÅ£¸½"õ ÷¸˜¸¸ ÷¸ú¬¸£½ Ÿ¸½¿ ². 350 ˆÅ£¸½"õ — „š¸¸£ˆÅ÷¸¸Ä ˆÅ¸½ ¬÷¸£ II ÷¸˜¸¸ III ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ,¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆºÅŽ ,¸¾œ¸□¸¸¢£ˆÅ÷¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸»µ¸Ä ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¤¸¸™, ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸ ¬œ¸«' ,›¸ºŸ¸¸½™›¸ ,¸¨©¡¸ˆÅ í¾ — ¡¸¢™ „š¸¸£ˆÅ÷¸¸Ä ›¸½ ¬÷¸£ I ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ². 50 ˆÅ£¸½"õ ,¸í¢£÷¸ ¢ˆÅ‡ íÿ, ÷¸¸½ ˆ½Å¨¥¸ ¬÷¸£ I ˆ½Å ¬¸¿™ž¸Ä Ÿ¸½¿ ,›¸¸í¢£÷¸ ¢í¬¬¸½ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅú □¸¸‡Š¸ú — ,˜¸¸Ä÷¸Ã ¨¸í í¸½Š¸ú ². 100 ˆÅ£¸½"õ — ¡¸¢™ ¬÷¸£ I ‡ˆÅ ¨¸«¸Ä ˆ½Å ž¸ú÷¸£ œ¸»µ¸Ä ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ í¾ ÷¸¸½ ¬¸ú¬¸ú‡œ¸€ 20 œÏ¢÷¸©¸÷¸ í¸½Š¸¸ ÷¸˜¸¸ ¡¸¢™ ¨¸í ‡ˆÅ ¨¸«¸Ä ¬¸½ ,¢š¸ˆÅ í¾ ÷¸¸½ ¥¸¸Š¸» ¬¸ú¬¸ú‡œ¸€ 50 œÏ¢÷¸©¸÷¸ í¸½Š¸¸ —

1.	प्रत्यक्ष ऋण स्थानापन्न, उदाहरण के लिए ऋणग्रस्तता की सामान्य गारंटियां (जिनमें ऋण तथा प्रतिभूतियों के लिए वित्तीय गारंटियों के रूप में कार्य करनेवाले उद्यत (स्टैंड बाय) साख पत्र, ऋण प्रतिभूतीकरण लेनदेन के लिए नकदी सुविधाएं शामिल हैं) तथा स्वीकृतियां (जिनमें स्वीकृति के स्वरूप के बेचान शामिल हैं)। (अर्थात् हानि का जोखिम, काउंटर पार्टी अथवा जिस पार्टी के विरुद्ध संभाव्य दावा प्राप्त किया है, उस की ऋण पात्रता पर निर्भर है।)	100
क्र. सं.	**लिखत**	**ऋण परिवर्तन गुणक (प्रतिशत में)**
2.	कुछ लेनदेन से संबंधित आकस्मिक मदें (उदाहरणार्थ, निष्पादन बाण्ड, बिड बाण्ड, वारंटी, इंडेम्निटी तथा किसी खास लेनदेन से संबंधित उद्यत साख पत्र)	50
3.	जारीकर्ता बैंक तथा पुष्टि करने वाला बैंक दोनों के लिए वस्तुओं की आवाजाही (उदाहरणार्थ, अंडरलाइंग शिपमेंट द्वारा संपार्श्विकृत प्रलेखी साख/ऋण) से पैदा होनेवाले अल्पावधि स्व-परिसमापक व्यापार पत्र	20
4.	विक्रय तथा पुनः क्रय करार तथा आश्रय (रिकोर्स) सहित परिसंपत्ति बिक्री जहां ऋण जोखिम बैंक के पास रहता है । (इन मदों को परिसंपत्ति के प्रकार के अनुसार जोखिम भारित किया जाना है न कि जिस प्रकार की काउंटर पार्टी के साथ यह लेनदेन किया गया है उसके अनुसार)	100
5.	वायदा परिसंपत्ति खरीद, वायदा जमाराशियां तथा अंशतः प्रदत्त शेयर तथा प्रतिभूतियां जो कुछ ड्रॉडाउन सहित प्रतिबद्धताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं । *(इन मदों को परिसंपत्ति के प्रकार के अनुसार जोखिम भारित किया जाना है न कि जिस प्रकार की काउंटर पार्टी के साथ यह लेनदेन किया गया है उसके अनुसार)	100
6.	बैंकों द्वारा बैंक की प्रतिभूतियां उधार देना अथवा प्रतिभूतियों को संपार्श्विक के रूप में दर्ज करना जिनमें ऐसे उदाहरण भी शामिल हैं जहां ये रिपो स्वरूप के लेनदेनों (अर्थात् पुनर्खरीद/प्रति पुनर्खरीद तथा प्रतिभूति उधार देने/प्रतिभूति उधार लेने के लेनदेन) के कारण होते हैं ।	100
7.	नोट निर्गमन सुविधा तथा परिक्रामी / गैर-परिक्रामी हामीदारी सुविधाएं	50
8.	कुछ ड्रॉडाउन सहित प्रतिबद्धताएं	100
9.	निम्नलिखित अवधि की मूल परिपक्वता वाली अन्य प्रतिबद्धताएं (उदाहरणार्थ, औपचारिक उद्यत सुविधाएं तथा ऋण व्यवस्था) क) एक वर्ष तक ख) एक वर्ष से अधिक इसी तरह की प्रतिबद्धताएं जो बैंक द्वारा किसी भी समय बिना कोई पूर्व सूचना के बिना शर्त निरस्त की जा सकती हैं अथवा	 20 50 0

	जिनके संबंध में उधारकर्ता की ऋण पात्रता में कमी आ जाने के कारण स्वतः निरस्त होने का प्रावधान है ।	
10.	अधिग्रहण करनेवाली संस्था की बहियों में अंतरण (टेक-आउट) वित्तपोषण	
	i) बिना शर्त अंतरण वित्तपोषण	100
	ii) सशर्त अंतरण वित्तपोषण	50

v) बाज़ार से संबंध न रखनेवाले तुलनपत्रेतर मदों के संबंध में, बैंकेतर काउंटरपार्टियों के साथ किए गए निम्नलिखित लेनदेन को बैंकों पर दावा माना जाएगा :

- अन्य बैंकों की काउंटर गारंटियों की जमानत पर बैंकों द्वारा जारी गारंटियां।
- अन्य बैंकों द्वारा भुनाए गये प्रलेखी बिलों की पुनर्भुनाई तथा बैंकों द्वारा भुनाए गए बिल, जिन्हें किसी अन्य बैंक ने स्वीकार किया है, को बैंक पर निधिक दावा समझा जाएगा।

उपर्युक्त सभी मामलों में बैंक को इस बात से पूर्णतः संतुष्ट होना चाहिए कि जोखिम एक्सपोज़र वास्तव में दूसरे बैंक पर है। यदि वे इस बात से संतुष्ट हैं कि जोखिम एक्सपोज़र दूसरे बैंक पर है तो वे इन एक्सपोज़रों पर पैराग्राफ 5.6 में वर्णित किए गए अनुसार बैंकों पर लागू जोखिम भार निर्धारित कर सकते हैं।

5.15.3 <u>बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदें</u>

i) पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन से बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदों से होनेवाले जोखिम भारित तुलनपत्रेतर ऋण एक्सपोज़र की गणना करते समय बैंकों को अपनी बैंकिंग तथा ट्रेडिंग बही में धारित सभी बाज़ार संबंधित लेनदेन जिनके कारण तुलनपत्रेतर ऋण जोखिम पैदा होते हैं, को शामिल करना होगा ।

ii) बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदों पर ऋण जोखिम काउंटर पार्टी की चूक की स्थिति में संविदा द्वारा विनिर्दिष्ट नकदी प्रवाह को प्रतिस्थापित करने में बैंक की लागत है। यह अन्य बातों के साथ-साथ संविदा की परिपक्वता तथा आधारभूत लिखत की दरों की अस्थिरता पर निर्भर होगा ।

iii) बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदों में निम्नलिखित शामिल होंगे :

क) ब्याज की संविदाएं - जिनमें एकल मुद्रा ब्याज दर स्वैप्स, बेसिस स्वैप्स, वायदा दर करार तथा ब्याज दर फ्यूचर्स शामिल हैं;

ख) विदेशी मुद्रा संविदाएं जिनमें स्वर्ण से संबंधित संविदाएं शामिल हैं - इनमें क्रॉस करेन्सी स्वैप्स (क्रॉस करेन्सी ब्याज दर स्वैप्स सहित), वायदा विदेशी मुद्रा संविदाएं, करेंसी फ्यूचर्स, करेन्सी ऑप्शन्स शामिल हैं;

ग) रिज़र्व बैंक द्वारा विनिर्दिष्ट रूप से अनुमत कोई अन्य बाज़ार संबद्ध संविदाएं जिनसे बाज़ार जोखिम होता है।

iv) निम्नलिखित के लिए पूंजी अपेक्षाओं से छूट अनुमत है :

क) विदेशी मुद्रा (स्वर्ण को छोड़कर) संविदाएं जिनकी मूल परिपक्वता 14 कैलेंडर दिन अथवा उससे कम है; तथा

ख) फ्यूचर तथा ऑप्शन एक्स्चेंजों पर खरीद-बिक्री किए गए लिखत जो बाज़ार दर पर दैनंदिन मूल्यांकन तथा मार्जिन भुगतानों के अधीन हैं।

v) डेरिवेटिव सौदों और प्रतिभूति वित्तपोषण लेनदेन (उदाहरण के लिए, संपाश्र्वीकृत उधार और ऋणदायी बाध्यता, रेपो) के कारण केंद्रीय काउंटर पार्टियों के प्रति एक्सपोज़र को काउंटर पार्टी ऋण जोखिम के लिए शून्य एक्सपोज़र मूल्य दिया जाएगा, क्योंकि यह माना गया है कि केंद्रीय काउंटर पार्टियों का अपनी काउंटर पार्टियों के प्रति एक्सपोज़र दैनिक आधार पर पूर्णतया संपाश्र्वीकृत है और इस तरह से केंद्रीय काउंटर पार्टी के ऋण जोखिम एक्सपोज़र को सुरक्षा मिली हुई है ।

vi) केंद्रीय काउंटरपार्टियों के पास संपार्श्विक के रूप में रखी गयी बैंक प्रतिभूतियों पर 100 प्रतिशत का ऋण परिवर्तन गुणक (सीसीएफ) लगाया जाएगा तथा इससे प्राप्त तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र पर केंद्रीय काउंटर पार्टी के स्वरूप के अनुसार उपयुक्त जोखिम भार लगाया जाएगा । भारतीय समाशोधन निगम (सीसीआइएल) के मामले में जोखिम भार 20 प्रतिशत होगा और अन्य काउंटर पार्टियों के मामले में उनको दी गयी रेटिंग के अनुसार होगा ।

vii) बैंकिंग बही अथवा ट्रेडिंग बही में से किसी में भी धारित बाज़ार संबंधित तुलनपत्रेतर मद की ऋण समतुल्य राशि को वर्तमान एक्सपोज़र पद्धति द्वारा निर्धारित किया जाए।

5.15.4 <u>वर्तमान एक्सपोज़र पद्धति</u>

i) वर्तमान एक्सपोज़र पद्धति का प्रयोग करके अभिकलित किये गये बाजार संबद्ध तुलनपत्रेतर लेनदेन की ऋण समतुल्य राशि इन संविदाओं के वर्तमान ऋण एक्सपोज़र तथा संभाव्य भावी ऋण एक्सपोज़र का जोड़ है। ऋण एक्सपोज़र की गणना करते समय बैंक 'बिक्री किये गये ऑप्शन' को गणना से बाहर रख सकते हैं, बशर्ते संपूर्ण प्रीमियम/शुल्क या किसी अन्य प्रकार की आय प्राप्त हुई हो/वसूल हुई हो ।

ii) वर्तमान ऋण एक्सपोजर को इन संविदाओं के बाज़ार दर पर अंकित धनात्मक मूल्य के जोड़ के रूप में परिभाषित किया जाता है । वर्तमान एक्सपोज़र पद्धति के अंतर्गत इन संविदाओं का बाज़ार दर पर अंकन करके वर्तमान ऋण एक्सपोज़र की आवधिक गणना की जाती है और इस प्रकार वर्तमान ऋण एक्सपोज़र निश्चित किया जाता है।

iii) संभाव्य भावी ऋण एक्सपोज़र का निर्धारण, इस बात पर ध्यान दिए बिना कि संविदा का बाज़ार दर पर अंकित मूल्य शून्य, धनात्मक अथवा ऋणात्मक है, इन संविदाओं में से प्रत्येक संविदा की परिकल्पित (नोशनल) मूल राशि का, लिखत के स्वरूप तथा अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार नीचे दर्शाए गए संबंधित अतिरिक्त गुणक द्वारा गुणा करके, किया जाएगा।

सारणी 9 : बाज़ार संबद्ध तुलनपत्रेतर मदों के लिए सीसीएफ

अवशिष्ट परिपक्वता	ऋण परिवर्तन गुणक	
	ब्याज दर संविदा	स्वर्ण तथा विनिमय दर संविदा
एक वर्ष या कम	0.50 प्रतिशत	2.00 प्रतिशत
एक वर्ष सेअधिक से पांच वर्ष तक	1.00 प्रतिशत	10.00 प्रतिशत
पांच वर्ष से अधिक	3.00 प्रतिशत	15.00 प्रतिशत

iv) मूल राशि के बहुविध विनिमय वाली संविदाओं के लिए अतिरिक्त गुणकों को संविदा में शेष भुगतानों की संख्या द्वारा गुणा किया जाना चाहिए ।

v) ऐसी संविदाओं के लिए, जिनकी रचना इस प्रकार की गयी है कि विनिर्दिष्ट भुगतान की तारीखों के बाद बकाया एक्सपोज़र का निपटान किया जाता है तथा शर्तों को इस प्रकार पुनर्निर्धारित किया जाता है कि इन विनिर्दिष्ट तारीखों को संविदा का बाज़ार मूल्य शून्य होता है, तो ऐसी संविदाओं की अवशिष्ट परिपक्वता अवधि अगली पुनर्निर्धारित तारीख की अवधि तक निर्धारित की जाएगी।तथापि, ऐसी ब्याज दर संविदाओं के मामले में जिनकी शेष परिपक्वता अवधियाँ एक वर्ष से अधिक हैं और जो उपर्युक्त मानदंड पूर्ण करती हैं, ऋण परिवर्तन गुणक अथवा अतिरिक्त गुणक 1.0 प्रतिशत के न्यूनतम के अधीन होगा ।

vi) एकल मुद्रा अस्थिर/अस्थिर ब्याज दर स्वैप्स के लिए किसी भी संभाव्य भावी ऋण एक्सपोज़र की गणना नहीं की जाएगी; इन संविदाओं पर ऋण एक्सपोज़र का मूल्यांकन केवल उनके बाज़ार दर पर अंकित मूल्य के आधार पर किया जाएगा ।

vii) संभाव्य भावी एक्सपोज़र, प्रत्यक्ष परिकल्पित राशियों के बजाय प्रभावी परिकल्पित राशियों पर आधारित होने चाहिए। कथित परिकल्पित राशि को लेनदेन की रचना द्वारा लिवरेज अथवा वर्धित किए जाने की स्थिति में संभाव्य भावी एक्सपोज़र निर्धारित करते समय बैंकों को प्रभावी परिकल्पित राशि का उपयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए, 1 मिलियन अमरीकी डालर की कथित परिकल्पित राशि बीपीएलआर की दो गुनी आंतरिक दर के आधार पर भुगतान के साथ 2 मिलियिन अमरीकी डालर की प्रभावी परिकल्पित राशि मानी जाएगी ।

5.15.5 <u>असफल लेनदेन</u>

i) निपटान न की गयी प्रतिभूतियों तथा विदेशी मुद्रा लेनदेन का जहाँ तक संबंध है, लेनदेन की बुकिंग अथवा लेखांकन किसी भी प्रकार का हो, ट्रेड की तारीख से बैंक को काउंटर पार्टी ऋण जोखिम रहता है। इस प्रयोजन से कि समय पर कार्रवाई की जा सके प्रबंधन सूचना प्रस्तुत करने के लिए निपटान न किए गए लेनदेन से होनेवाले ऋण जोखिम एक्सपोज़र को खोजने तथा उसपर निगरानी रखने के लिए उचित प्रणालियों को विकसित, कार्यान्वित करने तथा सुधारने के लिए बैंकों को प्रोत्साहित किया जाता है ।

ii) इस प्रयोजन से कि समय पर कार्रवाई की जा सके प्रबंधन सूचना प्रस्तुत करने के लिए बैंकों को लेनदेन असफल होने की तारीख से असफल प्रतिभूतियों तथा विदेशी मुद्रा लेनदेन की कड़ी निगरानी करनी चाहिए। असफल लेनदेन से विलंबित निपटान अथवा सुपुर्दगी के जोखिम उत्पन्न होते हैं।

iii) अदायगी बनाम सुपुर्दगी (डीवीपी) के माध्यम से निपटाए गए लेनदेन जिसमें प्रतिभूतियों का नकदी के बदले साथ-साथ विनिमय होता है, की असफलता बैंकों को सहमत निपटान कीमत पर मूल्यांकित लेनदेन तथा वर्तमान बाज़ार कीमत (अर्थात् धनात्मक वर्तमान एक्सपोज़र) पर मूल्यांकित लेनदेन के बीच के अंतर की हानि का जोखिम उठाना पड़ता है। असफल लेनदेन जहां तदनुरूप प्राप्य वस्तु (प्रतिभूतियां, विदेशी मुद्राएं अथवा स्वर्ण) की प्राप्ति के बिना नकदी दी जाती है अथवा इसके विपरीत सुपुर्द की जानेवाली वस्तुएं तदनुरूप नकद भुगतान (डीवीपी से इतर अथवा बिना मूल्य सुपुर्दगी) की प्राप्ति के बिना सुपुर्द की गयी हो, के मामले में बैंकों को भुगतान की गयी राशि अथवा सुपुर्द की जानेवाली वस्तुओं की संपूर्ण राशि की हानि का जोखिम उठाना पड़ता है। अतः असफल लेनदेन के लिए पूंजी भार आवश्यक है और उसकी निम्नानुसार गणना की जाए। निम्नलिखित पूंजी व्यवहार सभी असफल लेनदेनों पर लागू होंगे, जिनमें मान्यताप्राप्त समाशोधन गृहों के माध्यम से किए गए लेनदेन भी शामिल हैं। पुनर्खरीद तथा प्रति पुनर्खरीद करार तथा प्रतिभूति उधार देना अथवा लेना जिनका निपटान न हो सका है, को इस पूंजी व्यवहार से छोड़ दिया गया है।

iv) डीवीपी लेनदेन के लिए - यदि निपटान की तारीख से पांच कारोबार के दिनों के बाद भी भुगतान नहीं किए गए है तो बैंकों को लेनदेन के धनात्मक वर्तमान एक्सपोज़र का नीचे दिए गए अनुसार उचित गुणक से गुणन करके **पूंजी भार** की गणना करनी चाहिए। सूचना प्राप्त करने के लिए बैंकों को अपनी सूचना प्रणालियों का उन्नयन करना होगा ताकि आपसी सहमति से निर्धारित निपटान की तारीख के बाद दिनों की संख्या का पता चल सके और तदनुरूप पूंजी भार की गणना हो सके।

आपसी सहमति से निर्धारित निपटान की तारीख के बाद कार्य दिवसों की संख्या	**तदनुरूप जोखिम गुणक**
5 से 15	9 प्रतिशत
16 से 30	50 प्रतिशत
31 से 45	75 प्रतिशत
46 से अधिक	100 प्रतिशत

v) डीवीपी से इतर लेनदेन (स्वतंत्र सुपुर्दगियां) के लिए पहले संविदात्मक भुगतान/सुपुर्दगी चरण के बाद कारोबार का दिन समाप्त होने तक यदि दूसरा चरण प्राप्त नहीं हुआ है तो जिस बैंक ने भुगतान किया है वह अपने एक्सपोज़र को ऋण के रूप में समझेगा। जिन तारीखों को भुगतान के दो चरण किए जाते हैं यदि उक्त तारीखें भुगतान के समय क्षेत्र के अनुसार एक ही हैं तो यह समझा जाता है कि उनका एक ही दिन निपटान किया गया है। उदाहरण के लिए यदि टोकियो में स्थित कोई बैंक 'क्ष' तारीख (जापान स्टैंडर्ड टाईम) को येन अंतरित करता है और 'क्ष' तारीख को (यूएस ईस्टर्न स्टैंडर्ड टाईम) तदनुरूप अमरीकी डालर चिप्स के माध्यम से प्राप्त करता है, तो ऐसा समझा जाएगा कि वह निपटान उसी एक तारीख को हुआ है। बैंक इन दिशानिर्देशों में निर्धारित काउंटर पार्टी जोखिम भारों का प्रयोग करते हुए पूंजी अपेक्षाओं की गणना करेंगे। तथापि, यदि द्वितीय संविदात्मक भुगतान/सुपुर्दगी की तारीख के पांच कारोबार दिनों के बाद भी दूसरा चरण प्रभावी रूप से पूर्ण नहीं हुआ है तो जिस बैंक ने पहला भुगतान चरण पूर्ण किया है वह पूंजी

में से अंतरित मूल्य की पूर्ण राशि तथा प्रतिस्थापन लागत यदि कोई हो, घटाएगा । यह कार्रवाई भुगतान/सुपुर्दगी का दूसरा चरण वास्तव में पूर्ण होने तक लागू होगी ।

5.16 **प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र**

5.16.1 सामान्य

i) कोई प्रतिभूतीकरण लेनदेन जो **अनुबंध 7** (1 फरवरी 2006 के परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 60/21.04.048/2005-06 द्वारा जारी मानक परिसंपत्तियों के प्रतिभूतीकरण संबंधी दिशानिर्देश से उद्धृत) में निर्धारित न्यूनतम अपेक्षाओं को पूर्ण करता है पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन से प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के निम्नलिखित विवेकपूर्ण व्यवहार के लिए पात्र होगा। प्रतिभूतीकरण लेनदेन के प्रति बैंकों का एक्सपोज़र, जिसे प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र कहा गया है, में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं लेकिन यह केवल इन तक ही सीमित नहीं है : निवेशक के रूप में, ऋण संवर्धक के रूप में, चलनिधि दाता, हामीदार, ऋण जोखिम कम करने के तत्व प्रदान करनेवाले के रूप में। ऋण संवर्धन के रूप में दिए गए नकद संपार्श्विकों को भी प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र माना जाएगा। इस भाग में प्रतिभूतीकरण के संबंध में प्रयोग में लाए गए शब्द उपर्युक्त दिशानिर्देशों में दी गई परिभाषा के अनुरूप होंगे । साथ ही निम्नलिखित परिभाषाएं लागू होंगी :

   क) केवल ऋण संवर्धक ब्याज मात्र स्ट्रिप (आइ/ओएस) - तुलन पत्र का एक्सपोज़र जिसे प्रवर्तक द्वारा रिकार्ड किया जाता है, जो (i) आधारभूत एक्सपोज़र से प्राप्त की जानेवाली भावी मार्जिन आय से संबंधित नकदी प्रवाह के मूल्यांकन का प्रतिनिधित्व करता है और (ii) जो चुकौती की प्राथमिकता के अनुसार लेनदेन की अन्य पार्टियों के दावों के अधीनस्थ हैं ।

   ख) ‘अव्यक्त समर्थन’ - बैंक द्वारा प्रतिभूतीकरण को उसकी पूर्व निर्धारित संविदात्मक बाध्यता से अधिक दिया गया समर्थन

   ग) ‘बिक्री पर लाभ’ - प्रतिभूतीकृत परिसंपत्तियों की एसपीवी को बिक्री करते समय प्राप्त लाभ ।

ii) बैंकों को अपने सभी प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के लिए विनियामक पूंजी रखना आवश्यक है, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफों में वर्णित है। इनमें प्रतिभूतीकरण लेनदेन को ऋण जोखिम कम करने वाले कारक प्रदान करने, परिसंपत्ति समर्थित प्रतिभूतियों में निवेश, अधीनस्थ शृंखला रखने तथा चलनिधि सुविधा अथवा ऋण संवर्धन सुविधा देने से उत्पन्न एक्सपोजर शामिल हैं। पुनः खरीदे गए प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र्स को प्रतिधारित प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र समझा जाए।

iii) 1 फरवरी 2006 के दिशानिर्देशों में निर्धारित न्यूनतम अपेक्षाओं को पूर्ण न करनेवाले और इसलिए अनिर्धारण के पात्र न होनेवाले प्रतिभूतीकरण लेनदेन का प्रवर्तक प्रतिभूतीकरण लेनदेन से संबद्ध सभी एक्सपोज़र्स के लिए इस प्रकार पूंजी धारित करेगा

जैसे कि उनका प्रतिभूतीकरण[15] न हुआ हो। इसके साथ ही इस तरह के लेनदेन पर कोई भी 'बिक्री पर लाभ' होने पर प्रवर्तक उसे टीयर 1 पूंजी से कम करेगा।

iv) ऋण विश्लेषण के लिए परिचालनात्मक मानदंड[16]

मानक आस्तियों के प्रतिभूतिकरण पर 1 फरवरी 2006 को जारी भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशानिर्देश में निर्दिष्ट शर्तों के अलावा प्रतिभूतिकृत आस्तियों को अमान्य करने के लिए बैंक के पास निम्नलिखित (क) से (ग) तक के अनुच्छेदों में निर्दिष्ट सूचना होनी चाहिए ।

(क) एक सामान्य नियम के रूप में बैंक को अपने प्रत्येक प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र की जोखिम विशेषता की परिपूर्ण समझ होनी चाहिए, चाहे वे एक्सपोज़र तुलनपत्र में हों या तुलनपत्रेतर हों तथा बैंक को अपने प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के आधारभूत प्रतिभूति समूह की जोखिम विशेषताओं की भी समझ होनी चाहिए ।

(ख) बैंकों को आधारभूत प्रतिभूति समूह के कार्यनिष्पादन संबंधी सूचना तक निरंतर आधार पर सामयिक रूप से पहुंच होनी चाहिए । यह सूचना यथोचित रूप से निम्नानुसार हो सकती है : एक्सपोज़र का प्रकार; देय होने के 30, 60, 90 दिन वाले ऋणों का प्रतिशत; चूक दर; नियत तिथि से पूर्व अदायगी की दरें; फोरक्लोज़र वाले ऋण; संपत्ति का प्रकार; कब्जा; औसत ऋण अंक अथवा ऋण पात्रता की अन्य माप; औसत मूल्य के प्रति ऋण का अनुपात; तथा औद्योगिक और भौगोलिक विविधता ।

(ग) बैंक को किसी प्रतिभूतिकरण लेनदेन की उन सभी संरचनात्मक विशेषताओं की पूरी समझ होनी चाहिए, जो संबंधित लेनदेन के प्रति बैंक के एक्सपोज़र के कार्यनिष्पादन को महत्वपूर्ण रीति से प्रभावित कर सकती हैं । उदाहरण के लिए संविदागत वाटरफॉल तथा वॉटरफॉल से जुड़े उत्प्रेरक, ऋण संवर्धन, चलनिधि संवर्धन, बाज़ार मूल्य उत्प्रेरक और चूक की कारोबार विशिष्ट परिभाषाएं ।

5.16.2 <u>पूंजीगत निधियों में से प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र की कटौती</u>

(i) जब किसी बैंक को विनियामक पूंजी में से प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र को घटाना अपेक्षित है तो उसे टीयर 1 से 50 प्रतिशत तथा टीयर II से 50 प्रतिशत घटाया जाए जब तक कि स्पष्टतः अन्यथा प्रावधान न किया गया हो। पूंजी में से की गई कटौती की गणना संबंधित प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के लिए रखे गए विशिष्ट प्रावधानों को घटाकर की जाए।

---

[15] „™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ - ¡¸¢™ 100 ². ˆ½Å œÏ¢÷¸ž¸»÷¸úˆÅ£µ¸ ¥¸½›¸™½›¸ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸»í Ÿ¸½¿ 80 œÏ¢÷¸©¸÷¸ ‡‡‡ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸¿, 10 œÏ¢÷¸©¸÷¸ ¤¸ú¤¸ú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸¿ ,¸¾£ 10 œÏ¢÷¸©¸÷¸ £½¢'¿Š¸ ›¸ ˆÅú Š¸ƒÄ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸¿ íÿ ,¸¾£ ¥¸½›¸™½›¸ ¨¸¸¬÷¸¢¨¸ˆÅ ¢¤¸ÇÅú Ÿ¸¸›¸™¿"¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸»µ¸Ä ›¸íì ˆÅ£÷¸¸ í¾ ÷¸¸½ ‡½¬¸¸ ¬¸Ÿ¸□¸¸ □¸¸‡Š¸¸ ¢ˆÅ „¬¸ ¥¸½›¸™½›¸ Ÿ¸½¿ ¬¸ž¸ú ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ œÏ¨¸÷¸ÄˆÅ ›¸½ š¸¸£µ¸ ¢ˆÅ‡ íÿ — ƒ¬¸ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³œ¸ ‡‡‡ £½¢'¿Š¸ ¨¸¸¥¸ú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸½¿ œ¸£ 20 œÏ¢÷¸©¸÷¸ ˆÅ¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ž¸¸£ ¥¸¸Š¸» í¸½Š¸¸ ÷¸˜¸¸ ¤¸ú¤¸ú £½¢'¿Š¸ ¨¸¸¥¸ú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ,¿¢ˆÅ÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ ÷¸˜¸¸ ,›¸£½'½" œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‹¸'¸¡¸¸ □¸¸‡Š¸¸— ,÷¸À œ¸»¿□¸ú œ¸£ œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸ú œÏž¸¸¨¸ í¸½Š¸¸ ². 21.44 (16*9%+20)

[16] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

(ii) ऋण संवर्धन जिनमें ऋण संवर्धक आइ/ओएस (नीचे विनिर्दिष्ट किए गए अनुसार 'बिक्री पर लाभ' को टीयर 1 से घटाकर) तथा नकद संपार्श्विक शामिल हैं, जिन्हें घटाया जाना आवयक है, 50 प्रतिशत टीयर 1 से तथा 50 प्रतिशत टीयर II से घटाया जाए।

(iii) बैंक 'बिक्री पर लाभ' को यदि उसे लाभ मानने की अनुमति दी जाती है, टीयर 1 पूंजी से घटायेगा । तथापि, मानक आस्तियों के प्रतिभूतीकरण संबंधी दिशानिर्देशों के अनुसार बैंकों को एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों की अवधि तक लाभ को अमोर्टाइज करने की अनुमति दी जाती है । लाभ और हानि खाते में अमोर्टाइजेशन के माध्यम से इस प्रकार निर्धारित लाभ की राशि को घटाने की आवश्यकता नहीं है ।

(iv) 'बी +तथा उससे कम' का दीर्घावधि रेटिंग वाला कोई भी प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र जब किसी प्रवर्तक द्वारा धारित न किया गया हो और 'बीबी + तथा उससे कम' का दीर्घावधि रेटिंगवाला कोई प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र जब प्रवर्तक द्वारा धारित हो, तो उसे 50 प्रतिशत टीयर 1 तथा 50 प्रतिशत टीयर II पूंजी से घटाया जाएगा ।

(v) पैराग्राफ 5.16.8 में निर्दिष्ट किए गए अनुसार पात्र चलनिधि सुविधा को छोड़कर, कोई भी रेटिंग न किए गए प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र को 50 प्रतिशत टीयर 1 पूंजी से और 50 प्रतिशत टीयर II पूंजी से घटाया जाएगा। रेटिंग न की गई तथा अपात्र चलनिधि सुविधा में आहरित तथा अनाहरित, दोनों भागों को 50 प्रतिशत टीयर 1 तथा 50 प्रतिशत टीयर II पूंजी से घटाया जाएगा।

(vi) हामीदारी से प्रवर्तक को अंतरित प्रतिभूतियों की धारिताओं को अर्जन होने के बाद तीन महीनों की अवधि के भीतर ही, थर्ड पार्टियों को बेचा जाना चाहिए। निर्धारित समय-सीमा के भीतर बिक्री न हो पाने की स्थिति में निर्गम की मूल राशि के 20 प्रतिशत से अधिक कोई भी धारिता जिसमें द्वितीयक बाज़ार खरीद शामिल हैं को 50 प्रतिशत टीयर 1 तथा 50 प्रतिशत टीयर II पूंजी से घटाया जाएगा ।

5.16.3 <u>अव्यक्त समर्थन</u>

i) प्रवर्तक प्रतिभूतीकरण लेनदेन में निवेशकों को कोई भी अव्यक्त समर्थन प्रदान नहीं करेगा।

ii) जब ऐसा समझा जाता है कि बैंक ने प्रतिभूतीकरण के लिए अव्यक्त समर्थन दिया है तो;

क) उसे कम-से-कम प्रतिभूतीकरण लेनदेन से संबद्ध सभी एक्सपोज़र के लिए इस तरह पूंजी रखनी होगी जैसे उनका प्रतिभूतीकरण न किया गया हो

ख) अतिरिक्त रूप से, बैंक को ऊपर दी गयी परिभाषा के अनुसार बिक्री पर लाभ को टीयर 1 पूंजी में से घटाना होगा।

ग) इसके अतिरिक्त प्रतिभूतीकरण लेनदेनों के संदर्भ में जहां यह समझा गया है कि बैंक ने अव्यक्त समर्थन प्रदान किया है, यह अपेक्षित है कि वह सार्वजनिक रूप से प्रकट करे कि (क) उसने गैर-संविदागत समर्थन प्रदान किया है (ख) अव्यक्त समर्थन के ब्यौरे तथा (ग) बैंक की विनियामक पूंजी पर अव्यक्त समर्थन का प्रभाव

iii) जहां प्रतिभूतीकरण लेनदेन में क्लीन अप कॉल निहित होता है और प्रवर्तक (ओरिजनेटर) द्वारा क्लीन अप कॉल का उन परिस्थितियों में इस्तेमाल किया जा सकता है जहां क्लीन अप कॉल के इस्तेमाल से कारगर रूप से ऋण संवर्धन होता है, वहां क्लीन अप कॉल को अव्यक्त सहायता माना जाएगा तथा संबंधित प्रतिभूतीकरण लेनदेन पर उपर्युक्त निर्धारण लागू होंगे।

5.16.4 <u>बाह्य रेटिंग लागू करना</u>

बाह्य ऋण मूल्यांकनों के प्रयोग के संबंध में निम्नलिखित परिचालन मानदंड लागू हैं :

i) बैंक को प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के किसी विशिष्ट प्रकार के लिए सुसंगत रूप से पात्र बाह्य ऋण रेटिंग ऐजेन्सियों के बाह्य ऋण मूल्यांकन सुसंगत रूप से लागू करने चाहिए। इसके अतिरिक्त, बैंक एक या अधिक शृंखलाओं के लिए एक बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सी द्वारा जारी ऋण मूल्यांकन का तथा उसी प्रतिभूतीकरण ढाँचे के भीतर अन्य पोज़िशनों (चाहे धारित हो या क्रय की गयी हो) के लिए किसी दूसरी बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सी द्वारा जारी ऋण मूल्यांकनों का इस्तेमाल नहीं कर सकता (जिनकी पहली बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सी द्वारा रेटिंग की जा सकती हो या न की जा सकती हो)। जहां दो या अधिक पात्र बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सियों का इस्तेमाल किया जा सकता है तथा वे एक ही प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के ऋण जोखिम का अलग-अलग रूप में मूल्यांकन करती हैं, तो वहां पैरा 6.7 लागू होगा।

ii) यदि सीआरएम प्रदाता पैरा 7.5.5 में परिभाषित पात्र गारंटीदाता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है तो शामिल प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़रों को रेटिंग न किये गये के रूप में माना जाना चाहिए ।

iii) उस स्थिति में जहां एसपीवी द्वारा ऋण जोखिम कम करने के तत्व प्राप्त नहीं किये गये हैं बल्कि एक खास ढांचे के भीतर विशिष्ट प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र पर लागू किये गये है (जैसे एबीएस श्रृंखला), बैंक को एक्सपोज़र को रेटिंग न किये गये के रूप में मानना चाहिए तथा तब पैरा 7 में बताये गये सीआरएम व्यवहार का प्रयोग करना चाहिए।

iv) बाह्य ऋण मूल्यांकनों को लागू करने के अन्य पहलू पैरा 6 में दिये गये दिशानिर्देशों के अनुसार होंगे ।

v) किसी बैंक को जोखिम भार निर्धारण के प्रयोजन से बाह्य ऋण मूल्यांकन का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जाएगी, यदि उक्त मूल्यांकन कम-से-कम अंशतः बैंक के गैर-निधि आधारित समर्थन पर आधारित हो । उदाहरण के लिए, यदि कोई बैंक एबीएस/एमबीएस खरीदता है, जहां वह प्रतिभूतिकरण कार्यक्रम को गैर-निधि आधारित प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र प्रदान करता है (उदाहरण के लिए चलनिधि सुविधा अथवा ऋण संवर्धन) और प्रतिभूतिकृत आस्तियों/एबीएस/एमबीएस की विभिन्न श्रेणियों के ऋण मूल्यांकन को निर्धारित करने में उक्त एक्सपोज़र की एक भूमिका है तो बैंक को उक्त प्रतिभूतिकृत आस्तियां/एबीएस/एमबीएस की विभिन्न श्रेणियों पर ऐसे कार्रवाई करनी चाहिए जैसे वे

रेटेड न हो । बैंक को अन्य प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के लिए (उदाहरण के लिए चलनिधि सुविधा और/या ऋण संवर्धन) पूंजी रखना जारी रखना चाहिए ।[17]

5.16.5 जोखिम भारित प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र

i) बैंक तुलनपत्र के प्रतिभूतीकरण एक्सपोजर की जोखिम भारित राशि की गणना के लिए एक्सपोजरों की मूलधन की राशि (विशिष्ट प्रावधानों को घटाने के बाद) को लागू जोखिम भार से गुणा करना होगा।

ii) प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र की जोखिम भारित परिसंपत्ति की राशि की गणना एक्सपोज़र की राशि को उचित जोखिम भार से गुणा कर की जाती है ; ये जोखिम भार चुनी गयी बाह्य क्रेडिट रेटिंग एजेन्सियों द्वारा उन एक्सपोज़रों को दी गयी मद संदर्भित रेटिंग के अनुसार निश्चित किये जाते हैं जैसा कि नीचे की सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी 10 : प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र - दीर्घावधि रेटिंग के लिए जोखिम भार रूपरेखा

देशी रेटिंग एजेन्सियां	एएए	एए	ए	बीबीबी	बीबी	बी और उससे कम या रेटिंग न किये गये
प्रवर्तकों को छोड़कर बेंकों के लिए जोखिम भार	20%	30%	50%	100%	350%	कटौती*
प्रवर्तक के लिए जोखिम भार	20%	30%	50%	100%	- - -- कटौती*- - - -	

* पैरा 5.16.2 के प्रावधानों से नियंत्रित

iii) वाणिज्यिक स्थावर संपदा एक्सपोज़र द्वारा समर्थित बंधक आधारित प्रतिभूति _जैसे कि ऊपर पैरा 5.11 में परिभाषित है, के संदर्भ में प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र की जोखिम भारित आस्ति की राशि की गणना एक्सपोज़र की राशि को उचित जोखिम भार से गुणा कर की जाती है; ये जोखिम भार चुनी गयी बाह्य ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा उन एक्सपोजरों को दी गयी मद संदर्भित रेटिंग के अनुसार निश्चित किये जाते हैं जैसा कि नीचे की सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी 11 : वाणिज्यिक स्थावर संपदा एक्सपोजर - दीर्घावधि रेटिंग के लिए जोखिम भार रूपरेखा

देशी रेटिंग एजेन्सियां	एएए	एए	ए	बीबीबी	बीबी	बी और उससे कम या रेटिंग न किये गये
जोखिम भार	50%	75%	100%	150%	400%	कटौती*
प्रवर्तक के लिए जोखिम भार	50%	75%	100%	150%	- - -- कटौती*- - - -	

- पैरा 5.16.2 के प्रावधानों से नियंत्रित

सारणी 11 क : वाणिज्यिक स्थावर संपदा पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र - दीर्घावधि रेटिंग के अनुसार जोखिम भार

[17] ˜¼Åœ¸¡¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

देशी रेटिंग एजेन्सियां	एएए	एए	ए	बीबीबी	बीबी	बी और उससे कम या रेटिंग न किये गये
जोखिम भार	50%	75%	100%	150%	400%	कटौती*
प्रवर्तक के लिए जोखिम भार	50%	75%	100%	150%	- - - -- कटौती*- - - -	

- अन्य सभी विनियामक मानदंड उसी प्रकार लागू होंगे जैसे इस पैरा (पैरा 5.16) में ऊपर निर्धारित किये गये हैं ।

iv) प्रतिभूतीकरण लेनदेन के भाग के रूप में एसपीवी द्वारा जारी रेटिंग न की गयी प्रतिभूतियों में निवेश करने की बैंकों को अनुमति नहीं है । किंतु बैंकों द्वारा गृहीत ऐसे प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र, जो रेटिंग न किये गये बन सकते हैं या जिन्हें रेटिंग न किये गये माना जाएगा, को पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए पैरा 5.16.2 के प्रावधानों के अनुसार घटाया जाएगा ।

5.16.6 तुलनपत्रेतर प्रतिभूतीकरण एक्सपोजर

i) बैंक रेटिंग किये गये तुलनपत्रेतर प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र की जोखिम भारित राशि की गणना एक्सपोज़र की ऋण समतुल्य राशि को लागू जोखिम भार से गुणा कर करेंगे। जब तक अन्यथा निर्दिष्ट न किया गया हो ऋण समतुल्य राशि एक्सपोज़र की मूल राशि (विशिष्ट प्रावधानों को घटाने के बाद) को 100% सीसीएफ से गुणा कर निकाली जा सकती है।

ii) यदि तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र रेटिंग किया हुआ न हो तो उसे पूंजी में से घटा दिया जाना चाहिए। रेटिंग न की गयी वह पात्र चलनिधि सुविधा इसका अपवाद है जिसके लिए पैरा 5.16.8 में अलग से उपाय निर्दिष्ट किया गया है ।

5.16.7 ऋण जोखिम कम करने के तत्व की पहचान

i) नीचे दी गयी कार्रवाई ऐसे बैंक के संबंध में लागू है जिसने प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के संबंध में ऋण जोखिम कम करने का तत्व प्राप्त कर लिया है। ऋण जोखिम कम करने के तत्व में गारंटियां और पात्र संपार्श्विक शामिल है, जैसा कि इन दिशानिर्देशों में निर्दिष्ट किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में संपार्श्विक का अर्थ उस संपार्श्विक से है जिसका प्रयोग प्रतिभूतीकरण लेनदेन के आधारभूत एक्सपोज़रों के ऋण जोखिम की हेजिंग के बजाय प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र के ऋण जोखिम की हेजिंग के लिए किया गया है ।

ii) प्रवर्तक से भिन्न जब कोई बैंक प्रतिभूतीकरण एक्सपोज़र को ऋण संरक्षण प्रदान करता है तो उसे उक्त एक्सपोज़र संबंधी पूंजी अपेक्षा की ऐसे गणना करनी चाहिए जैसे कि वह उक्त प्रतिभूतीकरण में निवेशक हो। यदि कोई बैंक रेटिंग न किये गये ऋण संवर्धन को संरक्षण प्रदान करता है तो उसे चाहिए कि वह दिये गये ऋण संरक्षण को इस रूप में माने जैसे कि वह सीधे ही रेटिंग न किये गये ऋण संवर्धन को धारित कर रहा हो ।

iii) गारंटीकृत/संरक्षित भाग के लिए पूंजी अपेक्षाओं की गणना मानकीकृत दृष्टिकोण के लिए अपनायी जानेवाली सीआरएम पद्धति के अनुसार की जायेगी जो नीचे पैरा 7 में दी गयी है

। पात्र संपार्श्विक को इन दिशानिर्देशों के अधीन पैरा 7.3.5 में स्वीकृत संपार्श्विक तक सीमित किया गया है । सीआरएम तथा एक्सपोज़र के बीच परिपक्वता असंतुलन के संदर्भ में विनियामक पूंजी निश्चित करने के प्रयोजन के लिए पूंजी अपेक्षा पैरा 7.6 के अनुसार निश्चित की जाएगी । जब हेजिंग किये जानेवाले एक्सपोज़र भिन्न-भिन्न परिपक्वता के हों तब पैरा 7.6.4 तथा 7.6.5 में निर्दिष्ट पद्धति लागू करते हुए सबसे लंबी परिपक्वता का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

5.16.8 चलनिधि सुविधाएं

i) किसी चलनिधि सुविधा को तभी 'पात्र' सुविधा समझा जायेगा जब वह 1 फरवरी 2006 को जारी दिशानिर्देशों में दी गयी सभी न्यूनतम अपेक्षाओं को पूरा करती हो। रेटिंग की गयी चलनिधि सुविधाओं को ऊपर दी गयी सारणियों में उल्लेख किये गये अनुसार चुने गये ईसीएआइ द्वारा उन एक्सपोज़रों को दी गयी विशिष्ट रेटिंग के अनुरूप निर्धारित समुचित जोखिम भार के अनुसार जोखिम भारित या घटाया जाएगा।

ii) रेटिंग न की गयी पात्र चलनिधि सुविधाओं को कटौतियों से छूट होगी और उनके संबंध में निम्नप्रकार कार्रवाई की जायेगी।

क) रेटिंग न की गयी पात्र चलनिधि सुविधा के आहरित और अनाहरित अंशों पर इस सुविधा के अंतर्गत आनेवाले किसी आधारभूत अलग-अलग एक्सपोज़र को दिये जानेवाले उच्चतम जोखिम भार के बराबर जोखिम भार लागू होगा।

ख) रेट न की गयी पात्र चलनिधि सुविधा के अनाहरित अंश पर 50% का ऋण परिवर्तन गुणक लागू होगा ।[18]

5.16.9 पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र

पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र एक प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र है जिसमें आधारभूत एक्सपोज़र-समूह से जुड़े जोखिम श्रेणीबद्ध किये जाते हैं तथा आधारभूत एक्सपोज़र में कम-से-कम एक एक्सपोज़र प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र होता है । इसके अतिरिक्त, एक या अधिक पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के प्रति एक्सपोज़र पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र कहलाता है ।

फिलहाल, पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र भारत में प्रचलित नहीं हैं । तथापि, 1 दिसंबर 2008 का परिपत्र आरबीआइ/2008-09/302 बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 89/ 21.04.141/2008-09 जारी होने के पहले कुछ भारतीय बैंकों ने अपनी विदेश स्थित शाखाओं के माध्यम से सीडीओ तथा अन्य ऐसे ही प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र में निवेश किया है । इनमें से कुछ एक्सपोज़र पुनर्प्रतिभूतिकरण के स्वरूप के हो सकते हैं । ऐसे एक्सपोज़र के लिए जोखिम भार निम्नानुसार होगा :

सारणी 11 : पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र - दीर्घावधि रेटिंग के अनुसार जोखिम भार

---

[18] ˜¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

देशी रेटिंग एजेन्सियां	एएए	एए	ए	बीबीबी	बीबी	बी और उससे म या रेटिंग न किये गये
प्रवर्तक बैंक के अलावा अन्य बैंकों के लिए जोखिम भार	40%	60%	100%	200%	650%	कटौती*
प्रवर्तक के लिए जोखिम भार	40%	60%	100%	200%	- - -- कटौती*- - - -	

*पैरा 5.16.2 के प्रावधानों से नियंत्रित

सारणी 11 क : वाणिज्यिक स्थावर संपदा पुनर्प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र - दीर्घावधि रेटिंग के अनुसार जोखिम भार

देशी रेटिंग एजेन्सियां	एएए	एए	ए	बीबीबी	बी और उससे म या रेटिंग न किये गये
प्रवर्तक बैंक के अलावा अन्य बैंकों के लिए जोखिम भार	200%	200%	200%	400%	कटौती*
प्रवर्तक के लिए जोखिम भार	200%	200%	200%	400%	कटौती*

*पैरा 5.16.2 के प्रावधानों से नियंत्रित

अन्य सभी विनियामक मानदंड उसी प्रकार लागू होंगे जैसे इस पैरा (पैरा 5.10) में ऊपर निर्धारित किये गये हैं ।

6. <u>बाह्य ऋण मूल्यांकन</u>

6.1 <u>पात्र ऋण रेटिंग एजेंसियां</u>

6.1.1 रिज़र्व बैंक ने उन पात्र ऋण रेटिंग एजेन्सियों की पहचान करने की विस्तृत प्रक्रिया अपनायी है जिनकी रेटिंग का इस्तेमाल बैंक जोखिम भार देने के लिए करेंगे। संशोधित ढांचे के प्रावधानों के अनुरूप जहां बैंक द्वारा दी जा जानेवाली सुविधा के संदर्भ में उसके पास किसी पात्र ऋण रेटिंग एजेन्सी द्वारा दी गयी रेटिंग विद्यमान है, वहां दावे का जोखिम भार इस रेटिंग पर आधारित होगा।

6.1.2 संशोधित ढांचे में दिये गये सिद्धांतों के अनुसरण में भारतीय रिज़र्व बैंक ने यह निर्णय लिया है कि बैंक पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए अपने दावों को जोखिम भार देने के उद्देश्य से निम्नलिखित देशी ऋण रेटिंग एजेन्सियों (अंग्रेजी वर्णक्रमानुसार दी गयी) की रेटिंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं :

- क) क्रेडिट एनालिसेस एंड रिसर्च लिमिटेड;
- ख) क्रिसिल लिमिटेड;
- ग) फिच इंडिया; तथा
- घ) इकरा लिमिटेड

6.1.2.1 भारतीय रिज़र्व बैंक ने यह निश्चय किया है कि बैंक जहां कहीं निर्दिष्ट किया गया हो पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए अपने दावों को जोखिम भार देने के उद्देश्य से

निम्नलिखित अंतरराष्ट्रीय ऋण रेटिंग एजेन्सियों (अंग्रेजी वर्णक्रमानुसार दी गयी) की रेटिंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं :

क) फिच;
ख) मूडीज़; तथा
ग) स्टैंडर्ड एंड पुअर्स

6.2 बाह्य रेटिंग लागू करने की व्याप्ति

6.2.1 बैंकों को चाहिए कि वे चुनी गयी ऋण रेटिंग एजेन्सियों तथा उनकी रेटिंग का हर प्रकार के दावे के लिए जोखिम भार देने तथा जोखिम प्रबंधन प्रयोजन दोनों, के लिए इस्तेमाल करें। बैंकों को भिन्न-भिन्न ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दिये गये मूल्याकनों को अपने स्वार्थ के अनुसार अपनाने की अनुमति नहीं होगी। यदि कोई बैंक दावे के किसी प्रकार के लिए चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों की रेटिंग का इस्तेमाल करना चाहता है तो वह केवल उन ऋण रेटिंग एजेन्सियों की रेटिंग का इस्तेमाल कर सकता है, भले ही इनमें से कुछ दावों की रेटिंग ऐसी अन्य चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा की गयी हो जिनकी रेटिंग का इस्तेमाल न करने का बैंक ने निश्चय किया है। बैंक एक कंपनी बांड के लिए एक एजेन्सी की रेटिंग तथा उसी काउंटर पार्टी के प्रति दूसरे एक्सपोज़र के लिए दूसरी एजेन्सी की रेटिंग का इस्तेमाल तब तक नहीं करेंगे जब तक कि संबंधित एक्सपोज़र की रेटिंग चुनी गयी ऋण रेटिंग एजेन्सियों में से केवल उस एक एजेन्सी द्वारा की गयी हो जिसकी रेटिंग का इस्तेमाल करने का बैंक ने निश्चय किया है। किसी कंपनी समूह के भीतर किसी एक संस्था के लिए किये गये बाह्य मूल्यांकनों का उसी समूह की अन्य संस्थाओं को जोखिम भार देने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

6.2.2 बैंकों को अपनी परिसंपत्तियों को जोखिम भार देने के लिए उनके द्वारा इस्तेमाल की जानेवाली ऋण रेटिंग एजेन्सियों के नाम, प्रत्येक पात्र ऋण एजेन्सी के लिए मैपिंग प्रक्रिया के माध्यम से रिज़र्व बैंक द्वारा निश्चित किये अनुसार विशेष रेटिंग ग्रेडों से संबद्ध जोखिम भार तथा सारणी डीएफ-5 द्वारा अपेक्षित कुल जोखिम भारित परिसंपत्तियां प्रकट करनी चाहिए।

6.2.3 जोखिम भार देने के प्रयोजनों के लिए पात्र होने हेतु बाह्य मूल्यांकन में बैंक को देय सभी भुगतानों के संबंध में ऋण जोखिम एक्सपोज़र की संपूर्ण राशि को ध्यान में लिया जाना चाहिए और उसमें वह परिलक्षित होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि किसी बैंक को मूलधन और ब्याज दोनों देय है तो मूल्यांकन में इसे पूरी तरह ध्यान में रखा जाना चाहिए तथा मूलधन और ब्याज की समय पर चुकौती से संबद्ध ऋण जोखिम उसमें परिलक्षित होना चाहिए।

6.2.4 जोखिम भार देने के प्रयोजनों के लिए पात्र होने हेतु रेटिंग लागू रहनी चाहिए तथा संबंधित रेटिंग एजेन्सी के मासिक बुलेटिन से उसकी पुष्टि की जानी चाहिए। रेटिंग एजेन्सी द्वारा पिछले 15 महीनों के दौरान कम से कम एक बार रेटिंग की समीक्षा की गयी हो।

6.2.5 पात्र ऋण मूल्यांकन सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, रेटिंग इस रूप में प्रकाशित की जानी चाहिए कि उस तक पहुंच हो तथा वह बाहरी ऋण रेटिंग एजेन्सी के परिवर्तन मैट्रिक्स में शामिल होनी चाहिए। अतः, ऐसी रेटिंग जो केवल लेनदेन करनेवाली पार्टियों को उपलब्ध करायी जाए, इस अपेक्षा की पूर्ति नहीं करती।

6.2.6 बैंक के संविभाग की उन परिसंपत्तियों के लिए जिनकी संविदागत परिपक्वता एक वर्ष के बराबर या उससे कम है, चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी अल्पावधि रेटिंग प्रासंगिक

होगी। एक वर्ष से अधिक संविदागत परिपक्वता अवधि वाली अन्य आस्तियों के लिए चयनित ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दीर्घावधिक रेटिंग प्रासंगिक होगी।

6.2.7 नकदी ऋण एक्सपोज़र आमतौर पर रोल ओवर करते हैं तथा मंजूर सीमाओं का बड़ा भाग औसतन आहरित रहता है। इसलिए, नकदी ऋण एक्सपोज़र भले ही एक वर्ष या उससे कम अवधि के लिए मंजूर किया गया हो, इन एक्सपोज़रों को दीर्घावधि एक्सपोज़रों के रूप में माना जाना चाहिए और तदनुसार चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी दीर्घावधि रेटिंग संगत होगी। इसी प्रकार, बैंक किसी काउंटर पार्टी की दीर्घावधि रेटिंग का प्रॉक्सी के रूप में उसी काउंटर पार्टी के रेटिंग न किये गये अल्पावधि एक्सपोज़र के लिए प्रयोग कर सकते हैं; बशर्ते नीचे पैरा 6.4, 6.5, 6.7 और 6.8 में उल्लेख किये अनुसार बहुविध रेटिंग मूल्यांकनों के प्रयोग तथा निर्गमकर्ता /अन्य दावों पर निर्गम रेटिंग लागू होने संबंधी अपेक्षाओं का कड़ाई से पालन किया जाए।

6.3 मैपिंग प्रक्रिया

संशोधित ढांचे में यह सिफारिश की गयी है कि पात्र ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा जारी रेटिंग को मानकीकृत जोखिम भारांकन ढांचे के अधीन उपलब्ध जोखिम भार पर लागू करने के लिए मैपिंग प्रक्रिया विकसित की जाए। इस मैपिंग प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ऐसा जोखिम भार दिया जाना चाहिए जो ऋण जोखिम के स्तर के अनुरूप हो। चुनी हुई देशी ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी ऋण रेटिंगों की मैपिंग नीचे पैरा 6.4.1 तथा 6.5.4 में दी गयी है जिसका बैंकों द्वारा विभिन्न एक्सपोजरों को जोखिम भार देने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

6.4 दीर्घावधि रेटिंग

6.4.1 उपर्युक्त तत्वों तथा रेटिंग एजेन्सियों द्वारा उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के आधार पर चुनी हुई देशी ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा जारी रेटिंग का निरूपण संशोधित ढांचे के अंतर्गत मानकीकृत दृष्टिकोण के अनुसार लागू उचित जोखिम भार के संदर्भ में किया गया है। नीचे सारणी में दी गयी रेटिंग जोखिम भार मैपिंग भारत में सभी बैंकों द्वारा अपनायी जायेगी :

सारणी 12 : चुनी हुई देशी रेटिंग एजेन्सियों की दीर्घावधि रेटिंग की जोखिम भार मैपिंग

भारत में कार्यरत चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों की दीर्घावधि रेटिंग	मानकीकृत दृष्टिकोण के जोखिम भार (प्रतिशत में)
एएए	20%
एए	30%
ए	50%
बीबीबी	100%
बीबी और उससे नीचे	150%
रेटिंग न की गयी	100%

6.4.2 जहां रेटिंग के साथ "+" या "-" चिह्न जोड़ा गया है वहां तदनुरूपी मुख्य रेटिंग श्रेणी के जोखिम भार का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, ए + या ए- को ए रेटिंग श्रेणी में समझा जायेगा तथा 50 प्रतिशत जोखिम भार दिया जायेगा ।

6.4.3 यदि किसी निर्गमकर्ता का बाह्य दीर्घावधि रेटिंग के साथ दीर्घावधि एक्सपोज़र है जिस पर 150 प्रतिशत का जोखिम भार का आवश्यक है तो उसी काउंटर पार्टी के संबंध में सभी रेटिंग न

किये गये दावों को भी, चाहे अल्पावधि हो या दीर्घावधि, 150 प्रतिशत का जोखिम भार तब तक दिया जाना चाहिए जब तक कि बैंक ऐसे दावों के लिए ऋण जोखिम कम करने की स्वीकृत तकनीकें इस्तेमाल नहीं करता हो।

6.5 अल्पावधि रेटिंग

6.5.1 जोखिम भार देने के प्रयोजनों के लिए अल्पावधि रेटिंग निर्गम विशेष से जुड़ी समझी जाती हैं। उनका प्रयोग केवल रेटिंग की गयी सुविधा से उत्पन्न दावों के लिए जोखिम भार निकालने के लिए किया जा सकता है। उन्हें अन्य अल्पावधि दावों के साथ सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता। किसी भी हालत में किसी अल्पावधि रेटिंग का उपयोग रेटिंग न किये गये दीर्घावधि दावे के जोखिम भार के लिए नहीं किया जा सकता। अल्पावधि मूल्यांकनों का उपयोग केवल बैंकों और कंपनियों के विरुद्ध अल्पावधि दावों के लिए किया जाए।

6.5.2 किसी निर्गम विशेष की अल्पावधि रेटिंग का अन्य अल्पावधि एक्सपोज़रों के लिए उपयोग करने पर उपर्युक्त प्रतिबंध के होते हुए भी निम्नलिखित व्यापक सिद्धांत लागू होंगे। किसी काउंटर पार्टी के रेटिंग न किये गये अल्पावधि दावे पर लगनेवाला जोखिम भार उस काउंटर पार्टी के रेटिंग किये गये अल्पावधि दावे पर लागू जोखिम भार से कम-से-कम एक स्तर उच्चतर होगा। यदि काउंटर पार्टी को प्रदत्त रेटिंग की गयी अल्पावधि सुविधा पर 20 प्रतिशत या 50 प्रतिशत जोखिम भार लगता है तो उसी काउंटर पार्टी के प्रति रेटिंग न किये गये अल्पावधि दावों पर क्रमशः 30 प्रतिशत या 100 प्रतिशत से कम जोखिम भार नहीं लग सकता।

6.5.3 इसी प्रकार, यदि किसी निर्गमकर्ता का बाह्य अल्पावधि रेटिंग के साथ अल्पावधि एक्सपोज़र है जिस पर 150 प्रतिशत का जोखिम भार आवश्यक है, तो उसी काउंटर पार्टी के संबंध में सभी रेटिंग न किये गये दावों पर भी, चाहे दीर्घावधि हो या अल्पावधि, 150 प्रतिशत का जोखिम भार तब तक दिया जाना चाहिए जब तक कि बैंक ऐसे दावों के लिए ऋण जोखिम कम करने की स्वीकृत तकनीकें इस्तेमाल नहीं करता है।

6.5.4 निर्गम विशेष की अल्पावधि रेटिंगों के संदर्भ में बैंकों द्वारा निम्नलिखित जोखिम भार मैपिंग अपनायी जायेगी :

सारणी 13 : देशी रेटिंग एजेन्सियों की अल्पावधि रेटिंग की जोखिम भार मैपिंग

अल्पावधि रेटिंग				जोखिम भार
केयर	क्रिसिल	फिच	इकरा	
पीआर 1 +	पी 1 +	एफ 1 + (आइएनडी)	ए 1 +	20%
पीआर 1	पी 1	एफ 1 (आइएनडी)	ए 1	30%
पीआर 2	पी 2	एफ 2 (आइएनडी)	ए 2	50%
पीआर 3	पी 3	एफ 3 (आइएनडी)	ए 3	100%
पीआर 4 एवं पीआर 5	पी 4 एवं पी 5	बी, सी, डी (आइएनडी)	ए 4 /ए 5	150%
रेटिंग न की गयी	रेटिंग न की गयी	रेटिंग न की गयी	रेटिंग न की गयी	100%

6.5.5.जहां रेटिंग के साथ "+" या "-" चिह्न जोड़ा गया है वहां पीआर2/ पी2/एफ2/ ए2 और उससे नीचे के लिए तदनुरूपी मुख्य रेटिंग श्रेणी के जोखिम भार का तब तक इस्तेमाल किया जाना चाहिए जब तक कि अन्यथा निर्दिष्ट न किया जाए। उदाहरण के लिए, पी2 + या पी2 - को पी2 रेटिंग श्रेणी में समझा जायेगा तथा 50 प्रतिशत जोखिम भार दिया जायेगा।

6.5.6. चुनी हुई देशी रेटिंग एजेन्सियों की दीर्घावधि और अल्पावधि दोनों रेटिंगों की उपर्युक्त जोखिम भार मैपिंग की रिज़र्व बैंक द्वारा वार्षिक समीक्षा की जायेगी।

6.6 मांगी न गयी रेटिंग का इस्तेमाल

किसी रेटिंग को मांगी गयी रेटिंग तभी माना जायेगा यदि लिखत के निर्गमकर्ता ने ऋण रेटिंग एजेन्सी से रेटिंग के लिए अनुरोध किया हो तथा एजेन्सी द्वारा दी गयी रेटिंग को स्वीकार किया हो। सामान्य नियम के रूप में, बैंकों को केवल **चुनी हुई रेटिंग एजेन्सियों से मांगी गयी रेटिंग का ही इस्तेमाल करना चाहिए।** मानकीकृत दृष्टिकोण के अनुसार ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा बिना मांगे जारी किये गये किसी रेटिंग के आधार पर जोखिम भार की गणना नहीं की जानी चाहिए।

6.7 बहुविध रेटिंग मूल्यांकनों का इस्तेमाल

बैंक द्वारा जोखिम भार की गणना के प्रयोजन के लिए चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों से बहुविध रेटिंग वाले एक्सपोज़रों /बाध्यताधारियों (ऑब्लीगर्स) के संदर्भ में बैंक निम्नलिखित से मार्गदर्शन लेंगे :

(i) यदि किसी चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सी द्वारा किसी दावे के लिए केवल एक रेटिंग दी गयी है तो उस रेटिंग का इस्तेमाल दावे का जोखिम भार निश्चित करने के लिए किया जायेगा।

(ii) यदि चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दो रेटिंग दी गयी हैं जो अलग-अलग जोखिम भार में रूपांतरित होती हैं तो उच्चतर जोखिम भार लागू किया जाना चाहिए।

(iii) यदि चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सियों द्वारा तीन या अधिक रेटिंग दी गयी हैं और उनमें अलग-अलग जोखिम भार हैं तो दो न्यूनतम जोखिम भार की तदनुरूपी रेटिंग का संदर्भ लिया जाना चाहिए तथा उन दोनों में से उच्चतर जोखिम भार लागू किया जाना चाहिए, अर्थात् दूसरा निम्नतम जोखिम भार।

6.8 निर्गमकर्ता /अन्य दावों पर निर्गम रेटिंग लागू होना

जहां कोई बैंक ऐसे किसी खास निर्गम में निवेश करता है जिसे चुनी हुई क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी द्वारा निर्गम विशेष की रेटिंग प्राप्त है तो दावे का जोखिम भार इस मूल्यांकन पर आधारित होगा। जहां बैंक का दावा किसी विशिष्ट मूल्यांकित निर्गम में निवेश के रूप में नहीं है, वहां निम्नलिखित सामान्य सिद्धांत लागू होंगे :

i) उन परिस्थितियों में जहां ऋणकर्ता के पास जारी ऋण के लिए विनिर्दिष्ट मूल्यांकन है - परंतु बैंक का दावा इस विशेष ऋण में निवेश के रूप में नहीं है - वहां विनिर्दिष्ट ऋण पर लागू रेटिंग (जहां रेटिंग ऐसे जोखिम भार में रूपांतरित होती है जो रेटिंग न किये दावे पर लागू भार से कम है) बैंक के अमूल्यांकित दावे पर केवल तभी लागू की जाए यदि वह दावा सभी दृष्टियों से विनिर्दिष्ट रेटिंग

किये गये ऋण के समरूप या वरिष्ठ हो तथा अमूल्यांकित दावे की परिपक्वता रेटिंग किये गये दावे[19] की परिपक्वता के बाद न हो। इसका अपवाद वहां हो सकता है जहां रेटिंग किया गया दावा पैरा 6.5.2 में निर्दिष्ट किये अनुसार अल्पावधि दायित्व है। यदि ऐसा नहीं है तो विनिर्दिष्ट ऋण पर लागू रेटिंग का उपयोग नहीं किया जा सकता है और अमूल्यांकित दावे पर रेटिंग न किये गये दावों का जोखिम भार लागू होगा।

ii) यदि निर्गमकर्ता या एकल निर्गम को ऐसी रेटिंग दी गयी है जो ऐसे जोखिम भार में रूपांतरित होती है जो रेटिंग न किये गये दावों पर लागू जोखिम भार के बराबर है या उससे ऊपर है, तो उसी काउंटर पार्टी पर किसी दावे पर, जिसकी किसी चुनी हुई रेटिंग एजेन्सी द्वारा रेटिंग नहीं की गयी है, वही जोखिम भार दिया जायेगा जो रेटिंग किये गये एक्सपोज़र पर लागू है, बशर्ते वह दावा सभी दृष्टियों से रेटिंग किये गये एक्सपोज़र के समकक्ष या कनिष्ठ है ।

(iii) जहां कोई बैंक चुनी हुई क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी द्वारा दी गयी निर्गमकर्ता या निर्गम विशेष की रेटिंग ऐसे किसी दूसरे एक्सपोज़र पर लागू करना चाहता है जो उसी काउंटर पार्टी के संबंध में बैंक का एक्सपोज़र है और जो उपर्युक्त मानदंड पूरा करता है तो उक्त रेटिंग उस एक्सपोज़र से संबंधित बैंक के ऋण जोखिम एक्सपोज़र की पूरी राशि (अर्थात् मूलधन और ब्याज दोनों) पर लागू की जानी चाहिए।

(iv) ऋण संवर्धन तत्वों की दोहरी गिनती से बचने के लिए बैंक जिस चुनी हुई ऋण रेटिंग एजेन्सी पर निर्भर कर रहा है यदि उसके द्वारा निर्गम विशेष के संदर्भ में दी गयी रेटिंग में ऋण संवर्धन पहले ही परिलक्षित हो रहा हो तो ऋण जोखिम कम करने की तकनीकों के प्रभाव को गणना में नहीं लेना चाहिए।

(v) जहां रेटिंग न किये गये एक्सपोज़र को उस ऋणकर्ता के संबंध में बराबर के एक्सपोज़र की रेटिंग पर आधारित जोखिम भार दिया गया है, वहां सामान्य नियम यह है कि विदेशी मुद्रा रेटिंग का इस्तेमाल केवल विदेशी मुद्रा में एक्सपोज़रों के लिए किया जायेगा ।

7. ऋण जोखिम कम करना

7.1 सामान्य सिद्धांत

7.1.1 बैंक अपनी ऋण जोखिमों को कम करने के लिए अनेक प्रकार की तकनीकों का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए नकदी अथवा प्रतिभूतियों द्वारा, एक ही काउंटर पार्टी की जमाराशियों

---

[19] ¡¸¢™ □¸í¸¿ ¢ˆÅ¬¸ú ˆÅ¸„¿’£ œ¸¸’úÄ œ¸£ ‚¥œ¸¸¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅú £½¢’¿Š¸ œ¸ú1 + í¸½ ‚¸¾£ „¬¸ú ˆÅ¸„¿’£ œ¸¸’úÄ œ¸£ ™ú‹¸¸Ä¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅú £½¢’¿Š¸ ‡‡‡ í¸½, ¨¸í¸¿ ¤¸ÿˆÅ „¬¸ ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ „¬¸ ˆÅ¸„¿’£ œ¸¸’úÄ œ¸£ £½¢’¿Š¸ ›¸ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ‚¥œ¸¸¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅ¸½ 30 œÏ¢÷¸©¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ÷¸˜¸¸ £½¢’¿Š¸ ›¸ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ™ú‹¸¸Ä¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅ¸½ 20 œÏ¢÷¸©¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ™½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ □¸í¸¿ ™¸¨¸½ ˆÅú ¨¸¢£«“÷¸¸ ˆÅ¸ ™□¸¸Ä £½¢’¿Š¸ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ™¸¨¸½ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸³œ¸ í¸½ ÷¸˜¸¸ £½¢’¿Š¸ ›¸ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ™¸¨¸½ ˆÅú œ¸¢£œ¸Æ¨¸÷¸¸ £½¢’¿Š¸ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ™¸¨¸½ ˆ½Å ¤¸¸™ ›¸ í¸½— ƒ¬¸ú œÏˆÅ¸£ ˆ½Å Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸½ Ÿ¸½¿ □¸í¸¿ ‚¥œ¸¸¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅú £½¢’¿Š¸ œ¸ú1+ í¾ ÷¸˜¸¸ ™ú‹¸¸Ä¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅú £½¢’¿Š¸ ‡ í¾ ¨¸í¸¿ ¤¸ÿˆÅ £½¢’¿Š¸ ›¸ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ‚¥œ¸¸¨¸¢š¸ ¡¸¸ ™ú‹¸¸Ä¨¸¢š¸ ™¸¨¸½ ˆÅ¸½ 50 œÏ¢÷¸©¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸£ ™½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾—

द्वारा, किसी थर्ड पार्टी की गारंटी, आदि द्वारा एक्सपोज़र को पूर्णतः या अंशतः प्रतिभूतिबद्ध किया जा सकता है। ऋण जोखिम कम करने के नये दृष्टिकोण में 1988 ढांचे की तुलना में ऋण जोखिम कम करनेवाले तत्वों की एक व्यापक श्रेणी को स्वीकृति दी गयी है, बशर्ते ये तकनीकें नीचे पैराग्राफ 7.2 में वर्णित कानूनी निश्चितता की अपेक्षा पूरी करती हों। इस खंड में ऋण जोखिम कम करने के जिस दृष्टिकोण का ब्योरा दिया गया है वह बैंकिंग बहियों के एक्सपोज़र पर लागू है। वह ट्रेडिंग बही में की गयी रिपो जैसी लेनदेन और ओटीसी डेरिवेटिव के काउंटर पार्टी जोखिम प्रभार की गणना पर भी लागू होगा ।

7.1.2 ऋण जोखिम कम करने की तकनीकों के प्रयोग पर निम्नलिखित सामान्य सिद्धांत लागू होंगे -

(i) जिस लेनदेन में ऋण जोखिम कम करने की (सीआरएम) तकनीकों को प्रयोग किया गया है वहाँ ऐसे समान प्रकार की लेनदेनों की तुलना में जहाँ ऐसी तकनीकों का प्रयोग नहीं किया गया है, उच्चतर पूंजी अपेक्षा नहीं लागू की जानी चाहिए।

(ii) सीआरएम के प्रभाव की दोहरी गणना नहीं की जाएगी। अतः, ऐसे दावों के लिए, जिनमें पहले से ही सीआरएम तकनीकें प्रतिबिम्बित करनेवाली निर्गम विनिर्दिष्ट रेटिंग प्रयुक्त हुई है, विनियामक पूंजी प्रयोजन के लिए अतिरिक्त पर्यवेक्षीय मान्यता नहीं मिलेगी।

(iii) सीआरएम ढाँचे के अंतर्गत प्रिन्सिपल-ओनली रेटिंग की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(iv) सीआरएम तकनीकों के प्रयोग से ऋण जोाखिम कम होता है या अंतरित होता है, लेकिन यह साथ-साथ अन्य जोखिमों (अवशिष्ट जोखिमों) को बढ़ा सकता है। अवशिष्ट जोखिमों में कानूनी, परिचालनात्मक, चलनिधि और बाजार जोखिम शामिल हैं। अतः यह आवश्यक है कि बैंक इन जोखिमों को नियंत्रित करने के लिए सुदृढ़ प्रक्रिया और क्रियाविधि अपनाएँ, जिसमें रणनीति, आधारभूत ऋण पर विचार, मूल्यांकन, नीति और प्रक्रिया, प्रणाली, रोल-ऑफ जोखिमों का नियंत्रण और बैंक द्वारा सीआरएम तकनीकों के प्रयोग से और बैंक की समग्र ऋण जोखिम प्रोफाइल के साथ उसकी प्रतिक्रिया से उत्पन्न संकेन्द्रण जोखिम का प्रबंधन शामिल है। जहाँ इन जोखिमों का पर्याप्त नियंत्रण नहीं होगा, वहाँ रिज़र्व बैंक अतिरिक्त पूंजी भार लगा सकता है या अन्य पर्यवेक्षीय कदम उठा सकता है। सीआरएम तकनीकों के मामले में पूंजी में छूट प्राप्त करने के लिए बैंकों को सारणी डीएफ-6 (पैराग्राफ 10 - बाजार अनुशासन) में निर्धारित सूचना के प्रकटीकरण संबंधी अपेक्षाओं का भी पालन करना चाहिए।

7.2 कानूनी निश्चितता

सीआरएम तकनीकों के प्रयोग के लिए पूंजी की छूट प्राप्त करने के लिए बैंकों को कानूनी प्रलेखन का निम्नलिखित न्यूनतम मानक अवश्य पूरा करना चाहिए। संपाश्र्वीकृत लेनदेन और गारंटियों

में प्रयुक्त सभी प्रलेखन सभी पक्षों पर बाध्यकारी होना चाहिए और सभी क्षेत्रों में कानूनी रूप से प्रवर्तनीय होना चाहिए। इसकी जाँच करने के लिए बैंकों को पर्याप्त कानूनी समीक्षा करनी चाहिए, जिसके लिखित प्रमाण होने चाहिए। प्रलेखों की बाध्यता और उसकी प्रवर्तनीयता के संबंध में निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए ऐसी जाँच में सुस्थापित कानूनी आधार होना चाहिए। बैंकों को प्रलेखों की प्रवर्तनीयता की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार की और समीक्षा करते रहना चाहिए।

7.3 ऋण जोखिम कम करने की तकनीकें - संपार्श्विकीकृत लेनदेन

7.3.1 संपार्श्विकीकृत लेनदेन वह लेनदेन है जिसमें :

(i) बैंक का ऋण एक्सपोज़र है तथा उक्त ऋण एक्सपोज़र की पूर्ण या आंशिक हेजिंग एक काउंटर पार्टी द्वारा अथवा उस काउंटर पार्टी की ओर से किसी थर्ड पार्टी द्वारा दिए गए संपार्श्विक द्वारा की गई है। यहाँ काउंटर पार्टी का प्रयोग ऐसी पार्टी के लिए किया गया है जिसके प्रति बैंक का तुलनपत्र अथवा तुलनपत्रेतर ऋण एक्सपोज़र है।

(ii) बैंक का संपार्श्विक प्रतिभूति पर विनिर्दिष्ट ग्रहणाधिकार है तथा कानूनी निश्चितता की अपेक्षा पूरी हो रही है।

7.3.2 <u>समग्र ढाँचा और न्यूनतम शर्तें</u>

संशोधित ढाँचे के अंतर्गत बैंकों को यह अनुमति दी गयी है कि वे या तो सरल दृष्टिकोण अपनाएँ, जिसमें 1988 समझौते के समान ही, एक्सपोज़र के संपार्श्विकृत हिस्से के लिए काउंटर पार्टी के जोखिम भार के बदले संपार्श्विक का जोखिम भार (आम तौर पर न्यूनतम 20 प्रतिशत तक) लिया जाता है, या समग्र दृष्टिकोण अपनाएँ जिसमें संपार्श्विक को प्रदत्त मूल्य को एक्सपोज़र राशि से घटाते हुए संपार्श्विक द्वारा एक्सपोज़र का बेहतर प्रतिसंतुलन किया जाता है। भारत में बैंक समग्र दृष्टिकोण अपनाएंगे, जिसमें संपार्श्विक को प्रदत्त मूल्य एक्सपोज़र राशि से घटाते हुए, संपार्श्विक द्वारा एक्सपोज़र का बेहतर प्रतिसंतुलन किया जाता है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत पात्र वित्तीय संपार्श्विक (अर्थात् नकदी या प्रतिभूति, जिनकी अधिक विनिर्दिष्ट परिभाषा नीचे दी गयी है) लेने वाले बैंक पूंजी अपेक्षा की गणना करते समय संपार्श्विक के जोखिम कम करने वाले प्रभाव को काउंटर पार्टी के प्रति अपने ऋण जोखिम से घटा सकते हैं। ऋण जोखिम में कमी की खाता-दर-खाता आधार पर ही अनुमति है, यहाँ तक कि विनियामक फुटकर संविभाग में भी तथापि, पूंजी संबंधी राहत दिये जाने के पहले निम्नलिखित मानक अवश्य पूरे किये जाने चाहिए :

(i) कानूनी निश्चितता की सामान्य अपेक्षाओं के अलावा, संपार्श्विक को गिरवी रखने या उसको अंतरित करने के लिए प्रयुक्त कानूनी प्रक्रिया में यह अवश्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बैंक को काउंटर पार्टी (और, जहाँ लागू हो, संपार्श्विक रखने वाले अभिरक्षक) द्वारा चूक किये जाने या दिवालिया हो जाने (या लेनदेन प्रलेखन में वर्णित एक या अधिक अन्यथा परिभाषित ऋण घटनाओं) की स्थिति में बैंक को उपयुक्त समय पर उक्त संपार्श्विक का कानूनी कब्जा लेने या उसे बेचने का अधिकार है। इसके अलावा बैंकों को संपार्श्विक प्रतिभूति में बैंक के प्रवर्तनीय प्रतिभूति हित को प्राप्त करने और

उसे बनाये रखने के लिए लागू कानून के अंतर्गत अपेक्षाएं पूरी करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाना चाहिए, उदाहरण के लिए रजिस्ट्रार के पास उसे रजिस्टर कराना आदि ।

(ii) संपार्श्विक प्रतिभूति से सुरक्षा मिले इसके लिए आवश्यक है कि काउंटर पार्टी की ऋण गुणवत्ता और संपार्श्विक प्रतिभूति के मूल्य के बीच वास्तविक धनात्मक अंतर्संबंध न हो । उदाहरण के लिए काउंटर पार्टी अथवा उक्त समूह से संबद्ध संस्था द्वारा जारी प्रतिभूति से कोई सुरक्षा नहीं मिलेगी और इसलिए उसे संपार्श्विक नहीं माना जा सकता ।

(iii) बैंकों के पास संपार्श्विक प्रतिभूति के सामयिक परिसमापन के लिए स्पष्ट और सुदृढ़ प्रक्रिया होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि काउंटर पार्टी की चूक की घोषणा करने तथा संपार्श्विक के परिसमापन करने के लिए अपेक्षित कानूनी शर्तों का पालन किया जाता है तथा संपार्श्विक का अविलंब परिसमापन किया जाता है ।

(iv) जहां संपार्श्विक किसी अभिरक्षक के पास हो, वहां बैंकों को यह सुनिश्चित करने के लिए कि अभिरक्षक संपार्श्विक को अपनी आस्तियों से अलग रखता है उपयुक्त कदम उठाना चाहिए ।

7.3.3 संपार्श्विक लेनदेन के दोनों चरणों पर पूंजी अपेक्षा लागू होगी। उदाहरण के लिए रिपो और रिवर्स रिपो दोनों पर पूंजी अपेक्षा लागू होगी। इसी प्रकार प्रतिभूति उधार देने और उधार लेने से संबंधित दोनों तरफ के लेनदेन पर तथा डेरिवेटिव एक्सपोज़र या अन्य उधार से संबंधित प्रतिभूति की पोस्टिंग पर स्पष्ट पूंजी भार लागू होगा ।

7.3.4 **समग्र दृष्टिकोण**

i) समग्र दृष्टिकोण में संपार्श्विक प्रतिभूति लेते समय बैंकों को संपार्श्विक के प्रभाव को गणना में शामिल करने हेतु काउंटर पार्टी के प्रति पूंजी पर्याप्तता प्रयोजन से समायोजित एक्सपोज़र की गणना करने की आवश्यकता होगी। बैंकों को काउंटर पार्टी के प्रति एक्सपोज़र की राशि तथा काउंटर पार्टी के समर्थन में प्राप्त संपार्श्विक के मूल्य को समायोजित करना होगा ताकि बाज़ार में घट-बढ़ के कारण दोनों के मूल्य में संभव भावी घट-बढ़ को ध्यान में रखा जाए। इन समायोजनों को 'हेयरकट' कहा जाता है। 'हेयरकट' लागू करने पर एक्सपोज़र और संपार्श्विक दोनों में अस्थिरता के समायोजन के बाद की राशि प्राप्त होगी। एक्सपोज़र में अस्थिरता के समायोजन के बाद जो राशि प्राप्त होगी वह एक्सपोज़र से उच्चतर होगी तथा संपार्श्विक में समायोजन के बाद जो राशि प्राप्त होगी वह संपार्श्विक से न्यूनतर होगी । यदि लेनदेन के दोनों पक्ष नकदी हो तब ऐसा नहीं होगा। दूसरे शब्दों में एक्सपोज़र के लिए हेयरकट एक प्रीमियम घटक होगा, जबकि संपार्श्विक के लिए हेयरकट डिस्काउंट घटक होगा। यह ध्यान में रखना चाहिए कि 'हेयरकट' लगाने के पीछे प्रयोजन एक्सपोज़र और पात्र वित्तीय संपार्श्विकों के मूल्य में अंतर्निहित बाजार आधारित अस्थिरता का आकलन करना है । चूंकि अपने बैंकिंग परिचालनों के दौरान बैंकों को हुए ऋण एक्सपोजर का मूल्य बाजार अस्थिरता के अधीन नहीं होगा (क्योंकि ऋण वितरण/ निवेश 'नकद' लेनदेन होगा) हालांकि पात्र

वित्तीय संपार्श्विकों का मूल्य बाजार अस्थिरता के अधीन होगा, सारणी 14 में निर्धारित हेयरकट ऋण लेनदेन के मामले में केवल पात्र संपार्श्विक पर लागू होगा, बैंक के ऋण एक्सपोजर पर नहीं । दूसरी ओर, रिपो जैसे लेनदेन के कारण बैंक को होनेवाले एक्सपोजर पर अस्थिरता के लिए ऊर्ध्वमुखी समायोजन करना आवश्यक होगा, क्योंकि रिपो लेनदेन में बेची गयी/ उधार दी गयी/बंधक रखी गयी प्रतिभूति का मूल्य बाजार अस्थिरता के अधीन होगा । अतः, ऐसे एक्सपोजर पर हेयरकट लागू होगा ।

ii) इसके अलावा यदि एक्सपोज़र और संपार्श्विक अलग-अलग मुद्राओं में रखा गया हो तो अस्थिरता समायोजित संपार्श्विक राशि में एक अतिरिक्त निम्नमुखी समायोजन भी किया जाना चाहिए ताकि विनिमय दरों में संभावित भावी घट-बढ़ को गणना में शामिल किया जा सके।

ii) जहां अस्थिरता-समायोजित एक्सपोज़र राशि अस्थिरता-समायोजित संपार्श्विक राशि (जिसमें विदेशी मुद्रा जोखिम के लिए अतिरिक्त समायोजन शामिल है) से अधिक हो तो बैंक अपनी जोखिम भारित आस्तियों की गणना इन दोनों के अंतर को काउंटर पार्टी के जोखिम भार से गुणा कर प्राप्त करेंगे। पूंजी अपेक्षा की गणना करने की रूपरेखा पैराग्राफ 7.3.6 में दर्शायी गयी है ।

7.3.5 <u>पात्र वित्तीय संपार्श्विक</u>

समग्र दृष्टिकोण में निम्नलिखित संपार्श्विक लिखतों को पात्र माना जाएगा -

(i) <u>नकद</u> जिस बैंक को काउंटर पार्टी एक्सपोज़र हो रहा है उसके पास जमा नकदी (तथा जमा प्रमाण पत्र या समान लिखतें, जिनमें ऋणदाता बैंक द्वारा जारी मीयादी जमा रसीदें भी शामिल हैं)

(ii) <u>स्वर्ण :</u> स्वर्ण में बुलियन और आभूषण दोनों शामिल हैं। तथापि, संपार्श्विकृत आभूषण का मूल्य उन्हें 99.99 शुद्धता में धारणात्मक आधार पर परिवर्तित कर प्राप्त किया जाना चाहिए।

(iii) केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा जारी <u>प्रतिभूति</u>

(iv) <u>किसान विकास पत्र</u> और राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र, बशर्ते कोई लॉक-इन अवधि लागू न हो और उन्हें धारण अवधि के दौरान भुनाया जा सकता हो।

(v) बीमा क्षेत्र विनियामक द्वारा विनियमित किसी बीमा कंपनी की <u>जीवन बीमा पॉलिसियां,</u> जिसमें अभ्यर्पण मूल्य घोषित किया गया हो।

(vi) <u>ऋण प्रतिभूतियां</u> जिनकी रेटिंग किसी चयनित ऋण रेटिंग एजेन्सी ने की हो तथा जिनके संबंध में बैंकों को पर्याप्त विश्वास हो कि उनकी बाज़ार में बिक्री कर चलनिधि[20] प्राप्त की जा सकती है, जहां उनपर या तो

---

[20] ˆÅ¸½ƒÄ ¢”¤¸½¿□¸£ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ˆÅú ˆÅ¬¸¸¾’ú œ¸£ ‰¸£¸ Ÿ¸¸›¸¸ □¸¸‡Š¸¸ ¡¸¢™ „¬¸Ÿ¸½¿ ¢œ¸Ž¥¸½ 365 ¢™›¸¸½¿ ˆ½Å ™¸¾£¸›¸ ˆÅŸ¸-¬¸½-ˆÅŸ¸ 90 œÏ¢÷¸©¸÷¸ ''ï½¢”¿Š¸ ¢™¨¸¬¸¸½¿ œ¸£ ¢ˆÅ¬¸ú Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸œÏ¸œ÷¸ ¬’¸ÁˆÅ ‡Æ¬¸□¸½¿□¸ Ÿ¸½¿ ‰¸£ú™-¢¤¸ÇÅú íºƒÄ í¾— ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸, □¸¥¸¢›¸¢š¸ ˆÅ¸ œÏŸ¸¸µ¸ Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸œÏ¸œ÷¸ ¬’¸ÁˆÅ ‡Æ¬□¸½¿□¸ Ÿ¸½¿ ¢œ¸Ž¥¸½ ‡ˆÅ Ÿ¸íú›¸½ ˆÅú ‰¸£ú™-¢¤¸ÇÅú Ÿ¸½¿ ¢Ÿ¸¥¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ¡¸¢™ œÏ÷¡¸½ˆÅ ¢›¸Š¸ÄŸ¸ˆÅ÷¸¸Ä ˆÅú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ¢¨¸œ¸µ¸›¸ ¡¸¸½Š¡¸ ¬¸Ÿ¸»í ˆÅú ˆÅŸ¸-¬¸½-ˆÅŸ¸ 25 ¤¸¸£ ‰¸£ú™-¢¤¸ÇÅú íºƒÄ í¸½—

क) 100% या उससे कम जोखिम भार लगता हो अर्थात् सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं तथा अन्य संस्थाओं (बैंक और प्राथमिक व्यापारी सहित) द्वारा जारी होने पर जिनकी रेटिंग कम-से-कम बीबीबी (-) हो; अथवा

ख) 100% या उससे कम जोखिम भार लगता हो अर्थात् अल्पावधि ऋण लिखतों के मामले में कम-से-कम पीआर3/पी3/एफ3 /ए 3 की रेटिंग हो ।

(vii) ऋण प्रतिभूतियां जिनकी रेटिंग किसी चयनित ऋण रेटिंग एजेंसी ने नहीं की हो तथा जिनके संबंध में बैंकों को पर्याप्त विश्वास हो कि उन्हें बाज़ार में बेचकर चलनिधि प्राप्त की जा सकती है, जहां वे

क) किसी बैंक द्वारा जारी किये गये हैं; और

ख) किसी मान्यताप्राप्त एक्स्चेंज में सूचीबद्ध हैं; और

ग) जिसे वरिष्ठ ऋण के रूप में वर्गीकृत किया गया हो; और

घ) निर्गमकर्ता बैंक के समान वरिष्ठता वाले सभी निर्गम, जिनकी रेटिंग की गयी है, की रेटिंग चयनित ऋण रेटिंग एजेन्सी द्वारा कम-से-कम बीबीबी (-) या पीआर3/पी3/एफ 3/ए 3 है; और

ङ) जो बैंक उन प्रतिभूतियों को संपार्श्विक के रूप में रख रहा है उनके पास ऐसी कोई सूचना नहीं है जिससे निर्गम को बीबीबी (-) या पीआर3/ पी3/एफ 3/ए 3 (जो भी लागू हो) से कम रेटिंग दी जा सकती है; और

च) बैंकों को पर्याप्त विश्वास होना चाहिए कि प्रतिभूति को बेचकर चलनिधि प्राप्त की जा सकती है।

(viii) म्युचुअल फंड के यूनिट, जो बैंक के परिचालन के क्षेत्राधिकार के प्रतिभूति विनियामक द्वारा विनियमित हों तथा जहां

क) यूनिटों का मूल्य सार्वजनिक रूप से प्रतिदिन उद्धृत किया जाता है अर्थात् जहां सार्वजनिक रूप से दैनिक निवल आस्ति मूल्य उपलब्ध है

ख) जहां म्युचुअल फंड का निवेश इस पैराग्राफ में सूचीबद्ध लिखतों तक ही सीमित है।

7.3.6 पूंजी अपेक्षा की गणना

संपार्श्विकृत लेनदेन में जोखिम कम करने के बाद एक्सपोज़र की गणना निम्नानुसार की जाती है

$$E^* = \max \{O, [E \times (1+H_e)-C \times (1-H_C-H_{fx})]$$

जहां

E^* = जोखिम कम करने के बाद एक्सपोज़र का मूल्य

E = एक्सपोज़र का वर्तमान मूल्य जिसके लिए संपार्श्विक को जोखिम कम करनेवाला तत्व माना गया है

H_e = एक्सपोज़र के लिए उपयुक्त हेयरकट

C = प्राप्त संपार्श्विक का वर्तमान मूल्य

H_C = संपार्श्विक के लिए उपयुक्त हेयरकट

H_{fx}= संपार्श्विक और एक्सपोज़र के बीच में मुद्रा विसंगति के लिए उपयुक्त हेयरकट

जोखिम कम करने के बाद की एक्सपोज़र राशि (अर्थात् E^*) को काउंटर पार्टी के जोखिम भार से गुणा कर संपाश्वींकृत लेनदेन के लिए जोखिम भारित परिसंपत्ति राशि प्राप्त की जा सकती है। ऋण जोखिम कम करने के प्रभाव की गणना के उदाहरण **अनुबंध** 8 में दिये गये हैं।

7.3.7 <u>हेयरकट</u>

i) सिद्धांततः बैंकों के पास हेयरकट की गणना करने की दो पद्धतियां हैं : (i) बासल समिति द्वारा निर्धारित मानदंडों का उपयोग करते हुए मानक पर्यवेक्षी हेयरकट, तथा (ii) बाज़ार कीमतों की अस्थिरता के बारे में बैंक के अपने आंतरिक अनुमानों का उपयोग करते हुए स्वयं -अनुमानित हेयरकट। एक्सपोज़र तथा संपार्श्विक दोनों के लिए भारत में कार्यरत बैंक केवल मानक पर्यवेक्षी हेयरकट का प्रयोग करेंगे।

(ii) प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त किये गये मानक पर्यवेक्षी हेयर कट (बाजार दर पर दैनिक मूल्यांकन, मार्जिन का दैनिक पुनर्निर्धारण तथा 10 कारोबारी दिन की धारण अवधि मानते हुए),[21] सारणी 14 के अनुसार होंगे ।

iii) सारणी 14 में निर्दिष्ट रेटिंग देशी रेटिग एजेंसियों द्वारा निर्धारित रेटिंग हैं। विदेशी केंद्र सरकारों तथा विदेशी कंपनियों द्वारा जारी की गयी ऋण प्रतिभूतियों में एक्सपोज़र के मामले में अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेंसियों की रेटिंग के आधार पर सारणी 15 के अनुसार हेयरकट निर्धारित किया जाए ।

iv) सम्प्रभु में भारतीय रिज़र्व बैंक, डीआइसीजीसी तथा सीजीटीएसआइ शामिल हैं, जो शून्य प्रतिशत जोखिम भार के लिए पात्र हैं ।

v) राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र, किसान विकास पत्र, बीमा पालिसियों का अभ्यर्पण मूल्य तथा बैंक की अपनी जमाराशियों के रूप में पात्र संपार्श्विक के लिए बैंक शून्य हेयरकट लागू करें ।

vi) जहां एक्सपोज़र तथा संपार्श्विक अलग-अलग मुद्राओं में अंकित किए गए हैं ऐसी मुद्रा जोखिम के लिए मानकीकृत पर्यवेक्षी हेयरकट 8 प्रतिशत है (यह 10 कारोबार दिन की धारण अवधि तथा दैनंदिन बाज़ार दर पर मूल्यांकन पर भी आधारित होगा ।)

vii) ऐसे लेनदेन में जहां बैंकों के एक्सपोज़र की रेटिंग नहीं की गयी है अथवा बैंक अपात्र लिखत (अर्थात गैर-निवेश ग्रेड कंपनी प्रतिभूतियाँ) उधार देता है वहां एक्सपोज़र पर लागू किया जानेवाला हेयरकट 25 प्रतिशत होना चाहिए। (चूंकि वर्तमान में केवल सरकारी प्रतिभूतियों के मामले में रिपो की अनुमति दी जाती है, इसलिए बैंकों के पास

---

[21] ¬¸¿œ¸¸¢©¨¸Ä ˆÅ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ ˆÅú ¨¸¬¸»¥¸ú ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸÷¸À ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ¢□¸÷¸›¸ú ,¨¸¢š¸ □¸¸¢í‡, „¬¸½ š¸¸£µ¸ ,¨¸¢š¸ ˆÅí¸ □¸¸÷¸¸ í¾—

ऐसा कोई एक्सपोज़र होने की संभावना नहीं है, जिस पर इस खंड के प्रावधान लागू होंगे ।तथापि, यह तब प्रासंगिक होगा जब भविष्य में यदि रेट न की गयी कंपनी प्रतिभूतियों के मामले में रिपो/प्रतिभूति उधार लेनदेन की अनुमति दी जाती है।)

सारणी - 14 सम्प्रभु (सोवरेन) तथा अन्य प्रतिभूतियां, जिनमें एक्सपोज़र तथा संपाश्र्विक शामिल हैं, के लिए मानक पर्यवेक्षी हेयरकट

क्रम सं.		ऋण प्रतिभूतियों के लिए निर्गम रेटिंग	अवशिष्ट परिपक्वता (वर्ष में)	हेयरकट (प्रतिशत में)
क	भारत सरकार द्वारा जारी /गारंटीकृत तथा राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिभूतियां (सम्प्रभु प्रतिभूतियां)			
	i	रेटिंग लागू नहीं है - क्योंकि भारत में संप्रति सरकारी प्रतिभूतियों की रेटिंग नहीं की जाती है	= 1 वर्ष	0.5
			1 वर्ष से अधिक तथा 5 वर्ष या उससे कम	2
			5 वर्ष से अधिक	4
ख	भारतीय राज्य सरकारों द्वारा गारंटीकृत प्रतिभूतियों सहित उपर्युक्त मद सं. क में निर्देशित प्रतिभूतियों को छोड़कर अन्य देशी ऋण प्रतिभूतियां			
	ii	एएए से एए पीआर 1/पी1 /एफ1/ए1	<अथवा = 1 वर्ष	1
			1 वर्ष से अधिक तथा 5 वर्ष या उससे कम	4
			5 वर्ष से अधिक	8
	iii	ए से बीबीबी पीआर2/पी2/एफ2/ए2; पीआर3/पी3/एफ3/ए3 तथा परिपत्र के पैरा 7.3.5 (vii) में विनिर्दिष्ट रेटिंग न की गयी बैंक प्रतिभूतियां	< अथवा = 1 वर्ष	2
			1 वर्ष से अधिक तथा 5 वर्ष या उससे कम	6
			5 वर्ष से अधिक	12
	vi	म्युच्युअल फंड के यूनिट		उपर्युक्त में से जिस किसी भी प्रतिभूति में पात्र म्युच्युअल फंड ज़(देखें पैरा 7.3.5 (viii.) निवेश कर सकता है, उस पर लागू उच्चतम हेयरकट
ग	उसी मुद्रा में नकद			0
घ	स्वर्ण			15

सारणी - 15 : उन एक्सपोज़रों तथा संपाश्र्विकों के लिए मानक पर्यवेक्षी हेयरकट जो विदेशी केंद्र सरकारों /विदेशी कंपनियों के दायित्व हैं

अंतरर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेंसियों द्वारा ऋण प्रतिभूतियों को दी गयी निर्गम रेटिंग	अवशिष्ट परिपक्वता	सम्प्रभु	अन्य निर्गम
एएए से एए /ए - 1	1 वर्ष या उससे कम	0.5	1
	1 वर्ष से अधिक तथा 5 वर्ष या उससे कम	2	4
	5 वर्ष से अधिक	4	8
ए से बीबीबी / ए -2/ए-3/पी - 3 तथा रेटिंग न की गयी बैंक प्रतिभूतियां	1 वर्ष या उससे कम	1	2
	1 वर्ष से अधिक तथा 5 वर्ष या उससे कम	3	6
	5 वर्ष से अधिक	6	12

viii) जहां संपार्श्विक परिसंपत्तियों का समूह है, उस समूह पर हेयरकट होगा

$$H = \sum_i a_i H_i$$

जिसमें a_i समूह में परिसंपत्ति का भार (परिसंपत्ति की राशि/मूल्य की मुद्रा की यूनिटों में की गई गणना के अनुसार) है तथा Hi उस परिसंपत्ति पर लागू हेयरकट है ।

ix) <u>विभिन्न धारण अवधि के लिए समायोजन</u>

पुनर्मूल्यांकन तथा पुनः मार्जिन करने की व्यवस्था संबंधी प्रावधानों के स्वरूप तथा बारंबारता के अनुसार कुछ लेनदेन के लिए विभिन्न धारण अवधि (10 कारोबार दिन के अलावा) उपयुक्त होती है। संपाश्र्विक हेयरकट के ढांचे में रिपो-प्रकार के लेनदेन (अर्थात् रिपो /रिवर्स रिपो तथा प्रतिभूति उधार देना /उधार लेना) "अन्य पूंजी-बाजार प्रेरित लेनदेन" (अर्थात् काउंटर पर डेरिवेटिव के लेनदेन तथा मार्जिन ऋण) तथा जमानती ऋण के बीच फर्क किया गया है। पूंजी बाज़ार प्रेरित लेनदेन तथा रिपो-प्रकार के लेनदेन के प्रलेखीकरण में पुनः मार्जिन करने के संबंध में शर्तें होती हैं; जमानती उधार लेनदेन में सामान्यतः ऐसी शर्तें नहीं होती हैं। इन लेनदेनों के मामले में विभिन्न धारण अवधि को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम धारण अवधि निम्नानुसाार मानी जाएगी :

लेनदेन का प्रकार	न्यूनतम धारण अवधि	शर्त
रिपो प्रकार के लेनदेन	पांच कारोबार दिन	दैनिक रूप से पुनः मार्जिन
अन्य पूंजी बाज़ार लेनदेन	दस कारोबार दिन	दैनिक रूप से पुनः मार्जिन
जमानती ऋण	बीस कारोबार दिन	दैनिक पुनर्मूल्यांकन

उपर्युक्त के अनुसार 10 कारोबार दिन की न्यूनतम धारण अवधि को छोड़कर अन्य धारण अवधि वाले लेनदेन के लिए हेयरकट को नीचे पैरा 7.3.7 (xi) में दिए गए फार्मूला के अनुसार सारणी - 14 में 10 कारोबार दिन के लिए निर्दिष्ट हेयरकट को ऊपर /नीचे लाकर समायोजित करना होगा।

x) <u>बाजार दर पर गैर- दैनिक मूल्यांकन अथवा पुनः मार्जिन व्यवस्था के लिए समायोजन</u> :

यदि मान लिए गए दैनिक मार्जिन से किसी लनदेन की मार्जिन की बारंबारता भिन्न है तो उस लेनदेन पर लागू होनेवाले हेयरकट को भी नीचे पैराग्राफ 7.3.7 (xi) में दिए गए फार्मूला का प्रयोग करते हुए समायोजित करना आवश्यक होगा।

xi) <u>विभिन्न धारण अवधि तथा /अथवा बाजार दर पर गैर-दैनिक मूल्यांकन अथवा पुनः मार्जिन करने के समायोजन के लिए फार्मूला</u>

उपर्युक्त (ix) तथा (x) में निर्दिष्ट धारण अवधि तथा मार्जिन व्यवस्था /बाजार दर पर मूल्यांकन में भिन्नता के लिए निम्न फार्मूला के अनुसार समायोजन किया जाएगा :

$$H = H_{10} \sqrt{\frac{N_R + (T_M - 1)}{}}$$

$\sqrt{10}$

जहां :

H = हेयरकट;

H_{10} = लिखत के लिए 10 कारोबार दिन का मानक पर्यवेक्षी हेयरकट

N_R = पूंजी बाज़ार लेनदेन के लिए पुनः मार्जिन करने अथवा प्रतिभूतीकृत लेनदेन के पुनर्मूल्यांकन के बीच कारोबार के दिनों की वास्तविक संख्या।

T_M = लेनदेन के प्रकार के लिए न्यूनतम धारण अवधि

7.3.8 रिपो/रिवर्स रिपो-प्रकार के लेनदेनों के लिए पूंजी पर्याप्तता ढांचा

रिपो प्रकार के लेनदेन पर ऋण जोखिम तथा बाज़ार जोखिम के अतिरिक्त प्रतिपक्षी ऋण जोखिम (सीसीआर) के लिए पूंजी भार लागू होंगे । सीसीआर की परिभाषा है, रिपो - प्रकार के लेनदेन में प्रतिपक्ष द्वारा चूक करने का जोखिम जिसके परिणामस्वरूप उधार/ गिरवी/बेची गई प्रतिभूति की सुपुर्दगी अथवा नकद राशि का भुगतान नहीं होगा ।

क. निधियों के उधारकर्ता की बहियों में कार्रवाई

i) जहां बैंक ने प्रतिभूतियों को बेचकर/उधार देकर/संपाश्र्विक के रूप में दर्ज करके निधि उधार ली है वहां 'एक्सपोज़र' उचित हेयरकट लागू करने के बाद बेची/उधार दी गई प्रतिभूतियों के बढ़ाए गए 'बाजार मूल्य' के समतुल्य तुलनपत्रेतर एक्सपोजर होगा । इस प्रयोजन के लिए सारणी-14 के अनुसार हेयरकट का आधार के रूप में उपयोग किया जाएगा, जिसे पैराग्राफ 7.3.7 (xi) में दिए गए फार्मूला का प्रयोग करते हुए लागू किया जाएगा । ऐसा इसलिए किया जाएगा ताकि रिपो-प्रकार के लेनदेन के लिए पांच कारोबार दिनों की न्यूनतम (निर्धारित) धारण अवधि तथा मानक पर्यवेक्षी हेयरकट के लिए मानी गयी दैनिक मार्जिन व्यवस्था की तुलना में पुनः मार्जिन व्यवस्था की बारंबारता में कोई फर्क हो तो उसका ध्यान रखा जाए । "तुलनपत्रेतर एक्सपोजर' को परिपत्र की सारणी 8 की मद सं. 5 के अनुसार 100 प्रतिशत का ऋण परिवर्तन गुणक लागू करके 'तुलन पत्र' समतुल्य में परिवर्तित किया जाएगा ।

ii) प्राप्त राशि को उधार/बेची/गिरवी रखी गई प्रतिभूतियों के लिए संपाश्र्विक के रूप में समझा जाएगा । चूंकि संपाश्र्विक नकद है, इसलिए उसके लिए शून्य हेयरकट होगा ।

iii) उपर्युक्त (i) पर प्राप्त ऋण समतुल्य राशि में से नकद संपाश्र्विक की राशि को घटाकर जो राशि प्राप्त होगी उसपर प्रतिपक्ष पर लागू होने वाला जोखिम भार लागू होगा ।

iv) चूंकि रिपो अवधि के बाद प्रतिभूतियां उधार लेनेवाले बैंक की बहियों में वापस आ जाएंगी इसलिए उक्त बैंक उन मामलों में जहां रिपो से संबद्ध प्रतिभूतियां परिपक्वता तक धारित श्रेणी में रखी जाती हैं, उन प्रतिभूतियों के ऋण जोखिम के लिए तथा बिक्री के लिए उपलब्ध/खरीद-बिक्री के लिए धारित श्रेणियों के अंतर्गत धारित प्रतिभूतियों के मामले में बाजार जोखिम के लिए पूंजी रखना जारी रखेंगे । जोखिम/विशिष्ट जोखिम के लिए प्रतिभूति के जारीकर्ता की क्रेडिट रेटिंग के अनुसार

पूंजी भार निर्धारित किया जाएगा । सरकारी प्रतिभूतियों के मामले में ऋण/विशिष्ट जोखिम के लिए पूंजी भार 'शून्य' होगा ।

ख. निधि के उधारदाता की बहियों में कार्रवाई

i) उधार दी गई राशि को प्रतिपक्ष पर तुलन पत्र में/निधिक एक्सपोजर समझा जाएगा जिसे रिपो के अंतर्गत स्वीकृत प्रतिभूतियों द्वारा संपार्श्विकीकृत किया गया है ।

ii) एक्सपोजर नकद होने के कारण उसपर शून्य हेयरकट लागू होगा ।

iii) संपार्श्विक को यथालागू हेयरकट के अनुसार नीचे समायोजित किया जाएगा/उसका मूल्य घटाया जाएगा ।

iv) संपार्श्विक की समायोजित राशि द्वारा घटाए गए एक्सपोजर की राशि पर प्रतिपक्ष पर यथालागू जोखिम भार लागू किया जाएगा क्योंकि यह तुलन पत्र में शामिल एक्सपोजर है ।

v) रिपो अवधि के दौरान संपार्श्विक के रूप में प्राप्त प्रतिभूति के लिए उधारदाता बैंक कोई पूंजी भार नहीं रखेगा क्योंकि ऐसा संपार्श्विक उसके तुलनपत्र में शामिल नहीं है बल्कि उसे केवल अमानतदार के रूप में रखा जाता है ।

7.4 ऋण जोखिम कम करने की तकनीकें - तुलन पत्र के अंतर्गत निवल निपटान (नेटिंग)

तुलन पत्र के अंतर्गत निवल निपटान, ऋण/अग्रिम तथा जमाराशियों तक सीमित होता है जहां बैंकों के पास प्रलेखन प्रमाण सहित विशिष्ट ग्रहणाधिकार वाली कानूनी दृष्टि से प्रवर्तनीय नेटिंग व्यवस्थाएं होती हैं। वे निवल ऋण एक्सपोज़र के आधार पर पूंजी अपेक्षाओं की निम्नलिखित शर्तों के अधीन गणना कर सकते हैं :

जहां किसी बैंक

क) के पास यह निष्कर्ष निकालने के लिए एक सुस्थापित विधिक आधार है कि निवल निपटान अथवा ऑफसेटिंग करार, प्रत्येक संबंधित क्षेत्राधिकार में प्रवर्तनीय है, चाहे काउंटर पार्टी दिवालिया हो या न हो।

ख) किसी भी समय नेटिंग करार के अधीन उसी काउंटर पार्टी के पास ऋण/अग्रिम तथा जमाराशियों का निर्धारण कर सकता है; तथा

ग) संबंधित एक्सपोज़र की निवल आधार पर निगरानी तथा नियंत्रण करता है,

वहाँ वह बैंक ऋण/अग्रिमों तथा जमाराशियों के निवल एक्सपोज़र को पैराग्राफ 7.3.6 में दिए गए फॉर्म्यूला के अनुसार अपनी पूंजी पर्याप्तता की गणना के लिए आधार के रूप में प्रयोग में ला सकता है। ऋण/अग्रिमों को एक्सपोज़र तथा जमाराशियों को संपार्श्विक माना जाता है। मुद्रा विसंगति की स्थिति को छोड़कर हेयरकट शून्य होंगे । पैराग्राफ 7.3.6 तथा 7.6 में निहित सभी अपेक्षाएं भी लागू होंगी ।

7.5 ऋण जोखिम को कम करने की तकनीकें - गारंटियां

7.5.1 जहां गारंटियां प्रत्यक्ष, स्पष्ट, अपरिवर्तनीय तथा शर्त-रहित हैं वहां पूंजी अपेक्षाओं की गणना करते समय बैंक ऐसी ऋण सुरक्षा को गणना में ले सकते हैं ।

7.5.2 गारंटीदाताओं के वर्ग को मान्यता दी गयी है। 1988 के समझौते के अनुसार एक प्रतिस्थापन दृष्टिकोण लागू किया जाएगा। अतः केवल काउंटर पार्टी से निम्नतर जोखिम भार वाली कंपनियों द्वारा जारी की गयी गारंटियों से पूंजी भार घटेगा क्योंकि काउंटर पार्टी एक्सपोज़र के सुरक्षित अंश पर गारंटीदाता का जोखिम भार निर्धारित किया जाता है और कवर न किए गए अंश के पास आधारभूत काउंटर पार्टी का जोखिम भार बना रहता है ।

7.5.3 सीआरएम के रूप में समझे जाने के लिए पात्र गारंटियों के लिए विस्तृत परिचालन अपेक्षाएं निम्नानुसार हैं :

7.5.4 <u>गारंटियों के लिए परिचालन अपेक्षाएं</u>

i) किसी भी गारंटी (काउंटर गारंटी) को सुरक्षादाता पर प्रत्यक्ष दावे का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और विनिर्दिष्ट एक्सपोज़र अथवा एक्सपोज़र के समूह से स्पष्टतः संदर्भित होना चाहिए ताकि कवर की सीमा स्पष्टतः परिभाषित हो तथा विवाद से परे हो। गारंटी अपरिवर्तनीय होनी चाहिए; संविदा में ऐसा कोई भी खंड नहीं होना चाहिए जिससे सुरक्षा दाता को एक पक्षीय आधार पर कवर को निरस्त करने की अथवा गारंटीकृत एक्सपोज़र में ऋण की घटती हुई गुणवत्ता के परिणामस्वरूप कवर की प्रभावी लागत में वृद्धि करने की अनुमति होगी। गारंटी बिना शर्त होनी चाहिए; गारंटी में बैंक के प्रत्यक्ष नियंत्रण के बाहर वाला ऐसा कोई भी खंड नहीं होना चाहिए जो मूल काउंटर पार्टी द्वारा नियत भुगतान न किए जाने की स्थिति में सुरक्षा दाता को समय पर भुगतान करने की बाध्यता से रोक सकता है।

ii) सभी एक्सपोज़रों को गारंटियों के रूप में उपलब्ध जोखिम कम करने के उपायों को हिसाब में लेने के बाद जोखिम भारित किया जाएगा। जब किसी गारंटीकृत एक्सपोज़र को अनर्जक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, तब उक्त गारंटी को ऋण जोखिम कम करनेवाले उपाय के रूप में नहीं माना जाएगा और गारंटियों के रूप में ऋण जोखिम कम करने के कारण कोई भी समायोजन अनुमत नहीं होगा। विनिर्दिष्ट प्रावधान को घटाकर तथा पात्र संपार्श्विकों/ऋण जोखिम कम करने वालों के प्राप्य मूल्य को घटाकर प्राप्त संपूर्ण बकाया पर उचित जोखिम भार लागू होगा ।

7.5.5 <u>गारंटियों के लिए अतिरिक्त परिचालन अपेक्षाएं</u>

गारंटी को मान्यता प्राप्त होने के लिए उपर्युक्त पैराग्राफ 7.2 में उल्लिखित विधिक निश्चितता संबंधी अपेक्षाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित शर्तों को पूर्ण करना होगा :

i) काउंटर पार्टी द्वारा अर्हक चूक/गैर-भुगतान करने पर बैंक लेनदेन पर लागू प्रलेखन के अंतर्गत किसी बकाया राशि की वसूली के लिए गारंटीदाता से समय पर संपर्क कर सके । गारंटीदाता ऐसे प्रलेखन के अंतर्गत सभी बकाया राशियों का बैंक को एकमुश्त भुगतान कर सकता है अथवा वह गारंटी द्वारा कवर की गयी काउंटर पार्टी की भावी भुगतान बाध्यताओं को अपने ऊपर ले सकता है । भुगतान के लिए काउंटर पार्टी से मांग

करने के लिए पहले कोई विधिक कार्रवाई किये बिना गारंटीकर्ता से इस प्रकार का भुगतान प्राप्त करने का अधिकार बैंक के पास होना चाहिए ।

ii) उक्त गारंटी गारंटीदाता द्वारा अपनायी गई स्पष्टतः प्रलोखित बाध्यता है ।

iii) परवर्ती वाक्य में नोट किये गये अनुसार को छोड़कर, लेनदेन पर लागू प्रलेखन के अंतर्गत आधारभूत बाध्यताधारी को जितने भी प्रकार के भुगतान करने अपेक्षित हैं, जैसे नोशनल राशि, मार्जिन भुगतान आदि, उन सभी को गारंटी कवर करती है । जब कोई गारंटी केवल मूलधन के भुगतान को कवर करती है तब ब्याज तथा अन्य कवर न किये गये भुगतानों को पैराग्राफ 7.5.8 के अनुसार अप्रतिभूतिकृत राशि समझी जाए ।

7.5.6 पात्र गारंटीदाताओं (काउंटर-गारंटीदाता) का वर्ग

निम्नलिखित संस्थाओं द्वारा दी गयी ऋण सुरक्षा को मान्यता दी जाएगी :

(i) सम्प्रभु, सम्प्रभु संस्थाएं (जिनमें बीआइएस, आइएमएफ, यूरोपियन सेंट्रल बैंक तथा यूरोपीय समूह तथा पैराग्राफ 5.5 में उल्लिखित एमडीबी, ईसीजीसी तथा सीजीटीएसआइ शामिल हैं) काउंटर पार्टी से कम जोखिम भार वाले बैंक तथा प्राथमिक व्यापारी;

(ii) अन्य संस्थाएं जिनका रेटिंग एए(-) अथवा उससे बेहतर है । इसमें बाध्यताधारी से कम जोखिम भार वाली प्रवर्तक, अनुषंगी अथवा संबद्ध कंपनियों द्वारा दिया गया गारंटी कवर शामिल है । गारंटीदाता की रेटिंग संस्थागत रेटिंग होनी चाहिए जिसमें संस्था की सभी देयताओं तथा बाध्यताओं (गारंटियों सहित) को ध्यान में लिया गया है ।

7.5.7 जोखिम भार

सुरक्षित अंश को सुरक्षा देनेवाले का जोखिम भार दिया जाता है । राज्य सरकार की गारंटियों द्वारा कवर किये गये एक्सपोज़र पर 20 प्रतिशत जोखिम भार लागू होगा । एक्सपोज़र के अनारक्षित अंश को आधारभूत काउंटर पार्टी का जोखिम भार दिया जाएगा ।

7.5.8 आनुपातिक कवर

जहां गारंटीकृत राशि अथवा जिसके लिए ऋण सुरक्षा ली गयी है, उसकी राशि एक्सपोज़र की राशि से कम है तथा सुरक्षित तथा असुरक्षित अंश समान वरीयता के हैं अर्थात् बैंक तथा गारंटीदाता समानुपातिक आधार पर हानियां बांटते हैं, वहां पूंजी राहत आनुपातिक आधार पर दी जाएगी अर्थात् एक्सपोज़र के सुरक्षित अंश पर पात्र गारंटियों पर लागू कार्रवाई की जाएगी और शेष को असुरक्षित समझा जाएगा ।

7.5.9 मुद्रा विसंगति

जहां एक्सपोज़र को जिस मुद्रा में अंकित किया गया है उससे भिन्न मुद्रा में ऋण सुरक्षा को अंकित किया गया है अर्थात् जहां मुद्रा विसंगति है, वहां एक्सपोज़र की जिस राशि को सुरक्षित समझा गया है उसे हेयरकट H_{FX} लागू करके घटाया जाएगा अर्थात्

$$G_A = G \times (1-H_{FX})$$

जहां :

G = ऋण सुरक्षा की अनुमानित राशि

H_{FX} = ऋण सुरक्षा तथा आधारभूत दायित्व के बीच मुद्रा विसंगति के लिए उचित हेयरकट

पर्यवेक्षी हेयरकट का प्रयोग करनेवाले बैंक मुद्रा विसंगति के लिए 8 प्रतिशत का हेयरकट लागू करेंगे ।

7.5.10 सम्प्रभु गारंटियां तथा काउंटर-गारंटियां

कोई दावा ऐसी गारंटी से कवर हो सकता है जिसे किसी सम्प्रभु द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से काउंटर-गारंटी मिली हो । ऐसे दावे को सम्प्रभु गारंटी द्वारा कवर किया गया दावा समझा जा सकता है बशर्ते

i) सम्प्रभु काउंटर गारंटी दावे के सभी ऋण जोखिम तत्वों को कवर करती है ।

ii) मूल गारंटी तथा काउंटर-गारंटी दोनों गारंटियों की सभी परिचालन अपेक्षाओं को पूर्ण करते हों; हालांकि यह आवश्यक नहीं है कि काउंटर गारंटी मूल दावे से सीधे और स्पष्ट रूप से संबंधित हो ।

iii) कवर सुदृढ़ होना चाहिए और ऐसे किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्य से यह प्रतीत नहीं होना चाहिए कि काउंटर गारंटी की व्याप्ति प्रत्यक्ष सम्प्रभु गारंटी की व्याप्ति से किसी तरह कम प्रभावी है ।

7.6 परिपक्वता विसंगति

7.6.1 जोखिम भारित परिसंपत्तियों की गणना करने के प्रयोजन के लिए परिपक्वता विसंगति तब होती है जब किसी संपार्श्विक की अवशिष्ट परिपक्वता आधारभूत एक्सपोज़र की परिपक्वता से कम है । जहां परिपक्वता विसंगति है और सीआरएम की मूल परिपक्वता एक वर्ष से कम है वहां सीआरएम को पूंजी प्रयोजनों से मान्यता नहीं दी जाती है । अन्य मामलों में जहां परिपक्वता विसंगति है, वहां नीचे पैरराग्राफ 7.6.2 से 7.6.4 में दिए गए ब्योरे के अनुसार विनियामक पूंजी प्रयोजनों के लिए सीआरएम को आंशिक मान्यता दी जाती है ।उन ऋणों के मामले में जिनका संपार्श्विक बैंक की अपनी जमाराशियां ही हैं, उस स्थिति में भी जब जमाराशियों की अवधि तीन महीने से कम हो, अथवा ऋण की अवधि की तुलना में जमाराशियों की परिपक्वता में विसंगति हो, संपाश्र्विक को अमान्य ठहराने से संबंधित पैरा 7.6.1 के प्रावधान लागू नहीं होंगे बशर्ते जमाकर्ता (अर्थात् उधारकर्ता) से ऐसी जमाराशियों की परिपक्वता राशि को बकाया ऋण राशि के बदले समायोजित करने अथवा आधारभूत ऋण की पूर्ण चुकौती तक ऐसी जमाराशियों के नवीकरण के लिए स्पष्ट सहमति प्राप्त की गयी हो ।

7.6.2 परिपक्वता की परिभाषा

आधारभूत एक्सपोज़र की परिपक्वता तथा संपार्श्विक की परिपक्वता दोनों को सतर्क दृष्टि से परिभाषित किया जाना चाहिए । आधारभूत एक्सपोज़र की प्रभावी परिपक्वता का निर्धारण काउंटर पार्टी द्वारा बाध्यता पूर्ण करने के लिए उपलब्ध दीर्घतम संभव अवशिष्ट समय के रूप में किया जाना चाहिए तथा इसमें यदि कोई ग्रेस अवधि लागू हो तो उसे भी शामिल करना चाहिए । संपार्श्विक के लिए ऐसे निहित विकल्पों को ध्यान में लिया जाना चाहिए जिनसे संपार्श्विक की अवधि कम हो सकती है ताकि सब से कम संभाव्य प्रभावी परिपक्वता का प्रयोग हो । यहां पर प्रासंगिक परिपक्वता अवशिष्ट परिपक्वता है ।

7.6.3 <u>परिपक्वता विसंगति के लिए जोखिम भार</u>

जैसा कि पैरा 7.6.1 में दर्शाया गया है, परिपक्वता विसंगति वाले संपार्श्विक को तब मान्यता दी जाती है जब उनकी मूल परिपक्वता एक वर्ष या अधिक हो । परिणारमस्वरूप एक वर्ष से कम अवधि की मूल परिपक्वताओं वाले एक्सपोज़र के लिए संपार्श्विक की परिपक्वता संगत होने पर ही मान्य होगा । सभी मामलों में जब तीन महीनों या उससे कम की अवशिष्ट परिपक्वता हो तो परिपक्वता विसंगति वाले संपार्श्विक मान्य नहीं होंगे ।

7.6.4 जब मान्यता प्राप्त ऋण जोखिम कम करनेवाले तत्वों (संपार्श्विक, तुलन पत्र नेटिंग और गारंटियां) के साथ परिपक्वता विसंगति हो, तो निम्नलिखित समायोजन लागू किया जाएगा ।

$$Pa = P \times (t-0.25) \div (T-0.25)$$

जहां

Pa = परिपक्वता विसंगति को समायोजित कर ऋण संरक्षण का मूल्य है ।

P = हेयरकट को समायोजित कर ऋण संरक्षण (उदाहरणार्थ, संपार्श्विक राशि, गारंटी राशि)

t = न्यूनतम (T, ऋण संरक्षण व्यवस्था की अवशिष्ट परिपक्वता) वर्षों में अभिव्यक्त

T = न्यूनतम (5, एक्सपोज़र की अवशिष्ट परिपक्वता) वर्षों में अभिव्यक्त

7.7 सीआरएम तकनीकों के समूह के संबंध में व्यवहार

उन मामलों में जहां किसी बैंक द्वारा एकल एक्सपोज़र को कवर करने के लिए एक से अधिक सीआरएम तकनीकों का प्रयोग किया गया है (उदाहरणार्थ कोई बैंक संपार्श्विक तथा गारंटी दोनों से किसी एक्सपोज़र को आंशिक रूप से कवर करता है) उस बैंक को प्रत्येक प्रकार के सीआरएम तकनीक द्वारा कवर किये गये हिस्सों मे (अर्थात् संपार्श्विक द्वारा कवर हिस्सा, गारंटी द्वारा कवर हिस्सा) एक्सपोज़र को विभाजित करना होगा तथा प्रत्येक हिस्से की जोखिम भारित आस्तियों की अलग-अलग गणना करनी होगी । जब अकेले संरक्षणदाता द्वारा प्रदत्त ऋण संरक्षण की भिन्न-भिन्न परिपक्वताएं हैं, उन्हें भी अलग-अलग संरक्षण में विभाजित करना होगा।

8. बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भार

8.1 प्रस्तावना

बाज़ार कीमतों के उतार-चढ़ाव के कारण तुलन पत्र तथा गैर-तुलन पत्र स्थितियों (पोज़िशन) में होनेवाली हानि के जोखिम को बाज़ार जोखिम के रूप में परिभाषित किया जाता है । निम्न बाज़ार जोखिम स्थितियों में पूंजी भार अपेक्षा लागू होगी -

(i) ट्रेडिंग बही में ब्याज दर संबंधित लिखतों तथा इक्विटी से संबंधित जोखिम

(ii) पूरे बैंक में (बैंकिंग और ट्रेडिंग बहियों दोनों ही में) विदेशी मुद्रा जोखिम (बहुमूल्य धातुओं में ओपन पोज़िशन सहित)

8.2 बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भार का दायरा

8.2.1 इन दिशानिर्देशों से ट्रेडिंग बही में ब्याज दर संबद्ध लिखतों, ट्रेडिंग बही में इक्विटी तथा ट्रेडिंग तथा बैंकिंग बही दोनों में विदेशी मुद्रा जोखिम (स्वर्ण तथा अन्य बहुमूल्य धातु सहित) के लिए पूंजी भारों की गणना संबंधी मुद्दों को हल किया जाएगा । पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन के लिए ट्रेडिंग बही में निम्नलिखित शामिल होंगे :

i) व्यापार के लिए धारित श्रेणी के अंतर्गत शामिल प्रतिभूतियां

ii) बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी के अंतर्गत शामिल प्रतिभूतियां

iii) ओपन स्वर्ण पोज़िशन सीमाएं

iv) ओपन विदेशी मुद्रा पोज़िशन की सीमाएं

v) डेरिवेटिव में ट्रेडिंग की पोज़िशन, तथा

vi) ट्रेडिंग बही एक्सपोज़र की हेजिंग के लिए डेरिवेटिव

8.2.2 बैंकों को लगातार अपनी बहियों में बाजार जोखिम का प्रबंधन करना होगा तथा सुनिश्चित करना होगा कि बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी अपेक्षाएं लगातार रखी जा रही हैं, अर्थात् हर दिन कारोबार बंद होने पर । बैंकों से यह भी अपेक्षित है कि वे बाज़ार जोखिमों के प्रति एक दिन के भीतर होनेवाले एक्सपोज़र को नियंत्रित तथा निगरानी करने के लिए सख्त जोखिम प्रबंध प्रणाली कायम रखें ।

8.2.3 बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी उन प्रतिभूतियों के लिए अप्रासंगिक होगी जो कि पहले ही परिपक्व हो गई हैं और जिनका भुगतान नहीं हुआ है । ये प्रतिभूतियां सिर्फ ऋण जोखिम के लिए ही पूंजी प्राप्त करेंगी। 90 दिनों तक भुगतान नहीं होने के बाद, इन पर ऋण जोखिम के लिए समुचित जोखिम भार निश्चित करने के लिए इन्हें एनपीए के समकक्ष माना जाएगा ।

8.3 ब्याज दर जोखिम के लिए पूंजी भार की माप

8.3.1 इस भाग में ट्रेडिंग बही में ऋण प्रतिभूतियों तथा अन्य ब्याज दर संबद्ध लिखतों को धारण करने अथवा उनमें पोजिशन लेने के जोखिम की माप करने की प्रणाली का वर्णन किया गया है ।

8.3.2 ब्याज दर संबद्ध लिखतों के लिए पूंजी भार बैंक की ट्रेडिंग बही में इन मदों के वर्तमान बाजार मूल्य पर लागू होगा। चूँकि बैंकों को बाजार जोखिमों के लिए निरंतर आधार पर पूंजी रखना आवश्यक है, उनसे यह अपेक्षित है कि वे दैनिक आधार पर अपनी ट्रेडिंग पोजिशन का बाज़ार दर पर मूल्यांकन करें । वर्तमान बाजार मूल्य, निवेशों के मूल्यांकन संबंधी रिज़र्व बैंक के वर्तमान दिशानिर्देशों के अनुसार निर्धारित किया जाएगा ।

8.3.3 न्यूनतम पूँजी अपेक्षा दो अलग-अलग आकलित किए जाने वाले प्रभारों के रूप में व्यक्त की जाती है (i) प्रत्येक प्रतिभूति के लिए **"विनिर्दिष्ट जोखिम"** प्रभार जिसे शॉर्ट पोज़िशन (भारत में डेरिवेटिव के अलावा शॉर्ट पोज़िशन की अनुमति नहीं दी जाती है) तथा लाँग पोज़िशन दोनों के लिए, एकल जारीकर्ता से संबंधित घटकों की वजह से एकल प्रतिभूति की कीमत में प्रतिकूल गति से सुरक्षा प्रदान करने के लिए निर्धारित किया गया है, तथा (ii) ऐसे संविभाग में ब्याज दर जोखिम के लिए **"सामान्य बाजार जोखिम"** प्रभार जिसमें विभिन्न प्रतिभूतियों या लिखतों में लाँग और शॉर्ट पोज़िशन (जिसकी भारत में डेरिवेटिव के अलावा अन्य में अनुमति नहीं दी गई है) प्रतिसंतुलित की जा सकती है।

8.3.4 बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी के अंतर्गत धारित ऋण प्रतिभूतियों के लिए संभाव्य लंबी धारण अवधि तथा उससे संबद्ध उच्चतर विनिर्दिष्ट जोखिम को ध्यान में रखते हुए बैंक बाजार जोखिम के लिए नीचे 'क' अथवा 'ख' में से जो भी अधिक है,उसके बराबर कुल पूंजी भार रखेंगे ।

क) खरीद बिक्री के लिए धारित श्रेणी के अंतर्गत धारित मानते हुए बिक्री के लिए उपलब्ध प्रतिभूतियों के लिए कल्पित रूप से अभिकलित विनिर्दिष्ट पूंजी भार (सारणी-16 : यथालागू भाग क/ग/ङ के अनुसार अभिकलित) तथा सामान्य बाजार जोखिम पूंजी भार का योग।

ख) बैंकिंग बही में धारित मानकर बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी के लिए कल्पित आधार पर अभिकलित वैकल्पिक कुल पूंजी भार (सारणी-16 : यथालागू भाग ख/घ/च के अनुसार अभिकलित)

अ. विनिर्दिष्ट जोखिम

8.3.5 किसी एक जारीकर्ता से संबंधित घटकों की वजह से किसी एकल प्रतिभूति की कीमत में प्रतिकूल गति से सुरक्षा प्रदान करने के लिए विनिर्दिष्ट जोखिम के लिए पूँजी भार निर्धारित किया गया है। विभिन्न प्रकार के एक्स्पोज़र के लिए विनिर्दिष्ट जोखिम भार निम्नानुसार लागू किए जाएंगे:

क्रम सं.	ऋण प्रतिभूतियों/जारीकर्ता का स्वरूप	निम्नलिखित सारणी का अनुपालन करें
क.	केंद्र, राज्य तथा विदेशी केंद्र सरकार के बॉण्ड (i) खरीद-बिक्री के लिए धारित श्रेणी में धारित (ii) बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी में धारित	 सारणी 16 - भाग क सारणी 16 - भाग ख
ख.	बैंक बॉण्ड (i) खरीद-बिक्री के लिए धारित श्रेणी में धारित (ii) बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी में धारित	 सारणी 16 - भाग ग सारणी 16 - भाग घ

ग.	कंपनी बॉण्ड तथा प्रतिभूतीकृत ऋण (i) खरीद-बिक्री के लिए धारित श्रेणी में धारित (ii) बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी में धारित	 सारणी 16 - भाग ङ सारणी 16 - भाग च

सारणी 16 - भाग - क

भारतीय तथा विदेशी सम्प्रभु द्वारा जारी की गई सम्प्रभु प्रतिभूतियों के लिए विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार - बैंकों द्वारा खरीद-बिक्री के लिए धारित श्रेणी के अंतर्गत धारित

क्र. सं.	निवेश का प्रकार	अवशिष्ट परिपक्वता	विनिर्दिष्ट जोखिम पूँजी (एक्सपोज़र के % के रूप में)
क	**भारतीय केंद्र सरकार और राज्य सरकारें**		
1.	केंद्र तथा राज्य सरकार की प्रतिभूतियों में निवेश	सभी	0.0
2.	केंद्र सरकार द्वारा गारंटीकृत अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	सभी	0.0
3.	राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	6 महीने या उससे कम	0.28
		6 महीने से अधिक तथा 24 महीने तक	1.13
		24 महीने से अधिक	1.80
4.	अन्य प्रतिभूतियों में निवेश जहाँ ब्याज का भुगतान तथा मूलधन की चुकौती केंद्र सरकार द्वारा गारंटीकृत है।	सभी	0.0
5.	अन्य प्रतिभूतियों में निवेश जहाँ ब्याज का भुगतान तथा मूलधन की चुकौती राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत है।	6 महीने या उससे कम	0.28
		6 महीने से अधिक तथा 24 महीने तक	1.13
		24 महीने से अधिक	1.80
ख	**विदेशी केंद्र सरकारें**		
1.	एएए से एए	सभी	0.00
2.	ए से बीबीबी	6 महीने या उससे कम	0.28
		6 महीने से अधिक तथा 24 महीने तक	1.13
		24 महीने से अधिक	1.80
3.	बीबी से बी	सभी	9.00
4.	बी से कम	सभी	13.50
5.	रेटिंग नहीं की गई	सभी	13.50

सारणी 16 - भाग ख

भारतीय और विदेशी सम्प्रभु द्वारा जारी की गयी प्रतिभूतियों के लिए वैकल्पिक कुल पूंजी भार - बिक्री हेतु उपलब्ध श्रेणी

के अंतर्गत बैंकों द्वारा धारित प्रतिभूतियां

क्र. सं.	निवेश का स्वरूप	अवशिष्ट परिपक्वता	विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी (एक्सपोज़र के % के रूप में)
क.	**भारतीय केंद्र सरकार और राज्य सरकारें**		
1.	केंद्र और राज्य सरकारों की प्रतिभूतियों में निवेश	सभी	0.00
2.	केंद्र सरकार द्वारा गारंटीकृत अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	सभी	0.00
3	राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	सभी	1.80
4.	ऐसी अन्य प्रतिभूतियों में निवेश, जहां ब्याज की अदायगी तथा मूलधन की चुकौती केंद्र सरकार द्वारा गारंटीकृत है	सभी	0.00
5.	ऐसी अन्य प्रतिभूतियों में निवेश, जहां ब्याज की अदायगी तथा मूलधन की चुकौती राज्य सरकार द्वारा गारंटीकृत है।	सभी	1.80
ख.	**विदेशी केंद्र सरकार**		
1.	एएए से एए	सभी	0.00
2.	ए	सभी	1.80
3.	बीबीबी	सभी	4.50
4.	बीबी से बी	सभी	9.00
5.	बी के नीचे	सभी	13.50
	रेटिंग न की गयी	सभी	13.50

सारणी 16 - भाग ग

बैंकों द्वारा जारी बांडों के लिए

विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार - खरीद -बिक्री के लिए धारित श्रेणी के अंतर्गत बैंकों द्वारा रखे गये बांड

सीआरएआर का स्तर (जहां	अवशिष्ट परिपक्वता अवधि	विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार	
		सभी अनुसूचित बैंक (वाणिज्य, सहकारी और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक)	सभी गैर-अनुसूचित बैंक (वाणिज्य, सहकारी और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक)

उपलब्ध हो) (प्रतिशत में)		पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत की सीमा के भीतर निवेश (प्रतिशत में)	अन्य सभी दावे (प्रतिशत में)	पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत की सीमा के भीतर निवेश (प्रतिशत में)	अन्य सभी दावे (प्रतिशत में)
1	2	3	4	5	6
9 और उससे ऊपर	6 माह या उससे कम	1.40	0.28	1.40	1.40
	6 माह से अधिक और 24 माह तक एवं उसके सहित	5.65	1.13	5.65	5.65
	24 माह से अधिक	9.00	1.80	9.00	9.00
6 और उससे अधिक तथा 9 से कम	सभी परिपक्वता अवधि	13.50	4.50	22.50	13.50
3 और उससे अधिक तथा 6 से कम	सभी परिपक्वता अवधि	22.50	9.00	31.50	22.50
0 और उससे अधिक तथा 3 से कम	सभी परिपक्वता अवधि	31.50	13.50	56.25	31.50
ऋणात्मक	सभी परिपक्वता अवधि	56.25	56.25	पूरी कटौती	56.25

टिप्पणियां :

i) जिन बैंकों के मामले में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा कोई पूंजी पर्याप्तता मानदंड विनिर्दिष्ट नहीं किया गया है, उधारकर्ता /निवेशक बैंक निवेशिती बैंक से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर तथा वाणिज्य बैंकों को यथा लागू पूंजी पर्याप्तता मानदंडों का उपयोग करते हुए नोशनल रूप में संबंधित बैंक के सीआरएआर की गणना करे। यदि ऐसे नोशनल आधार पर सीआरएआर की गणना करना व्यवहार्य नहीं पाया जाता है तो निवेशक बैंक के जोखिम बोध के अनुसार, 31.50 या 56.25 प्रतिशत का विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार निवेशक बैंक के पूरे एक्सपोज़र के लिए समान रूप से लगाया जाना चाहिए।

ii) जिन बैंकों के मामले में फिलहाल पूंजी पर्याप्तता मानदंड लागू नहीं हैं, उनके पूंजी पात्रता वाले लिखतों में निवेश करने का प्रश्न फिलहाल नहीं उठता । फिर भी, उक्त सारणी के स्तंभ 3 और 5 उनपर लागू होंगे, यदि वे भविष्य में ऐसे पूंजी लिखत जारी करते हैं जिनमें अन्य बैंक निवेश करने के लिए पात्र हैं।

भाग 16 - भाग घ

बैंकों द्वारा जारी बांडों के लिए

वैकल्पिक कुल पूंजी भार - बिक्री के लिए उपलब्ध श्रेणी के अंतर्गत बैंकों द्वारा धारित

(पैरा 8.3.4 में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन)

सीआरएआर का स्तर (जहां उपलब्ध हो) (प्रतिशत में)	वैकल्पिक कुल पूंजी भार			
	सभी अनुसूचित बैंक (वाणिज्य, सहकारी और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक)		सभी गैर-अनुसूचित बैंक (वाणिज्य, सहकारी और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक)	
	पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत की सीमा के भीतर निवेश (प्रतिशत में)	अन्य सभी दावे (प्रतिशत में)	पैरा 4.4.8 में उल्लिखित 10 प्रतिशत की सीमा के भीतर निवेश (प्रतिशत में)	अन्य सभी दावे (प्रतिशत में)
1	2	3	4	5
9 और उससे ऊपर	9.00	1.80	9.00	9.00
6 और उससे अधिक तथा 9 से कम	13.50	4.50	22.50	13.50
3 और उससे अधिक तथा 6 से कम	22.50	9.00	31.50	22.50
0 और उससे अधिक तथा 3 से कम	31.50	13.50	50.00	31.50
ऋणात्मक	56.25	56.25	पूरी कटौती	56.25

टिप्पणियां :

i) जिन बैंकों के मामले में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा कोई पूंजी पर्याप्तता मानदंड विनिर्दिष्ट नहीं किया गया है, उधारकर्ता /निवेशक बैंक निवेशिती बैंक से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर तथा वाणिज्य बैंकों को यथा लागू पूंजी पर्याप्तता मानदंडों का उपयोग करते हुए नोशनल रूप में संबंधित बैंक के सीआरएआर की गणना करे। यदि ऐसे नोशनल आधार पर सीआरएआर की गणना करना व्यवहार्य नहीं पाया जाता है तो निवेशक बैंक के जोखिम बोध के अनुसार, 31.50 या 56.25 प्रतिशत का विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार निवेशक बैंक के पूरे एक्सपोज़र के लिए समान रूप से लगाया जाना चाहिए।

ii) जिन बैंकों के मामले में फिलहाल पूंजी पर्याप्तता मानदंड लागू नहीं हैं, उनके पूंजी पात्रता वाले लिखतों में निवेश करने का प्रश्न फिलहाल नहीं उठता । फिर भी, ऊपर दी गयी सारणी के स्तंभ 2और 4 उनपर लागू होंगे, यदि वे भविष्य में ऐसे पूंजी लिखत जारी करते हैं जिनमें अन्य बैंक निवेश करने के लिए पात्र हैं।

सारणी 16 - भाग ङ (i)[22]

बैंकों द्वारा एचएफटी संवर्ग में धारित कंपनी बांडों (बैंक बांडों को छोड़कर) के लिए विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी प्रभार

ईसीएआइ द्वारा रेटिंग	अवशिष्ट परिपक्वता	विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी प्रभार

[22] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

एएए से बीबीबी	6 महीने या उससे कम	0.28
	6 महीने से अधिक और 24 महीने तक	1.14
	24 महीने से अधिक	1.80
बीबी और उसके नीचे	सभी परिपक्वता अवधि	13.5
रेटिंग न की गई (यदि अनुमत हो)	सभी परिपक्वता अवधि	9

* ये रेटिंग भारतीय रेटिंग एजेन्सियों /ईसीएआर अथवा विदेशी रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी रेटिंग दर्शाते हैं। विदेशी ईसीएआइ के मामले में यहां प्रयुक्त रेटिंग चिह्न स्टैंडर्ड एंड पुअर है। "+" अथवा " - " परिवर्तकों को मुख्य रेटिंग श्रेणी के साथ शामिल किया गया है।

सारणी 16 - भाग ङ (ii)

एएफएल संवर्ग में बैंकों द्वारा धारित कंपनी बांडों (बैंक बांडों को छोड़कर)के लिए वैकल्पिक कुल पूंजी प्रभार

ईसीएआइ द्वारा रेटिंग	कुल पूंजी प्रभार (प्रतिशत में)
एएए	1.8
एए	2.7
ए	4.5
बीबीबी	9
बीबी और उसके नीचे	13.5
रेटिंग न की गयी	9

* ये रेटिंग भारतीय रेटिंग एजेन्सियों /ईसीएआर अथवा विदेशी रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी रेटिंग दर्शाते हैं। विदेशी ईसीएआइ के मामले में यहां प्रयुक्त रेटिंग चिह्न स्टैंडर्ड एंड पुअर है। "+" अथवा " - " परिवर्तकों को मुख्य रेटिंग श्रेणी के साथ शामिल किया गया है।

सारणी - 16 भाग - च

प्रतिभूतीकृत ऋण लिखतों (एसडीआइ) के लिए विनिर्दिष्ट
जोखिम पूंजी भार - बैंकों द्वारा एचएफटी और एएफएस संवर्ग में धारित

*ईसीएआई द्वारा रेटिंग	विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार	
	प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र (%) में	वाणिज्यिक स्थावर संपदा एक्सपोज़र से संबंधित प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र (एसडीआइ)
एएए	1.8	9
एए	2.7	9
ए	4.5	9
बीबीबी	9	9
बीबी	31.5 प्रवर्तकों के मामले में कटौती	31.5 प्रवर्तकों के मामले में कटौती
बी तथा उसके नीचे	कटौती	कटौती

* उपर्युक्त रेटिंग भारतीय रेटिंग एजेन्सियों /ईसीएआइ अथवा विदेशी रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी रेटिंग दर्शाते हैं। विदेशी ईसीएआइ के मामले में यहां प्रयुक्त रेटिंग चिह्न स्टैंडर्ड और पुअर के अनुसार है। "+" अथवा " - " जैसे परिवर्तक चिह्नों को मुख्य रेटिंग संवर्ग में ही शामिल कर लिया गया है।

सारणी - 16 भाग - छ

पुनः प्रतिभूतीकृत ऋण लिखतों (आरएसडीआइ) के लिए विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार - बैंकों द्वारा एचएफटी और एएफएस संवर्ग में धारित

*ईसीएआई द्वारा रेटिंग	विनिर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार	
	पुनः प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र (%) में	वाणिज्यिक स्थावर संपदा एक्सपोज़र से संबंधित पुनः प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र (एसडीआइ)
एएए	3.6	18
एए	5.4	18
ए	9	18
बीबीबी	18	18
बीबी	63 प्रवर्तकों के मामले में कटौती	63 प्रवर्तकों के मामले में कटौती
बी तथा उसके नीचे	कटौती	कटौती

* उपर्युक्त रेटिंग भारतीय रेटिंग एजेन्सियों /ईसीएआइ अथवा विदेशी रेटिंग एजेन्सियों द्वारा दी गयी रेटिंग दर्शाते हैं। विदेशी ईसीएआइ के मामले में यहां प्रयुक्त रेटिंग चिह्न स्टैंडर्ड और पुअर के अनुसार है। "+" अथवा " - " जैसे परिवर्तक चिह्नों को मुख्य रेटिंग संवर्ग में ही शामिल कर लिया गया है।

8.3.6 बैंक उक्त पैरा 5 में वर्णित मानकीकृत दृष्टिकोण के अनुसार ऋण जोखिम के लिए पूंजी के भाग के रूप में काउंटर पर डेरिवेटिव के लिए प्रतिपक्षी ऋण जोखिम प्रभार की गणना करने के अलावा **अनुबंध 9** के अनुसार यथापेक्षित ट्रेडिंग बही में काउंटर पर डेरिवेटिव के लिए विनिर्दिष्ट जोखिम प्रभार की गणना करें ।

आ. <u>सामान्य बाजार जोखिम</u>

8.3.7 सामान्य बाजार जोखिम के लिए पूंजी अपेक्षाओं का निर्धारण बाजार ब्याज दरों में बदलावों से होने वाली हानि के जोखिम के लिए किया गया है । यह पूंजी भार चार घटकों का योग है :

(i) संपूर्ण ट्रेडिंग बही में निवल शॉर्ट (भारत में डेरिवेटिव के अलावा कहीं भी शॉर्ट पोजीशन (कमी) की अनुमति नहीं है) या लॉंग पोज़ीशन;

(ii) प्रत्येक टाइम-बैण्ड में संतुलित पोज़िशन का छोटा अंश (वर्टिकल डिजएलाउएन्स");

(iii) विभिन्न टाइम-बैण्ड में संतुलित पोज़िशन का बड़ा अंश ("हॉरिजॉन्टल डिजएलाउएन्स"); तथा

(iv) जहां उपयुक्त है वहां ऑप्शन्स में पोज़िशन पर निवल प्रभार;

प्रत्येक मुद्रा के लिए अलग परिपक्वता सोपान का प्रयोग किया जाना चाहिए तथा प्रत्येक मुद्रा के लिए पूंजी भार की गणना अलग से की जानी चाहिए तथा उसके बाद उनका योग किया जाना

चाहिए और विपरीत चिह्न वाले पोजीशनों के बीच कोई प्रतिसंतुलन नहीं होना चाहिए । उन मुद्राओं के मामले में, जिनमें कारोबार महत्वपूर्ण नहीं है (जहां संबंधित मुद्रा में टर्न ओवर समग्र विदेशी मुद्रा टर्न ओवर के 5 प्रतिशत से कम है), प्रत्येक मुद्रा के लिए अलग-अलग गणना आवश्यक नहीं है । बैंक इसके बदले प्रत्येक उपयुक्त टामइ-बैंड के भीतर प्रत्येक मुद्रा के लिए निवल लांग या शार्ट पोजीशन वर्गीकृत कर सकता है । तथापि, इन अलग-अलग निवल पोजीशनों को प्रत्येक टाइम-बैंड के भीतर जोड़ा जाना चाहिए, चाहे वे लांग या शार्ट पोजीशन हों, तथा एक सकल पोजीशन आंकड़ा प्राप्त किया जाना चाहिए । प्रत्येक टाइम बैंड में सकल पोजीशन पर सारणी 18 में वर्णित प्रतिफल में कल्पित परिवर्तन लागू किया जाएगा और कोई और प्रतिसंतुलन नहीं किया जाएगा ।

बासल समिति ने बाजार जोखिमों के लिए पूंजी भार की गणना के लिए दो व्यापक पद्धतियों का सुझाव दिया है, एक है मानकीकृत पद्धति तथा दूसरी है बैंकों की आंतरिक जोखिम प्रबंधन मॉडेल पद्धति । चूंकि भारत में कार्यरत बैंक अब भी आंतरिक जोखिम प्रबंधन मॉडेलों को विकसित करने के प्रारंभिक स्तर पर हैं इसलिए यह निर्णय लिया गया है कि शुरूमें बैंक मानकीकृत पद्धति को अपनाएंगे। मानकीकृत पद्धति के अंतर्गत बाजार जोखिम की गणना करने की दो मुख्य पद्धतियां हैं, एक 'परिपक्वता पद्धति' तथा दूसरी 'अवधि पद्धति'। चूंकि ब्याज दर जोखिम की माप के लिए 'अवधि पद्धति' अधिक सही पद्धति है इसलिए यह निर्णय लिया गया है कि पूंजी भार प्राप्त करने के लिए मानकीकृत अवधि प्रणाली का अपनाया जाए। तदनुसार, बैंकों को प्रत्येक पोज़िशन की मूल्य संवेदनशीलता (आशोधित अवधि) की अलग से गणना करके सामान्य बाजार जोखिम प्रभार की गणना करनी है। इस पद्धति में निम्नानुसार कार्रवाई की जानी है :

(i) पहले प्रत्येक लिखत की मूल्य संवदेनशीलता (आशोधित अवधि) की गणना करें;

(ii) उसके बाद लिखत की परिपक्वता के आधार पर 0.6 तथा 1.0 प्रतिशत-अंकों के बीच प्रत्येक लिखत की आशोधित अवधि पर प्रतिफल में कल्पित परिवर्तन को लागू करें (**सारणी - 17** देखें)

(iii) परिणामी पूंजी भार मापों को सारणी - 17 में दिए गए अनुसार पंद्रह टाइम बैण्ड वाली परिपक्वता सीढी में वर्गीकृत करें;

(iv) प्रत्येक टाइम बैण्ड में लाँग तथा शॉर्ट पोजिशन्स डेरिवेटिव के अलावा (भारत में अन्य कहीं भी शॉर्ट पोजिशन अनुमत नहीं है) पर 5 प्रतिशत वर्टिकल डिजएलाउंस दें जिससे आधार जोखिम प्राप्त होगा ; तथा

(v) **सारणी - 18** में निर्धारित डिजएलांउसिज के अधीन प्रत्येक टाइम-बैण्ड में नेट पोजिशन्स को हॉरिजॉन्टल ऑफ सेटिंग के लिए आगे लिया जाए।

सारणी 17 - अवधि पद्धति -टाइम बैण्ड तथा प्रतिफल में कल्पित परिवर्तन

टाइम बैण्ड	प्रतिफल में कल्पित परिवर्तन		टाइम बैण्ड	प्रतिफल में कल्पित परिवर्तन
क्षेत्र 1			क्षेत्र 3	

1 महीना अथवा कम	1.00		3.6 से 4.3 वर्ष	0.75
1 से 3 महीने	1.00		4.3 से 5.7 वर्ष	0.70
3 से 6 महीने	1.00		5.7 से 7.3 वर्ष	0.65
6 से 12 महीने	1.00		7.3 से 9.3 वर्ष	0.60
क्षेत्र 2			9.3 से 10.6 वर्ष	0.60
1.0 से 1.9 वर्ष	0.90		10.6 से 12 वर्ष	0.60
1.9 से 2.8 वर्ष	0.80		12 से 20 वर्ष	0.60
2.8 से 3.6 वर्ष	0.75		20 वर्ष से अधिक	0.60

सारणी 18
हॉरिजॉन्टल डिजएलाउंसिस

क्षेत्र	**टाइम बैण्ड**	**क्षेत्रों के भीतर**	**निकटस्थ क्षेत्रों के बीच**	**क्षेत्र 1 तथा 3 के बीच**
	1 महीना अथवा कम			
क्षेत्र 1	1 से 3 महीने			
	3 से 6 महीने	40 प्रतिशत		
	6 से 12 महीने		40 प्रतिशत	
क्षेत्र 2	1.0 से 1.9 वर्ष			
	1.9 से 2.8 वर्ष	30 प्रतिशत		
	2.8 से 3.6 वर्ष			100 प्रतिशत
	3.6 से 4.3 वर्ष			
	4.3 से 5.7 वर्ष		40 प्रतिशत	
क्षेत्र 3	5.7 से 7.3 वर्ष	30 प्रतिशत		
	7.3 से 9.3 वर्ष			
	10..6 से 12 वर्ष			
	12 से 20 वर्ष			
	20 वर्ष से अधिक			

8.3.10 <u>ब्याज दर डेरिवेटिव</u>

बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भार की गणना में ट्रेडिंग बही में सभी ब्याज दर डेरिवेटिव तथा तुलनपत्र से इतर लिखत तथा ट्रेडिंग बही एक्सपोजर्स की हेजिंग के लिए किए गए डेरिवेटिव जो कि ब्याज दरों में परिवर्तन से प्रभावित होंगे, को शामिल किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए वायदा दर करार, ब्याज दर पोज़िशन आदि । ब्याज दर डेरिवेटिव्ज़ के लिए पूंजी भार की गणना के ब्यौरे **अनुबंध 9** में दिए गए हैं ।

8.4 ईक्विटी जोखिम के लिए पूंजी भार की माप

8.4.1 ईक्विटी पर पूंजी भार बैंक की ट्रेडिंग बही में उनके वर्तमान बाजार मूल्य पर लागू होगा । ट्रेडिंग बही में इक्विटी धारण करने अथवा उनमें पोजिशन्स लेने के जोखिम को कवर करने के लिए न्यूनतम पूंजी अपेक्षा नीचे दी गयी है। इसे इक्विटी के समान बाज़ार प्रवृत्ति दर्शाने वाले सभी लिखतों पर लागू किया जाएगा लेकिन अपरिवर्तनीय अधिमान शेयरों (जिन्हें पूर्व में वर्णित ब्याज दर जोखिम अपेक्षाओं द्वारा कवर किया जाता है) पर नहीं। कवर किए जाने वाले लिखतों में मताधिकार वाले अथवा मताधिकार रहित इक्विटी शेयर, इक्विटी जैसी प्रवृत्ति वाली परिवर्तनीय प्रतिभूतियां, उदाहरणार्थ, म्युच्युअल फंड के यूनिट, तथा इक्विटी को खरीदने अथवा बेचने की प्रतिबद्धताएं शामिल होंगी।

<u>विनिर्दिष्ट तथा सामान्य बाज़ार जोखिम</u>

8.4.2 विनिर्दिष्ट जोखिम (ऋण जोखिम के समान) के लिए पूंजी भार 9 प्रतिशत होगा तथा विनिर्दिष्ट जोखिम की गणना बैंक के सकल इक्विटी पोजिशन्स (अर्थात् सभी लाँग ईक्विटी पोजिशन्स तथा सभी शॉर्ट इक्विटी पोजिशन्स का योग - हालांकि भारत में बैंकों के लिए शॉर्ट इक्विटी पोजिशन की अनुमति नहीं है) पर की जाती है। सकल इक्विटी पोजिशन्स पर सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभार भी 9 प्रतिशत होगा ।

8.5 विदेशी मुद्रा जोखिम के लिए पूंजी भार की माप

प्रत्येक मुद्रा में बैंक के निवल ओपन पोजीशन की गणना निम्नलिखित के योग द्वारा की जानी चाहिए;

- निवल हाज़िर पोजीशन (अर्थात् आस्ति की सभी मदों में से सभी देयताओं की मदों, जिनमें संबंधित मुद्रा में मल्यवर्गित उपचित ब्याज भी शामिल है, को घटाकर);
- निवल वायदा पोजीशन (करेंसी फ्यूचर्स् सहित वायदा विदेशी मुद्रा लेनदेनों में प्राप्य सभी राशियों में से भुगतान की जानेवाली राशि तथा हाजिर पोजीशन में शामिल नहीं किये गये करेंसी स्वैप की मूल राशि को छोड़कर);
- गारंटी (और उसी प्रकार के लिखत) जिनका निश्चित रूप से आह्वान किया जाएगा और जिनकी वसूली की संभावना नहीं है;
- निवल भावी आय/व्यय, जो अभी उपचित नहीं हुए है, लेकिन जिनकी पूरी हेजिंग की गयी है (सूचना देनेवाले बैंक के विवेक पर);
- विभिन्न देशों की लेखांकन परंपरा के अनुसार कोई और मद जो विदेशी मुद्रा में लाभ या हानि दर्शाती हो;
- विदेशी मुद्रा ऑप्शन की पूरी बही की निवल डेल्टा आधारित समकक्ष राशि ।

विदेशी मुद्रा में ओपन पोजिशन्स तथा स्वर्ण ओपन पोजिशन्स को वर्तमान में 100 प्रतिशत जोखिम भार दिया जाता है। अतः विदेशी मुद्रा तथा स्वर्ण ओपन पोजिशन की बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भार 9 प्रतिशत है। इन ओपन पोजिशन्स की **उच्चतम सीमाएं अथवा वास्तविक राशि,** इनमें से जो भी उच्चतर है, पर 9 प्रतिशत पर पूंजी भार लगना जारी रहेगा। यह पूंजी

भार विदेशी मुद्रा तथा स्वर्ण लेनदेन से संबंधित तुलनपत्र की मदों तथा तुलनपत्र से इतर मदों पर ऋण जोखिम के लिए लगनेवाले पूंजी भार के अतिरिक्त है।

8.6 बाज़ार जोखिमों के लिए पूंजी भार का योग

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है योग करने से पूर्व विनिर्दिष्ट जोखिम तथा सामान्य बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी भारों की अलग से गणना की जानी है। बाज़ार जोखिमों के लिए कुल पूंजी भार की गणना निम्नलिखित सारणी के अनुसार की जा सकती है :

प्रोफार्मा

(करोड़ रूपये में)

जोखिम श्रेणी	पूंजी भार
I. ब्याज दर (क + ख)	
क. सामान्य बाज़ार जोखिम	
i) निवल पोजिशन (पॅरलल शिफ्ट)	
ii) हॉरिजॉंटल डिजएलाऊंस (कर्वेचर)	
iii) वर्टिकल डिजएलाऊंस (बेसिस)	
iv) ऑप्शन्स	
ख. विनिर्दिष्ट जोखिम	
II. ईक्विटी (क + ख)	
क. सामान्य बाज़ार जोखिम	
ख. विनिर्दिष्ट जोखिम	
III. विदेशी मुद्रा तथा स्वर्ण	
IV. बाज़ार जोखिमों के लिए कुल पूंजी भार (I +II +III)	

8.7 गैर-तरल स्थितियों के लिए कार्रवाई

8.7.1 विवेकपूर्ण मूल्य निर्धारण के लिए मार्गदर्शन

(i) इस खंड में उन स्थितियों के विवेकपूर्ण मूल्य निर्धारण के संबंध में मार्गदर्शन दिया गया है जिनका लेखांकन उचित मूल्य पर किया गया हो । यह मार्गदर्शन उन सभी स्थितियों पर लागू होगा जो उपर्युक्त पैरा 8.2.1 में वर्णित हैं । यह मार्गदर्शन विशेष रूप से उन स्थितियों के लिए महत्वपूर्ण है जिनमें वास्तविक बाज़ार मूल्य अथवा मूल्य निर्धारण की माप करने योग्य निविष्टियां उपलब्ध न हों अथवा जो स्थितियां आसानी से चलनिधि में परिवर्तित नहीं होती हों और जिन से उनके विवेकपूर्ण मूल्य निर्धारण के संबंध में पर्यवेक्षीय चिंता उत्पन्न होती हो । नीचे वर्णित मूल्य निर्धारण संबंधी मार्गदर्शन के कारण बैंकों को वित्तीय रिपोर्टिंग के प्रयोजन से अपनायी जाने वाली मूल्य निर्धारण प्रक्रिया बदलने की आवश्यकता नहीं है ।

(ii) किसी विवेकपूर्ण मूल्य निर्धारण पद्धति की संरचना में कम-से-कम निम्नलिखित शामिल होना चाहिए :

8.7.1.1 प्रणाली और नियंत्रण

बैंकों को उपयुक्त प्रणाली और नियंत्रण स्थापित करना चाहिए जो प्रबंधन और पर्यवेक्षकों को विश्वस्त कर सके कि उनका मूल्य निर्धारण संबंधी अनुमान विवेकपूर्ण और विश्वसनीय है । इन प्रणालियों को संगठन के भीतर की अन्य जोखिम प्रबंध प्रणालियों (जैसे ऋण विश्लेषण) के साथ समन्वित किया जाना चाहिए । इन प्रणालियों में निम्नलिखित शामिल होना चाहिए :

(i) मूल्य निर्धारण प्रक्रिया से संबंधित लिखित नीति और क्रियाविधि । इसके अंतर्गत मूल्य निर्धारित करने वाले विभिन्न क्षेत्रों के स्पष्ट रूप से परिभाषित दायित्व, बाजार सूचना के स्रोत और उनकी उपयुक्तता की समीक्षा शामिल है । ऐसी निविष्टियों के उपयोग के संबंध में दिशानिर्देश जिनकी माप नहीं की जा सकती और जो बैंक की इस धारणा को प्रकट करते हैं कि बाजार प्रतिभागी स्थिति का मूल्य निर्धारण करने के लिए किस पद्धति का उपयोग करेंगे, स्वतंत्र मूल्य निर्धारण की बारंबारता, अंतिम मूल्य का समय निर्धारण, निर्धारित मूल्य में परिवर्तन की क्रियाविधि, माह के अंत में तथा तदर्थ सत्यापन क्रियाविधि; और

(ii) मूल्य निर्धारण प्रक्रिया के लिए उत्तरदायी विभाग के लिए स्पष्ट और स्वतंत्र रिपोर्टिंग (अर्थात् फ्रंट कार्यालय से स्वतंत्र) व्यवस्था ।

8.7.1.2. मूल्य निर्धारण क्रियाविधि

बाजार दर पर मूल्य निर्धारण

(i) बाज़ार दर पर मूल्य निर्धारण स्वतंत्र स्रोतों से प्राप्त व्यवस्थित लेनदेनों में आसानी से उपलब्ध अंतिम मूल्य पर स्थिति का दैनिक मूल्य निर्धारण है । आसानी से उपलब्ध अंतिम मूल्य के उदाहरण हैं - एक्सचेंज मूल्य, स्क्रीन मूल्य या अनेक स्वतंत्र प्रतिष्ठित दलालों से प्राप्त भाव / मूल्य ।

(ii) बैंकों को यथासंभव अधिक-से-अधिक बाजार दर पर मूल्यांकन करना चाहिए । बिड/ऑफर के अधिक विवेकपूर्ण पक्ष का प्रयोग किया जाना चाहिए बशर्ते किसी खास प्रकार के पोजीशन में संस्था महत्वपूर्ण बाजार निर्माता हो और वह मिड-मार्केट में भाव बंद कर सकती हो । बैंकों को मूल्य निर्धारण तकनीक का प्रयोग करते हुए उचित मूल्य का अनुमान लगाते समय माप करने योग्य इनपुट का अधिक प्रयोग करना चाहिए तथा ऐसे इनपुट का प्रयोग कम-से-कम करना चाहिए जिन्हें मापा नहीं जा सकता । तथापि, बाध्य होकर की गयी बिक्री या आपदाग्रस्त बिक्री की स्थिति में माप करने योग्य इनपुट या लेनदेन प्रासंगिक नहीं हो सकते हैं

या बाजार जब सक्रिय न हो, वैसी स्थितियों में लेनदेन प्रेक्षणीय नहीं हो सकते हैं । ऐसे मामलों में प्रेक्षणीय आंकड़ों पर विचार किया जाना चाहिए, लेकिन उनके आधार पर निर्धारण नहीं भी हो सकता है ।

<u>मोडेल के अनुसार मूल्य निर्धारण</u>

(iii) मोडेल के अनुसार मूल्य निर्धारण की परिभाषा ऐसे मूल्य निर्धारण के रूप में की गयी है जो किसी बाजार इनपुट के आधार पर बेंचमार्क की जाती है अथवा उससे निकाली जाती है या गणना की जाती है । जहां बाजार दर पर मूल्य निर्धारण संभव नहीं हो वहां बैंकों को "बैंकों द्वारा निवेश संविभाग के वर्गीकरण, मूल्यांकन और परिचालन के लिए विवेकपूर्ण मानदंड" पर1 जुलाई 2009 के मास्टर परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 3/21.04.141/2009-10 में निहित निवेशों के मूल्य निर्धारण संबंधी दिशानिर्देशों का अनुसरण करना चाहिए । जिन निवेश और डेरिवेटिव पोजीशन के संबंध में उक्त मास्टर परिपत्र में उल्लेख किया गया है, उनके संबंध में बैंक द्वारा प्रयुक्त मूल्य निर्धारण मोडेल विवेकपूर्ण सिद्ध होना चाहिए । भारतीय रिज़र्व बैंक/फिमडा दिशानिर्देशों में निर्धारित मूल्य निर्धारण मोडेल के अलावा अन्य मोडेल के अनुसार मूल्य निर्धारण करते समय अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है । मोडेल के अनुसार मूल्य निर्धारण प्रणाली विवेकपूर्ण है या नहीं इसका मूल्यांकन करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक निम्नलिखित बातों पर विचार करेगा :

- वरिष्ठ प्रबंध तंत्र को ट्रेडिंग बही अथवा अन्य उचित मूल्य पोजीशन के उन तत्वों की जानकारी रहनी चाहिए जो मोडेल के अनुसार मूल्य निर्धारण के अधीन हैं तथा इससे कारोबार के जोखिम/कार्य निष्पादन की रिपोर्टिंग में जो अनिश्चितता उत्पन्न होती है उसके महत्व को भी समझना चाहिए ।
- बाजार इनपुट का स्रोत यथासंभव बाजार मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए (जैसा कि ऊपर चर्चा की गयी है) । किसी खास पोजीशन के मूल्य निर्धारण के लिए प्रयुक्त मार्केट इनपुट की उपयुक्तता की नियमित समीक्षा की जानी चाहिए ।
- जहां उपलब्ध हो, विशेष उत्पादों के लिए सामान्य रूप से स्वीकृत मूल्य निर्धारण क्रियाविधि का यथासंभव उपयोग किया जाना चाहिए ।
- जहां मोडेल स्वयं संस्था द्वारा ही तैयार किया गया हो, वहां मोडेल समुचित अवधारणाओं पर आधारित होना चाहिए, जिनका मूल्यांकन मोडेल तैयार करने से असंबद्ध सुयोग्य पार्टियों द्वारा किया गया हो । मोडेल को विकसित करने या अनुमोदित करने के कार्य में फ्रंट कार्यालय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए । मोडेल का स्वतंत्र परीक्षण किया जाना चाहिए । इसमें मोडेल का गणित, अवधारणा और सॉफ्टवेयर कार्यान्वियन शामिल है ।
- एक औपचारिक परिवर्तन नियंत्रण प्रक्रिया सुस्थापित होनी चाहिए तथा मोडेल की एक सुरक्षित प्रतिलिपि रखी जानी चाहिए और आवधिक रूप से मूल्य निर्धारण की जांच के लिए उसका प्रयोग किया जाना चाहिए ।

- जोखिम प्रबंध प्रणाली को प्रयुक्त मोडेलों की कमजोरी का पता होना चाहिए तथा यह भी पता होना चाहिए कि मूल्य निर्धारण के परिणाम में उन कमजोरियों को किस तरह अच्छी नीति से प्रतिबिंबित किया जाए ।
- मोडेल की आवधिक समीक्षा की जानी चाहिए ताकि उसके कार्य की शुद्धता निर्धारित की जा सके (उदाहरण के लिए अवधारणाओं की निरंतर उपयुक्तता का मूल्यांकन, जोखिम घटकों की तुलना में लाभ और हानि का विश्लेषण, मोडेल के परिणाम की वास्तविक अंतिम मूल्य से तुलना)
- उपयुक्त मूल्य निर्धारण समायोजन किये जाने चाहिए । उदाहरण के लिए, मोडेल के मूल्य निर्धारण की अनिश्चितता को कवर करने के लिए (कृपया पैरा 8.7.1.2 (vi) (vii) और 8.7.2.1 से 8.7.2.4 भी देखें)

<u>स्वतंत्र मूल्य सत्यापन</u>

(iv) स्वतंत्र मूल्य सत्यापन बाजार दर पर दैनिक मूल्यांकन से अलग है । यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बाजार मूल्यों या मोडेल इनपुट की शुद्धता की नियमित जांच की जाती है । यद्यपि बाजार दर पर दैनिक मूल्य निर्धारण डीलर करते हैं, तथापि बाजार मूल्यों या मोडेल इनपुट का सत्यापन उस इकाई द्वारा किया जाना चाहिए जो डीलिंग रूम से स्वतंत्र हो । ऐसा माह में कम-से-कम एक बार किया जाना चाहिए (या, बाजार/ट्रेडिंग गतिविधि के स्वरूप के आधार पर एक से अधिक बार किया जाना चाहिए) । बाजार दर पर मूल्यांकन करने की आवधिकता के समान इसे बार-बार करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पोजीशन के वस्तुमूलक अर्थात् स्वतंत्र मूल्य निर्धारण में कोई त्रुटि या मूल्य निर्धारण में कोई पक्षपात दिखना चाहिए, जिससे त्रुटिपूर्ण दैनिक मूल्य निर्धारण में सुधार हो सके ।

(v) स्वतंत्र मूल्य सत्यापन में शुद्धता का उच्चतर मानक होना चाहिए, क्योंकि बाजार मूल्यों या मोडेल इनपुट का प्रयोग लाभ और हानि के आंकड़े निर्धारित करने में होता है, जबकि दैनिक मूल्य निर्धारण का प्रयोग मुख्यतया रिपोर्टिंग तिथियों के बीच प्रबंधन रिपोर्टिंग के लिए किया जाता है । ऐसे स्वतंत्र मूल्य सत्यापन के लिए जिसमें मूल्य निर्धारण के स्रोत अधिक विषयीमूलक हों, उदाहरण के लिए केवल एक उपलब्ध ब्रोकर द्वारा दिया जानेवाला भाव, तब मूल्य निर्धारण समायोजन जैसे विवेकपूर्ण उपाय उपयुक्त होंगे ।

<u>**Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸**</u>

(vi) ¤¸¸{¸¸£ ™£ œ¸£ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ˆ½Å ,¿Š¸ ˆ½Å ³œ¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸½ ˆÅú œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ¬¸º¬˜¸¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ˜¸”Ä-œ¸¸’úÄ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ¬¸½ ¢¨¸©¸½«¸ ³Åœ¸ ¬¸½ ,œ¸½®¸¸ £‰¸÷¸¸ í¾ ¢ˆÅ ¨¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£½¿ ¢ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ,¸¨¸©¡¸ˆÅ í¾ ¡¸¸ ›¸íì — Ÿ¸¸½”½¥¸ ˆ½Å ,›¸º¬¸£ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ž¸ú ƒ¬¸ œ¸Ïˆ¸£ ˆÅ¸ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ ,¸¨¸©¡¸ˆÅ í¾ —

vii) ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ,œ¸›¸½ ”½¢£¨¸½¢’¨¸ ¬¸¿¢¨¸ž¸¸Š¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ˆÅŸ¸-¬¸½-ˆÅŸ¸ ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰¸÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ Å

⊗ ‚›¸¢□¸Ä÷¸ Ç½Å¢"' ¬œÏ½"

⊗ ‚¿¢÷¸Ÿ¸ ž¸¸¨¸

⊗ □¸¥™ú Ÿ¸ú¡¸¸™ ¬¸Ÿ¸¸œ÷¸ ˆÅ£›¸¸‚ ¢›¸¨¸½©¸ ‚¸¾£ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ ¥¸¸Š¸÷¸; ÷¸˜¸¸

⊗ ž¸¸¨¸ú œÏ©¸¸¬¸¢›¸ˆÅ ¥¸¸Š¸÷¸ ‚¸¾£

⊗ □¸í¸Â „œ¸¡¸ºÆ÷¸ í¸½ ¨¸í¸Â Ÿ¸¸½"½¥¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸

¤¸ÿˆÅ „œ¸¡¸ºÆ÷¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢ˆÅ¬¸ú ž¸ú Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸œÏ¸œ÷¸ ¢¨¸¢š¸/Ÿ¸¸½"½¥¸ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ÷¸˜¸¸¢œ¸, ‚›¸¢□¸Ä÷¸ Ç½Å¢"' ¬œÏ½" ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆ½Å Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸½ Ÿ¸½¿ ¡¸¢™ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ˆÅ¸½ƒÄ Ÿ¸¸½"½¥¸ › í¸½ ÷¸¸½ ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰¸÷¸ Ÿ¸¸›¸™¿" ‚œ¸›¸¸¡¸½ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ À

‚¸Ÿ¸ ÷¸¸¾£ œ¸£ "½¢£¨¸½¢'"¸ "ú¥¸£ Š¸¢÷¸©¸ú¥¸ Ç½Å¢"' ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ □¸¸½ ‚½'ú¬¸ú "½¢£¨¸½¢'"¸ ¬¸¿¢¨¸ž¸¸Š¸ ˆ½Å „›¸ˆ½Å ˆÅ¸„¿'£œ¸¸¢'Ä¡¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸‰¸ Ÿ¸½¿ íº‡ œ¸¢£¨¸÷¸Ä› ˆÅ¸½ œÏ¢÷¸¢¤¸¢Ÿ¤¸÷¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ — □¸»ˆÅ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆ½Å ™¸½ œÏˆÅ¸£ íÿ — œ¸í¥¸½ Ÿ¸½¿ œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ †µ¸ í¸¢›¸ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸÷¸¸ í¾ ÷¸˜¸¸ ™»¬¸£½ Ÿ¸½¿ ‚œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ †µ¸ í¸¢›¸ ˆÅ¸½ ˆÅ¨¸£ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ £‰¸ú Š¸¡¸ú œ¸»¿□¸ú ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥ ˆÅú □¸¸÷¸ú í¾ —

‚›¸¢□¸Ä÷¸ Ç½Å¢"' ¬œÏ½" ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ƒ¬¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ œÏ¢÷¸¢¤¸¢Ÿ¤¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢ˆÅ‡ □¸¸÷¸½ íÿ ¢ˆÅ ˆÅ¸„¿'£œ¸¸'úÄ ˆÅú œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ □¸»ˆÅ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ "ú¥¸£ ˆÅ¸½ ‚™¸¡¸Š¸ú ›¸íì ¢Ÿ¸¥¸½Š¸ú — ƒ›¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸÷¸¡¸¸ ›¸½¢'¿Š¸ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸ ‚¸¾£ ˆÅ¸½¥¸½'£¥¸ ˆÅ¸½ š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸¸ □¸¸÷¸¸ í¾ — ‚÷¸ˆÅ¸, "ú¥¸£ Ç½Å¢"' □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ □¸¸½ ¨¸¸¬÷¸¢¨¸ˆÅ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ ¨¸½ „›¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ¬¸½ ˆÅŸ¸ í¸½÷¸½ íÿ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ ›¸½¢'¿Š¸ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸ ‚¸¾£ ˆÅ¸½¥¸½'£¥¸ ˆÅ¸ š¡¸¸›¸ ›¸íì £‰¸¸ □¸¸÷¸¸ í¾ — ž¸¸£÷¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ‚ž¸ú ÷¸ˆÅ "½¢£¨¸½¢'"¸ ¥¸½›¸™½›¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ›¸½¢'¿Š¸ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ‚›¸ºŸ¸¢÷¸ ›¸íì ™ú Š¸¡¸ú í¾ — ‚÷¸ˆÅ, ¡¸¢™ ‚›¸¢□¸Ä÷¸ Ç½Å¢"' ¬œÏ½" ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ¸ ‚›¸ºŸ¸¸›¸ ¥¸Š¸¸›¸¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å œ¸¸¬¸ Ÿ¸¸½"½¥¸ › í¸½¿, ÷¸¸½ ¨¸½ œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸¸Äœ¸÷¸÷¸¸ ˆ½Å œÏ¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸Ÿž¸¸¢¨¸÷¸ ž¸¸¨¸ú ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏ¡¸ºÆ÷¸ †µ¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä› Š¸ºµ¸ˆÅ ˆ½Å 20% ˆ½Å ¤¸£¸¤¸£ ˆ½Å Š¸ºµ¸ˆÅ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£ œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ í¸¢›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏ¸¨¸š¸¸›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½

íÿ —

œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ †µ¸ í¸¢›¸ ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸ ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸ ˆºÅŽ "ú¥¸£ ‚œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ í¸¢›¸ ˆÅ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¨¸íŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸»¿□¸ú œÏž¸¸£ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆÅ¸ œÏž¸¸£ „›¸ ˆÅúŸ¸¸÷¸¸½¿ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸¢¤¸¢Ÿ¤¸÷¸ í¸½Š¸¸ ¢□¸›¸ œ¸£ ¤¸¸□¸¸£ œÏ¢÷¸ž¸¸Š¸ "½¢£¨¸½¢'"¸ ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ÷¸¾¡¸¸£ í¸½÷¸½ íÿ — ¡¸½ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ „□¸□¸÷¸Ÿ¸ œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ ¬¸÷¸£ ¬¸½ ‚¢š¸ˆÅ íºƒÄ †µ¸ í¸¢›¸ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ ‚÷¸Ÿ¸¬¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ¨¸¸¥¸ú œ¸»¿□¸ú œ¸£ ‚™¸ ¢ˆÅ¡¸½

□¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ œÏ¢÷¸œ¸€¥¸ ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸ ™©¸¸Ä÷¸½ íÿ — ‚œÏ÷¡¸¸¢©¸÷¸ í¸¢›¸ ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ íÿ Æ¡¸¸½¿¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ž¸ú ¬¸¿¢¨¸ž¸¸Š¸ Ÿ¸½¿ ¢ˆÅ¬¸ú ž¸ú Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅú ÷¸¸£ú‰¸ ˆÅ¸½ ‡½¬¸ú í¸¢›¸ ˆÅ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¤¸›¸¸ £í÷¸¸ í¾ —

¢'œœ¸µ¸ú À …œ¸£ œÏ¡¸ºÆ÷¸ ˆºÅŽ ©¸¤™¸½¿ ˆÅ¸½ ›¸ú□¸½ ¬œ¸«' ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ À

‚¿¢÷¸Ÿ¸ ¥¸¸Š¸÷¸

‚¿¢÷¸Ÿ¸ ¥¸¸Š¸÷¸ À ¬¸¿¢¨¸ž¸¸Š¸ ˆ½Å ¤¸¸□¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ ¬¸Ÿ¸¸œ÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ‹¸'ˆÅ

¢›¸¨¸½©¸ ‚¸¾£ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ ¥¸¸Š¸÷¸

¢›¸¨¸½©¸ ‚¸¾£ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ ¥¸¸Š¸÷¸ Ÿ¸¸½"½¥¸ ×¸£¸ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸÷¸¡¸¸ ‚œ¸›¸¸¡¸ú Š¸¡¸ú ™£¸½¿ ¬¸½ ¢ž¸››¸ ™£¸½¿ œ¸£ ›¸ˆÅ™ú œÏ¨¸¸í ¢¨¸¬¸¿Š¸¢÷¸ ˆ½Å ¢›¸š¸ú¡¸›¸ ‚¸¾£ ¢›¸¨¸½©¸ ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸ í¾ —

œÏ©¸¸¬¸¢›¸ˆÅ ¥¸¸Š¸÷¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸

œÏ©¸¸¬¸¢›¸ˆÅ ¥¸¸Š¸÷¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ¬¸¿¢¨¸ž¸¸Š¸ ˆ½Å œÏ©¸¸¬¸›¸ Ÿ¸½¿ í¸½›¸½¨¸¸¥¸ú ¥¸¸Š¸÷¸ í¾ —

8.7.2 ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»¿□¸ú œÏ¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ¬¸½ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ Ÿ¸»¥¡¸¿ˆÅ› ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸

8.7.2.1 ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»¿□¸ú œÏ¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ¬¸½ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ Ÿ¸»¥¡¸¿ˆÅ› Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ÷¸¸ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¥¸½›¸½ ‚¸¾£ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú œÏ¢ÇÅ¡¸¸‡¿ ¬¸ºÂ¬˜¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ¡¸í ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ¢¨¸÷¸÷¸ú¡¸ ¢£œ¸¸½¢'ôŠ¸ ˆ½Å œÏ¡¸¸½□¸›¸ ¬¸½ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ Ÿ¸½¿ ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ œ¸¢£¨¸÷¸Ä› ˆ½Å ‚¢÷¸¢£Æ÷¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ‚¸¾£ ƒ¬¸ˆÅú œ¸¢£ˆÅ¥œ¸›¸¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆÅú ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸÷¸¸ ˆÅ¸½ ¨¡¸Æ÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ — ¢ˆÅ¬¸ú œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆÅú ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸÷¸¸ ˆÅ¸½ ¨¡¸Æ÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ „Æ÷¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸¿ˆÅ› Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡, □¸¸íº ¨¸í œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ¤¸¸□¸¸£ Ÿ¸»¥¡¸¸½¿ ˆ½Å ‚š¸¸£ œ¸£ ‚˜¸¨¸¸ Ÿ¸¸œ¸ ˆÅ£›¸½ ¡¸¸½Š¡¸ ƒ›¸œ¸º' ˆ½Å ‚š¸¸£ œ¸£, ˜¸"Ä œ¸¸'úÄ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ› ˆ½Å ‚š¸¸£ œ¸£ ¡¸¸ Ÿ¸¸½"½¥¸ ˆ½Å ‚š¸¸£ œ¸£ Ÿ¸»¥¡¸¸¿¢ˆÅ÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¸½ —

8.7.2.2 ¡¸í ™½‰¸÷¸½ íº‡ ¢ˆÅ ¤¸¸□¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸»¿□¸ú œÏž¸¸£ ˆÅú ÷¸£¥¸÷¸¸ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ œ¸»¨¸¸Ä›¸ºŸ¸¸›¸ ¡¸˜¸¸ „œ¸¡¸ºÆ÷¸ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆÅú ¢¤¸ÇÅú œ¸£ í½□¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ ˆ½Å ‚›¸³œ¸ › í¸½, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ƒ› œ¸¸½□¸ú©¸›¸¸½¿ ˆ½Å ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ› Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ£›¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ¢›¸£¿÷¸£ „›¸ˆÅú „œ¸¡¸ºÆ÷¸÷¸¸ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸÷¸¸ ¤¸¸□¸¸£ ‹¸'›¸¸‚½¿ ¬¸½ „÷œ¸››¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸, ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ÷¸¡¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÇ¢Í÷¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ‚¸¾£/˜¸¨¸¸ ¬'½¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆÅú Æ¥¸¸½›¸-‚¸„' ˆÅúŸ¸÷¸¸½¿ œ¸£ ž¸ú ¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ —

ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ›¸½ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅú £¸¢©¸ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢ˆÅ¬¸ú ¢¨¸¢©¸«’ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ í¾ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅú „œ¸¡¸ºÆ÷¸÷¸¸ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¬¸ž¸ú ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ‹¸’ˆÅ¸½¿ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ›¸ ‹¸’ˆÅ¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰÷¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ (í¸¥¸¸¿¢ˆÅ ƒ›í½¿ ˆ½Å¨¸¥¸ ƒ›¸ Ÿ¸™¸½¿ ÷¸ˆÅ íú ¬¸ú¢Ÿ¸÷¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸) - œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ¡¸¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å ž¸ú÷¸£ □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ ˆÅú í½¢□¸¿Š¸ ˆÅ£›¸½ Ÿ¸½¿ ¥¸Š¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸¸ ¬¸Ÿ¸¡¸, ¢¤¸” ‚Áœ¸€£ ¬œ¸Ï½” ˆÅ¸ ‚¸¾¬¸÷¸ „÷¸¸£-□¸□õ¸¨¸, ¬¨¸÷¸¿°¸ ¤¸¸□¸¸£ ž¸¸¨¸¸½¿ ˆÅú „œ¸¥¸¤š¸÷¸¸ (¤¸¸□¸¸£ ¢›¸Ÿ¸¸Ä÷¸¸‚¸½¿ ˆÅú ¬¸¿‰¡¸¸ ‚¸¾£ œ¸í□¸¸›¸), ’ï½¢”¿Š¸ œ¸¢£Ÿ¸¸µ¸ (¤¸¸□¸¸£ ˆÅú ™¤¸¸¨¸ ¢¬˜¸¢÷¸ ˆ½Å ™¸¾£¸›¸ ’ï½¢”¿Š¸ œ¸¢£Ÿ¸¸µ¸ ¬¸¢í÷¸) ˆÅ¸ ‚¸¾¬¸÷¸ ÷¸˜¸¸ „÷¸£-□¸□õ¸¨¸, ¤¸¸□¸¸£ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸, œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ¢ˆÅ÷¸›¸¸ œ¸º£¸›¸¸ í¾, ¢ˆÅ¬¸ í™ ÷¸ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ Ÿ¸¸½”½¥¸ ˆ½Å ‚›¸º¬¸¸£ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ œ¸£ ‚š¸¸¢£÷¸ í¾ ‚¸¾£ œ¸¾£¸ 8.7.2.2 Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸½ Š¸¡¸½ ‚›¡¸ Ÿ¸¸½”½¥¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸ œ¸Ïž¸¸¨¸ — ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸÷¸¸ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢‰ □¸¸í½ ¢œ¸€Ÿ¸”¸ ×¸£¸ □¸¸£ú ¢™©¸¸¢›¸™½Ä©¸¸½¿ Ÿ¸½¿ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆ½Å œ¸Ï¡¸¸½□¸›¸ ¬¸½ ¨¸¸ƒ’ú‡Ÿ¸ /¬œ¸Ï½” ÷¸¡¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸÷¸¸ ˆ½Å œ¸Ïú¢Ÿ¸¡¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ Š¸µ¸›¸¸ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¸½ ¡¸¸ ›¸íì —

8.7.2.3 □¸¢’¥¸ „÷œ¸¸™¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡, ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ œ¸Ï¢÷¸ž¸»¢÷¸¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸ ‚›¡¸ „÷œ¸¸™ ž¸ú ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅú ‚¸¨©¡¸ˆÅ÷¸¸ ˆÅ¸ ¬œ¸«’ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢‰ ÷¸¸¢ˆÅ ™½ œ¸Ïˆ¸£ ˆ½Å Ÿ¸¸½”½¥¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œ¸Ï¢÷¸¢¤¸¢Ÿ¤¸÷¸ í¸½ ¬¸ˆ½¿Å À

(i) ¬¸¿ž¸¨¸÷¸À °¸º¢’ œ¸»µ¸Ä Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸ ˆ½Å œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ¬¸½ □¸º”õ¸ Ÿ¸¸½”½¥¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸; ‚¸¾£ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ Ÿ¸¸½”½¥¸ Ÿ¸½¿ ‚œ¸Ï½®¸µ¸ú¡¸ ‚¸¾£ ¬¸¿ž¸¨¸÷¸À °¸º¢’ œ¸»µ¸Ä)) Ÿ¸¸œ¸ œ¸¾Ÿ¸¸›¸½ ˆ½Å œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ¬¸½ □¸º”õ¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸

8.7.2.4 œ¸¾£¸ 8.7.2.2 ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆ½Å ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ˆÅ¸½ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¬¸ú‚£‡‚¸£ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¥¸¸ž¸ ‚¸¾£ í¸¢›¸ ‰¸÷¸½ Ÿ¸½¿ ›¸¸Ÿ¸½ ›¸íì ”¸¥¸¸ □¸¸‡Š¸¸, ¤¸¢¥¸ˆÅ ’ú¡¸£ 1 ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»¿□¸ú ¬¸½ ‹¸’¸¡¸¸ □¸¸‡Š¸¸ — ¡¸í ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¢£œ¸¸½¢’ôŠ¸ /¥¸½‰¸¸ Ÿ¸¸›¸ˆÅ ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ ÷¸˜¸¸ œ¸¾£¸ 8.7.1.2 (vi) ‚¸¾£ (vii) ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ¬¸½ ‚¢š¸ˆÅ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —

8.7.2.5 ¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸¸°¸ œ¸»¿□¸ú ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸í ‚¸¨©¡¸ˆÅ í¸½Š¸¸ ¢ˆÅ œ¸í¥¸½ †µ¸ ‚¸¾£ œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ›¡¸»›¸÷¸Ÿ¸ œ¸»¿□¸ú ‚œ¸½®¸¸ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅú □¸¸‡ ‚¸¾£ „¬¸ˆ½Å ¤¸¸™ íú „¬¸ˆ½Å ¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰Ÿ¸

,œ¸½®¸¸ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅú □¸¸‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¡¸í ¬œ¸«' í¸½ ¬¸ˆ½Å ¢ˆÅ ¢ˆÅ÷¸›¸¸ 'ú¡¸£ 1 ,¸¾£ 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú ¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ „œ¸¥¸¤¸š¸ í¾ — œ¸¸°¸ œ¸»¿□¸ú ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅú ˆºÅ¥¸ 'ú¡¸£ 1 œ¸»¿□¸ú ,¸¾£ ˆºÅ¥¸ 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú ˆÅ¸ ¡¸¸½Š¸ í¸½Š¸¸ ¤¸©¸÷¸½Ä 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú 'ú¡¸£ 1 œ¸»¿□¸ú ˆ½Å 100% ¬¸½ ,¢š¸ˆÅ ›¸ í¸½ ÷¸˜¸¸ ƒ¬¸ Ÿ¸¸¬'£ œ¸¢£œ¸°¸ Ÿ¸½¿ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ 'ú¡¸£ 1 ,¸¾£ 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ©¸÷¸½ô œ¸»£ú ˆÅú □¸¸‡¿ —

<u>**¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸»¿□¸ú ˆÅú Š¸µ¸›¸¸**</u>

(£¸¢©¸ ˆÅ£¸½"õ ²œ¸¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿)

1.	œ¸»¿□¸ú ¢›¸¢š¸ • 'ú¡¸£ 1 œ¸»¿□¸ú • 'ú¡¸£ 2 œ¸»¿□¸ú	 55 50	105
2.	ˆºÅ¥¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸¢£÷¸ ,¸¢¬÷¸¡¸¸¿ • †µ¸ ,¸¾£ □¸¢£□¸¸¥¸›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸¢£÷¸ ,¸¢¬÷¸¡¸¸¿ • ¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸¸¢£÷¸ ,¸¢¬÷¸¡¸¸¿	 1000 140	1140
3.	ˆºÅ¥¸ ¬¸ú,¸£‡,¸£		9.21
4.	†µ¸ ,¸¾£ œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ›¡¸»›¸÷¸Ÿ¸ œ¸»¿□¸ú ,œ¸½®¸¸ (1000*9%) 'ú¡¸£ 1 (@ 1000 ˆÅ¸ 4.5% ˆÅ¸) 'ú¡¸£ 2 (@ 1000 ˆÅ¸ 4.5%)	 45 45	90
5.	¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ „œ¸¥¸¤¸š¸ œ¸»¿□¸ú • 'ú¡¸£ 1 - (55 - 45) • 'ú¡¸£ 2 - (50 - 45)	 10 5	15

9. <u>परिचालन जोखिम के लिए पूंजी भार</u>

9.1 परिचालन जोखिम की परिभाषा

परिचालन जोखिम को अपर्याप्त अथवा असफल आंतरिक प्रक्रियाओं, लोगों तथा प्रणालियों अथवा बाहरी घटनाओं के परिणामस्वरूप होनेवाली हानि के जोखिम के रूप में परिभाषित किया गया है। इस परिभाषा में विधिक जोखिम शामिल है लेकिन कार्यनीति (स्ट्रॅटेजिक) तथा प्रतिष्ठागत जोखिम शामिल नहीं है। विधिक जोखिम में पर्यवेक्षी कार्रवाइयों तथा निजी निपटानों के परिणामस्वरूप जुर्माना, दंड तथा दंडात्मक क्षतिपूर्ति के प्रति एक्सपोज़र शामिल है लेकिन यहीं तक सीमित नहीं है।

9.2 गणन पद्धतियां

9.2.1 नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे में परिचालन जोखिम पूंजी भारों की गणना के लिए उत्तरोत्तर बढ़ती हुई परिष्कृतता तथा जोखिम संवेदनशीलता के साथ तीन पद्धतियां दी गयी हैं : i) मूल

(बेसिक) निर्देशक दृष्टिकोण (बीआइए); ii) मानकीकृत दृष्टिकोण (टीएसए); तथा iii) उन्नत माप दृष्टिकोण (एएमए)।

9.2.2 बैंकों को अधिक परिष्कृत परिचालन जोखिम गणना प्रणालियों तथा प्रथाओं को विकसित करते हुए उपलब्ध दृष्टिकोणों के अनुरूप उत्तरोत्तर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

9.2.3 नए पूंजी पर्याप्तता ढांचे में यह प्रावधान है कि अंतर्राष्ट्रीय रूप से सक्रिय बैंकों तथा महत्वपूर्ण परिचालन जोखिम एक्सपोजर्स वाले बैंकों से अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसा दृष्टिकोण अपनाएं जो कि मूल निर्देशक दृष्टिकोण से अधिक परिष्कृत है तथा वह जो कि संस्था की जोखिम प्रोफाइल के लिए उपयुक्त है। तथापि प्रारंभ में भारत में कार्यरत बैंक परिचालन जोखिम के लिए पूंजी अपेक्षाओं की गणना मूल निर्देशक दृष्टिकोण के अंतर्गत करेंगे। रिज़र्व बैंक मूल निर्देशक दृष्टिकोण से प्राप्त पूंजी अपेक्षा की सामान्य विश्वसनीयता, विशेषतः बैंक की समकक्ष संस्थाओं के बीच में विश्वसनीयता की समीक्षा करेगा तथा विश्वसनीयता के अभाव में स्तम्भ 2 के अंतर्गत समुचित पर्यवेक्षी कार्रवाई पर विचार किया जाएगा।

9.3 मूल निर्देशक दृष्टिकोण

9.3.1 मूल निर्देशक दृष्टिकोण के अंतर्गत बैंकों को परिचालन जोखिम के लिए पिछले तीन वर्ष की अवधि के दौरान सकारात्मक वार्षिक सकल आय के निश्चित प्रतिशत (अल्फा के रूप में अंकित) के औसत के बराबर पूंजी रखनी होगी। औसत की गणना करते समय जिस वर्ष में वार्षिक सकल आय नकारात्मक अथवा शून्य है उस वर्ष के आंकड़ों को भाज्य तथा भाजक दोनों से निकाल देना चाहिए। यदि नकारात्मक सकल आय बैंक के स्तम्भ 1 पूंजी भार को विकृत करती है तो रिज़र्व बैंक स्तम्भ 2 के अंतर्गत उचित पर्यवेक्षी कार्रवाई पर विचार करेगा। प्रभार को निम्नानुसार व्यक्त किया जाए :

$$\mathbf{KBIA = [\sum (GI_{1 \ldots n} \times \alpha)]/n}$$

जहां

KBIA = मूल निर्देशक दृष्टिकोण के अंतर्गत पूंजी भार

GI = पिछले तीन वर्ष के दौरान वार्षिक सकल आय, जहां सकारात्मक है।

n = उन पिछले तीन वर्षों की संख्या जब सकल आय सकारात्मक है।

α = 15 प्रतिशत, जिसे बीसीबीएस ने निर्धारित किया है, इससे आवश्यक पूंजी के उद्योगवार स्तर को निर्देशक के उद्योगवार स्तर से जोड़ा गया है।

9.3.2 सकल आय को 'निवल ब्याज आय' और 'निवल ब्याजेतर आय' के योग के रूप में परिभाषित किया गया है। यह उद्देश्य है कि इस माप में :

i) वर्ष के दौरान किए गए प्रावधानों (उदा. अदत्त ब्याज के लिए) तथा बट्टे खाते डाले गए मदों का जोड़ होना चाहिए;

ii) परिचालनगत व्ययों, जिनमें आउाटसोर्सिंग सेवा प्रदाताओं को भुगतान किए गए शुल्क शामिल हैं, का सकल योग होना चाहिए । *आऊटसोर्स की गयी सेवाओं के*

लिए दिए गए शुल्क के अतिरिक्त आऊटसोर्सिंग सेवाएं प्रदान करनेवाले बैंकों द्वारा प्राप्त शुल्क को भी सकल आय की परिभाषा में शामिल किया जाएगा;

iii) पिछले वर्ष (वर्षों) के दौरान किए गए प्रावधानों तथा राइट-ऑफ के संबंध में वर्ष के दौरान किए गए रिवर्सल को शामिल नहीं किया जाना चाहिए;

iv) चल तथा अचल संपत्ति की मदों को बेचने से प्राप्त आय को नहीं जोड़ा जाना चाहिए;

v) 'परिपक्वता तक धारित' श्रेणी में प्रतिभूतियों की बिक्री से प्राप्त लाभ/हानियों को नहीं जोड़ा जाना चाहिए;

vi) बैंक के पक्ष में विधिक समझौतों से प्राप्त आय को न जोड़ा जाए;

vii) आय तथा व्यय की अन्य असाधारण अथवा अनियमित मदों को शमिल न करें;

viii) बीमा कार्यकलापों (अर्थात् बीमा पॉलिसियों को राइट करने से व्युत्पन्न आय) तथा बैंक के पक्ष में 'बीमा दावों से व्युत्पन्न आय को शामिल न करें।

9.3.3 बैंकों को मूल निर्देशक दृष्टिकोण के अंतर्गत परिचालन जोखिम के लिए पूंजी भार की गणना निम्नानुसार करना चाहिए :

क) पिछले तीन वित्तीय वर्ष, जिनमें नकारात्मक अथवा शून्य सकल आय के वर्ष शामिल नहीं हैं के प्रत्येक वर्ष के (सकल आय * आल्फा) का औसत

ख) सकल आय = निवल लाभ (+) प्रावधान तथा आकस्मिकताएं (+) परिचालन व्यय (अनुसूची 16) (-) (पैरा 9.3.2 की मदें (iii) से (viii) ।

ग) आल्फा = 15 प्रतिशत

9.3.4 नए पूंजी पर्याप्तता ढांचे में पूंजी गणना की शुरुआत करने की दृष्टि से मूल निर्देशक दृष्टिकोण के उपयोग के लिए कोई विशिष्ट मानदंड निर्धारित नहीं किए गए हैं। फिर भी, इस दृष्टिकोण का उपयोग करने वाले बैंकों को *परिचालन जोखिम के प्रबंधन तथा पर्यवेक्षण के लिए स्वस्थ प्रथाएं*, फरवरी 2003 संबंधी समिति के मार्गदर्शन तथा अक्तूबर 2005 में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी किए गए परिचालन जोखिम के प्रबंधन पर मार्गदर्शी नोट का अनुपालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

भाग ख : पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया (एसआरईपी)

10. स्तंभ 2 के अंतर्गत पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया की भूमिका

10.1 27 अप्रैल 2007 के हमारे परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 90/20.06.001/2006-07 के द्वारा बैंकिंग पर्यवेक्षण संबंधी बासल समिति द्वारा विकसित बासल II ढांचे पर आधारित नया पूंजी पर्याप्तता ढांचा भारत के लिए अपनाया गया है । उपर्युक्त परिपत्र के अनुबंध के पैरा 2.4 (iii) (ग) के अनुसार बैंकों से यह अपेक्षा की गयी थी कि उनके पास आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया (आईसीएएपी) के संबंध में बोर्ड अनुमोदित नीति होनी चाहिए तथा वे आइसीएएपी के अनुसार पूंजी अपेक्षा का मूल्यांकन करें । हम यह मानते हैं कि बैंकों ने उक्त नीति बनायी होगी तथा तदनुसार पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन किया होगा ।

10.2 बासल II ढांचे के तीन घटक या तीन स्तंभ हैं । स्तंभ I न्यूनतम पूंजी अनुपात है, जबकि स्तंभ 2 और स्तंभ 3 क्रमशः पर्यवेक्षीय समीक्षा प्रक्रिया (एसआरपी) और बाजार अनुशासन है । स्तंभ 1 और स्तंभ 3 के संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक ने उपर्युक्त परिपत्र के माध्यम से दिशानिर्देश जारी किये, जिन्हें इस मास्टर परिपत्र में क्रमशः भाग क और भाग ग के रूप में समेकित किया गया है । एसआरपी और आइसीएएपी के संबंध में दिशानिर्देश नीचे पैरा 11 में दिये गये हैं । भारतीय रिज़र्व बैंक को बैंकों द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले आइसीएएपी दस्तावेज के प्रारूप का एक उदाहरण **अनुबंध-15** में दिया गया है ।

10.3 एसआरपी का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बैंकों के पास अपने कारोबार के सभी जोखिमों से बचाव के लिए पर्याप्त पूंजी है । इसका उद्देश्य उन्हें अपने जोखिमों की निगरानी और प्रबंधन के लिए बेहतर जोखिम प्रबंधन तकनीकें विकसित करने और उनका प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना भी है । इस हेतु बैंकों के भीतर एक सुपरिभाषित आंतरिक मूल्यांकन प्रक्रिया आवश्यक होगी, जिसके माध्यम से वे भारतीय रिज़र्व बैंक को आश्वस्त करेंगे कि बैंकों के समक्ष जो विभिन्न प्रकार के जोखिम हैं उनके लिए पर्याप्त पूंजी वस्तुतः रखी जा रही है । आश्वासन की प्रक्रिया के अंतर्गत बैंक और भारतीय रिज़र्व बैंक के बीच सक्रिय संवाद भी शामिल है, ताकि आवश्यकता पड़ने पर बैंक के जोखिम एक्सपोज़र को कम करने के लिए या उसकी पूंजी बढ़ाने/बहाल करने के लिए समुचित हस्तक्षेप किया जा सके । अतः आइसीएएपी पर्यवेक्षीय समीक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है ।

10.4 एसआरपी और इसलिए आइसीएएपी के अंतर्गत निम्नलिखित मुख्य पहलुओं को शामिल किया जाएगा :

(क) ऐसे जोखिम जिन्हें स्तंभ 1 के अंतर्गत निर्धारित न्यूनतम पूंजी अनुपात में पूरी तरह समाविष्ट नहीं किया गया है;

(ख) ऐसे जोखिम जिन्हें स्तंभ 1 के अंतर्गत शामिल ही नहीं किया गया है; और

(ग) बैंक से बाहर के घटक

चूंकि इस ढांचे के स्तंभ 1 के अंतर्गत भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित पूंजी पर्याप्तता अनुपात केवल विनियामक **<u>न्यूनतम</u>** स्तर पर है, तथा इसमें केवल तीन विनिर्दिष्ट जोखिमों (अर्थात् ऋण, बाजार और परिचालन जोखिमों) को ध्यान में रखा गया है, अतः बैंकों के लिए दो कारणों से अतिरिक्त पूंजी रखना आवश्यक हो सकता है - स्तंभ 1 के अंतर्गत जोखिमों के कुछ कम आकलन की संभावना के कारण तथा बैंक के जोखिम प्रबंधन तंत्र की गुणवत्ता की तुलना में बैंक के वास्तविक जोखिम एक्सपोज़र के कारण । **उदाहरण के लिए,** बैंकों के कुछ सामान्य जोखिम जिन्हें विनियामक सीआरएआर में समाविष्ट नहीं किया गया है या पूर्णतः समाविष्ट नहीं किया गया है, निम्नलिखित हैं -

क) बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम
ख) ऋण संकेंद्रण जोखिम
ग) चलनिधि जोखिम
घ) निपटान जोखिम
ङ) प्रतिष्ठा जोखिम
च) रणनीतिगत जोखिम
छ) मानकीकृत दृष्टिकोण के अंतर्गत कम आकलन का जोखिम
ज) "मॉडेल जोखिम" अर्थात् आइआरबी दृष्टिकोण के अंतर्गत ऋण जोखिम के कम आकलन का जोखिम
झ) ऋण जोखिम कम करनेवाले तत्वों में कमजोरी का जोखिम
ञ) प्रतिभूतीकरण का अवशिष्ट जोखिम, आदि

अतः यह उचित होगा कि बैंक एक सुपरिभाषित आंतरिक प्रक्रिया के माध्यम से अपने विभिन्न जोखिम एक्सपोज़र का स्वयं मूल्यांकन करें तथा ऐसे जोखिमों के लिए पर्याप्त पूंजी समर्थन बनाए रखें ।

10.5 यह सच है कि आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया (आइसीएएपी) संचालित करने के लिए कोई एक दृष्टिकोण नहीं है तथा आइसीएएपी संचालित करने की स्वतंत्र प्रथा के संबंध में बाजार में अभी तक सर्व सम्मति नहीं हो पायी है । क्रियाविधि और तकनीकें अभी भी विकसित ही हो रही हैं - खास कर ऐसे जोखिमों की माप के संबंध में जिन्हें मात्रा के रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता । उदाहरण के लिए प्रतिष्ठा जोखिम और रणनीतिगत जोखिम । अतः, इन दिशानिर्देशों में केवल व्यापक सिद्धांत दिये गये हैं, जिनका अनुसरण बैंकों को अपने आइसीएएपी विकसित करने के लिए करना चाहिए ।

10.6 बैंकों को सूचित किया जाता है कि वे अपने बोर्ड के अनुमोदन से अपने आकार, जटिलता के स्तर, जोखिम प्रोफाइल तथा परिचालनों की व्याप्ति के अनुरूप आइसीएएपी विकसित करें तथा उसे लागू करें । आइसीएएपी स्तंभ 1 के अंतर्गत विनियामक पूंजी अपेक्षा संबंधी बैंक की गणना के अतिरिक्त होगा तथा विदेशी बैंकों और भारत से बाहर परिचालनात्मक मौजूदगी वाले भारतीय बैंक द्वारा 31 मार्च 2008 से तथा स्थानीय क्षेत्र बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर अन्य सभी वाणिज्य बैंकों द्वारा 31 मार्च 2009 से आइसीएएपी का परिचालन किया जाना चाहिए ।

10.7 बैंकों को सूचित किया जाता है कि वे भारतीय रिज़र्व बैंक (अर्थात् प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, केंद्रीय कार्यालय, सेंटर 1, विश्व व्यापार केंद्र, कफ परेड, कोलाबा, मुंबई - 400 005) को 30 जून 2008 तक अथवा 31 मार्च 2009 तक, जो भी लागू हो, अपने बोर्ड द्वारा अनुमोदित आइसीएएपी दस्तावेज की एक प्रतिलिपि भेजें । इस दस्तावेज में अन्य बातों के साथ-साथ पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन, आगामी वर्ष के लिए पूंजी अपेक्षा का अनुमान तथा पूंजी अपेक्षा की पूर्ति के लिए योजना और रणनीति के ब्यौरे होने चाहिए। बैंकों के मार्गदर्शन के लिए **अनुबंध - 15** में आइसीएएपी दस्तावेज के प्रारूप का एक उदाहरण दिया गया है, हालाँकि बैंकों के आइसीएएपी दस्तावेज़ की लम्बाई और उसका प्रारूप, बैंकों के आकार, जटिलता के स्तर, जोखिम प्रोफाइल और परिचालनों की व्याप्ति के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है। पहला आइसीएएपी दस्तावेज़ 30 जून 2008 तक या 31 मार्च 2009 तक, जो भी लागू हो, भारतीय रिज़र्व बैंक को प्राप्त हो जाना चाहिए तथा उसके बाद प्रत्येक वर्ष मार्च के अन्त तक भारतीय रिज़र्व बैंक को उक्त दस्तावेज़ प्राप्त हो जाना चाहिए, जिसमें आगमी वित्तीय वर्ष के लिए पूंजी मूल्यांकन और अनुमान के ब्यौरे होने चाहिए।

11. उन्नत जोखिम प्रबंध की आवश्यकता[23]

11.1. विगत वर्षों में वित्तीय संस्थाओं की कठिनाइयों के अनेक कारण रहे हैं, लेकिन गंभीर बैंकिंग समस्याओं के निम्नलिखित मुख्य कारण बने हुए हैं : उधारकर्ताओं और काउंटरपार्टियों के लिए शिथिल ऋण मानक, खराब संविभागीय जोखिम प्रबंध तथा आर्थिक और अन्य परिस्थितियों में होनेवाले उन परिवर्तनों की ओर ध्यान न देना जो किसी बैंक की काउंटरपार्टियों की साख में गिरावट ला सकते हैं । विकसित और विकासशील दोनों देशों में यह समान अनुभव रहा है ।

11.2. 2007-08 के वित्तीय बाज़ार संकट ने किसी बैंकिंग संगठन की दीर्घावधिक सफलता में प्रभावी ऋण जोखिम प्रबंध की महत्ता को रेखांकित किया है तथा उसे वित्तीय स्थिरता का एक महत्वपूर्ण अंग माना है । इस संकट ने हमें इस बात की ओर सख्त इशारा किया है कि बैंकों के लिए ऋण जोखिम को प्रभावी तरीके से पहचानना, उसकी माप करना, उसकी निगरानी और नियंत्रण करना तथा यह समझना कि ऋण जोखिम अन्य प्रकार के जोखिमों (बाज़ार, चलनिधि और प्रतिष्ठा जोखिम सहित) से कैसे प्रभावित होता है, कितना आवश्यक है । किसी परिपूर्ण ऋण जोखिम प्रबंध कार्यक्रम के महत्वपूर्ण तत्वों में निम्नलिखित शामिल हैं - (i) एक समुचित ऋण जोखिम वातावरण स्थापित करना; (ii) एक अच्छी ऋण मंजूरी प्रक्रिया के अंतर्गत कार्य करना; (iii) एक समुचित ऋण प्रशासन, माप और निगरानी प्रक्रिया सुनिश्चित करना और (iv) 12 अक्तूबर 2002 को ऋण जोखिम पर जारी हमारे दिशानिर्देश नोट में दिये गये ब्यौरे के अनुसार ऋण जोखिम पर पर्याप्त नियंत्रण सुनिश्चित करना ।

11.3. हाल के संकट ने प्रभावी पूंजी आयोजन और दीर्घावधिक पूंजी रख-रखाव के महत्व को रेखांकित किया है । अनिश्चित बाजार परिस्थितियों का सामना करने की किसी बैंक की क्षमता एक ऐसी सुदृढ़ पूंजीगत स्थिति से बढ़ जाती है जो बैंक की रणनीति में संभावित परिवर्तनों और समय के साथ बाजार स्थितियों में होनेवाले उतार-चढ़ाव को आत्मसात् कर सके । बैंकों को प्रभावी और कुशल पूंजी आयोजन तथा दीर्घावधिक पूंजी रख-रखाव पर ध्यान केंद्रित करना

---

[23] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬’£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

चाहिए । एक प्रभावी पूंजी आयोजन प्रक्रिया के अंतर्गत यह आवश्यक है कि बैंक अपने जोखिमों का आकलन करे तथा उन जोखिमों को प्रबंधित करने और उन्हें कम करने के लिए जोखिम प्रबंध प्रक्रिया स्थापित करे; जोखिमों की तुलना में अपनी पूंजी पर्याप्तता का आकलन करे तथा आर्थिक धीमेपन (मंदी) के दौरान आय और पूंजी पर संभावित प्रभाव पर विचार करे । किसी बैंक की पूंजी आयोजन प्रक्रिया में एक त्रुटिरहित भविष्यदर्शी दबाव परीक्षण प्रणाली शामिल होनी चाहिए, जैसा कि नीचे पैरा 12.9 में वर्णित किया गया है।

11.4 किसी व्यावसायिक गतिविधि में तेज वृद्धि से बैंकों के समक्ष जोखिम प्रबंध की महत्वपूर्ण चुनौती उपस्थित हो सकती है । 'ओरिजिनेट-टु-डिस्ट्रीब्यूट' कारोबारी मॉडल, तुलनपत्रेतर उत्पादों, चलनिधि सुविधाओं और ऋण डेरिवेटिव के व्यापक प्रयोग से ऐसा ही हुआ । ओरिजिनेट-टु-डिस्ट्रीब्यूट मॉडल और प्रतिभूतिकरण, ऋण मध्यस्थता और बैंक की लाभप्रदता में वृद्धि करता है तथा जोखिम को भी अधिक व्यापक रूप में वितरित करता है । लेकिन इनसे जुड़े जोखिमों को नियंत्रित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है । वस्तुतः ये गतिविधियां कारोबार क्षेत्र के भीतर, कंपनी और जोखिम घटकों के बीच ऐसे एक्सपोज़र उत्पन्न करती हैं जिनकी पहचान, माप, प्रबंधन, नियंत्रण और शमन करना कठिन है । यह बात विशेष रूप से बाजार चलनिधि, आस्ति कीमतों और जोखिम अभिमुखता की गिरावट के दौर में सच साबित होती है । ऐसे जोखिमों की समुचित पहचान और माप करने की असमर्थता से अनजाने में ऐसे जोखिम एक्सपोज़र और जोखिम संकेंद्रण हो सकते हैं जिनसे विभिन्न कारोबारों में और जोखिम आयामों में समान कारक-समूह के कारण सहवर्ती हानि हो सकती है । स्ट्रक्चर्ड उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण बैंकों को प्रोत्साहन मिला कि वे ओरिजिनेट-टू-डिस्ट्रीब्यूट मॉडल का प्रयोग कर ऋण दें, उदाहरण के लिए असुरक्षित बेचान मानकों का प्रयोग करते हुए सबप्राइम मॉर्टगेज दिये गये । साथ ही, स्ट्रक्चर्ड ऋण उत्पादों में निवेश करने का निर्णय लेते समय अनेक निवेशक केवल ऋण रेटिंग एजेन्सियों की रेटिंग पर ही निर्भर थे । अनेक निवेशकों ने स्ट्रक्चर्ड उत्पाद खरीदते समय स्वतंत्र रूप से कोई छानबीन नहीं की । इसके अलावा अनेक बैंकों में उनके तुलनपत्र में धारित एक्सपोज़र तथा तुलनपत्रेतर उत्पादों, यथा आस्ति समर्थित वाणिज्यिक पत्र (एबीसीपी) सरणी तथा स्ट्रक्चर्ड निवेश माध्यम (एसआईवी) से जुड़े जोखिमों का प्रबंध करने के लिए अपर्याप्त जोखिम प्रबंध प्रक्रिया स्थापित थी ।

11.5 नवोन्मेष के कारण स्ट्रक्चर्ड ऋण उत्पादों की जटिलता और संभावित तरलता बढ़ गयी है । इससे इन उत्पादों का मूल्यांकन और हेजिंग अधिक कठिन हो सकती है और समग्र जोखिम में अनजाने में वृद्धि हो सकती है । इसके अलावा, जटिल निवेशक-विशिष्ट उत्पादों की वृद्धि से ऐसे विरल बाज़ार उत्पन्न हो सकते हैं जो तरल न हों तथा यदि उनसे जुड़े जोखिमों को सही-सही नहीं समझा जाता है और सामयिक रूप से प्रभावी तरीके से उनका प्रबंध नहीं किया जाता है तो दबाव के समय बैंक को बड़ी हानि हो सकती है ।

12. भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया (एसआरईपी) तथा बैंकों की आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया (आइसीएएपी) के लिए दिशानिर्देश

12.1 पृष्ठभूमि

12.1.1 बासल ढाँचा बैंकों के केवल न्यूनतम पूंजी अपेक्षा के निर्धारण तक सीमित था, परंतु बासल II ढाँचे में इस दृष्टिकोण को विस्तृत करते हुए न केवल न्यूनतम पूंजी अनुपात में

कुछ अतिरिक्त जोखिमों को समाविष्ट किया गया है बल्कि पर्यवेक्षीय समीक्षा प्रक्रिया तथा बैंकों से प्रकटीकरण अपेक्षाओं में वृद्धि करने के माध्यम से बाज़ार अनुशासन नामक दो अतिरिक्त क्षेत्रों को भी शामिल किया गया है। इस प्रकार बासल II ढाँचा निम्नलिखित तीन परस्पर समर्थक स्तंभों पर आधारित है :

स्तंभ 1 : न्यूनतम पूंजी अपेक्षाएँ - इसके अंतर्गत पूंजी अपेक्षाओं की जोखिम- संवेदी गणना निर्धारित की गयी है, जिसमें पहली बार स्पष्ट रूप से बाजार और ऋण जोखिम के साथ-साथ परिचालन जोखिम को भी शामिल किया गया है।

स्तंभ 2 : पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया (एसआरपी) - इसके अंतर्गत बैंकों में उपयुक्त जोखिम प्रबंधन प्रणालियों की स्थापना तथा पर्यवेक्षी प्राधिकारी द्वारा उनकी समीक्षा शामिल है।

स्तंभ 3 : बाज़ार अनुशासन - इसके अंतर्गत बैंकों के लिए व्यापक प्रकटीकरण अपेक्षाओं के माध्यम से पारदर्शिता में वृद्धि करने का प्रयास किया गया है।

12.1.2 बासल समिति के बासल II दस्तावेज में स्तंभ II के अंतर्गत परिकल्पित एसआरपी के संबंध में निम्नलिखित चार प्रमुख सिद्धांतों का निर्धारण किया गया है :

सिद्धांत 1 : बैंकों के पास अपने जोखिम प्रोफाइल के संबंध में अपनी समग्र पूंजी पर्याप्तता के आकलन के लिए एक प्रक्रिया होनी चाहिए तथा पूंजी स्तर बनाए रखने के लिए रणनीति होनी चाहिए।

सिद्धांत 2 : पर्यवेक्षकों को बैंकों के आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकनों और रणनीतियों की तथा विनियामक पूंजी अनुपातों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा अनुपालन की निगरानी करने की उनकी योग्यता की समीक्षा और मूल्यांकन करना चाहिए।

सिद्धांत 3 : पर्यवेक्षकों को बैंकों से यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वे न्यूनतम विनियामक पूंजी अनुपात से उच्चतर स्तर पर परिचालन करें तथा पर्यवेक्षकों के पास यह क्षमता होनी चाहिए कि वे बैंकों से न्यूनतम से अधिक पूंजी रखने की अपेक्षा कर सकें।

सिद्धांत 4 : पर्यवेक्षकों को किसी बैंक के जोखिम स्वरूप का समर्थन करने के लिए अपेक्षित पूंजी को न्यूनतम स्तर से नीचे गिरने से बचाने के लिए काफी पहले हस्तक्षेप करने का प्रयास करना चाहिए। यदि पूंजी बनाए रखी नहीं जाती है अथवा पुनः अपेक्षित स्तर तक नहीं लायी जाती है तो तेजी से सुधारात्मक उपाय अपनाने की अपेक्षा की जानी चाहिए।

12.1.3 यह स्पष्ट है कि सिद्धांत 1 और 3 बैंकों से पर्यवेक्षी अपेक्षाओं से संबंधित हैं, जबकि सिद्धांत 2 और 4 स्तंभ 2 के अंतर्गत पर्यवेक्षकों की भूमिका से संबद्ध हैं । स्तंभ 2 (पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया - एसआरपी) के अंतर्गत बैंकों के जोखिम प्रोफाइल से संबद्ध पूंजी पर्याप्तता के मूल्यांकन के लिए तथा उनके पूंजी स्तर को बनाए रखने की एक रणनीति के रूप में बैंकों से एक आंतरिक प्रक्रिया कार्यान्वित करने की अपेक्षा की गयी है, जिसे आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया (आइसीएएपी) कहा गया है। स्तंभ 2 के अंतर्गत यह भी अपेक्षा की गयी है कि पर्यवेक्षीय प्राधिकारी सभी बैंकों पर एक मूल्यांकन प्रक्रिया लागू करे जिसे इसके बाद पर्यवेक्षीय समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया (एसआरईपी) कहा जाएगा तथा इस आधार पर ऐसे

पर्यवेक्षीय कदम उठाये जिन्हें आवश्यक समझा जाता है । पूर्वोक्त सिद्धांतों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि बैंकों और पर्यवेक्षकों पर निम्नलिखित व्यापक उत्तरदायित्व सौंपे गये हैं -

<u>बैंकों का उत्तरदायित्व</u>

क) बैंकों के पास अपने जोखिम प्रोफाइल की तुलना में अपनी समग्र पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन करने के लिए एक प्रक्रिया तथा अपना पूंजी स्तर बनाये रखने के लिए एक रणनीति सुस्थपित होनी चाहिए (सिद्धांत 1)।

ख) बैंकों को न्यूनतम विनियामक पूंजी अनुपात के ऊपर परिचालन करना चाहिए (सिद्धांत 3)।

<u>पर्यवेक्षकों का उत्तरदायित्व</u>

क) पर्यवेक्षकों को बैंक के आइसीएएपी की समीक्षा और मूल्यांकन करना चाहिए । (सिद्धांत 2)

ख) यदि पर्यवेक्षक इस प्रक्रिया के परिणाम से संतुष्ट नहीं हैं तो उन्हें समुचित कार्रवाई करनी चाहिए । (सिद्धांत 2)

ग) पर्यवेक्षकों को बैंक द्वारा विनियामक पूंजी अनुपातों के अनुपालन की समीक्षा और मूल्यांकन करना चाहिए (सिद्धांत 2)

घ) पर्यवेक्षकों के पास यह क्षमता होनी चाहिए कि वे बैंकों से अपेक्षा कर सकें कि वे न्यूनतम से अधिक पूंजी रखें (सिद्धांत 3)

ङ) पर्यवेक्षकों को न्यूनतम स्तर से नीचे पूंजी गिरने से रोकने के लिए काफी पहले हस्तक्षेप करने का प्रयास करना चाहिए । (सिद्धांत 4)

च) यदि पूंजी स्तर नहीं बनाए रखा जाता है तो पर्यवेक्षकों को त्वरित प्रतिकारात्मक कार्रवाई की अपेक्षा रखनी चाहिए (सिद्धांत 4)

12.1.4 अतः, आइसीएएपी और एसआरईपी स्तंभ 2 के दो महत्वपूर्ण घटक हैं तथा उन्हें मोटे तौर पर निम्नानुसार परिभाषित किया जा सकता है :

आइसीएएपी के अंतर्गत किसी बैंक की प्रक्रियाएं तथा निम्नलिखित को सुनिश्चित करने के लिए परिकल्पित उपाय शामिल होंगे -

क) जोखिम की समुचित पहचान और माप

ख) बैंक के जोखिम प्रोफाइल की तुलना में आंतरिक पूंजी का समुचित स्तर

ग) बैंक में उपयुक्त जोखिम प्रबंधन प्रणाली लागू करना और उनका और विकास करना

एसआरईपी के अंतर्गत पर्यवेक्षक द्वारा अपनायी गयी समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया आती है, जिसमें ऊपर वर्णित सिद्धांतों में परिभाषित सभी प्रक्रियाएं और उपाय शामिल हैं । वस्तुतः इसके अंतर्गत बैंक के आइसीएएपी की समीक्षा और मूल्यांकन करना, बैंक के जोखिम प्रोफाइल का एक स्वतंत्र मूल्यांकन करना तथा यदि आवश्यक हो तो समुचित विवेकपूर्ण उपाय और अन्य पर्यवेक्षीय कार्रवाई करना शामिल है ।

12.1.5 इन दिशानिर्देशों में भारतीय रिज़र्व बैंक किस प्रकार एसआरईपी का संचालन करेगा, आइसीएएपी की प्रत्याशित व्याप्ति और डिज़ाइन क्या होगी तथा आइसीएएपी के कार्यान्वियन के संबंध में बैंकों से भारतीय रिज़र्व बैंक की प्रत्याशाएं क्या होंगी - इनके संबंध में बैंकों को व्यापक मार्गदर्शन देने का प्रयास किया गया है ।

12.2 भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एसआरईपी का संचालन

12.2.1 पूंजी बैंक को दिवालिया होने से बचाती है और इस प्रकार समग्र बैंकिंग प्रणाली की सुरक्षा और सुदृढ़ता सुनिश्चित करने में मदद करती है । स्तंभ 1 के अंतर्गत न्यूनतम विनियामक पूंजी अपेक्षा एक स्तर निर्धारित करती है जिससे नीचे किसी सुदृढ़ बैंक की पूंजी नहीं जानी चाहिए । विनियामक पूंजी अनुपातों के कारण विनियमित बैंकिंग संस्थाओं के बीच पूंजी पर्याप्तता का कुछ तुलनात्मक विश्लेषण हो सकता है क्योंकि ये अनुपात कतिपय सामान्य क्रियाविधियों/मान्यताओं पर आधारित रहते हैं । तथापि, पर्यवेक्षकों को किसी बैंक विशेष के जोखिमों पर विचार करते समय पूंजी पर्याप्तता के अधिक परिपूर्ण मूल्यांकन करने की आवश्यकता है, जिसमें न्यूनतम विनियामक पूंजी अपेक्षाओं से परे विश्लेषण किया गया हो ।

12.2.2 भारतीय रिज़र्व बैंक सामान्यतः बैंकों से यह अपेक्षा करता है कि वे सभी प्रकार के महत्वपूर्ण जोखिमों के लिए अपने-अपने जोखिम प्रोफाइल के अनुरूप अपने न्यूनतम विनियामक पूंजी स्तरों से अधिक पूंजी रखें । एसआरईपी के अंतर्गत भारतीय रिज़र्व बैंक एक व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से, जिसमें सभी संबद्ध उपलब्ध जानकारी को ध्यान में रखा जाता है, किसी बैंक की समग्र पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन करेगा । यह निश्चित करने के लिए कि किसी बैंक को न्यूनतम विनियामक पूंजी से कितनी अधिक पूंजी रखनी चाहिए, भारतीय रिज़र्व बैंक विनियामक न्यूनतम पूंजी अपेक्षाओं का बैंक के द्वारा अनुपालन, बैंक के आइसीएएपी की गुणवत्ता और परिणाम, बैंक की जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाओं, नियंत्रण प्रणालियों तथा बैंक के जोखिम प्रोफाइल और पूंजी स्थिति से संबद्ध अन्य प्रासंगिक सूचनाओं के पर्यवेक्षीय मूल्यांकन के संयुक्त प्रभाव को ध्यान में रखेगा ।

12.2.3 अतः बैंकों के एसआरईपी का संचालन भारतीय रिज़र्व बैंक आवधिक रूप से करेगा, जो सामान्यतः भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंकों के वार्षिक निरीक्षण (एएफआइ) के साथ होगा तथा यह भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंकों से प्राप्त होनेवाले ऑफ-साइट विवरणों और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंकों से प्रत्येक वर्ष अपेक्षित आइसीएएसी दस्तावेज से प्राप्त सूचना के आधार पर किया जाएगा (देखें पैरा 11.3.4) । एसआरईपी के माध्यम से भारतीय रिज़र्व बैंक बैंकों के आइसीएएपी की पर्याप्तता और प्रभावशीलता तथा उससे प्राप्त पूंजी अपेक्षा का मूल्यांकन करेगा । यद्यपि मूल्यांकन के दौरान विनियामक न्यूनतम सीआरएआर और बैंक के आइसीएएपी के परिणाम के बीच के अंतर को दूर करने का कोई प्रयास नहीं किया जाएगा (क्योंकि इन दो प्रक्रियाओं में शामिल जोखिम अलग-अलग हैं), तथापि बैंकों से यह आशा की जाएगी कि वे भारतीय रिज़र्व बैंक के समक्ष यह सिद्ध करें कि उन्होंने जो आइसीएएपी अपनाया है वह उनके आकार, जटिलता के स्तर, परिचालनों की व्याप्ति और परिमाण तथा उससे उत्पन्न जोखिम प्रोफाइल/एक्सपोज़र के प्रति पूर्णतः सजग है तथा उनकी पूंजी अपेक्षाओं को अच्छी तरह व्यक्त करती है । आइसीएएपी की प्रभावोत्पादकता के ऐसे मूल्यांकन से भारतीय रिज़र्व बैंक को बैंकों द्वारा अपनायी गयी पूंजी प्रबंधन प्रक्रियाओं और रणनीतियों को समझने में मदद मिलेगी । यदि आवश्यक माना गया तो एसआरईपी के अंतर्गत समय-समय पर भारतीय रिज़र्व बैंक और बैंक

के उच्चतम प्रबंध तंत्र के बीच संवाद भी हो सकता है । आवधिक समीक्षा के अलावा यदि आवश्यक समझा गया तो रिज़र्व बैंक, बैंक की आइसीएएपी प्रक्रिया के विशिष्ट पहलुओं पर टिप्पणी करने तथा तदर्थ समीक्षा करने के लिए स्वतंत्र बाह्य विशेषज्ञ भी नियुक्त कर सकता है । ऐसी समीक्षा का स्वरूप और सीमा भारतीय रिज़र्व बैंक निर्धारित करेगा ।

12.2.4 एसआरईपी के अंतर्गत भारतीय रिज़र्व बैंक यह भी पता लगाने का प्रयास करेगा कि अंतर्निहित परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर बैंक की समग्र पूंजी पर्याप्तता बनी हुई है । सामान्य तौर पर जोखिम में यदि महत्वपूर्ण वृद्धि होती है, जिसे किसी अन्य तरीके से कम नहीं किया जा सकता, तो उसके साथ-साथ पूंजी में भी तदनुरूप वृद्धि होनी चाहिए । इसके ठीक विपरीत, यदि भारतीय रिज़र्व बैंक अपने पर्यवेक्षीय मूल्यांकन से इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि जोखिम में महत्वपूर्ण गिरावट आयी है या इसे समुचित रूप से कम किया गया है, तो समग्र पूंजी में कटौती (विनियामक न्यूनतम पूंजी के स्तर से फिर भी अधिक) उपयुक्त हो सकती है । ऐसे मूल्यांकन के आधार पर भारतीय रिज़र्व बैंक अपनी पर्यवेक्षीय चिंता का निवारण करने के लिए समुचित पर्यवेक्षीय कदम उठाने पर विचार कर सकता है । इन उपायों में बैंक की जोखिम प्रबंधन और आंतरिक नियंत्रण प्रक्रिया में परिवर्तन या वृद्धि, जोखिम एक्सपोज़र में कटौती या संबंधित पर्यवेक्षीय चिंता के निवारण के लिए आवश्यक समझी गयी कोई भी कार्रवाई आ सकती है । इन उपायों में बैंक विशेष के लिए न्यूनतम सीआरएआर की शर्त भी हो सकती है, जो स्तंभ 1 के अंतर्गत निर्धारित विनियामक न्यूनतम पूंजी अपेक्षा की तुलना में, तथ्य और परिस्थिति के अनुरूप, उच्चतर भी हो सकती है । जिन मामलों में भारतीय रिज़र्व बैंक विनियामक न्यूनतम से अधिक सीआरएआर निर्धारित करेगा, वहां वह ऐसा करने के पीछे के कारणों को संबंधित बैंक को स्पष्ट करेगा । तथापि, इस प्रकार का अतिरिक्त सीआरएआर प्रावधान, एसआरईपी अभ्यास का एक संभव परिणाम हो सकता है परंतु यह अनिवार्य परिणाम हो आवश्यक नहीं है, क्योंकि एसआरईपी का मुख्य उद्देश्य बैंकों की जोखिम प्रबंध प्रणालियों में सुधार लाना है ।

12.2.5 जब भी बासल II दस्तावेज में अभिकल्पितउन्नत दृष्टिकोणों को भारत में अपनाने की अनुमति मिलेगी, एसआरईपी उन्नत दृष्टिकोणों को अपनाने से संबंधित पात्रता मानदंडों का बैंकों द्वारा निरंतर अनुपालन किए जाने का भी मूल्यांकन करेगी।

12.3 आइसीएएपी का संरचनात्मक पहलू

12.3.1 इस खंड में आइसीएएपी के व्यापक मापदंडों की रूपरेखा दी गयी है, जिनका अनुपालन बैंकों को अपने आइसीएएपी की परिकल्पना और कार्यान्वयन के दौरान करना चाहिए ।

12.3.2 <u>प्रत्येक बैंक के पास आइसीएएपी होनी चाहिए</u>

यह देखते हुए कि बासल II ढांचा सभी वाणिज्य बैंकों (स्थानीय क्षेत्र बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) पर एकल स्तर (वैश्विक स्थिति) तथा समेकित स्तर दोनों स्तरों पर लागू है, अतः किसी बैंकिंग समूह की प्रत्येक बैंकिंग संस्था के प्रत्येक स्तर पर एकल आधार पर तथा समेकित बैंक (अर्थात् संस्थाओं का एक समूह जहां लाइसेंस प्राप्त बैंक एक नियंत्रक संस्था है) के आधार पर भी आइसीएएपी तैयार किया जाना चाहिए । यह अपेक्षा उन विदेशी बैंकों पर भी लागू

होगी जिनकी भारत में शाखा है । उनके आइसीएएपी में केवल भारतीय परिचालनों को शामिल किया जाना चाहिए ।

12.3.3 ,¸ƒ¬¸ú‡‡œ¸ú Ÿ¸½¿ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆÅ¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡[24]

12.3.3.1 <u>œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˜½Å □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸ ˜½Å ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸ ¢¬¸Ö¸¿÷¸</u>

¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ¤¸ÿˆÅ ˜½Å □¸¸½¢‰Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅ¸ ‡ˆÅ ¬¸Ÿ¸¢›¨¸÷¸, ¬¸¿œ¸»µ¸Ä œ¸€Ÿ¸Ä-¨¸¸£ œ¸¢£´©¡¸ ¥¸½›¸½ ˆÅ¸ Ÿ¸í÷¨¸ ¬¸Ÿ¸□¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¨¸í „ž¸£›¸½¨¸¸¥¸½ ÷¸˜¸¸ ¤¸□õ÷¸½ □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸í□¸¸›¸›¸½ ÷¸˜¸¸ „›¸œ¸£ œÏ¢÷¸¢ÇÅ¡¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ,œ¸›¸¸ú ®¸Ÿ¸÷¸¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ œ¸£ ÷¸˜¸¸ œÏž¸¨¸ú ³œ¸ ¬¸½ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½Å — ƒ¬¸ Ÿ¸¸Š¸Ä™©¸Ä›¸ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½□¸›¸ í¾ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸, ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿, ¬”ïÆ□¸”Ä †µ¸ ÷¸˜¸¸ □¸¢’¥¸ ‰£ú™-¢¤¸ÇÅú ¬¸¿¤¸¿š¸ú ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ¬¸¢í÷¸ ¤¸ÿˆÅ ˜½Å œ¸»¿□¸ú ¤¸¸□¸¸£ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ □¸¸£¸½¿ ,¸½£ ˜½Å œ¸€Ÿ¸Ä-¨¸¸£ ¢›¸£ú®¸µ¸, □¸¸½¢‰Ÿ¸¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ÷¸˜¸¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¤¸□õ›¸½ ˆÅú ,¸¨¸©¡¸ˆÅ÷¸¸ —

‡ˆÅ ¬¨¸¬˜¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏµ¸¸¥¸ú Ÿ¸½¿ ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰Ÿ¸ Ÿ¸º‰¡¸ ÷¸÷¨¸ í¸½›¸½ □¸¸¢í‡ À

- ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œ¸¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸ ¬¸¢ÇÅ¡¸ ¢›¸£ú®¸µ¸;
- ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ›¸ú¢÷¸, ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸úŸ¸¸‡¿;
- □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸ ¨¡¸¸œ¸ˆÅ ÷¸˜¸¸ ¬¸Ÿ¡¸ œ¸£ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸, Ÿ¸¸œ¸›¸, ›¡¸»›¸úˆÅ£µ¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸, ¢›¸Š£¸›¸ú ÷¸˜¸¸ ¢£œ¸¸½¢’õŠ¸;
- ˆÅ¸£¸½¤¸¸£ ÷¸˜¸¸ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˜½Å ¬÷¸£ œ¸£ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸¿; ÷¸˜¸¸
- ¨¡¸¸œ¸ˆÅ ,¿÷¸¢£ˆÅ ¢›¸¿¡¸¸°¸µ¸ —

12.3.3.2 <u>¢›¸™½©¸ˆÅ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ×£¸ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸µ¸</u>

आइसीएएपी की रचना और कार्यान्वयन का अंतिम उत्तरदायित्व बैंक के निदेशक मंडल पर होगा तथा भारत में शाखागत मौजूदगी वाले विदेशी बैंकों के मामले में यह उत्तरदायित्व मुख्य कार्यपालक अधिकारी पर होगा । ¬¸¿¬˜¸¸ ˆÅú □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¥¸½›¸½ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¨¸¼¢î¸ ˆÅ¸½ œ¸¢£ž¸¸¢«¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ÷¸˜¸¸ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ¢□¸Ÿ˜½™¸£ú ¢›¸™½©¸ˆÅ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅú í¾ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˜½Å □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˜½Å □¸¿□¸½ Ÿ¸½¿ ‡½¬¸ú ¢¨¸¬÷¸¼÷¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸¿ íÿ □¸¸½ ¤¸ÿˆÅ ˜½Å ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ œ¸£ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˜½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸¢©¸«’ ¢¨¸¨¸½ˆÅœ¸»µ¸Ä ¬¸úŸ¸¸‡¿ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅ£÷¸ú íÿ □¸¸½ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¥¸½›¸½ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¨¸¼¢î¸ ˜½Å ,›¸º³œ¸

[24] ˜¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬’£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

í¾ — ¤¸ÿˆÅ ˆÅú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¥¸½›¸½ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ŠÏ œÏ¨¸¼¢î¸ ˆÅ¸½
¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸í¥¸½ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å
œ¸¸¬¸ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å ,¸š¸¸£ œ¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú
¬¸Ÿ¸□¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ¡¸í ¬¸Ÿ¸□¸ œÏ¸œ÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¨¸¢£«“
œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å „œ¸¡¸ºÆ÷¸ ¬¸™¬¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ˆÅ¸£¸½¤¸¸£ ÷¸˜¸¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸
¬¸¿¤¸¿š¸ú Ÿ¸º‰¡¸ ˆÅ¸¡¸¸½ô ˆ½Å ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ ˆÅ¸½ ¬¸¸˜¸ ¢Ÿ¸¥¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡
— □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆÅ¸ ‡ˆÅ ¬¸Ÿ¸¢›¨¸÷¸
´¢«’ˆÅ¸½µ¸ ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸½ ¢¨¸¢ž¸››¸
ˆÅ¸£¸½¤¸¸£¸½¿ ˆ½Å ¤¸ú□¸ □¸¸½ ¬¸¿Š¸“›¸¸÷Ÿ¸ˆÅ ,¥¸Š¸¸¨¸ í¾ „¬¸½ œ¸¸£
ˆÅ£›¸¸ í¸½Š¸¸ ,¸¾£ ¤¸¸□¸¸£ Š¸¢÷¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ÷¸˜¸¸
□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ÷¸ˆÅ›¸úˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¤¸¸£ Ÿ¸½¿
¬¸»□¸›¸¸,¸½¿ /□¸¸›¸ˆÅ¸£ú ˆÅ¸½ ¤¸¸¿’›¸¸ í¸½Š¸¸ — □¸¾¬¸½-□¸¾¬¸½
¤¸ÿ¢ˆ¿ÅŠ¸ „Ô¸¸½Š¸ ¤¸¸□¸¸£ ,¸š¸¸¢£÷¸ Ÿ¸š¡¸¬˜¸÷¸¸ ˆÅú ,¸½£ ,¢š¸ˆÅ¸¢š¸ˆÅ
¤¸□õ›¸½ ˆÅú œÏ¨¸¼¢î¸ ™©¸¸Ä £í¸ í¾, ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¡¸÷¸¸ ,¢š¸ˆÅ í¾
¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ˆÅƒÄ ®¸½°¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ „÷œ¸¸™,
□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ÷¸÷¨¸ ,˜¸¨¸¸ ˆÅ¸„¿’£œ¸¸¢’Ä¡¸¸¿ ‡ˆÅ íú í¸½ — ¨¸¢£«“
œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ‡ˆÅ ‡½¬¸ú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸
¬˜¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¢í‡ □¸¸½ †µ¸, ¤¸¸□¸¸£, □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸
œ¸¢£□¸¸¥¸›¸¸÷Ÿ¸ˆÅ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ÷¸ˆÅ ¬¸ú¢Ÿ¸÷¸ ›¸íì í¾ ¤¸¢¥ˆÅ
¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ ¬¸ž¸ú ž¸¸¾¢÷¸ˆÅ/Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½
©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ — ƒ›¸Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸«“¸÷Ÿ¸ˆÅ, ¢¨¸¢š¸ ÷¸˜¸¸
ˆÅ¸¡¸Ä›¸ú¢÷¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ¬¸¢í÷¸ ¨¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸ú
©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ □¸¸½ ¢ˆÅ ,ˆ½Å¥¸½ ,˜¸¨¸¸ ,¥¸Š¸ ¬¸½ ƒ÷¸›¸½ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä
œÏ÷¸ú÷¸ ›¸íì í¸½÷¸½ ¥¸½¢ˆÅ› □¸¸½ ,›¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸˜¸
¢Ÿ¸¥¸ˆÅ£ ¤¸íº÷¸ í¸¢› œ¸íº¿□¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ —
¢›¸™½©¸ˆÅ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¬¸ž¸ú œÏŸ¸º‰¸
ˆÅ¸£¸½¤¸¸£ ®¸½°¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ ±¸¸›¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡
÷¸¸¢ˆÅ ¨¸½ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½¿Å ¢ˆÅ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸¿,
¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¢›¸Š¸£›¸ú œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸¿ œÏž¸¸¨¸ú íÿ — „›¸ˆ½Å
œ¸¸¬¸ ¤¸ÿ¿ˆÅ ¢□¸›¸ œ¸»¿□¸ú ¤¸¸□¸¸£ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸¢ÇÅ¡¸
í¾ - □¸¾¬¸½ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ÷¸˜¸¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸ -
„›í½¿ ÷¸˜¸¸ „›¸¬¸½ ¬¸¿¤¸Ö □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸Ÿ¸□¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡
,œ¸½¢®¸÷¸ ¢›¸œ¸ºµ¸÷¸¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — □¸¾¬¸½-□¸¾¬¸½ ¢¨¸î¸ú¡¸
¤¸¸□¸¸£, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ˜¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸
¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ í¸½÷¸½ í¾ ¨¸¾¬¸½ íú ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½
¢›¸£¿÷¸£ ,¸š¸¸£ œ¸£ ƒ›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ±¸¸›¸ í¸¢¬¸¥¸
ˆÅ£÷¸½ £í›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸ ¤¸¸½”Ä ,¸¾£ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸ ÷¸¿°¸
ˆÅ¸½ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ □¸¨¸¸¤¸™½íú ÷¸˜¸¸ ,¢š¸ˆÅ¸£ ˆ½Å
ÇÅŸ¸ ˆÅ¸½ ¬œ¸«’ ³œ¸ ¬¸½ ™©¸¸Ä¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ — ›¸‡ ,˜¸¨¸¸ □¸¢’¥¸
„÷œ¸¸™¸½¿ ÷¸˜¸¸ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¨¸¢£«“
œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ¨¸¡¸¨¸¬¸¸¡¸ Ÿ¸¸Á”½¥¬¸, Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸
œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ˜¸¸,¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ,¸š¸¸£ž¸»÷¸ š¸¸£µ¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½
¬¸Ÿ¸□¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸, ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½, „›¸
š¸¸£µ¸¸,¸½¿ ˆ½Å ,¬¸œ¸€¥¸ í¸½ □¸¸›¸½ ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ ¬¸¿ž¸¸¨¡¸

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ›¸‡ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸ ©¸º³Å ˆÅ£›¸½ ‚˜¸¨¸¸ □¸¸½ ¬¸¿¬˜¸¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ›¸‡ íÿ ‡½¬¸½ „÷œ¸¸™ œÏ¸£¿ž¸ ˆÅ£›¸½ ¬¸½ œ¸í¥¸½ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ƒ›¸ ¬¸¿ž¸¸¨¡¸ ›¸‡ „÷œ¸¸™¸½¿ ‚˜¸¨¸¸ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ¬¸½ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸¸½¿ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ ¤¸º¢›¸¡¸¸™ú ¬¸º¢¨¸š¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ ¢›¸¡¸¸¿°¸µ¸ ¬˜¸¸¢œ¸÷¸ íÿ — ƒ¬¸ ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ›¸‡ „÷œ¸¸™¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸›¸ Ÿ¸½¿ ¬¸¿ž¸¸¨¡¸ ˆÅ¢“›¸¸ƒÄ¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ™¤¸¸¨¸œ¸»µ¸Ä ‚¸¢˜¸ÄˆÅ œ¸¢£¨¸½©¸ Ÿ¸½¿ „›¸ˆ½Å ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸«œ¸¸™›¸ ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ œ¸£ ž¸ú ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¤¸¸½”Ä ˆÅ¸½ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰¸÷¸ ˆÅ¸¡¸Ä ˆÅ£÷¸¸ í¾ À

i. ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¢¨¸¢ž¸››¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ □¸¸¿□¸¸ ¬˜¸¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾ ;

ii. ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú ¢›¸Š£¸›¸ú ˆÅ£›¸½ ÷¸˜¸¸ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú œ¸»¿□¸ú ÷¸˜¸¸ ‚£¢®¸÷¸ ¢›¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅú ÷¸º¥¸›¸¸ Ÿ¸½¿ „¬¸ˆÅ¸ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ œÏµ¸¸¥¸ú ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾;

iii. ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ¢¨¸©¸½«¸ ³Åœ¸ ¬¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å ‚›¸ºœ¸¸¥¸›¸ ˆÅú ¢›¸Š£¸›¸ú ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ œ¸Ö¢÷¸ ¬˜¸¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾; ÷¸˜¸¸

iv. ¬¸ž¸ú ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸»£½ ¤¸ÿˆÅ Ÿ¸½¿ œÏž¸¸¨¸ú ³Åœ¸ ¬¸½ ¬¸¿œÏ½¢«¸÷¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾ —

¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸¡¸Ä ÷¸˜¸¸ „¬¸ˆ½Å Ÿ¸º‰¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‚¢š¸ˆÅ¸£ú (¬¸ú‚¸£‚¸½) ‚˜¸¨¸¸ „¬¸ˆ½Å ¬¸Ÿ¸ˆÅ®¸ œ¸™ ˆÅ¸½ ¢¨¸¢ž¸››¸ ¨¸¡¸¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¸½¿ ¬¸½ ‚¥¸Š¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ¨¸í Ÿ¸º‰¡¸ ˆÅ¸¡¸Äœ¸¸¥¸ˆÅ ‚¢š¸ˆÅ¸£ú/œÏ¤¸¿š¸ ¢›¸™½©¸ˆÅ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿¬˜¸¸ ˆ½Å ¢›¸™½©¸ˆÅ ¤¸¸½”Ä ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¬¸ú𸽠¢£œ¸¸½’Ä ˆÅ£½Š¸¸ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¨¸¸¨¸¸, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸¡¸Ä Ÿ¸½¿ „›¸ˆÅ¸½ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸½”Ä ˆÅ¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä Ÿ¸ºÓ¸½¿ □¸¸¾¬¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍúˆÅ£µ¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¨¸¼¢î¸ ˆÅú ¬¸úŸ¸¸‚¸½¿ ˆ½Å „¥¥¸¿‹¸›¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¢¨¸¢©¸«’ ³Åœ¸ ¬¸½ ¬œ¸«’ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ —

12.3.3.4 ›¸ú¢÷¸¡¸¸¿, ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸¿, ¬¸úŸ¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸

¤¸ÿˆÅ ˆÅú ‚ƒ¬¸ú‡‡œ¸ú ˆÅú £□¸›¸¸, ¬¨¸³œ¸ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸«¸¡¸-¨¸¬÷¸º ¢›¸™½©¸ˆÅ ¤¸¸½”Ä ×¸£¸ ‚›¸ºŸ¸¸½¢™÷¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ í¸½ ¬¸ˆ½Å ¢ˆÅ ‚ƒ¬¸ú‡‡œ¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅú œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ÷¸˜¸¸ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¥¸½›¸½ ˆÅú ¬¸¿¬˜¼Å¢÷¸ ˆÅ¸ ‡ˆÅ ‚¢¨¸ž¸¸□¡¸ ž¸¸Š¸ í¾ — œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å ¢¥¸‡ ÷¸¾¡¸¸£ ¢ˆÅ‡ Š¸‡ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸¡¸ÄÇÅŸ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ‡½¬¸ú ¢¨¸¬÷¸¼÷¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ

ˆ½Å ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ Ÿ¸º‰¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ œ¸£ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸¢©¸«’ ¢¨¸¨¸½ˆÅœ¸»µ¸Ä ¬¸úŸ¸¸‡¿ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅú Š¸ƒÄ í¸½¿ — ¤¸ÿˆÅ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ¢¨¸¬÷¸¼÷¸ ˆÅ¸¡¸Ä›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸¡¸¸Ä›¨¸¡¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸¢©¸«’ Ÿ¸¸Š¸Ä™©¸Ä›¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ,¸¾£ □¸í¸¿ „¢□¸÷¸ í¸½ ¨¸í¸¿ ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ¢□¸›¸ ¢¨¸¢ž¸››¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ í¾ „›¸ˆ½Å ¢¥¸‡ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ ¬¸úŸ¸¸‡¿ ž¸ú ¬˜¸¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ›¸ ¬¸úŸ¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ ¢¨¸î¸ú¡¸ œÏµ¸¸¥¸ú Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ˆÅ¸½ ¢¨¸□¸¸£ Ÿ¸½¿ ¥¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸˜¸¸ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú œ¸»¿□¸ú, ˆºÅ¥¸ ,¸¢¬÷¸¡¸¸½¿, ,□¸Å›¸ ,˜¸¨¸¸ □¸í¸¿ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ „œ¸¸¡¸ ¢¨¸Ô¸Ÿ¸¸›¸ íÿ, ¨¸í¸¿ „¬¸ˆ½Å ¬¸Ÿ¸ŠÏ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬÷¸£ ˆ½Å ,›¸³Åœ¸ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ —

¤¸ÿˆÅ ˆÅú ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿, ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¬¸úŸ¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ À

- ,¥¸Š¸-¥¸Š¸ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å ¬÷¸£ œ¸£ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å „š¸¸£ ™½›¸½, ¢›¸¨¸½©¸ ˆÅ£›¸½, ‰£ú™-¢¤¸ÇÅú, œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸, ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£, ›¡¸¸¬¸ú ÷¸˜¸¸ ,›¡¸ Ÿ¸í÷¨œ¸»µ¸Ä ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ ¬¸¿ž¸¸¨¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å œ¸¡¸¸Äœ÷¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸Ÿ¸¢¡¸ˆÅ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸, Ÿ¸¸œ¸›¸, ¢›¸Š¸£›¸ú, ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ÷¸˜¸¸ ›¡¸»››¸úˆÅ£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏ¨¸š¸¸›¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡;
- ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å ,¸¢˜¸ÄˆÅ œ¸í¥¸» ¢□¸¬¸Ÿ¸¸½¿ œÏ¢÷¸«“¸÷Ÿ¸ˆÅ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ÷¸˜¸¸ Ÿ¸»¥¡¸›¸ ,¢›¸¢©□¸÷¸÷¸¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¾ ˆÅ¸½ œ¸»µ¸Ä÷¸À ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ,¸¾£ ¤¸¾¿ˆÅ ˆÅú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ;
- ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ˆÅ¢˜¸÷¸ ¥¸®¡¸¸½¿ ‡¨¸¿ „Ó½©¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ „¬¸ˆÅú ¬¸Ÿ¸ŠÏ ¢¨¸î¸ú¡¸ ®¸Ÿ¸÷¸¸/©¸¢Æ÷¸ ˆ½Å ,›¸³œ¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ;
- ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¢¨¸¢ž¸››¸ ¨¡¸¨¸¬¸¸¢¡¸ˆÅ ˆÅ¸¡Ïˆ¥¸¸œ¸¸½¿ ˆ½Å ¤¸ú□¸ □¸¨¸¸¤¸™½íú ÷¸˜¸¸ œÏ¸¢š¸ˆÅ¸£ ˆ½Å ÇÅŸ¸ ˆÅ¸½ ¬œ¸«’ ³Åœ¸ ¬¸½ ™©¸¸Ä¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ,¸¾£ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ˆÅ¸¡¸Ä ˆ½Å ¤¸ú□¸ ¬œ¸«’ ,¥¸Š¸¸¨¸ í¾ —
- ,¸¿÷¸¢£ˆÅ œ¸¸½□¸ú©¸›¸ ˆÅú ¬¸úŸ¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ ¤¸□õ¸›¸¸ ÷¸˜¸¸ „›¸ˆ½Å „¥¥¸¿‹¸›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ;
- ¬¸ž¸ú ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸, ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ÷¸˜¸¸ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸¸˜¸ ¥¸¸ˆÅ£ ›¸‡ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ „÷¸œ¸¸™¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ¸ œÏ¨¸š¸¸›¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ í¸½ ¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸ ˆÅ¸½ œÏ¨¸£¿ž¸ ˆÅ£›¸½ ¬¸½ œ¸»¨¸Ä ¤¸¾¿ˆÅ „¬¸ˆ½Å œÏ¤¸¿š¸›¸ ÷¸˜¸¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸®¸Ÿ¸ í¾; ÷¸˜¸¸
- ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿, ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¬¸úŸ¸¸,¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸½ ÷¸˜¸¸ „›í½¿ „¢□¸÷¸ ³œ¸ ¬¸½ ,Ô¸÷¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ ˆÅ¸¡¸ÄÇÅŸ¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ —

12.3.3.5 □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸, Ÿ¸¸œ¸›¸, ¢›¸Š¸£¸›¸ú ÷¸˜¸¸ ¢£œ¸¸½¢’ôŠ¸

¤¸ÿˆÅ ˆÅú œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú ˆÅ¸½ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸ú ¬¸¿¬˜¸¸‚¸½¿ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸ ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¡¸¸½¢□¸÷¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ¬¸»□¸›¸¸ ¬œ¸«’ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿¢®¸œ¸÷¸ ³œ¸ ¬¸½ œÏ™¸›¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ ¬¸»□¸›¸¸ Ÿ¸½¿ ¬¸ž¸ú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½□¸£¸½¿ ¬¸¢í÷¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½□¸£¸½¿ ˆÅ¸½ ž¸ú ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ¢¨¸¢©¸«’ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ „œ¸¸¡¸¸½¿ ˆÅú ‚¸š¸¸£ž¸»÷¸ š¸¸£µ¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ „›¸Ÿ¸½¿ ¢›¸¢í÷¸ ¬¸úŸ¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸Ÿ¸□¸›¸¸ □¸¸¢í‡ —

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ‡ˆÅ°¸úˆÅ£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ œÏŸ¸º‰¸ ÷¸÷¨¸ íÿ ‡ˆÅ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ¬¸¿£□¸›¸¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ (i) ¬¸ž¸ú ¨¸¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ‚œ¸½¢®¸÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ „œ¸¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ‡ˆÅ°¸úˆÅ£µ¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ÷¸˜¸¸ ii) □¸¸½ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍúˆÅ£µ¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ „ž¸£÷¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¬’Ÿ¸¸ƒ□” ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ˆÅ£÷¸ú í¾ — ƒ¬¸ „Ó½©¡¸ ˆÅ¸½ œÏ¸œ÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅú ŠƒÄ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú ˆÅ¸½ ¬¸¿œ¸»µ¸Ä ¢¨¸î¸ú¡¸ ¬¸¿¬˜¸¸ œ¸£ ‚¬¸£ ˆÅ£›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¢¨¸¢ž¸››¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‚¸¢˜¸ÄˆÅ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸î¸ú¡¸ ‚¸‹¸¸÷¸¸½¿ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸, ¢¨¸¢ž¸››¸ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ‚¸š¸¸£ž¸»÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½ š¸¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ ¥¸½÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ œ¸»£ú œ¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å ‚¸š¸¸£ œ¸£ ˆÅú □¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸ú íˆ¢□¸¿Š¸ ÷¸˜¸¸ ‚›¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ›¸¡¸»›¸úˆÅ£µ¸ ˆÅ¸£Ä¨¸¸ƒ¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸¢ŸŸ¸¢¥¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¥¸□¸ú¥¸¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ —

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¬¸¢ÇÅ¡¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸½ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¬¸ˆÅ¥¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡ˆÅ°¸úˆÅ£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏ¡¸¸½Š¸ Ÿ¸½¿ ¥¸¸ƒÄ Š¸ƒÄ œÏŸ¸º‰¸ š¸¸£µ¸¸‚¸½¿ œ¸£ ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸¸, ¬¸íú ÷¸˜¸¸ ¬¸Ÿ¸¡¸¸½¢□¸÷¸ ¬¸»□¸›¸¸ ™½›¸½ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ í¾ — œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú ˆÅ¸½ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ‚¸š¸¸£ž¸»÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú š¸¸£µ¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ íº‡ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸¸›¸½ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ‚›¸º°¸ˆ»Å¥¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¢÷¸¢ÇÅ¡¸¸©¸ú¥¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸˜¸¸ „¬¸Ÿ¸½¿ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ Ÿ¸¸œ¸›¸ Ÿ¸½¿ ‚¢›¸¢©□¸÷¸÷¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸½ š¸¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆ½Å ¢¨¸¢¨¸š¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¢÷¸¢£Æ÷¸, „¬¸½ œ¸¡¸¸ÄœÏ÷¸ ³œ¸ ¬¸½ ¥¸□¸ú¥¸¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¬¸¿¬˜¸¸ œ¸»£½ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏŠ¸¸Ÿ¸ú ¢¬¸›¸Å¢£¡¸¸½ ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ „ž¸£÷¸ú íºƒÄ ¤¸¸□¸¸£ œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ™¤¸¸¨¸ ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅú ¨¸¡¸¸‰¸¡¸¸ ¬œ¸«’÷¸À ¨¸¡¸Æ÷¸ í¸½÷¸ú í¸½ — ‚¡¸ œ¸®¸ ˆÅú ¢›¸¢¨¸¢«’¡¸¸½¿ ‚˜¸¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú Ÿ¸½¿ œÏ¡¸¸½Š¸ Ÿ¸½¿ ¥¸¸‡ Š¸‡ ‚¡¸ ¬¸¸š¸›¸¸½¿ („™¸. Ç½Å¢”' £½¢'¿Š¸, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ „œ¸¸¡¸,

Ÿ¸¸Á”½¥¬¸) ˆÅ¸ œÏ¸£¿¢ž¸ˆÅ ÷¸˜¸¸ ¢›¸£¿÷¸£ ¨¸¾š¸úˆÅ£µ¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ —
¤¸ÿˆÅ ˆÅú œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú Ÿ¸½¿ ¬¸úŸ¸¸,¸½¿ ˆ½Å „¥¥¸¿‹¸›¸ ˆÅ¸½ œ¸ˆÅ”õ›¸½ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ,¸¾£ ‡½¬¸ú ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸¿ ¬˜¸¸¢œ¸÷¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ □¸¸½ ¢ˆÅ ‡½¬¸½ „¥¥¸¿‹¸›¸¸½¿ ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ÷¸º£¿÷¸ ¢£œ¸¸½’Ä ˆÅ£÷¸ú íÿ ÷¸˜¸¸ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ž¸ú ˆÅ£÷¸ú íÿ ¢ˆÅ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ,›¸º¨¸÷¸úÄ ˆÅ¸£Ä¨¸¸ƒÄ¡¸¸¿ ˆÅú □¸¸÷¸ú íÿ — „™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸¢ž¸››¸ ¨¡¸¨¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸›¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ (¤¸ÿ¢ˆ¿ÅŠ¸ ÷¸˜¸¸ ‰£ú™-¢¤¸ÇÅú ¤¸íú¡¸¸½¿ ¬¸¢í÷¸) ˆÅ¸½ ¡¸í ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ¢°¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ œ¸¸½□¸ú©›¸ ¬¸úŸ¸¸ Ÿ¸½¿ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍúˆÅ£µ¸ íº,¸ í¾ ,˜¸¨¸¸ „¥¥¸¿‹¸›¸ —

12.3.3.6 ,¸¿÷¸¢£ˆÅ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸

□¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ ˆÅú ¬¨¸÷¸¿°¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ®¸½°¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ ÷¸˜¸¸ ¤¸í£ú ¥¸½‰¸-œ¸£ú®¸ˆÅ¸½ ×¸£¸ ¥¸Š¸¸÷¸¸£ ¢›¸Š¸£¸›¸ú ÷¸˜¸¸ □¸¸¿□¸ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆÅ¸ „Ó½©¡¸ í¾ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ ¢ˆÅ ¢□¸¬¸ ¬¸»□¸›¸¸ ˆ½Å ,¸š¸¸£ œ¸£ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¢¥¸‡ □¸¸÷¸½ íÿ ¨¸í ¬¸íú í¾ ÷¸¸¢ˆÅ œÏ¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ Ÿ¸½¿ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅú ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸»µ¸Ä÷¸À ™©¸Ä¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ,¸¾£ ¡¸í ¢ˆÅ ¢›¸œ¸¸½’ôŠ¸ ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ ¬¸úŸ¸¸,¸½¿ ˆ½Å „¥¥¸¿‹¸›¸ ˆÅú ¢£œ¸½¸¢’ôŠ¸ ÷¸˜¸¸ ,›¡¸ ,œ¸¨¸¸™-,¸š¸¸¢£÷¸ ¢£œ¸¸½¢’ôŠ¸, œÏž¸¸¨¸ú ³Åœ¸ ¬¸½ ˆÅú □¸¸÷¸ú í¾ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸ ˆÅ¸¡¸Ä ¨¡¸¨¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ ¬¸½ ,¥¸Š¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ™¢¡¸÷¨¸¸½¿ ˆÅ¸ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ œ¸¼˜¸ˆÅúˆÅ£µ¸ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ í¸½ ,¸¾£ ¢í÷¸¸½¿ ˆ½Å ’ˆÅ£¸¨¸ ¬¸½ ¤¸¸□¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å —

□¸»¿¢ˆÅ ‡ˆÅ ¬¨¸˜¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ,¸š¸¸£ ™½÷¸ú í¾ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ œ¸»¿□¸ú ¤¸›¸¸‡ £‰¸÷¸¸ í¾ ƒ¬¸¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸ ¢›¸™½©¸ˆÅ ¤¸¸½”Ä □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¬¸íÛ¸ú¥¸÷¸¸ ˆÅ¸ ¬¸÷¸¢›¸Ä¢£÷¸ ˆÅ£½Š¸¸ —

12.3.3.7 <u>आइसीएएपी के परिणाम के संबंध में बोर्ड और रिज़र्व बैंक को सूचित करना</u>

चूँकि आइसीएएपी एक निरंतर प्रक्रिया है, अतः आइसीएएपी के परिणाम का एक लिखित अभिलेख बैंकों द्वारा आवधिक रूप से अपने निदेशक मंडल के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए। अपनी पूंजी पर्याप्तता के आंतरिक मूल्यांकन के ऐसे लिखित अभिलेख के अंतर्गत, अन्य बातों के साथ-साथ, पहचान किए गए जोखिम, इन जोखिमों की निगरानी और प्रबंधन का तरीका, बैंक की पूंजी स्थिति पर बैंक के बदलते जोखिम प्रोफाइल का प्रभाव, किए गए दबाव परीक्षण /परिदृश्य विश्लेषण के ब्यौरे तथा इसके परिणामस्वरूप पूंजी अपेक्षाएँ शामिल होनी चाहिए। रिपोर्टें काफी विस्तृत होनी चाहिए ताकि निदेशक मंडल महत्वपूर्ण जोखिम एक्सपोज़र के स्तर और उसकी प्रवृत्ति का मूल्यांकन कर सके, यह देख सके कि बैंक जोखिम एक्सपोज़र के लिए पर्याप्त पूंजी बनाए रख रहा है या नहीं तथा यदि अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता है तो पूंजी वृद्धि की क्या योजना है। निदेशक मंडल से यह अपेक्षा की जाएगी कि वह रणनीतिगत योजना में सामयिक फेर बदल करे।

बोर्ड को प्रस्तुत तथा बोर्ड द्वारा अनुमोदित आइसीएएपी के परिणाम के आधार पर, **अनुबंध 15** में दिए गए फार्मेट में आइसीएएपी दस्तावेज भारतीय रिज़र्व बैंक (अर्थात् प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग, केंद्रीय कार्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, विश्व व्यापार केंद्र, सेंटर 1, कोलाबा, कफ परेड, मुंबई - 400 005) को प्रस्तुत किया जाना चाहिए। आरंभ में बोर्ड द्वारा विधिवत् अनुमोदित दस्तावेज 31 मार्च को समाप्त वर्ष के लिए वर्ष में केवल एक बार भारतीय रिज़र्व बैंक को भेजा जाना चाहिए। बाद में रिपोर्ट भेजने की बारम्बारता की समीक्षा की जा सकती है। 31 मार्च 2008 को समाप्त वर्ष से संबद्ध ऐसी पहली रिपोर्ट उन बैंकों द्वारा भेजी जानी है जिन्होंने उस तिथि से बासल II ढाँचा अपनाया है। अन्य बैंक 31 मार्च 2009 को समाप्त वर्ष के लिए अपना पहला आइसीएएपी दस्तावेज प्रस्तुत करेंगे, क्योंकि उक्त तारीख से वे बासल II ढाँचा अपनाएंगे। बैंकों के पहले समूह के मामले में उक्त दस्तावेज भारतीय रिज़र्व बैंक को 30 जून 2008 तक पहुँच जाना चाहिए तथा दूसरे समूह के मामले में 31 मार्च 2009 तक पहुँच जाना चाहिए। इसके बाद प्रत्येक वर्ष मार्च के अंत में ।

12.4 आइसीएएपी परिणामों की समीक्षा

निदेशक मंडल वर्ष में कम-से-कम एक बार इस तथ्य का मूल्यांकन करेगा और उसे लिपिबद्ध करेगा कि बैंक द्वारा कार्यान्वित आइसीएएपी प्रक्रिया बोर्ड द्वारा परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त कर रही है अथवा नहीं। वरिष्ठ प्रबंध तंत्र को प्रमुख मान्यताओं/पूर्व धारणाओं की संवेदनशीलता का मूल्यांकन करने तथा बैंक की अनुमानित भावी पूंजी अपेक्षाओं की वैधता का मूल्यांकन करने के लिए नियमित रूप से रिपोर्टें मंगानी चाहिए और उनकी समीक्षा करनी चाहिए। ऐसे मूल्यांकन के आधार पर आइसीएएपी में समुचित परिवर्तन लाया जाना चाहिए ताकि अंतर्निहित उद्देश्य प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सके ।

12.5 आइसीएएपी प्रबंधन और निर्णय लेने की संस्कृति का अभिन्न अंग होगा

आइसीएएपी बैंक के प्रबंधन और निर्णय लेने की संस्कृति का एक अभिन्न अंग होगा। आइसीएएपी का यह एकीकरण, विभिन्न कारोबारी इकाइयों के बीच पूंजी के आंतरिक वितरण में आइसीएएपी का उपयोग कर, अलग-अलग ऋण निर्णय प्रक्रिया में तथा उत्पादों के मूल्य निर्धारण में अथवा अधिक सामान्य कारोबारी निर्णय, यथा, विस्तार योजना और बजट में आइसीएएपी को भूमिका देकर किया जा सकता है। एकीकरण का तात्पर्य यह भी होगा कि आइसीएएपी से बैंक का प्रबंधतंत्र निरंतर आधार पर उन जोखिमों का मूल्यांकन कर पायेगा जो उनकी गतिविधियों में अंतर्निहित हैं तथा संस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।

12.6 समानुपातिकता का सिद्धांत

आइसीएएपी का कार्यान्वयन समानुपातिकता के सिद्धांत से प्रेरित होना चाहिए। यद्यपि, बैंकों को यह प्रोत्साहित किया जाता है कि अपने आइसीएएपी की रचना करते समय उत्तरोत्तर रूप से अधिक आधुनिक दृष्टिकोण अपनाएँ, तथापि भारतीय रिज़र्व बैंक यह आशा रखता है कि आइसीएएपी में जोखिम की माप और प्रबंधन के संबंध में अपनाए गए आधुनिकीकरण का स्तर बैंक के कारोबारी परिचालनों की जटिलता की प्रकृति, व्याप्ति, परिमाण और स्तर के अनुरूप होगा ।निम्न पैराग्राफों में उस व्यापक दृष्टिकोण के **उदाहरण** दिए गए हैं जिस पर परिचालनों की जटिलता के भिन्न-भिन्न स्तर वाले बैंक अपने आइसीएएपी की रचना करते समय विचार कर सकते हैं -

(क) जो बैंक अपनी गतिविधियों और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को '**सरल**' मानता है, वह अपने आइसीएएपी का परिचालन करते समय -

क) पिछले 3 से 5 वर्षों के दौरान बैंक की अधिकतम हानि की पहचान कर सकता है और उस पर विचार कर सकता है कि क्या उसे पुनः घटित होने की आशंका है।

ख) बैंक के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जोखिमों की एक छोटी सूची तैयार कर सकता है।

ग) इस बात पर विचार कर सकता है कि यदि पहचाने गये जोखिमों में से प्रत्येक जोखिम घटित हो जाए तो बैंक कैसे कार्रवाई करेगा तथा कितनी पूंजी समाविष्ट हो जाएगी ।

घ) इस बात पर विचार कर सकता है कि यदि (ग) में वर्णित परिस्थति उत्पन्न हो तो बैंक की पूंजी अपेक्षा कैसे बदलेगी तथा अगले 3 से 5 वर्षों के दौरान बैंक की कारोबारी योजना के अनुसार उसकी पूंजी अपेक्षा कैसे बदलेगी; और

ङ) ऊपर निर्दिष्ट परिदृश्य में अपेक्षित पूंजी का दायरा अंकित कर सकता है तथा उस बैंक को कितनी और किस प्रकार की पूंजी रखनी चाहिए इस बारे में एक परिपूर्ण दृष्टिकोण बना सकता है तथा ऐसा करते समय यह सुनिश्चित कर सकता है कि बैंक का वरिष्ठ प्रबंध तंत्र इस प्रक्रिया में शामिल है।

(ख) जब कोई बैंक अपनी गतिविधियों और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को **कुछ हद तक जटिल** मानता है, तब वह बैंक अपने आइसीएएपी का संचालन करते समय :

क) प्रत्येक प्रमुख कारोबार में परिचालन प्रबंधन से परामर्श कर कारोबार के प्रमुख जोखिमों की एक परिपूर्ण सूची तैयार कर सकता है।

ख) उपर्युक्त जोखिमों में से प्रत्येक में से संभावित हानि के दायरे और वितरण का अनुमान उपलब्ध ऐतिहासिक आँकड़ों के आधार पर कर सकता है तथा जोखिम अनुमान प्रदान करने के लिए आघात दबाव परीक्षण (शॉक स्ट्रेस टेस्ट) करने पर विचार कर सकता है।

ग) इस बात पर विचार कर सकता है कि बैंक की पूंजी अपेक्षा किस सीमा तक ऊपर (क) और (ख) में निर्दिष्ट जोखिमों को व्यक्त करती है ।

घ) उन क्षेत्रों में जिनमें पूंजी अपेक्षा अपर्याप्त है अथवा जोखिम के अनुरूप नहीं है, जोखिम कम करने के लिए बैंक द्वारा की जाने वाली अन्य कार्रवाई के अतिरिक्त बैंक और उसके ग्राहकों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए अपेक्षित अतिरिक्त पूंजी का अनुमान कर सकता है।

ङ) इस जोखिम पर विचार कर सकता है कि पूंजी पर्याप्तता का बैंक का अपना विश्लेषण गलत हो सकता है तथा बैंक प्रबंधन की दुर्बलता से भी ग्रस्त हो सकता है जो उसके जोखिम प्रबंधन और जोखिम कम करने की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकता है।

च) उस बैंक की कारोबारी गतिविधियों का एक वर्ष बाद का विस्तृत अनुमान तथा अगले 3 से 5 वर्ष में कारोबारी गतिविधियों का थोड़ा कम विस्तृत अनुमान

कर सकता है तथा यह मानते हुए कि कारोबार में आशा के अनुरूप वृद्धि होगी इस तथ्य का आकलन कर सकता है कि बैंक की पूंजी और पूंजी अपेक्षा में क्या परिवर्तन होगा ।

छ) यह मानते हुए कि कारोबार में आशानुरूप वृद्धि नहीं होती है, इस बात पर विचार कर सकता है कि बैंक की पूंजी और पूंजी अपेक्षा में कया परिवर्तन होगा तथा अनेक प्रकार के प्रतिकूल आर्थिक परिदृश्यों में बैंक की प्रतिक्रिया क्या होगी।

ज) उपर्युक्त (ख) (घ) (च) और (छ) में किए गए विश्लेषणों से प्राप्त परिणामों का बैंक के शीर्ष प्रबंधतंत्र/ निदेशक मंडल के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए एक विस्तृत रिपोर्ट में लिपिबद्ध कर सकता है।

झ) यह सुनिश्चित कर सकता है कि कार्यनिष्पादन /वास्तविक स्थिति की तुलना में (ख) (घ) (च) और (छ) में किए गए अनुमानों की शुद्धता की समीक्षा करने के लिए प्रणाली और प्रक्रियाएँ सुस्थापित हैं।

(ग) ऐसा बैंक, जो अपनी गतिविधियों और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को **जटिल** मानता है, अपनी आइसीएएपी के संचालन में बैंक के आइसीएएपी के प्रति समानुपातिक दृष्टिकोण अपना सकता है। इसमें उपर्युक्त पैरा (**ख**) के (क) से (घ) तक उल्लिखित मुद्दों को शामिल किया जा सकता है, परंतु इसमें मॉडलों का प्रयोग भी किया जा सकता है, जिनमें से अधिकांश को बैंक के दिनानुदिन प्रबंधन और परिचालन में एकीकृत किया जाएगा ।

उपर्युक्त मॉडल आपस में जुड़े हो सकते हैं ताकि बैंक अपनी कारोबारी आवश्यकताओं के लिए पूंजी की जिस राशि को उपयुक्त समझता है उसका एक समग्र अनुमान प्राप्त हो सके। कोई बैंक ऐसे मॉडलों को इसलिए भी आपस में जोड़ सकता है ताकि बैंक के लिए वांछनीय आर्थिक पूंजी के संबंध में सूचना प्राप्त हो सके। ऐसा मॉडल जिसका प्रयोग बैंक अपनी आर्थिक पूंजी की लक्ष्य राशि प्राप्त करने के लिए करता है, आर्थिक पूंजी मॉडल (इसीएम) कह लाता है। आर्थिक पूंजी, पूंजी की वह लक्ष्य राशि है जो जोखिम के वांछित स्तर पर बैंक के हितधारकों के प्रतिफल को इष्टतम बनाता है। उदाहरण के लिए कोई बैंक बाजार जोखिम के लिए जोखिम-पर-मूल्य (वीएआर) मॉडल, ऋण जोखिम के लिए उन्नत मॉडलिंग दृष्टिकोण और संभवतः परिचालन जोखिम के लिए उन्नत माप दृष्टिकोण का प्रयोग कर सकता है। कोई बैंक अपने कारोबारी भविष्यवाणी और जोखिम के स्टोकैस्टिक मॉडल तैयार करने के लिए आर्थिक परिदृश्य जेनरेटरों का भी प्रयोग कर सकता है। तथापि भारतीय रिज़र्व बैंक अभी बासल II ढाँचे में परिकल्पित उन्नत दृष्टिकोणों की अनुमति नहीं देता है तथा बैंकों को उन्नत दृष्टिकोण अपनाने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक से पूर्वानुमोदन प्राप्त करना होगा।

यह भी संभावना है कि ऐसा बैंक किसी समूह का अंग हो तथा अंतरराष्ट्रीय रूप से परिचालन कर रहा हो। इस स्थिति में समूह भर में प्रयुक्त मॉडलों, उनकी पूर्वधारणाओं और उनके समग्र मापांकन पर केंद्रीकृत नियंत्रण हो सकता है।

12.7 नियमित स्वतंत्र समीक्षा और वैधीकरण

आइसीएएपी की आंतरिक या बाह्य लेखा परीक्षा प्रक्रिया के माध्यम से नियमित और स्वतंत्र समीक्षा होनी चाहिए, जो भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा संचालित एसआरईपी से अलग होगी। ऐसा

यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाएगा कि आइसीएएपी बैंक की गतिविधियों की प्रवृत्ति, व्याप्ति, पैमाने और जटिलता के स्तर के समानुपातिक हो और परिपूर्ण हो ताकि वह बैंक के जोखिम के प्रमुख स्त्रोतों को सही-सही प्रतिबिम्बित कर सके। आंतरिक नीतियों और प्रक्रियाओं के साथ बैंक के निरंतर अनुपालन की निगरानी करने के लिए बैंक समुचित अैर प्रभावी आंतरिक नियंत्रण संरचना, खासकर जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया से संबद्ध संरचना सुनिश्चित करेगा। कम से कम बैंक अपनी जोखिम प्रबंध प्रक्रियाओं की आवधिक समीक्षा करेगा, जिसमें निम्नलिखित सुनिश्चित किया जाना चाहिए :

क) प्रक्रिया की अखंडता, परिशुद्धता और संगतता;

ख) बैंक की गतिविधियों की प्रवृत्ति, व्याप्ति, पैमाना और जटिलता के आधार पर बैंक की पूंजी मूल्यांकन प्रक्रिया की उपयुक्तता;

ग) यदि कोई संकेन्द्रण जोखिम हो तो उसकी सामायिक पहचान;

घ) बैंक की पूंजी मूल्यांकन प्रक्रिया में 'डाटा इनपुट' की परिशुद्धता और पूर्णता;

ङ) पूंजी मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रयुक्त पूर्वधारणाओं और परिदृश्यों की तार्किकता और वैधता;

च) कि बैंक समुचित दबाव परीक्षण करता है।

12.8 <u>आइसीएएपी एक भविष्यमुखी प्रक्रिया होगी</u>

आइसीएएपी की प्रकृति भविष्यमुखी होनी चाहिए और इसलिए इसमें प्रत्याशित/अनुमानित भावी गतिविधियों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, उदाहरण के लिए रणनीतिगत योजना, समष्टि आर्थिक घटक आदि, जिसमें पूंजी की उपलब्धता और उपयोग में संभावित भावी दबाव शामिल हैं। बैंक का प्रबंधनतंत्र कम से कम एक उपयुक्त रणनीति विकसित करेगा जो यह सुनिश्चित करेगा कि बैंक अपने तुलनपत्र और तुलनपत्रेतर गतिविधियों की प्रकृति, व्याप्ति, पैमाना और जटिलता तथा उनमें अंतर्निहित जोखिमों के अनुरूप पर्याप्त पूंजी रखता है। प्रबंधतंत्र को यह सिद्ध करना चाहिए कि उक्त रणनीति किस प्रकार समष्टि आर्थिक घटकों के लिए उपयुक्त है।

इस प्रकार, बैंकों के पास एक स्पष्ट बोर्ड- अनुमोदित पूंजी योजना होगी जिसमें पूंजी के स्तर के संबंध में संस्था के उद्देश्य, उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए समय-सीमा तथा मोटे तौर पर पूंजी आयोजना प्रक्रिया और उस प्रक्रिया के अंतर्गत दायित्व का आबंटन होगा। इस योजना में निम्नलिखित रूपरेखा होगी -

क) बैंक की पूंजी संबंधी आवश्यकता;
ख) बैंक का प्रत्याशित पूंजी उपयोग;
ग) बैंक की पूंजी का वांछित स्तर;
घ) पूंजी से संबद्ध सीमा;
ङ) योजना में परिकल्पित स्थितियों से अलग स्थितियों और अप्रत्याशित घटनाओं के लिए एक सामान्य आकस्मिक योजना।

12.9 <u>आइसीएएपी एक जोखिम आधारित प्रक्रिया होगा</u>

बैंक की पूंजी पर्याप्तता उसके जोखिम प्रोफाइल पर आधारित होती है । अतः बैंक अपने पूंजी लक्ष्य इस प्रकार निर्धारित करेंगे ताकि वे उनके जोखिम प्रोफाइल और परिचालन संबंधी वातावरण के अनुरूप हों । कम-से-कम बैंक के पास एक सुदृढ़ आइसीएएपी होना चाहिए जिसमें बैंक के सभी महत्वपूर्ण जोखिम एक्सपोज़र शामिल होंगे । कुछ प्रकार के जोखिमों (यथा प्रतिष्ठा जोखिम और रणनीतिगत जोखिम) को आसानी से मात्रात्मक रूप नहीं दिया जा सकता । ऐसे जोखिमों के लिए आइसीएएपी के अंतर्गत मात्रात्मक रूप देने के बजाय उनके गुणात्मक मूल्यांकन, जोखिम प्रबंधन और जोखिम कम करने पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए । बैंकों के आइसीएएपी दस्तावेज में यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित होना चाहिए कि किन जोखिमों के लिए मात्रात्मक माप आवश्यक समझी गयी तथा किन जोखिमों के लिए गुणात्मक माप को सही माना गया है ।

12.10 आइसीएएपी के अंतर्गत दबाव परीक्षण और परिदृश्य विश्लेषण शामिल होगा

आइसीएएपी के एक अंग के रूप में बैंक का प्रबंध तंत्र कम-से-कम संबंधित दबाव परीक्षण आवधिक रूप से संचालित करेगा, खासकर बैंक के महत्वपूर्ण जोखिम एक्सपोज़रों के संबंध में । इसका उद्देश्य बैंक पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकनेवाली किसी असंभावित परंतु विश्वसनीय घटनाओं अथवा बाजार परिस्थितियों में परिवर्तन के प्रति बैंक की संभावित संवेदनशीलता का मूल्यांकन करना है । दबाव परीक्षण ढांचे के प्रयोग से बैंक के प्रबंधन को संकट की परिस्थितियों में बैंक के संभावित एक्सपोज़र के संबंध में बेहतर समझ मिल सकती है । इस संदर्भ में दबाव परीक्षण पर 26 जून 2007 के भारतीय रिज़र्व बैंक के परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 101/21.04.103/2006-07 की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिसमें बैंकों से कहा गया था कि वे 30 सितंबर 2007 तक परीक्षण/प्रायोगिक आधार पर विभिन्न जोखिम घटकों के लिए 'संवेदनशीलता परीक्षण' और 'परिदृश्य परीक्षण' शामिल करते हुए समुचित दबाव परीक्षण नीति और दबाव परीक्षण ढांचे स्थापित करें तथा 31 मार्च 2008 से औपचारिक दबाव परीक्षण ढांचा परिचालित करें । बैंकों से अनुरोध किया जाता है कि वे ऊपर निर्दिष्ट तारीख तक एक उपयुक्त औपचारिक दबाव परीक्षण ढांचे को, जो बैंकों के आइसीएएपी के अंतर्गत दबाव परीक्षण अपेक्षाओं के भी अनुरूप होगा, लागू करने के लिए आवश्यक कदम उठायें ।

12.11 आइसीएएपी के लिए पूंजी मॉडलों का प्रयोग

यद्यपि भारतीय रिज़र्व बैंक बैंकों से यह आशा नहीं करता कि बैंक अपनी पूंजी आवश्यकताओं के आंतरिक मूल्यांकन के लिए जटिल और अत्याधुनिक अर्थमिति मॉडलों का प्रयोग करें तथा ऐसे मॉडल अपनाने की कोई भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित अपेक्षा नहीं है, तथापि 07 अक्तूबर 1999 के हमारे परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी (एससी) बीसी. 98/21.04.03/99 के पैराग्राफ 17 के द्वारा अंतरराष्ट्रीय मौजूदगी वाले बैंकों से यह अपेक्षा की गयी थी कि वे आर्थिक पूंजी का अनुमान करने और उसे बनाये रखने के लिए 31 मार्च 2001 तक उपयुक्त कार्यविधि विकसित करें । तथापि, कुछ ऐसे बैंक जिनके अपेक्षाकृत जटिल परिचालन हैं और जो इस संबंध में पर्याप्त रूप से तैयार हैं, अपने आइसीएएपी के अंग के रूप में ऐसे मॉडलों पर निर्भर रहना चाहेंगे । हालांकि किसी बैंक द्वारा अपने पूंजी मॉडल विकसित करने का कोई एक निर्धारित तरीका नहीं है, तथापि आइसीएएपी का मॉडल आधारित दृष्टिकोण अपनानेवाले बैंक को अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित दर्शाना चाहिए -

क) सुप्रलेखित मॉडल विनिर्देशन, जिसमें मॉडल की क्रियाविधि, मेकेनिक्स और पूर्वधारणाएं, जो मॉडल की कार्य प्रणाली के मूल में हैं, शामिल होनी चाहिए;

ख) मॉडल में ऐतिहासिक आंकड़ों पर निर्भरता की सीमा तथा वास्तविक परिणाम की तुलना में मॉडल के परिणामों की वैधता का मूल्यांकन करने के लिए 'बैंक टेस्टिंग' की प्रणाली;

ग) मॉडल के इनपुट और आउटपुट की स्वतंत्र जांच के लिए एक सुदृढ़ प्रणाली;

घ) मॉडल के दबाव परीक्षण की एक प्रणाली जो यह स्थापित करने के लिए है कि मॉडल कठिन स्थितियों/मान्यताओं के अंतर्गत भी वैध है ;

ड.) मॉडल के आउटपुट पर किया गया विश्वास तथा बैंक की कारोबारी रणनीति के साथ उसका संबंध;

च) मॉडल को संचालित करने, उसे बनाए रखने और विकसित करने के लिए बैंकों के भीतर अपेक्षित दक्षता और संसाधनों की पर्याप्तता ।

13 आइसीएएपी के चुनिंदा परिचालनात्मक पहलू

इस खंड में उन जोखिमों की अपेक्षाकृत विस्तृत रूपरेखा दी गयी है, जिनके संबंध में बैंकों से अपेक्षा है कि वे अपने आइसीएएपी में उन्हें शामिल करेंगें।

13.1 <u>आइसीएएपी में महत्वपूर्ण जोखिमों की पहचान और उनकी माप</u>

किसी आइसीएएपी का पहला उद्देश्य सभी महत्वपूर्ण जोखिमों की पहचान करना है। जिन जोखिमों की विश्वनीय तरीके से माप की जा सकती हो तथा जिन्हें मात्रात्मक रूप में व्यक्त किया जा सकता हो, उनके संबंध में आँकड़े और विधि के आधार पर यथोचित कार्रवाई करनी चाहिए। इन महत्वपूर्ण जोखिमों की माप और मात्रा के संबंधित उपयुक्त साधन और विधि भिन्न-भिन्न बैंकों में भिन्न-भिन्न होने की संभावना है।

बैंकों के समक्ष जो जोखिम हैं उनमें से कुछ हैं : ऋण जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम, बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम, ऋण संकेंद्रण जोखिम और चलनिधि जोखिम (जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है)। भारतीय रिज़र्व बैंक ने समय-समय पर बैंकों को आस्ति देयता प्रबंधन, देश विशेष जोखिम का प्रबंधन, ऋण जोखिम, परिचालन जोखिम आदि के संबंध में दिशानिर्देश जारी किए हैं। **अतः, आइसीएएपी सहित बैंकिंग की जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाएँ विद्यमान दिशानिर्देशों के अनुरूप होनी चाहिए**। तथापि, कुछ अन्य प्रकार के जोखिम, जैसे प्रतिष्ठा जोखिम और कारोबार या रणनीतिगत जोखिम, बैंक के लिए उतने ही महत्व के हो सकते हैं। ऐसे मामलों में उन पर उसी प्रकार विचार किया जाना चाहिए जैसे अधिक औपचारिक रूप से परिभाषित जोखिमों पर किया जाता है। उदाहरण के लिए, कोई बैंक ऐसे कारोबारों में लगा हुआ हो जिनकी गतिविधियों के स्तर में समय-समय पर होने वाले उतार-चढ़ाव तथा अपेक्षाकृत उच्च अचल लागत के कारण अप्रत्याशित हानि उत्पन्न होने की संभावना हो सकती है जिसके लिए पर्याप्त पूंजी का समर्थन होना चाहिए। इसके अलावा, कोई बैंक महत्वपूर्ण नीतिगत गतिविधियों (यथा कारोबार क्षेत्र को बढ़ाना या अभिग्रहण करना) में लगा हो सकता है, जो उल्लेखनीय जोखिम उत्पन्न कर सकता है और जिसके लिए अतिरिक्त पूंजी उपयुक्त होगी।

इसके अलावा, यदि बैंक जोखिम को कम करने की तकनीकों का प्रयोग करते हैं तो उन्हें उस जोखिम को समझना चाहिए जिसे वे कम करना चाहते हैं तथा उन तकनीकों की प्रवर्तनीयता और प्रभावशीलता को ध्यान में रखते हुए बैंक के जोखिम प्रोफाइल पर जोखिम कम करने के संभावित प्रभाव को समझना चाहिए।

13.2 ऋण जोखिम : बैंक के पास संविभागीय स्तर पर और एक्सपोज़र या काउंटर पार्टी स्तर पर ऋण जोखिम का मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिए। बैंकों को ऋण जोखिम संकेंद्रण की पहचान तथा उनके प्रभाव के समुचित मूल्यांकन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए । इसके अंतर्गत एक्सपोजरों के बीच परस्पर निर्भरता के विभिन्न प्रकारों पर विचार किया जाना चाहिए, जिनमें दुष्परिणामों, दबाव की परिस्थितियों के ऋण जोखिम प्रभाव तथा पोर्टफोलियो और एक्सपोज़र के उतार-चढ़ाव के संबंध में पूर्वधारणाओं पर पड़नेवाले आघातों को शामिल करना चाहिए। बैंकों को काउंटर पार्टी ऋण एक्सपोज़र, जिसमें कम चलनिधि वाले बाज़ारों में व्यापार करने से उत्पन्न होने वाले काउंटर पार्टी ऋण जोखिम एक्सपोज़र शामिल हैं, का सावधानी से मूल्यांकन करना चाहिए तथा बैंक की पूंजी पर्याप्तता पर पड़नेवाले प्रभाव को निर्धारित करना चाहिए।

13.3 बाज़ार जोखिम : बैंक को बाजार मूल्यों में घटबढ़ के कारण खरीद-बिक्री संबंधी गतिविधियों में जोखिम की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए। इस निर्धारण के अंतर्गत लिखतों की नकदी-अपरिवर्तनीयता, संकेंद्रित स्थितियाँ, एकतरफा बाजार, गैर-रैखिक/गहरी आउट-ऑफ -द मनी स्थितियाँ तथा अंतर्संबंधों में उल्लेखनीय परिवर्तन की संभावना जैसे घटकों पर विचार किया जाना चाहिए। चरम परिस्थितियों की घटनाओं और आघातों को शामिल करने वाले अभ्यास इस प्रकार बनाये जाने चाहिए ताकि प्रासंगिक बाजार घटनाओं के प्रति प्रमुख पोर्टफोलियो की संवेदनशीलता व्यक्त हो सके।

13.4 परिचालन जोखिम : बैंक को अपर्याप्त या असफल आंतरिक प्रक्रियाओं, लोगों और प्रणालियों तथा बैंक के बाहर की घटनाओं से उत्पन्न होने वाले संभावित जोखिमों का मूल्यांकन करने में सक्षम होना चाहिए। इस मूल्यांकन के अंतर्गत परिचालन जोखिम से संबद्ध चरम घटनाओं और आघातों का प्रभाव शामिल होना चाहिए। घटनाओं में विभिन्न करोबारी इकाइयों में असफल प्रक्रियाओं में अचानक वृद्धि या असफल आंतरिक नियंत्रण की कोई उल्लेखनीय घटना शमिल हो सकती है।

13.5 बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम (आइआरआरबीबी) : बैंक को बैंकिंग बही में अपने तुलनपत्र और तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र पर बदलती ब्याज दरों से संबद्ध जोखिम की अल्पावधिक और दीर्घावधिक दोनों दृष्टियों से पहचान करनी चाहिए। इसके अंतर्गत समांतर आघात, यील्ड कर्व ट्विस्ट, यील्ड कर्व इनवर्सन, दरों के संबंध में परिवर्तन (आधार जोखिम) और अन्य प्रासंगिक परिदृश्य शामिल हो सकते हैं। बैंक को अपनी गैर-परिपक्व जमाराशियों और अन्य आस्तियों तथा देयताओं, खासकर अंतर्निहित विकल्प वाले एक्सपोज़र के उतार-चढ़ाव के संबंध में अपनी पूर्वधारणाओं का समर्थन करने में सफल होना चाहिए। ऐसी पूर्वधारणाओं की अनिश्चितता को देखते हुए ब्याज दर जोखिमों के विश्लेषण में दबाव परीक्षण और परिदृश्य विश्लेषण का प्रयोग करना चाहिए। आइआरआरबीबी की माप के अनेक तरीके हो सकते हैं। तथापि आइआरआरबीबी की माप के तरीके का एक **उदाहरण अनुबंध 10** में दिया गया है। बैंक आइआरआरबीबी की गणना करने /उसे मात्रात्मक रूप देने के लिए इन तरीकों के

दूसरे प्रकार या पूरी तरह से अलग कार्यविधि अपनाने के लिए स्वतंत्र हैं, बशर्ते तकनीक वस्तु मूलक, सत्यापन योग्य तथा पारदर्शी कार्यविधि और मानदंडों पर आधारित हो।

13.6 <u>ऋण संकेंद्रण जोखिम</u> : संकेंद्रण जोखिम तब होता है जब कोई एक एक्सपोज़र अथवा एक्सपोज़रों का एक समूह (बैंक की पूंजी, कुल आस्तियों, अथवा समग्र जोखिम स्तर की तुलना में) इतनी बड़ी हानि उत्पन्न करने की क्षमता रखता है कि बैंक की सुदृढ़ता अथवा मुख्य परिचालन बनाये रखने की क्षमता खतरे में पड़ सकती है। बैंकों की प्रमुख समस्याओं के पीछे संकेंद्रण जोखिम अकेला सबसे महत्वपूर्ण कारण रहा है। संकेंद्रित संविभागों के कारण उत्पन्न होने वाला संकेंद्रण जोखिम अधिकांश बैंकों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

बैंक यह सिद्ध करने के लिए कि ऋण संकेंद्रण जोखिम पर समुचित ध्यान दिया जारहा है, निम्नलिखित **गुणात्मक मानदंडों** का अनुसरण कर सकते हैं :

क) संकेंद्रण जोखिम के प्रति एक्सपोज़र का मूल्यांकन करते समय बैंक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि बासल II ढाँचे की गणना इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि बैंक के कारोबार में काफी विविधता है ।

ख) यद्यपि बैंकों के एकल उधारकर्ता एक्सपोज़र, समूह उधारकर्ता एक्सपोज़र और पूंजी बाजार एक्सपोज़र भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित एक्सपोज़र मानदंडों से विनियमित होते हैं, तथापि इन संविभागों में भी संकेंद्रण हो सकता है। अतः ऋण संके न्द्रण के स्तर का मूल्यांकन करते समय बैंक न केवल पूर्वोक्त एक्सपोज़रों पर ध्यान देगा बल्कि किसी विशेष आर्थिक या भौगोलिक क्षेत्र में ऋण संकेंद्रण के स्तर पर विचार करेग। शाखा नेटवर्क के स्वरूप के कारण जिन बैंकों का परिचालन संकेंद्रण कुछ भौगोलिक क्षेत्रों तक ही सीमित है। उन्हें भी उक्त क्षेत्र में प्रतिकूल आर्थिक गतिविधियों के प्रभाव पर तथा आस्ति गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करना चाहिए।

ग) विशेषज्ञता आधारित संविभागों का कार्यनिष्पादन, कुछ मामलों में, बैंक के महत्वपूर्ण व्यक्तियों /कर्मचारियों पर भी निर्भर करता है। ऐसी परिस्थिति संकेंद्रण जोखिम को बढ़ा सकती है, क्योंकि इन कर्मचारियों की दक्षता संकेंद्रित संविभाग से उत्पन्न होने वाले जोखिम को अंशतः कम करती है। संकेंद्रण जोखिम पर ऐसे महत्वपूर्ण कर्मचारियों / व्यक्तियों का प्रभाव छोटे बैंकों में अपेक्षाकृत अधिक होने की संभावना है। दबाव परीक्षण और परिदृश्य विश्लेषण करते समय बैंक को महत्वपूर्ण कार्मिकों के चले जाने पर बैंक के सामान्य रीति से परिचालन करने की क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव तथा बैंक की आय पर पड़नेवाले प्रत्यक्ष प्रभाव पर विचार करना चाहिए।

ऋण संकेंद्रण जोखिम पर समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए प्रयुक्त **मात्रात्मक मानदंड** का जहाँ तक संबंध है, ऋण संकेंद्रण जोखिम की गणना काउंटर पार्टी स्तर पर (अर्थात् बड़े एक्सपोज़र), संविभागीय स्तर पर (अर्थात् क्षेत्रीय और भौगोलिक संकेंद्रण) और आस्ति श्रेणी स्तर पर (अर्थात् देयता और आस्ति संकेंद्रण) की जाएगी। इस संदर्भ में बैंकों में जोखिम प्रबंधन प्रणाली से संबंधित 7 अक्तूबर 1999 के हमारे परिपत्र बैंपविवि. सं. बीपी (एससी). बीसी. 98/21.04.03/99 के अनुबंध के पैरा 3.2.2 (ग) की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है,

जिसमें बैंकों के 'महत्वपूर्ण एक्सपोज़र' के संबंध में कुछ विवेकपूर्ण सीमाएँ निर्धारित की गयी हैं। एक विवेकपूर्ण प्रथा के रूप में बैंक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी 'बड़े उधारकर्ताओं' के प्रति उनका सकल एक्सपोज़र (गैर-निधिक एक्सपोज़र सहित) किसी भी समय उनकी 'पूंजी निधि' (भारतीय रिज़र्व बैंक के विद्यमान एक्सपोज़र मानदंडों के प्रयोजन से दी गयी परिभाषा के अनुसार) के 800 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। इस प्रयोजन के लिए 'बड़ा उधारकर्ता' उसे माना जा सकता है जिसके प्रति बैंक का सकल एक्सपोज़र (निधिक और गैर-निधिक) बैंक की पूंजी निधि के 10 प्रतिशत से अधिक है । यह उचित होगा कि बैंक अपने उद्योग-वार एक्सपोज़र पर विशेष ध्यान दें जहाँ किसी विशेष उद्योग के प्रति उनका एक्सपोज़र समग्र औद्योगिक क्षेत्र के प्रति उनके सकल ऋण एक्सपोज़र (निवेश एक्सपोज़र सहित) के 10 प्रतिशत से अधिक हो।

बैंकों के संविभाग में ऋण संकेंद्रण की माप के संबंध में अनेक दृष्टिकोण हो सकते हैं। इस प्रयोजन के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण के अंतर्गत हरफिंडल हर्श मैन इंडेक्स (एचएचआइ) की गणना की जाती है। इसे ध्यान में रखा जाए कि संकेंद्रण जोखिम की माप के रूप में एचएचआइ की गणना कई संभव विधियों में से केवल एक विधि है। बैंक इस प्रयोजन के लिए कोई अन्य उपयुक्त विधि अपनाने के लिए स्वतंत्र हैं, जिसमें ऐसी माप के लिए वस्तु मूलक और पारदर्शी मानदंड अपनाया गया हो।

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ ˆÅ¸ ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ‡ˆÅ¥¸ ,¸¾£ ¬¸Ÿ¸½¢ˆÅ÷¸[25] ™¸½›¸¸½¿ ,¸š¸¸£ œ¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ ˆÅ¸½ ‡ˆÅ ¡¸¸ œ¸£¬œ¸£ ›¸□¸™úˆÅ ¬¸½ □¸º”õ½ „›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸»í ˆ½Å ¬¸¿™ž¸Ä Ÿ¸½¿ ™½‰¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ¢¨¸¢ž¸››¸ œ¸ÏˆÅ¸£ ¬¸½ œ¸Ïž¸¸¢¨¸÷¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¬¸¿œ¸»µ¸Ä □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅ¸ ,¸ˆÅ¥¸›¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ƒ›¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸Ÿ¸½¢ˆÅ÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ „›¸ ¬¸ž¸ú ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅ¸½ š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸ ,˜¸¨¸¸ ,¸œ¸¬¸ Ÿ¸½¿ □¸º”½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ œ¸£ ,¸š¸¸¢£÷¸ í¸½÷¸½ íÿ — ¡¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ ¤¸¸□¸¸£, †µ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ÷¸˜¸¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¤¸ú□¸ ,¸œ¸¸¬¸ú ¬¸¿¤¸¿š¸¸½¿ □¸¾¬¸½ œ¸£¿œ¸£¸Š¸÷¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ¬¸½ ,¢š¸ˆÅ ¬¸»®Ÿ¸ ,˜¸¨¸¸ ¢¬˜¸¢÷¸ ¢¨¸©½«¸ú ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸Ï¢÷¸¢¤¸¿¢¤¸÷¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ —

¤¸¸□¸¸£ ,¸š¸¸¢£÷¸ Ÿ¸š¡¸¬˜¸÷¸¸ Ÿ¸½¿ ¨¸¼¢Ö ¬¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ ¤¸□õ Š¸ƒÄ í¾ ¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ¢¨¸¢ž¸››¸ ®¸½°¸ „÷œ¸¸™¸½¿, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ,˜¸¨¸¸ œ¸Ï¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£¸½¿ ˆ½Å ‡ˆÅ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸ ¬¸Ÿ¸»í ˆÅú □¸™ Ÿ¸½¿ ,¸÷¸½ íÿ — ƒ¬¸¬¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ □¸Ÿ¸¸¨¸ ,¸¾£ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ œ¸Ï¤¸¿š¸›¸ ˆÅú ›¸ƒÄ □¸º›¸¸¾¢÷¸¡¸¸¿ œ¸¸¾™¸ í¸½ Š¸ƒÄ íÿ — ,œ¸›¸ú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸Ï¤¸¿š¸›¸ œ¸Ï¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ ÷¸˜¸¸ œ¸Ï¤¸¿š¸ ¬¸»□¸›¸¸ œ¸Ïµ¸¸¥¸ú ˆ½Å Ÿ¸¸š¡¸Ÿ¸ ¬¸½ ˆÅ¸½ƒÄ ž¸ú ¤¸ÿˆÅ ¬¸Ÿ¸»□¸½ œ¸¸€Ÿ¸Ä ˆ½Å ¬¸¸˜¸-¬¸¸˜¸ ¬¸ž¸ú ¢¨¸¢š¸ˆÅ ¬¸¿¬˜¸¸,¸½¿, ,¢¬÷¸ œ¸Ïˆ¸£¸½¿ („™¸í£µ¸¸˜¸Ä †µ¸, ”½¢£¨¸½¢’¨¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿£¢□¸÷¸ „÷œ¸¸™), □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ®¸½°¸ („™¸í£µ¸¸˜¸Ä 'ï½¢”¿Š¸ ¤¸º°ˆÅ) ÷¸˜¸¸ ž¸¸¾Š¸¸½¢¥¸ˆÅ ®¸½°¸¸½¿ Ÿ¸½¿ Ÿ¸¸¾□¸»™ ƒ¬¸ œ¸Ïˆ¸£ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú œ¸¸í□¸¸›¸

[25] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸¸°¸ ¤¸¿ÿœ¸¸¢¨¸¸¢¨¸.¤¸ úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ‚¸¾£ „›í½¿ ‡ˆÅ°¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — „œ¸¡¸ºÄÆ÷¸ œ¸¾£¸ 13.6 (‰¸) Ÿ¸½¿ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸ ¢›¸Ÿ›¸¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —

- ‡ˆÅ¥¸ œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£ ‚˜¸¨¸¸ œ¸£¬œ¸£ ¬¸¿¤¸Ö œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£¸½¿ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸»í ˆÅ¸½ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£;
- ¢¨¸¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ÷¸˜¸¸ ‚¢¨¸¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ¸¾¬¸½ í½¸ œ¸¿€” ÷¸˜¸¸ ¢›¸¸ú ƒÄ¢Æ¨¸’ú œ¸€Ÿ¸Ä ™¸½›¸¸½¿ œÏˆÅ¸£ ˆÅú ¢¨¸î¸ú¡¸ ¬¸¿¬˜¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸½ ‡Æ¬¸œ¸½{¸£;
- ”ï½¢”¿Š¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£/¤¸¸¸¸£ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸;
  - ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅ£›¸½ ‚˜¸¨¸¸ ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅú œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ˆ½Å Ÿ¸¸š¡¸Ÿ¸ ¬¸½ („÷œ¸¸™ ‚˜¸¨¸¸ ¬¸½¨¸¸) œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£¸½¿ („™¸í£µ¸¸˜¸Ä í½¸ œ¸¿€” ÷¸˜¸¸ í½¸ œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£) ˆÅ¸½ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£;
  - ¢›¸š¸ú¡¸›¸ è¸¸½÷¸;
  - ¤¸¾¿¢ˆ¿ÅŠ¸ ¤¸íú ‚˜¸¨¸¸ ”ï½¢¿”¿Š¸ ¤¸íú Ÿ¸½¿ š¸¸¢£÷¸ ‚¢¬÷¸¡¸¸¿ ¸¾¬¸½ †µ¸‚ ”½¢£¨¸½¢’¨¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿£¢¸÷¸ „÷œ¸¸™; ÷¸˜¸¸
  - ÷¸º¥¸›¸ œ¸°¸½÷¸£ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ¢¸¬¸Ÿ¸½¿ Š¸£¿’ú‚ ¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ ‚›¡¸ œÏ¢÷¸¤¸Ö÷¸¸‡¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ —

¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ ƒ›¸ ¨¡¸¸œ¸ˆÅ ª½¢µ¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ‚£-œ¸¸£ Ÿ¸¸¾¸»™ ‡Æ¬¸œ¸¸½¸ö£¸½¿ ˆ½Å Š¸“¸¸½”õ ¬¸½ ž¸ú „÷œ¸››¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸½ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ ¨¡¸¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ Ÿ¸½¿ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¬¸Ÿ¸³œ¸ú ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³œ¸ ‚œ¸›¸½ œ¸€Ÿ¸Ä¨¡¸¸œ¸ú ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ ˆÅú ¸¸›¸ˆÅ¸£ú í¸½›¸ú ¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ¨¡¸¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ „š¸¸£ ¤¸¢í¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸¤¸-œÏ¸ƒŸ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£, œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£, ˆÅ›¸”ƒ’ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ÷¸˜¸¸ ‡¬¸‚¸ƒÄ¨¸ú; ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ÷¸˜¸¸ Š¸¾£-¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£, ¨¡¸¸œ¸¸£¸ Š¸¢÷¸¢¨¸¢š¸¡¸¸¿ ‚¸¾£ í¸Ÿ¸ú™¸£ú œ¸¸ƒœ¸¥¸¸ƒ›¬¸ ˆ½Å „™¸í£µ¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ — í¸¥¸¸¿¢ˆ, ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ œÏ¸¡¸À „š¸¸£ˆÅ÷¸¸Ä‚¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸š¡¸÷¸¸š¸¸£ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ œÏ÷¡¸®¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ „÷œ¸››¸ í¸½÷¸½ íÿ ¢œ¸€£ ž¸ú ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆÅú ‚¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ ×¸£¸ ¬¸Ÿ¸¢˜¸Ä÷¸ ¢›¸¨¸½©¸ („™¸. ¬¸¿œ¸¸¢©¸Ä¨¸¼Å÷¸ †µ¸ ¤¸¸š¡¸÷¸¸ - ¬¸ú”ú‚¸½) ÷¸˜¸¸ ¢¨¸©¸½«¸ ‚¢¬÷¸ œÏˆÅ¸£ („™¸. Ÿ¸¸½›¸¸½¥¸¸ƒ› ¤¸úŸ¸¸ˆÅ÷¸¸Ä) ˆ½Å ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸¸«œ¸¸™›¸ ˆÅú Š¸£¿’ú ™½›¸½¨¸¸¥¸½ ¬¸º£®¸¸ œÏ™¸÷¸¸‚¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆ½Å Ÿ¸¸š¡¸Ÿ¸ ¬¸½ œ¸£¸½®¸ ³œ¸ ¬¸½ ‡ˆÅ ¢¨¸©¸½«¸ ‚¢¬÷¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ƒ¬¸ ¬¸¿™ž¸Ä Ÿ¸½¿ ¡¸í ›¸¸½’ ¢ˆÅ¡¸¸ ¸¸‡ ¢ˆÅ ž¸¸£÷¸ Ÿ¸½¿ ¨¸÷¸ÄŸ¸¸› Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ‚›¸ºŸ¸¢÷¸ ˆ½Å ¢¤¸›¸¸ ƒ¬¸ ÷¸£í ˆ½Å ¸¡¸¸™¸÷¸£ ¨¡¸¸¨¸¬¸¸¡¸ ˆÅ£›¸½ /ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‚¢š¸ˆÅ÷¸£ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ¥¸½›¸½ ˆÅú ‚›¸ºŸ¸¢÷¸ ›¸íì í¾

¥¸½¢ˆÅ›¸ „›¸ˆÅú ¢¨¸™½©¸ ¢¬˜¸÷¸ ©¸¸‰¸¸‡¿ 01 ¢™¬¸¿¤¸£ 2008 ˆ½Å œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸. ¬¸¿. ¤¸úœ¸ú. ¤¸ú¬¸ú. 89/21.04.141/2008-09 ˆ½Å □¸¸£ú í¸½›¸½ ¬¸½ œ¸í¥¸½ ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸ú íÿ — ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¬¸º£®¸¸ œÏ™¸÷¸¸ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸□¸¸£¸š¸ú›¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å ¤¸¸š¡¸÷¸¸š¸¸£ˆÅ¸½¿ ˆÅú †µ¸ œ¸¸°¸÷¸¸ ˆ½Å ¤¸ú□¸ „□□¸ ¬¸í-¬¸¿¤¸¿š¸ ˆÅú œ¸í□¸¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸¡¸¸Äœ¸÷¸, ¨¡¸¨¸¢¬˜¸÷¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸¿ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ Æ¡¸¸½¿¢ˆÅ ¬¸º£®¸¸ œÏ™¸÷¸¸‚¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸š¡¸÷¸¸š¸¸£ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸«œ¸¸™›¸ œÏµ¸¸¥¸úŠ¸÷¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸½ ƒ÷¸£ ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ (‚˜¸¸Ä÷¸Ã `Š¸¥¸÷¸ ÷¸£úˆ½Å ¬¸½ íº‚¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸') œ¸£ ‚¢ª÷¸ í¸½÷¸¸ í¾ —

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ ˆÅú ¬¸»□¸›¸¸ ¢›¸™½©¸ˆÅ Ÿ¸¿¿”¥¸ ÷¸˜¸¸ „□□¸ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ÷¸ˆÅ œ¸íº¿□¸¸›¸½ ˆÅú œÏµ¸¸¥¸ú Ÿ¸¸¾□¸»™ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ¨¸í ž¸ú ƒ¬¸ ¬œ¸«’÷¸¸ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ ¢ˆÅ „¬¸¬¸½ œ¸÷¸¸ □¸¥¸½ ¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸ ˆÅ¸ ‡ˆÅ-‡ˆÅ ‹¸’ˆÅ ¬¸¿Š¸“›¸ Ÿ¸½¿ ˆÅí¸¿ Ÿ¸¸¾□¸»™ í¾— ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å œ¸¸¬¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ž¸£¸½¬¸½Ÿ¸¿™ £µ¸›¸ú¢÷¸¡¸¸¿ Ÿ¸¸¾□¸»™ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸›í½¿ „□□¸ œÏ¤¸¿š¸-÷¸¿°¸ ˆÅ¸ ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ œÏ¸œ¸÷¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ‡½¬¸ú £µ¸›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ‚ž¸ú«’ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸¸€ƒ¥¸ ˆ½Å ‚›¸³œ¸ ¨¡¸¸¨¸¬¸¸¢¡¸ˆÅ £µ¸›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ „¥¸’œ¸½€£, ¬¸úŸ¸¸‡¿ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸¸˜¸¨¸¸ œ¸»¿□¸ú ¤¸œ¸€£ Ÿ¸½¿ ¨¸¼¢Ö ˆÅ£›¸¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ¨¸¸¥¸ú £µ¸›¸ú¢÷¸¡¸¸¿ ¥¸¸Š¸» ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ‡½¬¸½ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‰¸¡¸¸¥¸ Ÿ¸½¿ £‰¸›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å □¸¥¸÷¸½ œ¸¾™¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ÷¸ˆÅ›¸úˆ½¿Å ƒ¬¸÷¸½Ÿ¸¸¥¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å □¸¸¥¸÷¸½ œ¸¾™¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å □¸¥¸÷¸½ œ¸¾™¸ íÿ —

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅú ›¸¸œ¸-□¸¸½‰¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×¸£¸ ¢□¸÷¸›¸¸ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ í¸½ „÷¸›¸ú ÷¸ˆÅ›¸úˆ½¿Å ƒ¬¸÷¸½Ÿ¸¸¥¸ Ÿ¸½¿ ¥¸¸¡¸ú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ›¸ ÷¸ˆÅ›¸úˆÅ¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢¨¸¢ž¸››¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸ ‚‹¸¸÷¸ œ¸£ú®¸µ¸, ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ¬¸÷¸£ ÷¸˜¸¸ œ¸€Ÿ¸Ä ¨¡¸œ¸ú œ¸¢£´©¡¸ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ‚¸¾£ ‡ˆÅú¼ÅÅ÷¸ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ÷¸˜¸¸ ‚¢˜¸ÄˆÅ œ¸»¿□¸ú Ÿ¸¸Å”¥¸¸½¿ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¾ — œ¸í□¸¸›¸ ¢ˆÅ‡ Š¸‡ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅ¸ Ÿ¸¸œ¸›¸ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ ÷¸£úˆÅ¸½¿ ¬¸½ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ ¢›¸¨¸¥¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆ½Å Ÿ¸ºˆÅ¸¤¸¥¸½ ¬¸ˆÅ¥¸ ˆÅ¸½ ¢í¬¸¸¤¸ Ÿ¸½¿ ¥¸½›¸¸, ¬¸¿ˆ½Å¢÷¸ˆÅ £¸¢© ˆÅ¸ „œ¸¡¸¸½Š¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ£ ˆ½Å í½□¸ ¬¸¢í÷¸ ¡¸¸ „¬¸ˆ½Å ¢¤¸›¸¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅ¸ ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ‡½¬¸½ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ‚¿÷¸¢£ˆÅ ¬¸úŸ¸¸‡¿ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸ˆÅ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ „›í½¿ „“¸›¸¸ œ¸”õ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ¢›¸¡¸¿ˆÅ¸¢¥¸ˆÅ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¬¸ž¸ú œ¸íŸ¸º‰¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅ¸½ „¬¸Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¬¸¸˜¸ íú, „¬¸½ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅú œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸¸½¿ ˆÅú œ¸í□¸¸›¸ ˆÅ£ˆ½Å „›¸ˆ½Å œÏ¢÷¸ □¸¸¨¸¸¤¸ú £µ¸›¸ú¢÷¸ ¤¸›¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸¬¸½ „¬¸ˆ½Å ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸«œ¸¸™›¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸¸Äœ¸÷¸÷¸¸ œ¸£ ¢¨¸œ¸£ú÷¸ œÏž¸¸¨¸ œ¸”õ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —

¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ,¸ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú ÷¸˜¸¸ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸ú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ‡½¬¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ¸½ ‡ˆÅ ¡¸¸¿¢°¸ˆÅ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ›¸ ¤¸›¸¸ˆÅ£ ‡ˆÅ ‡½¬¸ú œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ¤¸›¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ œÏ÷¡¸½ˆÅ ,œ¸›¸½ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ Ÿ¸¸Á”¥¸ ˆ½Å ,¸š¸¸£ œ¸£ ,œ¸›¸ú ‰¸¸¬¸ ˆÅŸ¸□¸¸½¢£¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ £½‰¸¸¿¢ˆÅ÷¸ ˆÅ£½ — ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸»¿□¸ú ˆÅ¸ ‡ˆÅ „¢□¸÷¸ ¬÷¸£ „¬¸ˆ½Å ,¸ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú ÷¸˜¸¸ ¬÷¸¿ž¸ 2 Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — œÏ÷¡¸½ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ‡½¬¸½ Ÿ¸ºÓ¸½¿ œ¸£ ,œ¸›¸½ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸ˆÅ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ □¸¸□¸¸Ä ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ —

œÏ÷¡¸½ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ œÏž¸¸¨¸ú ,¿÷¸¢£ˆÅ ›¸ú¢÷¸¡¸¸¿, œÏµ¸¸¥¸ú ÷¸˜¸¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ˆÅú ¨¡¸¨¸˜¸¸ Ÿ¸¸¾□¸»™ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¨¸í ,œ¸›¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸¡¸ ¬¸½ œ¸í□¸¸›¸, „›¸ˆÅú ¢›¸Š¸£›¸ú, „›¸ˆÅ œÏ¤¸¿š¸›¸, „›¸ˆÅ¸½ ¢›¸¡¸¿¢°¸÷¸ ,¸¾£ ˆÅŸ¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½Å — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ›¸ ˆ½Å¨¸¥¸ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅú ¬¸Ÿ¸¸›¸¡¸ œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¤¸¢¥ˆÅ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅú ¬¸¿ˆÅ’ˆÅ¸¥¸ú›¸ œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿, ,¸¢˜¸Äˆ Ÿ¸¿¢™¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸□¸¸£ ˆ½Å „¬¸ ™¸¾£ ˆÅ¸½ ž¸ú ›¸{£,¿™¸□¸ ›¸íì ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¤¸ ¬¸¸Ÿ¸›¸¡¸÷¸À ¤¸¸□¸¸£ Ÿ¸½¿ ›¸ˆÅ™ú ˆÅú ¢ˆÅ¥¥¸÷¸ í¸½ □¸¸÷¸ú í¾ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ‡½¬¸½ œ¸¢£´©¡¸ œ¸£ ›¸□¸£ £‰¸›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ ¬¸¿¢ˆÅ™¸Š¸÷¸ ÷¸˜¸¸ Š¸¾£-¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ,¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ ™¸¨¸¸¸½¿ ˆ½Å □¸¥¸÷¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆ½Å „ž¸£›¸½ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ ¬¸½ ƒ›ˆÅ¸£ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ — ƒ¬¸ œ¸¢£´©¡¸ ˆÅ¸½ ž¸¸¨¸ú ‡Æ¬¸œ¸¸½{£¸½¿ ˆ½Å œ¸¾™¸ í¸½›¸½ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ ¬¸½ ,Ž»÷¸¸ ›¸íì £‰¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ ¤¸¸□¸¸£ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ˆÅú ®¸¢÷¸ ÷¸˜¸¸ ,¸¢¬÷¸-Ÿ¸»¥¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ¢Š¸£¸¨¸’ ˆÅ¸½ ž¸ú ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ í¸½Š¸¸ —

13.7 <u>चलनिधि जोखिम</u> : बैंक को आस्ति को चलनिधि में परिवर्तित करने में कठिनाई (बाजार चलनिधि जोखिम) या पर्याप्त निधि प्राप्त करने में कठिनाई (निधीयन चलनिधि जोखिम) के कारण समय पर दायित्व पूरा न कर पाने के कारण उत्पन्न होने वाले जोखिमों को समझना चाहिए। इस मूल्यांकन के अंतर्गत निधियों के स्रोत और उपयोग का विश्लेषण, उन निधि बाजारों की समझ जिनमें बैंक परिचालन करता है, तथा संकटकालीन स्थितियों में आकस्मिक निधीयन योजना की प्रभावशीलता का मूल्यांकन शामिल होना चाहिए ।

í¸¥¸ íú ˆ½Å ¢¨¸î¸ú¡¸ ¤¸¸□¸¸£ ¬¸¿ˆÅ' ›¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅ¸½ £½‰¸¸¿¢ˆÅ÷¸ ˆÅ£ ¢™¡¸¸ í¾ ¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ,¸ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸Äœ÷¸÷¸¸ œ¸£ □¸¥¸¢›¸¢š¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸¸ ¢ˆÅ÷¸›¸¸ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä í¾ [26]— „□□¸ œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú ˆ½Å ¤¸ú□¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ Æ¡¸¸½¿¢ˆÅ □¸¥¸¢›¸¢š¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸, œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸Äœ÷¸÷¸¸ ˆÅ¸½ œÏž¸¸¢¨¸÷¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ □¸¸½ ‹¸»Ÿ¸ˆÅ£ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å □¸¥¸¢›¸¢š¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸ ˆÅ¸½ ¢¤¸Š¸¸”õ ˆÅ£ £‰¸ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ —

[26] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 û¸Å£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

¢¬¸÷¸¿¤¸£ 2008 Ÿ¸½¿ ¤¸ÿ¢ˆ¿ÅŠ¸ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸µ¸ œ¸£ ¤¸¸¬¸¥¸ ¬¸¢Ÿ¸¢÷¸ ›¸½ ¬¸®¸Ÿ¸ ¸¥¸¢›¸¢š¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¬¸Ö¸¿÷¸ œÏˆÅ¸¢©¸÷¸ ¢ˆÅ‡ ˜¸½ — ƒ¬¸Ÿ¸½¿ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ œ¸£ ¤¸¥¸ ¢™¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸í ¸³£ú í¾ ¢ˆÅ ¨¸½ ¬¸°´õ ¸¥¸¢›¸¢š¸ ¢¬˜¸¢÷¸ ¤¸›¸¸ ˆÅ£ £‰¸½¿ ÷¸¸¢ˆÅ ¨¸½ ¥¸¿¤¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ÷¸ˆÅ ¸¥¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¤¸¸¸£ ˆ½Å ™¤¸¸¨¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¸¥¸¢›¸¢š¸ ˆÅú ¢ˆÅ¥¥¸÷¸ ˆÅ¸ ¬¸¸Ÿ¸›¸¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½¿Å — ƒ›¸ Ÿ¸¸›¸ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¨¸«¸Ä 2007 ˆ½Å Ÿ¸š¡¸ ¬¸½ ¤¸¸¸£ Ÿ¸½¿ íº‡ „˜¸¥¸-œ¸º˜¸¥¸ ˆ½Å ™¸¾£¸›¸ ¤¸ÿ¢ˆÅŠ¸ ®¸½°¸ ×¸£¸ Ÿ¸í¬¸»¬¸ ˆÅú Š¸ƒÄ ˆÅ¢Ÿ¸¡¸¸½¿ œ¸£ ¢¨¸¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ¢¸›¸Ÿ¸½¿ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅú œÏ˜¸¸‡¿, ,¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ ¡¸¸½¸›¸‡¿, ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸ ‡¨¸¿ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ˆÅ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ,¸¾£ ,¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ œÏ¢÷¸¤¸Ö÷¸¸‡¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¾ —

¸¥¸¢›¸¢š¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ¢™©¸¸¢›¸™½Ä©¸ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¸¥¸¢›¸¢š¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏž¸¸¨¸ú œÏ˜¸¸¸¸½¿ ˆÅú ,¸¨¸©¡¸ˆÅ÷¸¸ ˆÅ¸½ £½‰¸¸¿¢ˆÅ÷¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ — ƒ¬¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ Ÿ¸»¥¸ž¸»÷¸ ¢¬¸Ö¸¿÷¸ ¡¸¡¸ í¾ ¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ¬¸º™¦Ÿ¸œ¸»¨¸ÄˆÅ ,œ¸›¸½ ¸¥¸¢›¸¢š¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ का प्रबंधन करना चाहिए तथा पर्याप्त चलनिधि बनाए रखना चाहिए ताकि तमाम प्रकार की संकटकालीन स्थितियों का सामना किया जा सके । चलनिधि किसी दबाव के प्रति किसी बैंक के लचीलेपन का एक महत्वपूर्ण तत्व होती है इसलिए किसी भी बैंक को अमारग्रस्त, उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियाँ रखते हुए सुदृढ़ चलनिधि स्थिति बनाए रखना चाहिए ताकि चलनिधि संकट की किसी भी स्थिति से रक्षा की जा सके ।

चलनिधि जोखिम के प्रबंधन का एक मुख्य तत्व चलनिधि जोखिम के मजबूत नियंत्रण की आवश्यकता है जिसमें बोर्ड द्वारा चलनिधि जोखिम की सहनीयता का निर्धारण शामिल है । जोखिम सहनीयता की जानकारी समूचे बैंक को होनी चाहिए तथा उस रणनीति एवं नीतियों में उसे प्रतिबिंबित होना चाहिए जो उच्च प्रबंध तंत्र चलनिधि जोखिम का प्रबंधन करने के लिए बनाते हैं । चलनिधि जोखिम प्रबंधन का एक अन्य पहलू यह भी है कि बैंकों को चलनिधि की लागत, लाभ तथा उसके जोखिमों का मूल्य निर्धारण समुचित रीति से आंतरिक मूल्य निर्धारण, कार्यनिष्पादन मापन तथा समस्त व्यावसायिक गतिविधियों की नये उत्पाद की अनुमोदन प्रक्रिया से जोड़कर करना चाहिए ।

किसी भी बैंक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह चलनिधि जोखिमों की बखूबी पहचान, उसका मापन और नियंत्रण विशेष रूप से जटिल उत्पादों तथा आकस्मिक प्रतिबद्धताओं (संविदागत तथा गैर-संविदागत दोनों) के संदर्भ में कर सके । इस प्रक्रिया में बैंक की यह क्षमता भी शामिल होनी चाहिए कि वह विभिन्न समयावधियों में आस्तियों, देयताओं तथा तुलनपत्रेतर मदों से उत्पन्न नकदी प्रवाह योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ा सके और वह निधीयन की समयावधि तथा स्रोत दोनों को बहुआयामी बना सके । किसी बैंक को समयपूर्व चेतावनी सूचकों का इस्तेमाल अपनी चलनिधि स्थिति अथवा निधीयन संबंधी आवश्यकताओं के मामले में जोखिम के बढ़ने अथवा कमजोरियों के उभार का पता लगाने में करना चाहिए । उसमें यह क्षमता होनी चाहिए कि वह अपने संगठन के ढांचे पर विचार किए बिना विधिक हस्तियों, व्यवसाय लाइनों तथा मुद्राओं के भीतर और उनके आर-पार चलनिधि जोखिम एक्सपोजर तथा निधीयन जरूरतों को चलनिधि

की अंतरणीयता के लिए किसी भी प्रकार की वैधानिक, विनियामक तथा परिचालनात्मक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए नियंत्रित कर सके ।

आंतर दिवसीय चलनिधि के प्रभावी प्रबंधन में किसी बैंक की असफलता अपेक्षित समय पर उसके द्वारा भुगतान संबंधी दायित्वों को पूरा न कर पाने का कारण बन सकती है जिसके फलस्वरूप चलनिधि का बिखराव हो सकता है जिसका प्रभाव क्रमशः कई प्रणालियों और संस्थाओं पर पड़ सकता है । इस प्रकार, किसी बैंक द्वारा आंतर दिवसीय चलनिधि जोखिमों के प्रबंधन को चलनिधि जोखिम प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाना चाहिए । बैंक को अपनी संपार्श्विक स्थितियों का भी सक्रिय रूप से प्रबंधन करना चाहिए तथा अपनी सभी संपार्श्विक स्थितियों की गणना करने में समर्थ होना चाहिए ।

हालांकि बैंक "सामान्य" परिस्थितियों में स्वाभाविक रूप से चलनिधि का प्रबंधन करते हैं लेकिन उन्हें "संकटकालीन" परिस्थितियों में भी चलनिधि का प्रबंधन करने के लिए तैयार रहना चाहिए । किसी बैंक को संभावित चलनिधि के दबावों के प्रति अपने एक्सपोज़र की पहचान करने तथा उसका परिमाण जानने के लिए नियमित रूप से दबाव परीक्षण अथवा परिदृश्य विश्लेषण करना चाहिए जिसमें संस्थाओं के नकदी प्रवाह, चलनिधि स्थितियों, लाभप्रदता तथा शोधक्षमता पर संभावित प्रभावों का विश्लेषण किया गया हो । प्रबंध तंत्र द्वारा इन दबाव परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की जानी चाहिए और उन्हें इस चर्चा के आधार पर बैंक के एक्सपोज़र को सीमित करने के लिए उपचारात्मक अथवा न्यूनकारी कार्रवाई करने के मानदंड तय करना चाहिए, चलनिधि की अतिरिक्त व्यवस्था (कूशन) करनी चाहिए और अपनी चलनिधि प्रोफाइल को अपनी जोखिम सहनशीलता के हिसाब से व्यवस्थित करना चाहिए । दबाव परीक्षणों के परिणाम बैंक की आकस्मिक निधीयन आयोजना के निर्माण में मुख्य भूमिका भी निभाते हैं जिसमें दबाव परीक्षणों की पूरी श्रृंखला का प्रबंधन करने की नीतियों की रूपरेखा होनी चाहिए तथा आपात स्थितियों में चलनिधि की कमी से निपटने की स्पष्ट रणनीति निर्धारित होनी चाहिए ।

चूंकि सार्वजनिक प्रकटीकरण से बाज़ार की निश्चितता में वृद्धि होती है, पारदर्शिता में सुधार होता है, मूल्य-निर्धारण सुविधाजनक हो जाता है और इससे बाज़ार का अनुशासन मजबूत होता है इसलिए बैंकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे नियमित रूप से सार्वजनिक तौर पर सूचना का प्रकटीकरण करें । इससे बाज़ार के सहभागियों को अपने चलनिधि जोखिम प्रबंधन ढांचे तथा चलनिधि स्थिति की सुदृढ़ता के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेने में सहूलियत होगी ।

13.8 तुलन पत्रेतर एक्सपोज़र तथा प्रतिभूतिकरण जोखिम

पिछले कई वर्षों में बैंकों द्वारा प्रतिभूतिकरण के प्रयोग में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। इसका इस्तेमाल निधीयन के वैकल्पिक स्रोत तथा निवेशकों को अंतरित करने वाली व्यवस्था के रूप में किया गया है । हालांकि प्रतिभूतिकरण के साथ जुड़े जोखिम बैंकों के लिए नए नहीं हैं लेकिन हाल ही के वित्तीय उथल-पुथल ने ऋण जोखिम, संकेंद्रण जोखिम, बाज़ार जोखिम, चलनिधि जोखिम, विधिक जोखिम तथा प्रतिष्ठा जोखिम के अप्रत्याशित पहलुओं को प्रमुखता से उजागार कर दिया है जिसका पर्याप्त समाधान ढूंढ़ने में बैंक नाकाम रहे । उदाहरणार्थ जिन बैंकों पर प्रायोजित प्रतिभूतिकरण ढांचों का समर्थन करने के लिए संविदागत बाध्यता थी उनमें से कई बैंक अपने प्रतिष्ठा जोखिम तथा पूंजी बाजारों में अपनी भावी पहुंच से जुड़ी चिंताओं के कारण उन ढांचों की अनुमति देने के प्रति अनिच्छुक थे । इन ढांचों के समर्थन से बैंक अतिरिक्त तथा

अप्रत्याशित ऋण, बाजार तथा चलनिधि जोखिम के दायरे में आ गए क्योंकि वे इन ढांचों के साथ बैंकों के तुलन पत्रों पर ऐसी आस्तियां चली आईं जिनका काफी दबाव उनके वित्तीय प्रोफाइल और पूंजी अनुपात पर पड़ा ।

वित्तीय संकट के दौरान बैंकों द्वारा प्रतिभूतिकरण के जोखिम प्रबंधन तथा उनके तुलन पत्रेतर एक्सपोज़रों में कमियों के कारण बड़े पैमाने पर अप्रत्याशित हानियां हुईं । इन जोखिमों को कम करने के लिए बैंकों के तुलन पत्र तथा तुलन पत्रेतर क्रियाकलापों जैसे उत्पाद अनुमोदन, जोखिम संकेंद्रण सीमाओं तथा बाजार, ऋण और परिचालनगत जोखिमों के आकलन को उनके जोखिम प्रबंधन अनुशासन में शामिल किया जाना चाहिए ।

प्रतिभूतिकरण संबंधी गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले ढेर सारे जोखिमों के मद्देनज़र जिनकी संख्या में प्रतिभूतिकरण तकनीकों तथा लिखतों में तीव्र नवोन्मेषीकरण के द्वारा वृद्धि हो सकती है, स्तंभ 1 के अंतर्गत न्यूनतम पूंजीगत अपेक्षाएं प्रायः अपर्याप्त होती हैं । प्रतिभूतिकरण से उत्पन्न होने वाले विशेष रूप से स्तंभ 1 के अंतर्गत पूरी तरह से शामिल नहीं किए गए सभी जोखिमों पर चर्चा बैंक के आईसीएएपी में की जानी चाहिए । इन जोखिमों में निम्नलिखित शामिल हैं :

- प्रत्येक एक्सपोज़र का ऋण, बाजार, चलनिधि तथा प्रतिष्ठा जोखिम;
- विचाराधीन प्रतिभूतिकृत एक्सपोज़रों पर संभावित अदेयताएं और हानियां;
- विशेष प्रयोजन से स्थापित संस्थाओं को ऋण अथवा चलनिधि सुविधाओं से होने वाले एक्सपोज़र;
- एकाधिकार तथा अन्य तीसरे पक्षकारों द्वारा प्रदत्त गारंटियों से एक्सपोज़र ।

प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़रों को बैंक की प्रबंध सूचना प्रणाली (एमआईएस) के अंतर्गत शामिल किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उच्च प्रबंध तंत्र चलनिधि, आय, जोखिम संकेंद्रण तथा पूंजी के लिए इस प्रकार के एक्सपोज़रों के निहित प्रभावों को समझता है । इससे भी महत्वपूर्ण है कि बैंकों के पास बाजार के उपलब्ध आंकड़ों सहित प्रतिभूतिकरण लेनदेन संबंधी जानकारी और प्रतिभूतिकरण न्यासी अथवा सेवाप्रदाता से अद्यतन कार्यनिष्पादन आंकड़े समय से प्राप्त करने की आवश्यक प्रणालियां मौजूद होनी चाहिए ।

13.9 प्रतिष्ठा जोखिम तथा अस्पष्ट सहायता

प्रतिष्ठा जोखिम को एक ऐसे जोखिम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो ग्राहकों, प्रतिपक्षकारों, शेयरधारकों, निवेशकों, ऋण धारकों, बाज़ार विश्लेषकों, अन्य संबंधित पक्षकारों अथवा विनियामकों की नकारात्मक आशंका से उत्पन्न होता है और जो बैंक की मौजूदा व्यावसायिक संबंधों को बनाए रखने अथवा नए व्यावसायिक संबंध स्थापित करने तथा निधियन के स्रोतों (उदाहरण के लिए अंतर बैंक अथवा प्रतिभूतिकरण बाजारों के माध्यम से) तक अनवरत संपर्क बनाए रखने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है । इसके अलावा यह जोखिम समूचे संगठन में मौजूद होता है और प्रतिष्ठा जोखिम का एक्सपोज़र मूलतः बैंकों की आंतरिक जोखिम प्रबंधन œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¤¸ÿ¢ˆ¿ÅŠ¸ ¬¸½ □¸º”õ½

¥¸½›¸™½›¸ œ¸£ ¤¸¸í£ú œÏž¸¸¨¸¸½¿ ¬¸½ ¢›¸œ¸’›¸½ ˆÅú œÏ¤¸¿š¸÷¸¿°¸ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ ˆÅú œ¸¡¸¸Äœ÷¸÷¸¸ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ‡ˆÅ ˆÅ¸¡¸Ä í¾ —

œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ ‚¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ˆÅ¸ œÏ¸¨¸š¸¸›¸ ˆÅ£›¸¸ œ¸”õ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ¢□¸¬¸¬¸½ †µ¸¸, □¸¥¸¢›¸¢š¸, ¤¸¸□¸¸£ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸¢š¸ˆÅ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œ¸¾™¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ - ¢□¸›¸ˆÅ¸ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ‚¸¡¸‚ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ ¢¬˜¸¢÷¸ œ¸£ ¬¸¢ŸŸ¸¢¥¸÷¸ ³œ¸ ¬¸½ ›¸ˆÅ¸£¸÷¸Ÿ¸ˆÅ œÏž¸¸¨¸ œ¸”õ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ¤¸ÿˆÅ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å ¢□¸›¸ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ è¸¸½÷¸¸½¿ ¬¸½ ³-¤¸-³Å í¸½ „¬¸½ „›¸ˆÅú œ¸í□¸¸›¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸£¸½¤¸¸£ú ®¸½°¸, ™½¡¸÷¸¸‡¿, ¬¸¿¤¸Ö œ¸¢£□¸¸¥¸›¸, ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ ¨¸½ ¤¸¸□¸¸£ ©¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸Ÿ¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ — ›¸¡¸½ □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¤¸ÿˆÅ ˆÅú □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸ œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ©¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ‚ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú ÷¸˜¸¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ‚œ¸¸÷¸ˆÅ¥¸ú› ¡¸¸½□¸›¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ ¤¸¸ˆÅ¡¸™¸ „›¸ˆ½Å ¬¸Ÿ¸¸š¸¸›¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ —

¨¸«¸Ä 2007 ˆÅú ‚¢˜¸ÄˆÅ Ÿ¸¿™ú ¬¸½ œ¸í¥¸½ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ ¤¸ÿˆÅ ‚œ¸›¸ú ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸‚¸½¿ ¬¸½ □¸º”õ½ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅ¸½ œ¸í□¸¸›¸ ›¸íì ¬¸ˆ½Å ˜¸½ — ¬¸¿ˆÅ’ˆÅ¸¥¸ú› ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ˆºÅŽ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸½ œÏ¡¸¸½¢□¸÷¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä› ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ¤¸¸š¡¸÷¸¸‚¸½¿ ˆ½Å ™¸¡¸£½ ¬¸½ ž¸ú ¤¸¸í£ □¸¸›¸¸ œ¸”õ¸ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅ¸½ ¤¸□õ¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ ‡Æ¬œ¸¸½□¸ö£¸½¿ ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸½ „› Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ ƒ¬ ¤¸¸÷¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢ˆÅ‡ □¸¸÷¸½ íÿ ¢ˆÅ Æ¡¸¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ □¸¿□¸½ ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ‚œ¸½®¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸»£¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ ‚¾£ Æ¡¸¸ ‚¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¡¸¸½Š¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œÏ¢÷¸ˆ»Å¥¸ œÏž¸¸¨¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ —

„™¸í£µ¸˜¸Ä, œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ‡¨¸ú¬¸úœ¸ú Ÿ¸¸Š¸Ä ÷¸˜¸¸ ‡¬¸‚ƒ¨¸ú □¸¾¬¸ú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ¬¸¿£□¸›¸¸‚¸½¿ ˆ½Å ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×£¸ œÏ¸¡¸¸½□¸›¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ›¡¸¸¬¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¢ˆÅ‡ Š¸‡ †µ¸ ‡Æ¬œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú ¢¤¸ÇÅú ¬¸½ „÷œ¸››¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ¡¸í □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ‚¢¬÷¸¸˜¸¸¸ ¢›¸¢š¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸½ □¸º¤¸ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¢¥¸‰¸÷¸ ¬¨¸¸¢š¸ˆ¼Å÷¸¸˜¸¨¸¸ œÏ¸¡¸¸½¢□¸÷¸ ¬¸¿¬˜¸¸¸½¿ ×£¸ □¸¸£ú ¢ˆÅ‡ □¸¸÷¸½ íÿ ˜¸¨¸¸ œÏ¸¡¸¸½□¸¸ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ŠÏ¸íˆÅ¸½¿ ˆ½ ¤¸ú□¸ ¢¨¸÷¸¢£÷¸ ¢ˆÅ‡ □¸¸÷¸½ íÿ, „÷œ¸››¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ‡½¬¸ú ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ □¸¤¸ ¢¥¸‰¸÷¸¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸íú-¬¸íú Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¸½ ˜¸¨¸¸ Ÿ¸º‰¡¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ ³œ¸ ¬¸½ œÏˆÅ’ ›¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¸½, œÏ¸¡¸¸½□¸ˆÅ ‚œ¸›¸½ ŠÏ¸íˆÅ¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ˆºÅŽ ¢□¸¸ŸŸ¸½™¸£ú Ÿ¸í¬¸»¬¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ ˜¸¨¸¸ ¢ˆÅ¬¸ú œÏˆÅ¸£ ˆÅú í¸¢›¸ ˆÅú ž¸£œ¸¸ƒÄ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¢˜¸ÄˆÅ ³Åœ¸ ¬¸½ ¤¸¸š¡¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ „¬¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ž¸ú „÷œ¸››¸ í¸½÷¸¸ í¾ □¸¤¸ ˆÅ¸½ƒÄ ¤¸ÿˆÅ Ÿ¸ºÏ ¤¸¸{¸£ Ÿ¡¸»□¸º‚¥¸ œ¸¿€”, ƒ›¸-í¸„¬¸ í½□¸ œ¸¿€” ÷¸˜¸¸ ¬˜¸¸¨¸£ ¬¸¿œ¸™¸ ¢›¸¨¸½© ›¡¸¸¬¸¸½¿ □¸¾¬¸½

¢ÇÅ¡¸¸ˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ˆÅ¸½ œÏ¸¡¸¸½¢□¸÷¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾ — ‡½¬¸½ Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ ¢›¸¸¨¸½©¸ˆÅ¸½¿ ×¸£¸ š¸¸¢£÷¸ ©¸½¡¸£¸½¿/¡¸»¢›¸¸'¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ ˆÅ¸½ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ™½›¸½ ˆÅ¸ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ, ž¸¥¸½ íú „›¸ˆ½Å ¢¥¸‡ „Æ÷¸ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ™½›¸¸ ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ³Åœ¸ ¬¸½ ‚œ¸½¢®¸÷¸ ›¸ í¸½ —

¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ¤¸¸□¸¸£ ¬¸¿ˆÅ' ¬¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×¸£¸ ‚œ¸›¸ú ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ¤¸¸š¸¡¸÷¸¸¸,¸½¿ ˆ½Å ¤¸¸í£ □¸¸ˆÅ£ ¢¨¸Î¸ú¡¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ¢™‡ □¸¸›¸½ ˆ½Å ˆÅƒÄ „™¸í£µ¸ ¬¸¸Ÿ¸›¸½ ‚‡ íÿ — ‚œ¸›¸ú œÏ¢÷¸«"¸ ¤¸□¸¸‡ £‰¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆºÅŽ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ›¸½ Ÿ¸í¬¸»¬ ¢ˆÅ¡¸¸ ¢ˆÅ ‚œ¸›¸½ ‡¬¸¸ƒÄ¨¸ú ˆÅ¸½ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¨¸½ ¤¸¸š¸¡¸ ˜¸½ □¸¸½ „›¸ˆÅú ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ¤¸¸š¸¡¸÷¸¸¸,¸½¿ ˆÅú ¬¸úŸ¸¸ ¬¸½ ¤¸¸í£ ˜¸¸ — ‚›¡¸ Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ›¸½ ¤¸¸□¸¸£ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ¤¸›¸¸‡ £‰¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¨¸¡¸¿ ‚œ¸›¸½ ×¸£¸ œÏ¸¡¸¸½¢□¸÷¸ ¬¸¿¬˜¸¸,¸½¿ ×¸£¸ □¸¸£ú ‡¤¸ú¬¸úœ¸ú ‰¸£ú™¸ ˜¸¸ — ƒ¬¸ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³œ¸ ƒ›¸ ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ‚¢÷¸¢£Æ÷¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ †µ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¥¸½›¸¸ œ¸"õ¸ ‚¸¾£ „›¸ˆ½Å œ¸»¿□¸ú ‚›¸ºœ¸¸÷¸¸½¿ œ¸£ ž¸ú ™¤¸¸¨¸ œ¸"õ¸ —

œÏ¢÷¸«"¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ™½¡¸÷¸¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ ž¸ú œÏž¸¸¢¨¸÷¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ Æ¡¸¸½¿¢ˆÅ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅ¸ ž¸£¸½¬¸¸ ‚¸¾£ ‚œ¸›¸½ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ˆÅ¸½ ¢›¸¢š¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ®¸Ÿ¸÷¸¸ „¬¸ˆÅú œÏ¢÷¸«"¸ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ ‹¸¢›¸«"÷¸¸ ¬¸½ □¸º"õú í¾ — „™¸í£µ¸˜¸Ä ˆÅ¸½ƒÄ ¤¸ÿˆÅ ‚œ¸›¸ú œÏ¢÷¸«"¸ ˆÅ¸½ ›¸ºˆÅ¬¸¸› ¬¸½ ¤¸□¸¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚œ¸›¸ú ™½¡¸÷¸¸¸,¸½¿ Ÿ¸½¿ ˆÅ'¸¾÷¸ú ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾,¡¸Ô¸¢œ¸ ƒ¬¸¬¸½ „¬¸ˆ½Å □¸¥¸¢›¸¢š¸ œÏ½œ¸€ƒ¥¸ œ¸£ œÏ¢÷¸ˆ»Å¥¸ œÏž¸¸¨¸ œ¸"õ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ¡¸í ¢¨¸©¸½«¸ ³œ¸ ¬¸½ ¢Ÿ¸ª/Š¸¸¾µ¸ †µ¸ □¸¾¬¸ú ™½¡¸÷¸¸¸,¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸½ Ÿ¸½¿ ¬¸íú í¾ □¸¸½ ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»¿□¸ú ˆ½Å ‹¸'ˆÅ íÿ — ‡½¬¸½ Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅú œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ ¢¬˜¸¢÷¸ ˆÅ¸½ í¸¢›¸ œ¸íº¿□¸›¸½ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ í¾ —

¤¸ÿˆÅ œÏ¤¸¿š¸ ÷¸¿°¸ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ›¸‡ ¤¸¸□¸¸£¸½¿, „÷œ¸¸™¸½¿ ‚˜¸¨¸¸ ¢ÇÅ¡¸¸ˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ˆ½Å ›¸‡ ®¸½°¸¸½¿ Ÿ¸½¿ œÏ¨¸½©¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ œÏ¢÷¸«"¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å è¸¸½÷¸¸½¿ ˆÅ¸ œ¸÷¸¸ ¥¸Š¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸ú ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸¿ Ÿ¸¸¾□¸»™ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¢÷¸¢£Æ÷¸, ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅú ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸¸,¸½¿ ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ œÏ¢÷¸«"¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ š¸¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ œÏ¤¸¿š¸ ÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ œÏ¢÷¸«"¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ™»¬¸£½ □¸£µ¸ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸¸½¿ ˆÅú "¸½¬¸ ¬¸Ÿ¸□¸ í¸½ —

¡¸¢™ ‡ˆÅ ¤¸¸£ ˆÅ¸½ƒÄ ¤¸ÿˆÅÅ œÏ¢÷¸«"¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ¬¸½ œ¸¾™¸ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú œ¸í□¸¸›¸ ˆÅ£ ¥¸½÷¸¸ í¾ ÷¸¸½ „¬¸½ œÏ¢÷¸ˆ»Å¥¸ ¤¸¸□¸¸£ œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ‚œ¸›¸½ ×¸£¸ ™ú □¸¸›¸½¨¸¸¥¸ú ¬¸í¸¡¸÷¸¸ (œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸¸½¿ ˆ½Å ‚¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ ¬¸¢í÷¸) ‚˜¸¨¸¸ í¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆÅú ›¸¸œ¸□¸¸½‰¸ ˆÅ£ ¥¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ¢¨¸©¸½«¸ ³Åœ¸ ¬¸½ œÏ¢÷¸«"¸ ˆÅ¸½ ®¸¢÷¸ ¬¸½ ¤¸□¸¸›¸½ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅ¸ ž¸£¸½¬¸¸ ¤¸›¸¸‡ £‰¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ „›¸ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ œÏˆÅ£ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ („™¸í£µ¸˜¸Ä, †µ¸, □¸¥¸¢›¸¢š¸ ¤¸¸□¸¸£ ‚˜¸¨¸¸

œ¸¢£□¸¸¥¸›¸Š¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸), ¢□¸›¸¬¸½ ¨¸½ ²Å-¤¸-³Å íÿ, ˆ½Å ³Åœ¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸½ ¡¸˜¸¸¬¸¿ž¸¨¸ ¬¸’úˆÅ □¿Š¸ ¬¸½ Ÿ¸¸œ¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸¢š¸¡¸¸¿ ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸½ ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸¸½¿ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸¢£´©¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ©¸¢¸Ÿ¸¥¸ ˆÅ£ˆ½Å ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — „™¸í£µ¸¸˜¸Ä, ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å †µ¸, ¤¸¸□¸¸£ ÷¸˜¸¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸¸½¿ œ¸£ œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ Š¸¾£-¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅ¸½ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ¢¨¸¢š¸¡¸¸½ Ÿ¸½¿ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸ Ÿ¸½¿ ™©¸¸Ä¡¸½ Š¸¡¸½ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅú ¨¸¸¬¸÷¸¢¨¸ˆÅ £¸¢©¸ ¤¸›¸¸Ÿ¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ š¸¸¢£÷¸ ,¢š¸ˆÅ÷¸Ÿ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅú £¸¢©¸ ,˜¸¸Ä÷¸Ã ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ £¸¢©¸ ˆÅú ÷¸º¥¸›¸¸ ž¸ú ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ —

¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸ ˆ½Å ,¸¢¬÷¸ œ¸®¸ Ÿ¸½¿ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ ¤¸□õ¸½÷¸£ú ÷¸˜¸¸ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ œ¸£ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œÏ¢÷¸¤¸¿š¸¸½¿ ™¸½›¸¸½¿ ˆÅ¸½ š¸¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸ˆÅ£ ,œ¸›¸ú ¬¸Ÿ¸ŠÏ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ¢¬˜¸¢÷¸ œ¸£ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸¸½¿ œ¸£ ¢¨¸©¸½«¸ š¸¡¸¸›¸ ™½›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ Å œÏ¢÷¸«“¸ ˆÅú ®¸¢÷¸ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³œ¸ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ œÏ¢÷¸œ¸®¸ˆÅ¸£¸½¿ ˆÅ¸ ž¸£¸½¬¸¸ ›¸ ’»’½ —

Š¸¸£¿¢’¡¸¸½¿ □¸¾¬¸½ ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ †µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å ¢¨¸œ¸£ú÷¸ ,¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ‡ˆÅ ¬¸»®Ÿ¸ œÏˆÅ¸£ ˆÅ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ í¾ — ,¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ×¸£¸ ¢ˆÅ¬¸ú ¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ™¸¢¡¸÷¨¸ ˆÅú ¬¸úŸ¸¸ ¬¸½ ,¸Š¸½ □¸¸ˆÅ£ ¢ˆÅ¬¸ú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅ¸½ ¢¤¸ÇÅú ˆ½Å ¤¸¸™ ™ú □¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸ú ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ¬¸½ „÷œ¸›¸›¸ í¸½÷¸ú í¾ — ,¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¢¨¸©¸½«¸ œÏ¡¸¸½□¸›¸ ¬¸¿¬¬¸¸ (‡¬¸œ¸ú¨¸ú) ˆÅú ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ ˜¸¨¸¸ ž¸¸¨¸ú ™½¡¸÷¸¸,¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ œÏ¨¸÷¸Äˆ ×¸£¸ ¢™‡ Š¸‡ ¢ˆÅ¬¸ú □¸ºˆÅ¸¾÷¸ú ,¸©¨¸¸¬¸›¸ œ¸°¸ (‡¥¸¬¸ú) ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆÅú Š¸¾£-¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ¬¸½ ¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ í¸¢›¸ ˆÅ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ í¸½÷¸¸ í¾ □¸¾¬¸½ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ˆÅú ,¸š¸¸£ ,¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ ˆÅú †µ¸ Š¸ºµ¸¨¸î¸ Ÿ¸½¿ ¢Š¸£¸¨¸’ ¬¸½ „÷œ¸›¸›¸ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸ú í¸¢›¸ —

,¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å Ÿ¸¸š¡¸Ÿ¸ ¬¸½ ˆÅ¸½ƒÄ ¤¸ÿˆÅ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅ¸½ ¡¸í ¬¸¿ˆ½Å÷¸ ž¸½□¸÷¸¸ í¾ ¢ˆÅ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆ¼Å÷¸ ,¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ,¿÷¸¢›¸¢í÷¸ ¬¸ž¸ú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ,ž¸ú ž¸ú ¬¸¿Š¸“›¸ ×¸£¸ š¸¸¢£÷¸ íÿ ,¸¾£ „›¸½¿ ¬˜¸¸›¸¸¿÷¸¢£÷¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ — □¸»¿¢ˆÅ ,¿÷¸¢›¸¢í÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ˆ½Å ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œÏ¨¸¸š¸¸›¸ ¬¸½ „÷œ¸›¸›¸ í¸½›¸½¨¸¸¥¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸÷¸¿ž¸ 1 ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ›¸íì í¸½÷¸¸ ,÷¸À ƒ¬¸½ ¬¸÷¸¿ž¸ 2 œÏ¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ ˆ½Å ‡ˆÅ ¢í¬¬¸½ ˆ½Å ³œ¸ Ÿ¸½¿ Ÿ¸¸›¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¢÷¸¢£Æ÷¸ ›¸‡ „÷œ¸¸™¸½¿ ,˜¸¨¸¸ £µ¸›¸ú¢÷¸ˆÅ œ¸í¥¸ ˆÅ™¢Ÿ¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ,›¸ºŸ¸¸½™›¸ ˆÅú œÏ¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ,¨¡¸Æ÷¸ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ˆ½Å ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œÏ¨¸¸š¸¸›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ,¸¾£ ¬¸¿¤¸¿š¸¢š¸÷¸ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å ,ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú Ÿ¸½¿ „¬¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ —

13.10 ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ¸¸¾£ œÏ¤¸¿š¸›¸

¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ (ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ×¸£ ¸›¸ºŸ¸÷¸) ¬¸¿£¢¸÷¸ „÷œ¸¸™¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢›¸¨¸½©¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¸¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸ ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ˆÅ£›¸¸ ¸¸¢í‡ ¸¸¾£ „›í½¿ Ç½Å¢"' £½¢'¿Š¸ ‡¸½¿¢¬¸¡¸¸½¿ ×¸£¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅ¸½ ™ú Š¸¡¸ú Ç½Å¢"' £½¢'¿Š¸¸½¿ œ¸£ íú ¢›¸ž¸Ä£ ›¸íì £í›¸¸ ¸¸¢í‡ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ¬¸¸½÷¸ £í›¸¸ ¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¤¸¸à¸ £½¢'¿Š¸ Ç½Å¢"' ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ „œ¸¡¸¸½Š¸ú œÏ¬˜¸¸›¸ ¢¤¸¿™º í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ ¥¸½¢ˆÅ›¸ ¨¸í ¸¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ œ¸»£ú ÷¸£í ¸¸¾£ "úˆÅ ¬¸½ ¬¸Ÿ¸¸›¸½ ˆÅ¸ ¢¨¸ˆÅ¥œ¸ ›¸íì í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ ¢¨¸©¸½«¸ ³œ¸ ¬¸½ ÷¸¤¸ ¸¤¸ ˆºÅŽ ¸¢¬÷¸ ˆÅú £½¢'¿Š¸¸½¿ ˆÅ¸ Ž¸½'¸ ƒ¢÷¸í¸¬¸ í¸½ ¸˜¸¨¸¸ „›¸Ÿ¸½¿ ¸¢¬˜¸£÷¸¸ ™½‰¸ú Š¸¡¸ú í¸½ — ƒ¬¸ˆ½Å ¸¥¸¨¸¸, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ¸¢š¸ŠÏíµ¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¸¸¾£ ¬¸÷¸÷¸ ¸š¸¸£ œ¸£ ž¸ú œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ˆÅ¸ Ç½Å¢"' ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ˆÅ£÷¸½ £í›¸¸ ¸¸¢í‡ — ¬¸ž¸ú ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸ ¢¨¸©¨¸¬¸›¸ú¡¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¸¸¨©¡¸ˆÅ Ÿ¸¸°¸¸÷¸Ÿ¸ˆÅ „œ¸ˆÅ£µ¸, Ÿ¸»¥¡¸›¸ ˆ½Å Ÿ¸¸Á"¥¸ ÷¸˜¸¸ œ¸¡¸¸Äœ¸÷¸ ³œ¸ ¬¸½ „››¸÷¸ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ž¸ú í¸½›¸½ ¸¸¢í‡ —

œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸º¢›¸¢©¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ ¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¨¸½ ¢ˆÅ¬¸ú ž¸ú œÏˆÅ£ ˆ½Å ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÏµ¸¸½¿ ¬¸¢í÷¸) ¬¸¿£¢¸÷¸ Ç½Å¢"' ¥¸½›¸™½›¸ ˆ½Å ¸¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¸¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú †µ¸-Š¸ºµ¸¨¸î¸¸ ÷¸˜¸¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¢¨¸©¸½«¸÷¸¸¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸»£ú ÷¸£í ¬¸Ÿ¸¸÷¸½ íÿ — ƒ¬¸ˆ½Å ¸¢÷¸¢£Æ÷¸, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œ¸¢£œ¸Æ¨¸÷¸¸ ¬¸¿¤¸¿¢š¸ú ¸¬¸¿÷¸º¥¸› ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¸¸£ú ˆÅú Š¸¡¸ú ™½¡¸÷¸¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ †µ¸ ¥¸½›¸™½›¸ Ÿ¸½¿ ¸¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú œ¸¢£œ¸Æ¨¸÷¸¸ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸ú ¸¸¢í‡ —

¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×¸£¸ ¥¸½›¸™½›¸ ˆ½Å ¬¸÷¸£ œ¸£ ¸œ¸›¸½ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢›¸¢÷¸ ÷¸˜¸¸ ¸œ¸›¸½ œÏ÷¸¡¸½ˆÅ ¨¡¸¨¸¬¸¡¸ ®¸½°¸ ˆ½Å ž¸ú÷¸£ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸¢ž¸››¸ ¨¡¸¨¸¬¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸÷¸£ œ¸£ †µ¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅú œ¸"õ÷¸¸¥¸ ˆÅú ¸¸›¸ú ¸¸¢í‡ — „›í½¿ ˆºÅ¥¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ¸¸ˆÅ¥¸› ˆ½Å ¢¥¸‡ ž¸£¸½¬¸½Ÿ¸¿™ „œ¸¸¡¸ ˆÅ£›¸½ ¸¸¢í‡ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å ›¸¸Ÿ¸, „÷œ¸¸™¸ ¸˜¸¨¸¸ ®¸½°¸ ¸¾¬¸½ ¬¸ž¸ú Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ¬¸¿ˆ½¿ÅÏµ¸¸½¿ ˆÅ¸ œ¸÷¸¸ ¥¸Š¸¸›¸¸ ¸¸¢í‡ ¸¸¾£ „¬¸ˆÅú ¬¸»¸›¸¸ ¬¸¿œ¸»µ¸Ä ¬¸¿¬¸¸ ˆÅú ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸¿ˆ½¿ÅÏµ¸ œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ™½›¸ú ¸¸¢í‡ ¸¸½, ¢ˆÅ¬¸ú ¢¨¸©¸½«¸ ¤¸¸š¡¸÷¸¸š¸£ú ˆÅ¸½ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ Ÿ¸¬¸¥¸›¸, †µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆÅ¸ œ¸÷¸¸ ¥¸Š¸¸÷¸ú íÿ —

¤¸ÿˆÅ¸½¿ ×¸£¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸ ¬¨¸-Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅú ¬¸¿£¸¸›¸ ˆÅú ¨¡¸œ¸¸ˆÅ ¬¸Ÿ¸¸ œ¸£ ¸š¸¸¢£÷¸ í¸½›¸ú ¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ¸¿÷¸Š¸Ä÷¸ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ ÷¸£í ˆ½Å ‰¸÷¸£½ ˆ½Å ¤¸¸'›¸¸½¿, †µ¸ œÏ¢Çˆ¡¸¸ ˆ½Å ¸íŸ¸ ¸£µ¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¸›¸ ¢¨¸¢š¸ˆÅ „œ¸¤¸¿š¸¸½¿ ˆÅú œ¸í¸¸›¸ ˆÅú ¸¸›¸ú ¸¸¢í‡ ¸¸½ „›¸ˆ½Å ÷¸ºœ¥¸›¸œ¸° ÷¸˜¸¸ ÷¸ºœ¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£

‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸¡¸Ä-¢›¸«œ¸¸™›¸ ˆÅ¸½ œÏž¸¸¢¨¸÷¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ ,¸¾£ ‰¸÷¸£½ ˆ½Å ƒ›¸ ¬¸¿ˆ½Å÷¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ „œ¸¤¸¿š¸¸½¿ ˆÅ¸½ „›¸ˆ½Å ¢›¸š¸ú¡¸›¸/□¸¥¸¢›¸¢š¸, †µ¸ ÷¸˜¸¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ ‡ˆÅúˆ¼Å÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¤¸½¿ˆÅ¸½¿ ˆÅú □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ œ¸£ †µ¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ¬¸½ □¸º”õ½ ‹¸’›¸¸ÇÅŸ¸ ,˜¸¨¸¸ ‰¸÷¸£½ ˆ½Å ¬¸¿ˆ½Å÷¸¸½¿ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ œ¸£ ž¸ú ¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ —

¢¨¸©¨¸ ¬÷¸£ œ¸£ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ›¸½ ¡¸¸ ÷¸¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸÷¸£ ,¸ÂˆÅ¸ ¡¸¸ „›í½¿ ƒ¬¸ˆÅ¸ œ¸»¨¸¸Äž¸¸¬¸ ž¸ú ›¸íì ˜¸¸ ¢ˆÅ ¬¸Ÿ¸»□¸½ ¤¸¸□¸¸£ Ÿ¸½¿ œ¸¾€¥¸ú „˜¸¥¸-œ¸º˜¸¥¸ „›¸ˆ½Å œÏ¬÷¸¸¢¨¸÷¸ ,˜¸¨¸¸ ž¸¸¨¸ú ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ˆÅ¸½ £¸½ˆÅ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ ,¸¾£ ¨¸½ □¸¥¸¢›¸¢š¸, ,¸¡¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸¸Äœ÷¸÷¸¸ œ¸£ „¬¸¬¸½ œ¸”õ›¸½ ¨¸¸¥¸½ œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ž¸ú œ¸»¨¸¸Ä›¸ºŸ¸¸›¸ ›¸íì ¥¸Š¸¸ ¬¸ˆ½Å —

¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ,œ¸›¸ú □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸,¸½¿ ˆ½Å ‡ˆÅ ¢í¬¬¸½ ˆ½Å ³œ¸ Ÿ¸½¿ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ‡ ¢¤¸›¸¸ œÏ¬÷¸¸¢¨¸÷¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ÷¸˜¸¸ ž¸¸¨¸ú ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅ¸½ š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ £‰¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ,¸¾£ □¸í¸¿ „¢□¸÷¸ í¸½, ¤¸¸□¸¸£ ˆÅú ˆÅúŸ¸÷¸¸½¿ œ¸£ „›¸ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸ÄÂ£µ¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ,œ¸›¸½ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆ½Å ‡ˆÅ ¢í¬¬¸½ ˆ½Å ³œ¸ Ÿ¸½¿ ‡½¬¸½ œ¸¢£´©¡¸¸½¿ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ „›¸ˆÅú ,¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ˆÅ¸½ £¸½ˆÅ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ ,¸¾£ ,œ¸›¸ú □¸¥¸¢›¸¢š¸, ,¸¡¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸¸Äœ÷¸÷¸¸ œ¸£ ‡½¬¸½ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½ ˆ½Å ž¸¸¨¸ú œÏž¸¸¨¸ ˆÅú œ¸í□¸¸›¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ —

¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¢¨¸¨¸½ˆÅœ¸»µ¸Ä ,¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ ¡¸¸½□¸›¸¸‡¿ ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅ¸ „¥¥¸½‰¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¨¸½ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ¤¸¸□¸¸£¸½¿ ÷¸ˆÅ œ¸íºÅ□¸ ˆÅŸ¸ í¸½ □¸¸›¸½ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³œ¸ œ¸¾™¸ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¢›¸š¸ú¡¸›¸, œ¸»¿□¸ú ÷¸˜¸¸ ,›¸¡¸ ™¤¸¸¨¸¸¸½¿ ¬¸½ ¢ˆÅ¬¸ œÏˆÅ¸£ ¢›¸œ¸’½¿Š¸½ — ,¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ ¡¸¸½□¸›¸¸,¸½¿ Ÿ¸½¿ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅ¸ ž¸ú ¢□¸ÇÅ ¢¤¸ÇÅú ,˜¸¨¸¸ ¨¸¡¸¨¸¬¸¡¸¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ š¸¸¢£÷¸ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ ³Åœ¸ ¬¸½ ,›¸ˆÅ™ú ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸®¸ „÷œ¸››¸ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸ú Ÿ¸»¥¡¸›¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú □¸º›¸¸¾¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ¨¸½ ¢ˆÅ¬¸ œÏˆÅ£ ¬¸Ÿ¸›¸¸ ˆÅ£½¿Š¸½ — □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å ¢›¸š¸¸Ä£ˆÅ¸½¿, ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸ ÷¸˜¸¸ ,¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ ¡¸¸½□¸›¸¸‡¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅú □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏµ¸¸¢¥¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ „›¸ˆ½Å ,ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¢¨¸«’ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸¬¸ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³Åœ¸ ›¸¡¸»›¸÷¸Ÿ¸ ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ¬¸½ ,¢š¸ˆÅ ¬÷¸¿ž¸ 2 ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ œ¸»¿□¸ú ˆÅ¸ ‡ˆÅ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ¬÷¸£ ¢›¸¢Ÿ¸Ä÷¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ —

□¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ÷¸ˆÅ›¸úˆ½¿Å ,œ¸›¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸ ¢ˆÅ‡ □¸¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿, „¬¸ ˆÅŸ¸ú ˆ½Å ¬¸¿ž¸¸¨¸¸½¿ œÏž¸¸¨¸¸½¿ ,¸¾£ □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ˆÅú Š¸ƒÄ ˆÅ¢Ÿ¸¡¸¸¿ œ¸»£ú ÷¸£í œÏž¸¸¨¸ú íì ¸ ˆÅú œ¸»£ú ¬¸Ÿ¸□¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸¬¸½ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½ Ÿ¸½¿ Ÿ¸™™ ¢Ÿ¸¥¸½Š¸ú ¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ œ¸»¿□¸ú ˆ½Å ,œ¸›¸½ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ Ÿ¸½¿ ¢›¸¢÷¸ ¨¸¸¬÷¸¢¨¸ˆÅ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸÷¸£ ›¸íì ,¸ÂˆÅ £í½ íÿ — ¢¨¸©¸½«¸ ³Åœ¸ ¬¸½ „›í½¿ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ œ¸£

Š¸¸¾£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ Æ¡¸¸ ¨¸½ ‡ˆÅ ¢›¸š¸ú¡¸›¸ „œ¸ˆÅ£µ¸ ˆ½Å ³œ¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ œ¸£ ¢›¸ž¸Ä£÷¸¸ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ ˆÅ¢“›¸ œ¸¢£´©¡¸¸½¿¿ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ¬¸¿£□¸›¸¸¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½¿ÅŠ¸½ —

13.11 Ÿ¸»¥¡¸›¸ ˆÅú œÏ˜¸¸‡¿

œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ¥¸½›¸™½›¸ ¬¸¢í÷¸ □¸¢’¥¸ ¬¸¿£¢□¸÷¸ „÷œ¸¸™¸½¿ ˆÅú ¢¨¸©¸½«¸÷¸¸‡¿ ,¸¿¢©¸ˆÅ ³Åœ¸ ¬¸½¬¸¢ÇÅ¡¸ ,¸¾£ ›¸ˆÅ™ú ¤¸¸□¸¸£¸½¿ ˆ½Å ,ž¸¸¨¸, ž¸¸£ú Ÿ¸¸°¸ Ÿ¸½¿ ›¸ˆÅ™ú œÏ¨¸¸í ˆÅú □¸¢’¥¸÷¸¸ ÷¸˜¸¸ ,¢×÷¸ú¡¸÷¸¸ ,¸¾£ ,¸¿¢©¸ˆÅ ³Åœ¸ ¬¸½ Ÿ¸»¥¡¸›¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ,¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¤¸ú□¸ ¬¸¿¤¸¿š¸¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ „›¸ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸›¸ ˆÅ¸½ ,¿÷¸¢›¸Ä¢í÷¸ ³Åœ¸ ¬¸½ ˆÅ¢“›¸ ¤¸›¸¸ ™½÷¸½ íÿ — □¸¾¬¸¸ ¢ˆÅ œ¸í¥¸½ íú „¥¥¸½‰ ¢ˆÅ¡¸ Š¸¡¸ í¾, ¨¸÷¸ÄŸ¸›¸ Ÿ¸½¿ ž¸¸£÷¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ˆÅú ,›¸ºŸ¸¢÷¸ ˆ½Å ¢¤›¸¸ ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ¬¨¸úˆÅ¸£ ˆÅ£›¸½ ˆÅú ,›¸ºŸ¸¢÷ ›¸íì í¾ — ÷¸˜¸¸¢œ¸, „›¸ˆÅú ¢¨¸™½©¸ ¢¬˜¸÷¸ ©¸¸‰¸¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ 1 ¢™¬¸¿¤¸£ 2008 ˆ½Å œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸. ¬¸¿. ¤¸úœ¸ú. ¤¸ú¬¸ú. 89/ 21.04.141/ 2008-09 ˆ½Å □¸¸£ú í¸½›¸½ ¬¸½ œ¸í¥¸½ ™□¸Ä ¢ˆÅ‡ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ¢ˆÅ¬¸ú ›¸ˆÅ™ú ¤¸¸□¸¸£ ¬¸½ œ¸¸£™©¸úÄ ˆÅúŸ¸÷¸ ˆ½Å ,ž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ,˜¸Ä í¾ Ÿ¸»¥¡¸›¸ ˆÅ¸½ Ÿ¸¸Á”¥¸ ,˜¸¨¸¸ ,›¸ºŸ¸¸¢›¸÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅú ¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸©¸½«¸±¸¸½¿ ˆ½Å ¢›¸µ¸Ä¡¸ œ¸£ ,¸š¸¸¢£÷¸ í¸½›¸¸ œ¸”õ½Š¸¸ — ‡½¬¸½ Ÿ¸¸Á”¥¸¸½¿ ,¸¾£ œÏ¢ÇÅ¡¸¸¸½¿ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸ ƒ›œ¸ºÃ¬¸ ÷¸˜¸¸ ,œ¸›¸¸‡ Š¸‡ Ÿ¸¸œ¸™¿”¸½¿ ¬¸¿¤¸¿š¸ú Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸¸½¿ /,¢ž¸š¸¸£µ¸¸¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ,÷¡¸¢š¸ˆÅ ¬¸¿¨¸½™›¸©¸ú¥¸ í¸½÷¸½ íÿ □¸¸½ ¬¨¸¡¸¿ ,›¸ºŸ¸¸›¸ °¸º¢’ ÷¸˜¸¸ ,¢›¸¢©□¸÷¸÷¸¸ ˆ½Å ,š¸ú›¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸, Ÿ¸»¥¡¸›¸ ¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ,¿©¸¸¿ˆÅ› œÏ¡¸À ÷¸º£¿÷¸ ¬¸º¥¸ž¸ ¤¸½¿□¸Ÿ¸¸ˆÅ¸½ô ˆ½Å ,ž¸¸¨¸ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ □¸¢’¥¸ í¸½ □¸¸÷¸¸ í¾ — ƒ¬¸¢¥¸‡, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ¬¸½ ¡¸í ,œ¸½¢®÷¸ í¾ ¢ˆÅ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¬¸»□¸›¸¸ ˆ½Å œÏ¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸˜¸¸½¢□¸÷¸ Ÿ¸»¥¡¸-¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆÅú œ¸¡¸¸Äœ¸÷¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ¬¸¿£□¸›¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‡¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å œ¸¸¬¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — Ÿ¸»¥¡¸›¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ¬¸¿£□¸›¸¸‡¿ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‡¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅú ¬¸¿œ¸»µ¸Ä ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ¬¸¿£□¸›¸¸ Ÿ¸½¿ ¬¸Ÿ¸¸¢í÷¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ,¸¾£ „›í½¿ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸»□¸›¸¸ ™½›¸¸½¿ œÏ¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ˆ½Å ,›¸³œ¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ¬¸¿£□¸›¸¸¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸¸¸½¿ ¬¸½ ,œ¸½¢®÷¸ í¾ ¢ˆÅ „›¸Ÿ¸½¿ ¤¸¸½”Ä ,¸¾£ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅú ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ¬œ¸«’ ³Åœ¸ ¬¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¢÷¸¢£Æ÷¸, ¤¸¸½”Ä ˆÅ¸½ Ÿ¸»¥¡¸›¸ ,¸½¨¸£ ¬¸¸ƒ’ ÷¸˜¸¸ Ÿ¸»¥¡¸ Ÿ¸¸Á”¥¸ ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸«œ¸¸™›¸ ¬¸½ □¸¸º”õ½ Ÿ¸ºÓ¸½¿ □¸¸½ ¬¸Ÿ¸¸š¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ „›¸ˆ½Å ¬¸Ÿ¸®¸ ¥¸‡ □¸¸÷¸½ íÿ, ÷¸˜¸¸ Ÿ¸»¥¡¸›¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸ž¸ú Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸¸½¿ œ¸£ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸½ ¢£œ¸¸½’Ä œÏ¸œ¸÷¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ —

¤¸ÿˆÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ¢¥¸‰÷¸¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸, „¬¸ˆ½Å ¬¸Ÿ¸›¸ºŸ¸™©¸›¸ ,¸¾£ ¬¸÷¡¸¸œ¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡ˆÅ ¬œ¸«’ ,¸¾£ ¬¸º´□õ

œÏ©¸¸¬¸¢›¸ˆÅ ¬¸¿£□¸›¸¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ×¸£¸ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¬¸ž¸ú Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ ¬¸ºœÏ¥¸½¢‰¸÷¸ íÿ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ‚¸¾£ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ ‚¸£¿¢ž¸ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸‚ ¤¸¸{¸¸£ ™£ œ¸£/Ÿ¸¸½”½¥¸ ˆ½Å ‚›¸º¬¸£ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸‚ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ‚¸¾£ ‚¸¨¸¢š¸ˆÅ ¬¨¸÷¸¿°¸ œ¸º›¸Ÿ¸»Ä¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¬¨¸úˆÅ¸¡¸Ä œ¸Ö¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ¨¸µ¸Ä›¸ £í›¸¸ □¸¸¢í‡ — ›¸¡¸½ „÷œ¸¸™ ˆÅú ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ □¸¸½¢‰Ÿ¸ Ÿ¸¸œ¸‚ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ‚¸¾£ ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ¢¥¸‰÷¸¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸›¸º™½©¸›¸ ‚¸¾£ ¬¸÷¸¡¸¸œ¸›¸ ¬¸½ □¸º”õ½ ¬¸ž¸ú ‚¸¿÷¸¢£÷¸ ¬’½ˆÅ š¸¸£ˆÅ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½›¸½ □¸¸¢í‡ —

¢ˆÅ¬¸ú ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸¸½¿ ˆÅú Ÿ¸¸œ¸ ‚¸¾£ ¢£œ¸¸½¢’ôŠ¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‡¿ œ¸»£½ œ¸€Ÿ¸Ä œ¸£ ¬¸Ÿ¸¸›¸ ³œ¸ ¬¸½ ¥¸¸Š¸» ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ □¸¸½¢‰Ÿ¸ Ÿ¸¸œ¸ ‚¸¾£ œÏ¤¸¿š¸›¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‚¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ „›¸ˆÅ¸ ‡ˆÅúˆÅ£µ¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¢¨¸©½«¸ ³œ¸ ¬¸½ ¡¸½ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸¸½¿ ˆÅ½ ¬¸Ÿ¸¸›¸ ³œ¸ ¬¸½ ¬¸Ÿ¸¸›¸ ¢¥¸‰÷¸¸½¿ (□¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿) ‚¸¾£ ˆÅ¸£½¤¸¸£ú ®¸½°¸¸½¿ (¤¸¢í¡¸¸½¿) œ¸£ ¥¸¸Š¸» ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¡¸½ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ ¥¸½‰¸¸ œ¸£ú®¸¸ ˆ½Å ‚š¸ú›¸ í¸½›¸½ □¸¸¢í‡ — ›¸¡¸½ „÷œ¸¸™¸½¿ ˆÅ¸ ¤¸º¢ˆ¿ÅŠ¸ ¬¨¸¥¸ ˆÅíì ž¸ú í¸½‚ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ‚¸¾£ ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ ˆ½Å œ¸úŽ½ ¢¨¸□¸¸£¸½¿/¨¸š¸¸£µ¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸ ‡ˆÅ ›¡¸»›¸÷¸Ÿ¸ ¬¸Ÿ¸»í í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸/›¸¡¸½ „÷œ¸¸™ ˆ½Å ‚›¸ºŸ¸¸½™›¸ ˆÅú œÏ¢ÇÅ¡¸¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸˜¸Ä›¸ „÷œ¸¸™ ‚¸¾£ ˆÅ¸£½¤¸¸£ ˆÅú ¢¨¸¢©¸«’ ¬¨¸úˆÅ¸¡¸Ä Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¢ÇÅ¡¸¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅú œ¸¸£™©¸úÄ ‚¸¾£ ¬¸ºœÏ¥¸½¢‰¸÷¸ ¬¸»□¸ú ×¸£¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ —

¢□¸›¸ ¢¥¸‰÷¸¸½¿ ‚¸¾£ ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅ¸ ¤¸ÿˆÅ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾ „›¸ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ¸½ ¬˜¸¸¢œ¸÷¸ ‚¸¾£ ¬¸÷¸¡¸¸¢œ¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡, ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ œ¸¡¸¸Äœ¸÷¸ ®¸Ÿ¸÷¸¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ - ™¤¸¸¨¸ ˆÅú ‚¨¸¢š¸ ˆ½Å ™¸¾£¸›¸ ž¸ú — ¡¸í ®¸Ÿ¸÷¸¸ ¬¸¿¬˜¸¸ ˆ½Å ˆÅ¸£½¤¸¸£ú œÏ¸½œ¸€ƒ¥¸ ˆ½Å ¬¸¿™ž¸Ä Ÿ¸½¿ ƒ›¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½□¸£¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸í÷¨¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ‚¸¾£ ‚ˆÅ¸£ ˆ½Å ‚›¸º¬¸£ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸ □¸¸½ ‡Æ¬¸œ¸¸½□¸£ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¨¸¸¥¸½ í¸½¿ „›¸ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¡¸í ®¸Ÿ¸÷¸¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ÷¸¢ˆÅ œÏ˜¸¢Ÿ¸ˆÅ ƒ›¸œ¸º’ ‚¸¾£ ¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ¤¸¸□¸£ ˆ½Å Š¸¢÷¸£½š¸ ¡¸¸ ˆÅŸ¸ ÷¸£¥¸÷¸¸ ˆ½Å ‚ˆÅ¸£µ¸ ‚¢¨¸©¨¸¬¸›¸ú¡¸‚ ‚›¸ºœ¸¥¸¤¸š¸ ¡¸¸ ‚œÏ¸¬¸¿¢Š¸ˆÅ í¸½ ¬¸¸›¸½ œ¸£ ¨¸¾¢¥œ¸ˆÅ ¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½¿Å — ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸½ Ÿ¸¸½”½¥¸¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸¡¸Ä ¢›¸«œ¸¸™›¸ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ‚¸¾£ œ¸£ú®¸µ¸ ™¤¸¸¨¸ ˆÅú œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¤¸ÿˆÅ ™¤¸¸¨¸ ˆÅú œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ Ÿ¸¸½”½¥¸¸½¿ ˆÅú ¬¸úŸ¸¸‡¿ ¬¸Ÿ¸□¸ ¬¸ˆ½¿Å —

Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅú œÏ¬¸¿¢Š¸ˆÅ÷¸¸ ‚¸¾£ ¢¨¸©¨¸¬¸›¸ú¡¸÷¸¸ ƒ›¸œ¸º’ ˆÅú Š¸ºµ¸¨¸÷÷¸¸ ‚¸¾£ ¢¨¸©¨¸¬¸›¸ú¡¸÷¸¸ ¬¸½ ¬¸úš¸½ □¸º”õú íºƒÄ í¾ — ¤¸ÿˆÅ ¬¸½ ¡¸í ‚¸©¸¸ ˆÅú □¸¸÷¸ú í¾ ¢ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸ Ÿ¸½¿ œÏ¡¸¸½Š¸

ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ ƒ›¸œ¸º’ ˆÅ¸ □¸¡¸›¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¢ˆÅ¬¸ú ¢¥¸‰¸÷¸ ˆ½Å „¢□¸÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ œ¸£ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ œÏž¸¸¨¸ ”¸¥¸›¸½ ¨¸¸¥¸ú ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ¤¸¸□¸¸£ ¬¸»□¸›¸¸¸,¸½¿ ÷¸˜¸¸ ‚›¡¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¥¸½‰¸¸ˆÅ£µ¸ ¢™©¸¸¢›¸™½Ä©¸¸½¿ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£½¿Š¸½ — □¸í¸¿ ¢ˆÅ¬¸ú ¬¸¢ÇÅ¡¸ ¤¸¸□¸¸£ Ÿ¸½¿ £í›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ Ÿ¸»¥¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸÷¸¸ í¾ ¨¸í¸¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ Ÿ¸»¥¡¸›¸ ÷¸ˆÅ›¸úˆÅ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅ£÷¸½ íº‡ „¢□¸÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ œÏ½®¸µ¸ú¡¸ ¬¸»□¸›¸¸¸,¸½¿ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ‚¢š¸ˆÅ ¬¸½ ‚¢š¸ˆÅ ÷¸˜¸¸ ‚œÏ½®¸µ¸ú¡¸ ¬¸»□¸›¸¸¸,¸½¿ ˆÅ¸ œÏ¡¸¸½Š¸ ˆÅŸ¸-¬¸½-ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ —

÷¸˜¸¸¢œ¸ □¸í¸¿ ¤¸¸□¸¸£ ¢›¸¢«ÇÅ¡¸ í¸½, ¨¸í¸¿ œÏ½®¸µ¸ú¡¸ ƒ›¸œ¸º’ ¡¸¸ ¥¸½›¸™½›¸ œÏ¸¬¸¿¢Š¸ˆÅ ›¸íì í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ, □¸¾¬¸¸ ¢ˆÅ ¤¸¸š¡¸ˆÅ¸£ú œ¸¢£¬¸Ÿ¸¸œ¸›¸ ¡¸¸ ‚¸œ¸¸™¸ ¢¤¸ÇÅú Ÿ¸½¿ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ¡¸¸ ¥¸½›¸™½›¸ œÏ½®¸µ¸ú¡¸ ›¸íì í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾, □¸¾¬¸¸ ¢ˆÅ □¸¤¸ ¤¸¸□¸¸£ ¢›¸¢«ÇÅ¡¸ £í÷¸½ íÿ — ‡½¬¸½ Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿ „¢□¸÷¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¥¸½‰¸¸¿ˆÅ›¸ ¢™©¸¸¢›¸™½Ä©¸ ƒ¬¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ œÏ™¸›¸ ˆÅ£÷¸½ íÿ ¢ˆÅ ¢ˆÅ›¸ ¤¸¸÷¸¸½¿ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡, œ¸£¿÷¸º ¡¸½ ¤¸¸š¡¸ˆÅ¸£ú ›¸íì í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸½ íÿ — ˆÅ¸½ƒÄ ¬Ï¸½÷¸ ¢¨¸©¸¨¸¬¸›¸ú¡¸ ‚¸¾£ œÏ¸¬¸¿¢Š¸ˆÅ í¾ ¡¸¸ ›¸íì, ƒ¬¸ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ› ˆÅ£½¿ — ¤¸ÿˆÅ ˆÅ¸½ ‚›¡¸ ¤¸¸÷¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ ¢›¸Ÿ›¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ À

- ˆÅúŸ¸÷¸¸½¿/ž¸¸¨¸¸½¿ ˆÅú „œ¸¥¸¤¸š¸÷¸¸ ‚¸¾£ ¤¸¸£¿¤¸¸£÷¸¸
- Æ¡¸¸ ¡¸½ ˆÅúŸ¸÷¸½¿ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ ™»£ú ¤¸›¸¸¡¸½ £‰›¸½ ˆ½Å ‚š¸¸£ œ¸£ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¨¸¸¬¬÷¸¢¨¸ˆÅ ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ¥¸½›¸™½›¸ ˆÅ¸ œÏ¢÷¸¢›¸¢š¸÷¨¸ ˆÅ£÷¸ú íÿ
- ‚¿ˆÅ”õ¸½¿ ˆÅ¸ ¢¨¸¬÷¸¸£ ‚¾£ ¡¸í ÷¸˜¡¸ ¢ˆÅ Æ¡¸¸ ‚¿ˆÅ”õ½ ¤¸¸□¸¸£ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ œÏ¢÷¸ž¸¸¢Š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ‚Ÿ¸ ÷¸¸¾£ œ¸£ „œ¸¥¸¤¸š¸ £í÷¸½ íÿ —
- Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅú ¤¸¸£¿¤¸¸£÷¸¸ ˆÅú ÷¸º¥¸›¸¸ Ÿ¸½¿ ¬¸»□¸›¸¸ ˆÅú ¬¸¸Ÿ¸¢¡¸ˆÅ÷¸¸
- ¬¨¸÷¸¿°¸ ¬Ï¸½÷¸¸½¿ ˆÅú ¬¸¿‰¡¸¸ □¸¸½ ˆÅúŸ¸÷¸/ž¸¸¨¸ ¤¸÷¸¸÷¸½ íÿ
- Æ¡¸¸ ž¸¸¨¸/ˆÅúŸ¸÷¸½¿ ¨¸¸¬÷¸¢¨¸ˆÅ ¥¸½›¸™½› ¬¸½ ¬¸Ÿ¸¢˜¸Ä÷¸ íÿ
- ¤¸¸□¸¸£ ˆÅú œ¸¢£œ¸Æ¨¸÷¸¸; ‚¾£
- ¥¸½›¸™½› Ÿ¸½¿ ¤¸½□¸½ Š¸¡¸½ ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ¢¥¸‰¸÷¸ ‚¾£ ¬¸¿¬˜¸¸ Ÿ¸½¿ š¸¸¢£÷¸ ¢¥¸‰¸÷¸ ˆÅú ¬¸Ÿ¸¸›¸÷¸¸

¤¸ÿˆÅ ˆÅú ¤¸¸à¸ ¬¸»□¸›¸¸ œÏµ¸¸¥¸ú ×¸£¸ ¬¸¸Ÿ¸¢¡¸ˆÅ, œÏ¸¬¸¿¢Š¸ˆÅ, ¢¨¸©¸¨¸¬¸›¸ú¡¸ ‚¾£ „œ¸¡¸¸½Š¸ú ¬¸»□¸›¸¸ œÏ™¸›¸ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ □¸¸½ œ¸¸£™¢©¸Ä÷¸¸ ˆÅ¸½ ¬¸¿ž¸¨¸ ¤¸›¸¸÷¸ú í¸½ — ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸ ÷¸¿°¸ ˆÅ¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ œ¸£ ¢¨¸□¸¸£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ‚¢›¸¢©□¸÷¸÷¸¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ˆÅ¸½ ‚¢š¸ˆÅ ¬¸¸˜¸ÄˆÅ ¤¸›¸¸¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —

„™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¤¸ÿˆÅ Ÿ¸¸½”½¢¥¸¿Š¸ ÷¸ˆÅ›¸úˆÅ¸½¿ ˆÅ¸ ‚¸¾£ „›¸ ¢¥¸‰÷¸¸½¿ ˆÅ¸¨¸µ¸Ä›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ¢□¸›¸ œ¸£ ¨¸½ ¥¸¸Š¸» ˆÅú □¸¸÷¸ú íÿ ‚¸˜¸¨¸¸¸ ¤¸ÿˆÅ Ÿ¸¸½”½¢¥¸¿Š¸ ƒ›¸œ¸º’ ‚¸¾£ ‚¨¸š¸¸£µ¸¸‚¸½¿ ˆ½Å œ¸Ï¢÷¸ „¢□¸÷¸ Ÿ¸»¥¸¡¸ ˆÅú ¬¸¿¨¸½™›¸©¸ú¥¸÷¸¸ ÷¸˜¸¸ Ÿ¸»¥¸¡¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ œ¸£ ™¤¸¸¨¸ œ¸¢£´©¡¸¸½¿ ˆ½Å œ¸Ïž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ¨¸µ¸Ä›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — ¤¸¾¿ˆÅ ˆÅ¸½ ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ³œ¸ ¬¸½ ‚œ¸›¸ú œ¸ÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å ¢ˆÅ œ¸ÏˆÅ’ ˆÅú Š¸¡¸ú ¬¸»□¸›¸¸ „¬¸ˆ½Å ˆÅ¸£¸½¤¸¸£ú Ÿ¸¸½”½¥¸ ‚¸¾£ „÷¸œ¸¸™¸½¿ ‚¸¾£ ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ ¤¸¸□¸¸£ ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸Ï¸¬¸¿¢Š¸ˆÅ ¤¸›¸ú íºƒÄ í¾ —

13.12 ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅú ‚□Žú œ¸Ï˜¸¸‡¿

™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ‡ˆÅ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ¬¸¸š¸›¸ í¾ ¢□¸¬¸ˆÅ¸ œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ¤¸ÿˆÅ ‚œ¸›¸½ ‚¿÷¸¢£ˆÅ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œ¸Ï¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å ¢í¬¬¸½ ˆ½Å ³Åœ¸ Ÿ¸½¿ ˆÅ£÷¸½ íÿ — ¡¸í ¬¸¸š¸›¸ ¤¸ÿ¿ˆÅ œ¸Ï¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸½ ‚›¸¢Š¸›¸÷¸ œ¸ÏˆÅ¸£ ˆ½Å □¸¸½¢‰Ÿ¸¸½¿ ¬¸½ □¸º”õ½ ‚œ¸Ï÷¡¸¸¢©¸÷¸ ™º«œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å œ¸Ï¢÷¸ ¬¸□¸½÷¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾ ‚¸¾£ ¬¸¸˜¸ íú ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ƒ¬¸¬¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅ¸ ¬¸¿ˆ½Å÷¸ ž¸ú œ¸Ïœ¸÷¸ í¸½÷¸¸ í¾ ¢ˆÅ ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ ›¸º˜Å¬¸¸›¸ ˆÅú ž¸£œ¸¸ƒÄ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢ˆÅ÷¸›¸ú œ¸»¿□¸ú ˆÅú □¸³Å£÷¸ í¸½Š¸ú — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸, ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ‚›¡¸ □¸¸½¢‰Ÿ¸ œ¸Ï¤¸¿š¸›¸ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ „œ¸¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸¿œ¸»£ˆÅ í¸½÷¸¸ í¾ — ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ Å

- □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å œ¸»¨¸ÄŠ¸¸Ÿ¸ú Ÿ¸»¥¸¡¸¸¿ˆÅ›¸ œ¸Ï™›¸ ˆÅ£›¸½,
- Ÿ¸¸Á”¥¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ‡½¢÷¸í¸¢¬¸ˆÅ ‚¿ˆÅ”õ¸½¿ ˆÅú ¬¸úŸ¸¸‚¸½¿ ¬¸½ ¢›¸□¸¸÷¸ œ¸¸›¸½,
- ‚¿÷¸¢£ˆÅ ÷¸˜¸¸ ¤¸¸à¸ ¬¸¿œ¸Ï½«¸µ¸ ˆÅ¸½ ¬¸í¡¸÷¸¸ œ¸Ï™›¸ ˆÅ£›¸½,
- œ¸»¿□¸ú ÷¸˜¸¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ‚¸¡¸¸½□¸›¸¸ œ¸Ï¢ÇÅ¡¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸½ œ¸º«’ ˆÅ£›¸½,
- ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅú □¸¸½¢‰Ÿ¸ ¬¸í¡¸÷¸¸ ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ¬¸»□¸›¸¸ ™½›¸½,
- ˆ¿Åœ¸›¸ú ˆ½Å ¬÷¸£ œ¸£ Ÿ¸¸¾□¸»™¸ ‚˜¸¨¸¸ ž¸¸¨¸ú ¬¸¿ˆ½¿ÅÍµ¸¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¸š¸¸›¸ ˆÅ£›¸½, ÷¸˜¸¸ ¢¨¸¢ž¸››¸ œ¸ÏˆÅ’¸œ¸››¸ ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ œ¸¢£œ¸Ï½®¡¸ Ÿ¸½¿ □¸¸½¢‰Ÿ¸ Ÿ¸½¿ ˆÅŸ¸ú ‚˜¸¨¸¸ ‚¸ˆÅ¢¬Ÿ¸ˆÅ ¡¸¸½□¸›¸¸‡¿ ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅ¸½ ¬¸í□¸ ¤¸›¸¸›¸¸ ¢¨¸©¸½«¸ ³Åœ¸ ¬¸½ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ¢›¸ž¸¸÷¸¸ í¾ — ‚í¢›¸ˆÅ£ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆ½Å ¥¸¿¤¸½ ™¾£½ ˆ½Å ¤¸¸™ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ¸ ¢¨¸©¸½«¸ Ÿ¸í÷¨¸ í¸½÷¸¸ í¾ □¸¤¸ ›¸ˆÅ¸£¸÷Ÿ¸ˆÅ ‚¸¢˜¸ÄˆÅ ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅú š¸»¢Ÿ¸¥¸ œ¸”õ÷¸ú ¬Ÿ¸¼¢÷¸ ¬¸½ ‚¸÷Ÿ¸ ¬¸¿÷¸º«¢’ ˆÅ¸ ž¸¸¨¸ œ¸¾™¸ í½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ‚¸¾£ □¸¸½¢‰Ÿ¸ ˆÅ¸ ˆÅŸ¸ Ÿ¸»¥¸¡¸¸¿ˆÅ›¸ í½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ‚¸¾£ □¸¤¸ ›¸¨¸¸½›Ÿ¸½«¸ ˆ½Å ˆÅ£µ¸ ¸›¸‡

„÷œ¸¸™¸½¿ Ÿ¸½¿ ÷¸ú¨Ï ¨¸¼¢Ö í¸½÷¸ú ¢□¸¬¸ˆ½Å ¢¥¸‡ í¸¢›¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ‚¸¿ˆÅ”õ½ ¬¸ú¢Ÿ¸÷¸ íÿ ¡¸¸ ¢œ¸€£ ›¸íì íÿ —

¡¸í ¬¨¸úˆÅ¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ Ÿ¸½¿ ¬¸º¸š¸¸£ ¬¸½ íú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ¬¸ž¸ú ˆÅŸ¸□¸¸½¢£¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¸š¸¸›¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ ¥¸½¢ˆÅ›¸ ¨¸í ‡ˆÅ ¨¡¸¸œ¸ˆÅ ´¢«’ˆÅ¸½µ¸ ˆ½Å ¢í¬¬¸½ ˆ½Å ³Åœ¸ Ÿ¸½¿ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸œ¸¸½Ä£½’ Š¸¨¸›¸½ô¬¸ ˆÅ¸½ Ÿ¸□¸¤¸»÷¸ ¤¸›¸¸›¸½ ‚¸¾£ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸î¸ú¡¸ œÏµ¸¸¥¸ú ˆ½Å ¥¸□¸ú¥¸½œ¸›¸ Ÿ¸½¿ œÏŸ¸º‰¸ ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ¢›¸ž¸¸÷¸¸ í¾ —

™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ¬¸Ÿ¸»□¸½ Š¸¨¸›¸½ô¬¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸¿¬ˆ¼Å¢÷¸ ˆÅ¸ ‡ˆÅ ‚¢ž¸››¸ ¢í¬¬¸¸ ¤¸›¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆ½Å „Ó½©¡¸ ¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½, œ¸¢£´©¡¸ œ¸¢£ž¸¸¢«¸÷¸ ˆÅ£›¸½, ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ œ¸£ □¸□¸¸Ä ˆÅ£›¸½, ž¸¸¨¸ú ˆÅ¸£Ä¨¸¸ƒÄ¡¸¸½¿ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸½ ÷¸˜¸¸ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¥¸½›¸½ Ÿ¸½¿ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅú ¬¸íž¸¸¢Š¸÷¸¸ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ Š¸¨¸›¸½ô¬¸ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú ‚¸¡¸¸½□¸›¸¸ Ÿ¸½¿ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ „œ¸¡¸¸½Š¸ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½ Ÿ¸½¿ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ‚™¸ ˆÅ£÷¸ú í¾ — ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸½ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆ½Å ¢¨¸ˆÅ¬¸ ÷¸˜¸¸ œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ Ÿ¸½¿ ¬¸¢ÇÅ¡¸ ³Å¢□¸ ¥¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ ¬¸½ £µ¸›¸ú¢÷¸ˆÅ ¢›¸µ¸Ä¡¸›¸ Ÿ¸½¿ ¬¸í¸¡¸÷¸¸ ¢Ÿ¸¥¸›¸ú □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ƒ¬¸¬¸½ ›¸¡¸ú œ¸»¿□¸ú □¸º’›¸½ ¡¸¸ œ¸¸½¢□¸©›¸ ˆÅú í½¢□¸¿Š¸ ¡¸¸ ¢¤¸ÇÅú ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ „›¸ˆÅú ¥¸¸Š¸÷¸, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ÷¸˜¸¸ Š¸¢÷¸ □¸¾¬¸ú ‚¨¸š¸¸£µ¸¸‚¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ ¤¸í¬¸ ˆÅ¸½ œÏ¸½÷¬¸¸í›¸ ¢Ÿ¸¥¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ¸¡¸¸ÄÇÅŸ¸ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ú œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ í¾ ¢ˆÅ ¤¸¸½”Ä ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ „¬¸ˆ½Å ¬¸¸˜¸ □¸º”õ½ —

¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅú œ¸»¿□¸ú ‚¸¡¸¸½□¸›¸¸ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ ˆÅ«’ ¬¸¸š¡¸¸; ž¸¢¨¸«¡¸™©¸úÄ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ¸½ ©¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ œ¸£ œÏž¸¸¨¸ ”¸¥¸›¸½ ¨¸¸¥¸ú ¤¸¸□¸¸£ ˆÅú œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸¿ž¸¸¢¨¸÷¸ ‹¸’›¸¸‚¸½¿ ‚¨¸¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸¸½¿ ˆÅú œ¸í□¸¸›¸ ˆÅ£÷¸¸ í¾ — ‚œ¸›¸½ ‚¸ƒÄ¬¸ú‡‡œ¸ú ˆ½Å ‚¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¢¨œ¸£ú÷¸ œ¸¢£¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ž¸¸¨¸ú œ¸»¿□¸ú ¬¸¿¬¸¸š¸›¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ œ¸»¿□¸ú ‚œ¸½®¸¸‚¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ — ¢¨©½«¸ ³Åœ¸ ¬¸½ ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆ½Å œ¸»¿□¸ú ¤¸œ¸€£ ˆÅú œ¸¡¸¸Äœ÷¸÷¸¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ž¸¢¨¸«¡¸™©¸úÄ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ œ¸£ ¢¨□¸¸£ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸¸Äœ÷¸÷¸¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ¢¨¸¢ž¸››¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‚›¸º¸œ¸¸÷¸¸½¿ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ ‚›¸º¸œ¸¸÷¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸˜¸-¬¸¸˜¸ œ¸»¿□¸ú ¬¸¿¬¸¸š¸›¸¸½¿ ˆÅú ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅú ‚¸¿÷¸¢£ˆÅ œ¸¢£ž¸¸«¸¸ œ¸£ ‚¸š¸¸¢£÷¸ ‚›¸º¸œ¸¸÷¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ, ˆ½Å œ¸¢£œÏ½®¡¸ Ÿ¸½¿ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸¸, ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ œ¸£ ž¸ú Š¸¸¾£ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ ¢ˆÅ¬¸ú ¬¸¿ˆÅ’ ¬¸½ ¤¸íº÷¸ ¬¨¸³Åœ¸ ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅú ž¸ú „¢□¸÷¸ ¥¸¸Š¸÷¸ œ¸£ ¢›¸¢š¸ □¸º’›¸½ ˆÅ¸ ®¸Ÿ¸÷¸¸ ˆÅ¸½ ž¸¿Š¸ ˆÅ£ ™½÷¸¸ í¾ —

¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸¸‰¸, □¸¥¸¢›¸¢š¸, ¤¸¸□¸¸£ ÷¸˜¸¸ ,›¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ □¸¾¬¸½ ,›¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏˆÅ¸£¸½¿ ˆ½Å ³Åœ¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ,¸ˆÅ¥¸›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ÷¸£úˆ½Å ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸ˆÅ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ÷¸¸¢ˆÅ œÏ¢÷¸«“¸ ¬¸½ □¸º”õ½ ›¸ºˆÅ¬¸¸›¸ ¬¸½ ¤¸□¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å ,¸¾£ ¤¸¸□¸¸£ ˆÅ¸ ,¸÷Ÿ¸ ¢¨¸©¨¸¸¬¸ ˆÅ¸¡¸Ÿ¸ £‰¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å — ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸«“¸ ¬¸½ □¸º”õ½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸¢£´©¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£ˆ½Å ‡½¬¸¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ — „™¸í£µ¸¸˜¸Ä ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸‰¸, ¤¸¸□¸¸£ ÷¸˜¸¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸¸½¿ œ¸£ Š¸¾£-¬¸¿¢¨¸™¸Š¸÷¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ‡Æ¬¸œ¸¸½□¸ö£¸½¿ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ „›í½¿ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ —

¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½÷¸£ ¬¸¿¬˜¸¸,¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¬¸¿£¢□¸÷¸ †µ¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸¡¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ÷¸ú¬¸£ú œ¸®¸ˆÅ¸£ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ œÏ¢÷¸¤¸Ö÷¸¸,¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸¸¨¸š¸¸›¸úœ¸»¨¸ÄˆÅ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ› ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¬¸¸˜¸ íú, „›í½¿ ƒ¬¸ ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ ˆÅ¸ ž¸ú Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ› ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢ˆÅ œÏ¢÷¸«“¸ ¬¸¿¤¸¿¿š¸ú ˆÅ¸£µ¸¸½¿ ¬¸½ ,¸¢¬÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ÷¸º¥¸›¸ œ¸° œ¸£ £‰¸›¸½ ˆÅú ,¸¨¸©¡¸ˆÅ÷¸¸ œ¸”õ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾ — ƒ¬¸¢¥¸‡, ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ,œ¸›¸½ ™¤¸¸¨¸ œ¸£ú®¸µ¸ ˆÅ¸¡¸ÄÇÅŸ¸ Ÿ¸½¿ „›¸ ¬¸ž¸ú œ¸¢£´©¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ „›¸ˆÅú ,œ¸›¸ú ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»¿□¸ú ¢¬˜¸¢÷¸¡¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ‡½¬¸ú ¬¸¿¬˜¸¸,¸½¿ ÷¸˜¸¸ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ,¸ˆÅ¸£ ,¸¾£ „›¸ˆÅú ¬¸®¸Ÿ¸÷¸¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ› ˆÅ£÷¸½ í¾ — ƒ¬¸ ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¬¸¿£□¸›¸¸Š¸÷¸, †µ¸ ©¸¸½š¸›¸ ®¸Ÿ¸÷¸¸,, □¸¥¸¢›¸¢š¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ,›¡¸ Ÿ¸ºÓ¸½¿ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢□¸›¸Ÿ¸½¿ œÏ¬¸¿¢¨¸™¸ ,¸¾£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸¸½¿ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¸¨¸½© í¸½ —

13.13 ¬¸º´□¸õ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏ˜¸¸‡¿

□¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸› ˆÅ¸½ ¤¸ÿˆÅ ¬¸¿¬¼Å¢÷¸ Ÿ¸½¿ ,¢›¸¨¸¸¡¸Ä ³Åœ¸ ¬¸½ ¬¸Ÿ¸¸¢í÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — £µ¸›¸ú¢÷¸ˆÅ ÷¸˜¸¸ £¸½□¸Ÿ¸£Ä ˆ½Å ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¥¸½÷¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ „¬¸½ Ÿ¸º‰¡¸ ˆÅ¸¡¸Äœ¸¥¸ˆÅ ,¢šˆÅ¸£ú/œÏ¤¸¿š¸ ¢›¸™½©¸ˆÅ, Ÿ¸º‰¡¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ,¢šÆ¸£ú (¬¸ú,£,½), ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸, ¨¡¸œ¸£ ”½¬ˆÅ ÷¸˜¸¸ ,›¡¸ ¨¡¸¨¸¬¸¢¡¸ˆÅ ®¸½°¸¸½¿ ˆ½Å œÏŸ¸‰¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ˆÅŸ¸Ä□¸¢£¡¸¸½¿ ˆÅú ¢›¸Š¸í ˆ½Å ˆ½¿ÅÍ Ÿ¸½¿ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ‡ˆÅ ¨¡¸œ¸ˆÅ ,¸¾£ ¬¸‹¸› □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸› ¬¸¿¬ˆ¼Å¢÷¸ ˆ½Å ¢¨¸ˆÅ¢¬¸÷¸ í¸½›¸½ ÷¸˜¸ ‡ˆÅ ¥¸¿¤¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ÷¸ˆÅ „¬¸½ ˆÅ¸¡¸Ÿ¸ £‰¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ,›¸º¢□¸÷¸ ³Åœ¸ ¬¸½ ,¥œ¸ˆÅ¸¢¥¸ˆÅ ¥¸½‰¸ˆÅ£µ¸ ¥¸ž¸ ˆ½Å ,¨¸¬¸£ œ¸¾™¸ ˆÅ£›¸½ ¬¸½ ›¸íì □¸¸½”õ¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ™ú‹¸ÄˆÅ¸¢¥¸ˆÅ œ¸»¿□¸ú ¬¸¿£®¸µ¸ ÷¸˜¸¸ ˆ¿Åœ¸›¸ú ˆÅú ¢¨¸î¸ú¡¸ ¬¸Ÿ¸˜¡¸Ä ¬¸½ □¸º”õú í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ ,¸¾£ „›¸Ÿ¸½¿ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¨¡¸¨¸¢¬˜¸÷¸ ˆÅ¸¡¸Ä ¢›¸«œ¸¸™›¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú „œ¸¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ „¥¥¸½‰¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸, ¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ,œ¸›¸½ ¬¸’½ˆÅš¸¸£ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸®¸ ,œ¸›¸ú ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿

ˆÅ¸ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ˆÅ£›¸¸
□¸¸¢í‡ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¢›¸™½©¸ˆÅ Ÿ¸¿”¥¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ¨¸¢£«“ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅú ¢□¸ŸŸ¸½™¸£ú í¾ ¢ˆÅ ¨¸½ ¨¸½÷¸›¸ ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ˆ½Å œ¸¾™¸ í¸½›¸½ ¨¸¸¥¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸ ˆÅ£½¿ ÷¸¸¢ˆÅ ¬¸Ÿ¸»□¸ú ˆ¿Åœ¸›¸ú ˆ½Å ¬÷¸£ œ¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å —

¢¨¸©¸¸¥¸ ¢¨¸î¸ú¡¸ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏ˜¸¸‡¿ „›¸ ÷¸Ÿ¸¸Ÿ¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸½ ‡ˆÅ ˆÅ¸£ˆÅ £íú íÿ ¢□¸›¸ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ 2009 Ÿ¸½¿ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¬¸¿ˆÅ’ ˆÅú ©¸º²Å‚÷¸ íºƒÄ ˜¸ú — „□□¸ ¬÷¸£ ˆ½Å ‚¥œ¸ˆÅ¸¢¥¸ˆÅ ¥¸¸ž¸ ˆ½Å œ¸€¥¸¬¨¸³Åœ¸ ˆÅŸ¸Ä□¸¸¢£¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ƒ¬¸ ¤¸¸÷¸ œ¸£ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ ¬¸¸½□¸-¢¨¸□¸¸£ ¢ˆÅ‡ ¢¤¸›¸¸ Ÿ¸ºÆ÷¸í¬÷¸ ¤¸¸½›¸¬¸ ˆÅ¸ ž¸ºŠ÷¸¸¸›¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ ¢ˆÅ ƒ¬¸¬¸½ „›¸ˆÅú ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ™ú‹¸ÄˆÅ¸¢¥¸ˆÅ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ „“¸›¸¸ œ¸”õ¸ — ƒ¬¸ œÏˆÅ¸£ ˆ½Å ‚¸¢˜¸Äˆ œÏ¸½÷¬¸¸í›¸¸½¿ ˆ½Å □¸¥¸÷¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‚¸Ÿ¸¿°¸µ¸ ˆ½Å ‚¢÷¸£½ˆÅ Ÿ¸½¿ ÷¸½□¸ú ‚¸ Š¸ƒÄ — ƒ¬¸ú ‚¢÷¸£½ˆÅú □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ‚¸Ÿ¸¿°¸µ¸ ›¸½ ¨¸¾¢©¨¸ˆÅ ¢¨¸î¸ú¡¸ œÏµ¸¸¥¸ú ˆÅú □¸»¥¸½¿ ¢í¥¸¸ ™ú íÿ ‚¸¾£ ¤¸™í¥¸ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆ½Å œ¸¸¬¸ ƒ÷¸›¸¸ ž¸ú ¬¸¿¬¸¸š¸›¸ ›¸íì Ž¸½”õ¸ ¢ˆÅ ¨¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ „ž¸£›¸½ œ¸£ ›¸ºˆÅ¬¸¸›¸ ˆÅ¸½ ¬¸í ¬¸ˆ½Å — □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ¬¸□¸Š¸÷¸¸ ˆÅú ˆÅŸ¸ú ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ ž¸ú „Ô¸¸½Š¸ Ÿ¸½¿ ž¸£ú ÷¸˜¸¸ ˆºÅŽ Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ‚÷¡¸¸¿¢÷¸ˆÅ ‚¾£ □¸£Ÿ¸ ¬÷¸£ ˆÅú ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ž¸ú íºƒÄ — ƒ¬¸ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¬¨¸³Åœ¸ ¨¡¸¨¸¬˜¸¸Š¸÷¸ ³Åœ¸ ¬¸½ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ƒ¬¸ ®¸½°¸ Ÿ¸½¿ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏ˜¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ ¬¸ºš¸¸£ ¥¸¸›¸½ ‚¾£ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸µ¸ ˆÅ¸½ Ÿ¸□¸¤¸»÷¸ ¤¸›¸¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¢¬˜¸£÷¸¸ ¤¸¸½”Ä (œ¸»¨¸Ä Ÿ¸½¿ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¢¬˜¸£÷¸¸ œ¸€¸½£Ÿ¸) ›¸½ ‚œÏ¾¥¸ 2009 Ÿ¸½¿ ¬¸º´□õ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏ˜¸¸‚¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚œ¸›¸½ ¢¬¸Ö¸¿÷¸ œÏ¬÷¸º÷¸ ¢ˆÅ‡ —

¤¸¾¿ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¢›¸™½©¸ˆÅ Ÿ¸¿”¥¸ ˆÅ¸½ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏµ¸¸¥¸ú ˆ½Å ¬¨¸³Åœ¸ ÷¸˜¸¸ „¬¸ˆ½Å œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ ˆÅú ¬¸¢ÇÅ¡¸÷¸¸œ¸»¨¸ÄˆÅ □¸¸¾ˆÅ¬¸ú ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ ¢□¸¬¸½ Ÿ¸º‰¡¸ ³Åœ¸ ¬¸½ Ÿ¸º‰¡¸ ˆÅ¸¡¸Äœ¸¸¥¸ˆÅ ‚¢š¸ˆÅ£ú ÷¸˜¸¸ œÏ¤¸¿š¸ ™¥¸ ×£¸ ¢›¸¡¸¿¢°¸÷¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ¤¸¸½”Ä ¬¸™¬¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ ˆÅŸ¸Ä□¸¸¢£¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ÷¸˜¸¸ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ˆ½Å Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸½ Ÿ¸½¿ ¬¨¸÷¸¿°¸ ‚¸¾£ œ¸¸£¿Š¸÷¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ƒ¬¸ˆ½Å ‚¥¸¸¨¸¸‚ ¢›¸™½©¸ˆÅ Ÿ¸¿”ú¥¸ ˆÅ¸½ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏµ¸¸¥¸ú ˆÅú ¢›¸Š¸£¸›¸ú ‚¸¾£ „¬¸ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ£›¸ú □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¡¸í ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å ¢ˆÅ œ¸Ïµ¸¸¥¸ú Ÿ¸½¿ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ Ÿ¸¸¾□¸»™ íÿ ‚¸¾£ ¨¸í ‚œ¸½®¸¸ ˆ½Å ‚›¸³Åœ¸ ˆÅ¸Ÿ¸ ˆÅ£ £íú í¾ — ›¸ú¢÷¸¡¸¸½¿ ‚¸¾£ œÏ¢ÇÅ¡¸¸‚¸½¿ ˆÅ¸ ‚›¸ºœ¸¸¥¸›¸ ¬¸º¢›¸¢©□¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏµ¸¸¥¸ú ˆ½Å ¨¡¸¸¨¸í¸¢£ˆÅ œ¸¢£□¸¸¥¸›¸ ˆÅú ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ — œÏ¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ˆÅú ¥¸Š¸¸÷¸¸£ œ¸»¢÷¸Ä ˆ½Å ¢¥¸‡ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ˆ½Å ¢›¸«ˆÅ«¸½ô, □¸¸½¢‰¸Ÿ¸-Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅú ¢›¸¡¸¢Ÿ¸÷¸ ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ —

¢¨¸î¸ú¡¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¢›¸¡¸¿°¸µ¸ ®¸½°¸¸½¿ ¬¸½ □¸º”õ½ ˆÅŸ¸Ä□¸¸¢£¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¨¸÷¸¿°¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ „›¸ˆ½Å œ¸¸¬¸ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ œÏ¢š¸ˆÅ¸£ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ „›í½¿ ™ú □¸¸›¸ ½¨¸¥¸ú

®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä „›¸˜Åú ™½‰¸£½‰¸ Ÿ¸½¿ ‚¸›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ®¸½°¸¸½¿ ¬¸½ Ÿ¸ºÆ÷¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ˆ¿Åœ¸›¸ú Ÿ¸½¿ „›¸˜Åú œÏŸ¸º‰¸ ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ˆ½Å ‚›¸³Åœ¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ — ‚¸¢˜¸Äˆ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œ¸£ ¢¨¸î¸ú¡¸ ÷¸˜¸¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆ½Å œÏž¸¸¨¸ ˆÅú ©¸ºÖ÷¸¸ ˆÅ¸½ ¤¸□¸¸‡ £‰¸›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‡½¬¸½ ˆÅŸ¸Ä□¸¸¢£¡¸¸½¿ ˆÅú œÏž¸¸¨¸ú ¬¨¸÷¸¿°¸÷¸¸ ÷¸˜¸¸ ¬¸Ÿ¸º¢□¸÷¸ œÏ¸¢š¸ˆÅ¸£ ‚¸¨¸©¡¸ˆÅ í¾ —

®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸ ¬¸ž¸ú œÏˆÅ¸£ ˆ½Å □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¸˜¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ ÷¸¸¢ˆÅ ¨¸½÷¸›¸ ˆÅ¸½ ‚¢□¸Ä÷¸ ¥¸¸ž¸ ÷¸˜¸¸ ¥¸¸ž¸ œ¸¾™¸ ˆÅ£›¸½ Ÿ¸½¿ ˆÅ¢¥œ¸÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅú Ÿ¸¸°¸¸ ˆ½Å ¤¸ú□¸ ¬¸¿÷¸º¢¥¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½Å — ¬¸¸Ÿ¸¸›¡¸÷¸Å „œ¸¡¸ºÆ÷¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸Ÿ¸¸¡¸¸½□¸›¸¸½¿ ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£›¸½ Ÿ¸½¿ œ¸¢£Ÿ¸¸µ¸¸÷Ÿ¸ˆÅ „œ¸¸¡¸¸½¿ ÷¸˜¸¸ Ÿ¸¸›¸›¸ú¡¸ ›¡¸¸¡¸ ™¸½›¸¸½¿ ˆÅú ‡ˆÅ ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ í¸½÷¸ú í¾ — ƒ›¸Ÿ¸½¿ ¨¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ž¸ú ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ íÿ ¢□¸›¸ˆÅ¸ ¢›¸š¸¸Ä£µ¸ ˆÅ£›¸¸ ˆÅ¢“›¸ í¾ □¸¾¬¸½ □¸¥¸¢›¸¢š¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ÷¸˜¸¸ œÏ¢÷¸«“¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ —

®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ˆ½Å ¢›¸«ˆÅ«¸½ô ˆÅ¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ ˆ½Å ÷¸™›¸³Åœ¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ ‚¸¾£ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏµ¸¸¢¥¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¤¸½›¸¬¸ œ¸»¥¸ ˆ½Å ‚¸ˆÅ¸£ ˆÅ¸½ ˆ¿Åœ¸›¸ú ˆ½Å ¬¸¿œ¸»µ¸Ä ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸«œ¸¸™›¸ ¬¸½ □¸¸½”õ ™½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ˆÅŸ¸Ä□¸¸¢£¡¸¸½¿ ˆ½Å ‚¸¢˜¸Äˆ ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸ ˆÅ¸½ œÏ÷¸¡¸½ˆÅ ˆÅŸ¸Ä□¸¸£ú ˆ½Å ¡¸¸½Š¸™›¸ ÷¸˜¸¸ ˆ¿Åœ¸›¸ú ˆ½Å ¬¸¿œ¸»µ¸Ä ˆÅ¸¡¸Ä¢›¸«œ¸¸™›¸ ˆ½Å ¨¡¸¨¸¬¸¸¡¸ ¬¸½ □¸¸½”õ ™½›¸¸ □¸¸¢í‡ —

®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸ ˆÅ¸ ˆÅ¸¡¸ÄÇÅŸ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸¡¸-□¸ÇÅ ˆ½Å œÏ¢÷¸ ¬¸¿¨¸½™›¸©¸ú¥¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¢ˆÅ¬¸ú ¢¨¸î¸ú¡¸ ˆ¿Åœ¸›¸ú Ÿ¸½¿ ¢¨¸¢ž¸››¸ œÏˆÅ¸£ ˆÅú Š¸¢÷¸¢¨¸¢š¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ¥¸¸ž¸ ‚¸¾£ í¸¢›¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸ ‚í¬¸¸¬¸ ‚¥¸Š¸-‚¥¸Š¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ Ÿ¸½¿ í¸½÷¸¸ í¾ — Š¸¢÷¸©¸ú¥¸ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸¸½¿ ˆÅ¸½ ž¸ú ÷¸™›¸º¬¸¸£ ‚¬˜¸¢Š¸÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — □¸¤¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸ ‚í¬¸¸¬¸ ¥¸¿¤¸½ ¬¸Ÿ¸¡¸ ÷¸ˆ í¸½÷¸¸ í¸½ ÷¸¸½ ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸ ˆÅ¸½ ˆÅŸ¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‚¿¢÷¸Ÿ¸ ³Åœ¸ ›¸íì ¢™¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ — œÏ¤¸¿š¸›¸ ˆÅ¸½ ‚¸¡¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸ œ¸£ ¬¸¸¨¸¸¥¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ ¢□¸¬¸ˆÅú ¨¸¬¸»¥¸ú ˆÅú □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸ú ‚˜¸¨¸¸ ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸ ˆ½Å ¬¸¡¸¸ ¨¸¬¸»¥¸ú ˆÅú ¬¸¿ž¸¸¨¸›¸¸ ‚¢›¸¢©□¸÷¸ ¤¸›¸ú £í÷¸ú í¾ —

›¸ˆÅ™ú, ƒ¢Æ¨¸’ú ÷¸˜¸¸ ‚›¡¸ œÏˆÅ¸£ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä¡¸¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿ŠÏí ˆÅ¸½ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ¬¸Ÿ¸½ˆÅ›¸ ˆ½Å ‚›¸³Åœ¸ í¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ¡¸í ¬¸¿ŠÏí ˆÅŸ¸Ä□¸¸£ú ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ ÷¸˜¸¸ „¬¸ˆÅú ž¸»¢Ÿ¸ˆÅ¸ ˆ½Å ‚›¸š¸¸£ œ¸£ ¤¸™¥¸÷¸¸ í¾ — ˆ¿Åœ¸›¸ú ˆÅ¸½ ‚œ¸›¸½ ¬¸¿ŠÏí ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ „¬¸ˆ½Å ‚¸¾¢□¸÷¡¸ ˆÅ¸ ¬œ¸«’úˆÅ£µ¸ ™½›¸¸ □¸¸¢í‡ — ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ®¸¢÷¸œ¸»¢÷¸Ä œÏ˜¸¸‚¸½¿ ˆÅú ¬¸Ÿ¸ú®¸¸ ˆÅ”õ¸ƒÄ ¬¸½ ‚¸¾£ ¥¸Š¸¸÷¸¸£ ˆÅ£½Š¸¸ ‚¸¾£ ¡¸¢™ ˆÅ¸½ƒÄ ˆÅŸ¸ú í¸½Š¸ú ÷¸¸½ ¬¸Ÿ¸¸¡¸Ä¨¸½®¸ú ˆÅ¸£Ä¨¸¸ƒÄ ˆ½Å ×£¸ ÷¸÷ˆÅ¸¥¸ „¬¸ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¸š¸¸›¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸‡Š¸¸ —

13.14 ऊपर जिन जोखिम घटकों की चर्चा की गयी है उन्हें किसी बैंक को प्रभावित करने वाले जोखिमों की परिपूर्ण सूची नहीं माना जाना चाहिए। किसी भी सुविकसित आइसीएएपी में उन सभी प्रासंगिक घटकों को शामिल किया जाना चाहिए जो पूंजी के लिए जोखिम के महत्वपूर्ण कारण बन

सकते हैं। इसके अलावा बैंकों को प्रत्येक जोखिम श्रेणी में उत्पन्न हो सकने वाले जोखिम संकेंद्रण के पूंजी पर्याप्तता पर पड़नेवाले प्रभाव के संबंध में सचेत रहना चाहिए ।

13.15 आइसीएएपी में गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोण

(क) जोखिम की सभी मापों में गुणात्मक और मात्रात्मक तत्व रहते हैं, लेकिन जहाँ तक संभव हो बैंक की माप प्रणाली मात्रात्मक दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। कुछ मामलों में मात्रात्मक साधनों में विशाल ऐतिहासिक आँकड़ों का प्रयोग शामिल हो सकता है, लेकिन यदि आंकड़े कम हों तो बैंक दबाव परीक्षण और परिदृश्य विश्लेषण के प्रयोग पर अधिक निर्भर रह सकता है। बैंकों को जोखिम की माप करते समय यह समझना चाहिए कि माप में त्रुटि हमेशा होती है और कभी-कभी त्रुटि को भी मात्रात्मक रूप देना कठिन होता है। सामान्य रूप से, मॉडल बनाने और कारोबारी जटिलता से संबंधित अनिश्चितता में वृद्धि होने से पूंजी समर्थन में वृद्धि होनी चाहिए।

(ख) बजट बनाने, भविष्यवाणी करने या कार्यनिष्पादन की माप करने के लिए अधिक संभावित परिणामों पर केंद्रित मात्रात्मक दृष्टिकोण पूंजी पर्याप्तता के लिए पूरी तरह प्रयोज्य नहीं हो सकते हैं क्योंकि आइसीएएपी में कम संभव घटनाओं को भी शामिल किया जाना चाहिए । दबाव परीक्षण और परिदृश्य विश्लेषण ऐसी घटनाओं के परिणाम का अनुमान लगाने में प्रभावी हो सकते हैं, जिनकी संभावना कम है लेकिन जिनका बैंक की सुरक्षा और सुदृढ़ता पर भारी प्रभाव पड़ सकता है।

(ग) जोखिमों को जिस सीमा तक मात्रात्मक साधनों से विश्वसनीय रीति से माप नहीं जा सकता - उदाहरण के लिए, जहाँ जोखिमों की माप कम आँकड़ों अथवा असिद्ध मात्रात्मक विधियों पर आधारित हो - वहाँ, उस सीमा तक, अनुभव और निर्णय सहित गुणात्मक साधनों का अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। बैंकों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि गुणात्मक दृष्टिकोण के अपने पूर्वाग्रह और मान्यताएँ हैं जो जोखिम मूल्यांकन को प्रभावित करते हैं। अतः बैंकों को प्रयुक्त गुणात्मक दृष्टिकोण में अंतर्निहित पूर्वाग्रह और मान्यताओं की तथा इस दृष्टिकोण की सीमाओं की पहचान करनी चाहिए।

13.16 जोखिम समूहन और विविधीकरण प्रभाव

(क) एक प्रभावी आइसीएएपी को पूरे बैंक में व्याप्त जोखिमों का आकलन करना चाहिए। विभिन्न प्रकार के जोखिमों या कारोबार क्षेत्रों में जोखिम समूहन करने वाले बैंक को ऐसे समूहन की चुनौती समझनी चाहिए। इसके अलावा, जोखिमों का समूहन करते समय बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए एक से अधिक जोखिम आयामों में व्याप्त संभावित संकेद्रणों पर कार्रवाई की जाती है, क्योंकिएक ही घटना या एक ही प्रकार के घटकों से एक ही समय विभिन्न जोखिम आयामों में हानि हो सकती है । उदाहरण के लिए किसी एक स्थान पर प्राकृतिक आपदा एक ही समय ऋण, बाजार और परिचालन जोखिमों से हानि उत्पन्न कर सकती है।

(ख) विविधीकरण के संभावित प्रभाव पर विचार करते समय प्रबंध तंत्र को प्रलेखीकरण संबंधी निर्णयों में तथा जोखिम समूहन के प्रत्येक स्तर में पूर्वधारणाओं की पहचान करने में सुव्यवस्थित और सटीक होना चाहिए। विविधीकरण संबंधी पूर्वधारणाएँ विश्लेषण और प्रमाण से समर्थित होनी चाहिए। बैंक के पास ऐसी प्रणालियाँ होनी चाहिए जो बैंक की चुनिंदा पद्धति के आधार पर जोखिम समूहन कर सके। उदाहरण के लिए विभिन्न प्रकारों के जोखिमों के बीच

अंतर्सबंध की गणना करते समय बैंक को विस्तृत अवधि में तथा कठिन बाजार परिस्थितियों में अंतर्संबंधों की अस्थिरता, आँकड़ों की गुणवत्ता और सुसंगति पर विचार करना चाहिए।

<u>भाग - ग : बाज़ार अनुशासन</u>

14. बाजार अनुशासन के लिए दिशानिर्देश

14.1 सामान्य

14.1.1 संशोधित ढांचे में बाज़ार अनुशासन (स्तम्भ 3 में वर्णित) का प्रयोजन है न्यूनतम पूंजी अपेक्षाओं (स्तम्भ 1 में दिए गए अनुसार) तथा पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया (स्तम्भ 2 में वर्णित) को पूरा करना। उसका उद्देश्य है, प्रकटीकरण अपेक्षाओं की एक सूची विकसित कर बाज़ार अनुशासन को प्रोत्साहित करना जिससे बाज़ार सहभागी संस्था के एप्लिकेशन, पूंजी, जोखिम एक्सपोज़र, जोखिम मूल्यांकन प्रक्रियाओं की व्याप्ति संबंधी मुख्य तथा महत्वपूर्ण सूचना तथा इस प्रकार संस्था की पूंजी पर्याप्तता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

14.1.2 सिद्धांततः, बैंक के वरिष्ठ प्रबंध तंत्र तथा निदेशक मंडल बैंक के जोखिमों का जिस प्रकार मूल्यांकन तथा प्रबंधन करते हैं, बैाक का प्रकटीकरण उसी के अनुसार होना चाहिए । स्तम्भ 1 के अंतर्गत बैंक अपने विभिन्न जोखिमों तथा परिणामी पूंजी अपेक्षाओं की गणना के लिए विनिर्दिष्ट दृष्टिकोण/पद्धतियों का प्रयोग करते हैं। यह माना जाता है कि समान ढांचे पर आधारित प्रकटीकरण देना, बैंक के उन जोखिमों के प्रति एक्सपोज़र के बारे में बाज़ार को सूचित करने का प्रभावी तरीका है तथा यह एक सुसंगत तथा व्यापक प्रकटीकरण ढांचा प्रदान करता है जो तुलनात्मकता को बढाता है।

14.2 उपयुक्त प्रकटीकरण सुनिश्चित करना

14.2.1 बाज़ार अनुशासन सुरक्षित तथा स्वस्थ बैंकिंग परिवेश बनाने में सहायक हो सकता है। अतः, निर्धारित प्रकटीकरण अपेक्षाओं का अनुपालन न करने पर दंड हो सकता है, जिसमें वित्तीय दंड शामिल है। तथापि नीचे दर्शाए गए को छोड़कर, यह उद्देश्य नहीं है कि प्रकटीकरण के अभाव के प्रत्युत्तर में प्रत्यक्ष अतिरिक्त पूंजी अपेक्षाएं की जाएगी।

14.2.2 सामान्य हस्तक्षेप उपायों के अतिरिक्त, संशोधित ढांचा में विनिर्दिष्ट उपायों की भी भूमिका है। जहां प्रकटीकरण, निम्नतर जोखिम भार प्राप्त करने तथा/ अथवा विनिर्दिष्ट पद्धतियों को लागू करने के लिए स्तम्भ 1 के अंतर्गत अर्हक मानदंड है वहां ऐसा नहीं करने पर प्रत्यक्ष शास्ति (सैंक्शन) (निम्नतर जोखिम भार अथवा विनिर्दिष्ट पद्धति को लागू करने की अनुमति नहीं देना) होगी।

14.3 लेखांकन प्रकटीकरण के साथ संबंध

यह माना गया है कि स्तम्भ 3 का प्रकटीकरण ढांचा अधिक व्याप्ति वाले लेखांकन मानकों की अपेक्षाओं के विरुद्ध नहीं है । बीसीबीएस ने यह सुनिश्चित करने के काफी प्रयास किए हैं कि स्तम्भ 3 का सीमित उद्देश्य, जो कि बैंक की पूंजी पर्याप्तता का प्रकटीकरण है, व्यापक लेखांकन अपेक्षाओं के विरोध में नहीं है। रिज़र्व बैंक, इस क्षेत्र की अपनी निरंतर निगरानी तथा औद्योगिक गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में बाज़ार अनुशासन प्रकटीकरणों में भावी संशोधनों पर विचार करेगा।

14.4 प्रकटीकरणों की व्याप्ति तथा बारंबारता

14.4.1 समेकित बैंकों सहित सभी बैंकों को सभी स्तम्भ 3 प्रकटीकरण गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों, वार्षिक वित्तीय विवरणों के साथ प्रत्येक वर्ष मार्च के अंत में प्रदान करना चाहिए । स्तम्भ 3 में प्रकटीकरण तक पहुंच को आसान करने की दृष्टि से बैंक अपने वार्षिक प्रकटीकरण अपने वार्षिक रिपोर्टों तथा अपनी संबंधित वेबसाइट्स दोनों पर करें। रु100 करोड़ अथवा उससे अधिक पूंजी निधि वाले बैंकों को प्रति वर्ष सितंबर के अंत में अपनी संबंधित वेबसाइट्स पर स्टैण्ड-एलोन आधार पर मात्रात्मक पहलुओं पर आंतरिम प्रकटीकरण करना चाहिए। बैंक के जोखिम प्रबंधन उद्देश्य तथा नीतियों, रिपोर्टिंग प्रणाली तथा परिभाषाओं को साधारणतः संक्षेप में प्रस्तुत करने वाले गुणात्मक प्रकटीकरण केवल वार्षिक आधार पर प्रकाशित किए जाएं।

14.4.2 संशोधित ढांचे की वर्धित जोखिम संवेदनशीलता तथा पूंजी बाज़ारों में अधिक बार रिपोर्ट करने की सामान्य प्रवृत्ति को मान्यता देते हुए रु 500 करोड़ अथवा उससे अधिक पूंजी निधियों वाले सभी बैंकों तथा उनके महत्वपूर्ण सहायक बैंकों को अपनी टीयर 1 पूंजी, कुल पूंजी,

कुल अपेक्षित पूंजी तथा टीयर 1 अनुपात तथा कुल पूंजी पर्याप्तता अनुपात को अपने संबंधित वेबसाइट्स पर तिमाही आधार पर प्रकट करना चाहिए।

14.4.3 वेबसाइट्स पर प्रकटीकरण 'बासेल II प्रकटीकरण' शीर्षक वाले वेब पेज पर किया जाए तथा इस पेज तक पहुंचने का लिंक बैंक की वेबसाइट के होम पेज पर स्पष्टतः दिया जाए । किसी वित्तीय वर्ष से संबंधित प्रत्येक प्रकटीकरण तीसरे अनुवर्ती वार्षिक (मार्च अंत) प्रकटीकरण[27] किए जाने तक वेबसाइट्स पर उपलब्ध होना चाहिए।

14.5 वैधीकरण

इस प्रकार के प्रकटीकरणों का पर्याप्त वैधीकरण किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, चूंकि वार्षिक वित्तीय विवरणों में दी गयी जानकारी सामान्यतः लेखा परीक्षित होती है इसलिए ऐसे विवरणों के साथ प्रकाशित अतिरिक्त सामग्री भी लेखा परीक्षित विवरणों से सुसंगत होनी चाहिए। इसके अलावा, जो अनुपूरक सामग्री (जैसे प्रबंध तत्र की चर्चा तथा विश्लेषण) प्रकाशित की गयी है उसकी भी वैधीकरण मामले के समाधान के लिए पर्याप्त संवीक्षा (उदा. आंतरिक नियंत्रण मूल्यांकन आदि) की जानी चाहिए। वैधीकरण व्यवस्था के अंतर्गत यदि कोई सामग्री प्रकाशित नहीं की गयी है, जैसे किसी स्टैण्ड एलोन रिपोर्ट में अथवा वेबसाइट पर किसी भाग के रूप में, तो प्रबंध तंत्र को सुनिश्चित करना चाहिए कि नीचे दिए गए सामान्य प्रकटीकरण सिद्धांत के अनुसार जानकारी का उचित सत्यापन किया जाता है। उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य में स्तम्भ 3 के प्रकटीकरणों की बाह्य लेखा परीक्षक द्वारा लेखा परीक्षा कराने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि ऐसा विनिर्दिष्ट न किया गया हो ।

14.6 महत्ता

बैंक को महत्ता की संकल्पना के आधार पर अपने लिए महत्वपूर्ण प्रकटीकरण निश्चित करने होंगे। उस जानकारी को महत्वपूर्ण समझा जाएगा, जिसके न होने अथवा जिसके संबंध में गलत वक्तव्य देने से आर्थिक निर्णय लेने के प्रयोजन के लिए उस जानकारी पर निर्भर करनेवाले उपयोगकर्ता के मूल्यांकन अथवा निर्णय में परिवर्तन हो सकता है अथवा वह प्रभावित हो सकता है। यह परिभाषा अंतर्राष्ट्रीय लेखांकन मानकों तथा राष्ट्रीय लेखांकन ढांचे से सुसंगत है। रिज़र्व बैंक किन्हीं विशिष्ट परिस्थितियों में वित्तीय जानकारी का उपयोगकर्ता उस मद को महत्वपूर्ण (यूजर टेस्ट) समझेगा अथवा नहीं, इसके लिए गुणात्मक निर्णयक्षमता की आवश्यकता को मानता है। रिज़र्व बैंक प्रकटीकरण के लिए विनिर्दिष्ट न्यूनतम सीमाएं निर्धारित करना आवश्यक नहीं समझता है क्योंकि यूजर टेस्ट पर्याप्त प्रकटीकरण प्राप्त करने के लिए एक उपयोगी न्यूनतम मानंदड है। तथापि बैंक बृहत्तर प्रकटीकरण आसानी से कर सकें इस दृष्टि से तथा बैंक के स्तम्भ 3 प्रकटीकरणों के बीच अधिक तुलनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए कुछ सीमित प्रकटीकरणों के लिए महत्वपूर्णता की आरंभिक सीमाएं निर्धारित की गई हैं। उपर्युक्त के बावजूद, बैंकों को इन विनिर्दिष्ट प्रकटीकरणों पर यूजर टेस्ट लागू करने तथा जहां आवश्यक समझा जाए वहां निर्दिष्ट न्यूनतम सीमा से नीचे भी प्रकटीकरण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

14.7 स्वामित्व संबंधी (प्रोप्राइटरी) तथा गोपनीयता संबंधी सूचना

---

[27] „™¸í£µ¸ À 31 Ÿ¸¸□¸Ä 2009 (,˜¸¸Ä÷¸Ã □¸»›¸ /¢¬¸÷¸¿¤¸£/¢™¬¸¿¤¸£ 2008 ÷¸˜¸¸ Ÿ¸¸□¸Ä 2009 ˆÅ¸½ ¬¸Ÿ¸¸œ÷¸ í¸½›¸½¨¸¸¥¸½ ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ¨¸«¸Ä ˆ½Å œÏˆÅ'úˆÅ£µ¸, 31Ÿ¸¸□¸Ä 2012 ˆÅú ¢¬˜¸¢÷¸ ˆ½Å ,›¸º¬¸¸£ œÏˆÅ'úˆÅ£µ¸ ÷¸ˆÅ „œ¸¥¸¤š¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡—

स्वामित्व संबंधी सूचना (उदा. उत्पादनों अथवा प्रणालियों के संबंध में) ऐसी सूचना/जानकारी है जिसे यदि प्रतियोगियों के साथ बांटा जाए तो इन उत्पादनों /प्रणालियों में बैंक के निवेश का मूल्य कम मूल्यवान हो जाएगा तथा इसलिए उसकी प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति कमज़ोर हो जाएगी। ग्राहकों से संबंधित जानकारी ज्यादातर गोपनीय होती क्योंकि वह विधिक करार अथवा काउंटरपार्टी संबंध की शर्त पर प्रदान की जाती है। इसका प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि बैंक अपने ग्राहकों से संबंधित जानकारी तथा अपनी आंतरिक व्यवस्था के ब्यौरे, यथा, प्रयुक्त पद्धतियां, मानदंड अनुमान, आंकड़े आदि में से क्या जानकारी दे । रिज़र्व बैंक का मानना है कि नीचे निर्धारित की गयी अपेक्षाएं अर्थपूर्ण प्रकटीकरण की आवश्यकता तथा स्वामित्व तथा गोपनीयता संबंधी जानकारी के बीच उचित संतुलन स्थापित करती हैं ।

14.8 सामान्य प्रकटीकरण सिद्धांत

बैंकों के पास निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित औपचारिक प्रकटीकरण नीति होनी चाहिए जिसमें बैाक द्वारा किये जानेवाले प्रकटीकरण के निर्धारण के संबंध में बैंक का दृष्टिकोण तथा प्रकटीकरण प्रक्रिया पर आंतरिक नियंत्रण के मुद्दों पर प्रकाश डाला गया हो । इसके अलावा, बैंकों को अपने प्रकटीकरण के औचित्य, जिसमें वैधीकरण तथा बारंबारता शामिल है, के मूल्यांकन के लिए एक प्रक्रिया लागू करनी चाहिए।

14.9 मानदंड लागू करने का दायरा

जिस बैंकिंग समूह पर ढांचा लागू होता है (जैसा कि उपर्युक्त पैराग्राफ 3 मानदंड लागू करने का दायरा के अंतर्गत दर्शाया गया है) उसके सर्वोच्च समेकित स्तर पर स्तम्भ 3 लागू होता है। समूहों के भीतर अलग-अलग बैंकों से संबंधित प्रकटीकरण सामान्यतः मूल बैंक द्वारा किए जाने की आवश्यकता नहीं है। इसका अपवाद सर्वोच्च समेकित संस्था द्वारा कुल तथा टीयर 1 पूंजी अनुपातों का प्रकटीकरण है जहां समूह के भीतर निधियों अथवा पूंजी के अंतरण पर ढांचे तथा अन्य प्रयोज्य सीमाओं का इन अनुषंगी कंपनियों द्वारा अनुपालन करने की आवश्यकता निर्धारित करने के लिए समूह के भीतर महत्वपूर्ण बैंक अनुषंगी कंपनियों का विश्लेषण उचित होता है। स्तम्भ 3 के प्रकटीकरण अलग-अलग बैंकों द्वारा स्टैण्ड एलोन आधार पर तब किए जाएंगे जब वे बैंकिंग समूह में सर्वोच्च समेकित संस्था नहीं हैं।

14.10 प्रकटीकरण की प्रभावी तारीख

इन दिशानिर्देशों के अनुसार इनमें से पहला प्रकटीकरण प्रभावी तारीख अर्थात् 31 मार्च 2008 अथवा 2009 जैसी स्थिति हो, को किया जाएगा। तथापि, बैंकों को उक्त तारीख से पहले ही स्तम्भ 3 के प्रकटीकरण प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

14.11 ¢œ¸¥¸£ III Ÿ¸½¿ ¬¸¿©¸¸½š¸›¸ [28]

14.11.1. ¬¸¸¨¸Ä□¸¢›¸ˆÅ œÏˆÅ'úˆÅ£µ¸ Ÿ¸½¿ œ¸¸¡¸ú Š¸ƒÄ ˆÅ¢Ÿ¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ˆÅ¸£µ¸ ÷¸˜¸¸ Ÿ¸º‰¡¸ œÏˆÅ'úˆÅ£µ¸ œÏ˜¸¸,¸½¿ ˆÅ¸ ¬¸¸¨¸š¸¸›¸úœ¸»¨¸ÄˆÅ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å œ¸©□¸¸÷¸Ã ¤¸ÿ¢ˆ¿ÅŠ¸ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸µ¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ¤¸¸¬¸¥¸ ¬¸¢Ÿ¸¢÷¸ ›¸½ ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ ¢œ¸¥¸£ 3 ,œ¸¸½®¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ ¬¸¿©¸¸½¢š¸÷¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅ¸ ¢›¸µ¸Ä¡¸ ¢¥¸¡¸¸ í¾ — ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ 31 Ÿ¸¸□¸Ä 2010 ÷¸ˆÅ ƒ›¸ ¬¸¿©¸¸½¢š¸÷¸ ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ˆÅ¸ ,›¸ºœ¸¸¥¸›¸ ˆÅ£›¸¸ í¾ —

---

[28] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

¡¸½ ¨¸¢š¸Ä÷¸ ,œ¸½®¸¸‡¿ ,¢š¸ˆÅ Ÿ¸□¸¤¸»÷¸ ¢œ¸¥¸£ 3 ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸î¸ú¡¸ ¢¬˜¸£÷¸¸ ¤¸¸½”Ä ˆÅú ¢¬œ¸€¸¢£©¸¸½¿ ˆ½Å ,›¸º¬¸¸£ Ÿ¸½¿ ž¸ú íÿ ,¸¾£ œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ œÏ˜¸¸,¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ¨¸¢£«“ œ¸¡¸Ä¨¸½®¸ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ™¥¸ ˆ½Å ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ˆÅ¸½ ž¸ú š¡¸¸›¸ Ÿ¸½¿ ¥¸½÷¸ú íÿ —

14.11.2. ¢œ¸¥¸£ 3 ¬¸¿©¸¸½š¸›¸¸½¿ Ÿ¸½¿ „›¸ œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾, □¸¸½ ¢œ¸¥¸£ 1 ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸¢©¸«’ ³œ¸ ¬¸½ ,¸¨¸©¡¸ˆÅ ›¸íì íÿ— ÷¸˜¸¸¢œ¸, ƒ¬¸ □¸¸›¸ˆÅ¸£ú ¬¸½ ¤¸¸□¸¸£ ˆ½Å œÏ¢÷¸ž¸¸¢Š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¢ˆÅ¬¸ú ¬¸¿¬˜¸¸ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸ŠÏ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸ ˆÅ¸½ ¤¸½í÷¸£ £ú¢÷¸ ¬¸½ ¬¸Ÿ¸□¸›¸½ Ÿ¸½¿ Ÿ¸™™ ¢Ÿ¸¥¸½Š¸ú — ƒ›¸ ¨¸¢š¸Ä÷¸ œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ¬¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ˆÅ¸¡¸ÄˆÅ¥¸¸œ¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ÷¸º¥¸›¸œ¸°¸½¿ ˆÅú Ÿ¸□¸¤¸»÷¸ú ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ¤¸¸□¸¸£ ,¢›¸¢©□¸÷¸÷¸¸,¸½¿ ˆÅú œ¸º›¸£¨¸¼¢î¸ ¬¸½ ¤¸□¸¸ □¸¸ ¬¸ˆ½ÅŠ¸¸ —

14.11.3. ¡¸í ›¸¸½’ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸‡ ¢ˆÅ ›¸‡ œ¸»¿□¸ú œ¸¡¸¸Äœ÷¸÷¸¸ □¸¿□¸½ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ˆÅú Š¸ƒÄ œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ,œ¸½®¸¸,¸½¿ ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ œ¸£ ¤¸¸□¸¸£ œÏ¢÷¸ž¸¸¢Š¸¡¸¸½¿ ˆÅ¸½ ,œ¸›¸¸ ¨¸¸¬÷¸¢¨¸ˆÅ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ œÏ¸½œ¸€¸ƒ¥¸ ¤¸÷¸¸ ™½›¸½ ˆÅ¸ ™¸¢¡¸÷¨¸ í¾ — ¤¸ÿˆÅ □¸¸½ □¸¸›¸ˆÅ¸£ú œÏˆÅ’ ˆÅ£½¿Š¸½ ¨¸í ƒ¬¸ „Ó½©¡¸ ˆÅ¸½ œ¸»£¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸¡¸¸Äœ÷¸ í¸½›¸ú □¸¸¢í‡ —

14.11.4. ž¸¸£÷¸ Ÿ¸½¿ ˆÅ¸¡¸Ä£÷¸ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¢›¸Ÿ›¸¢¥¸¢‰¸÷¸ ®¸½°¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ,¢÷¸¢£Æ÷¸ œÏˆÅ’úˆÅ£µ¸ ˆÅ£›¸¸ □¸¸¢í‡ À

(i) ‰¸£ú™-¢¤¸ÇÅú ¤¸íú Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£;

(ii) ÷¸º¥¸›¸ œ¸°¸½÷¸£ ‡¬¸œ¸ú¨¸ú ˆÅ¸ œÏ¸¡¸¸½□¸›¸;

(iii) œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ Ÿ¸»¥¡¸¸¿ˆÅ›¸; ÷¸˜¸¸

(iv) œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ˆÅ£µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½□¸£¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢ÇÅ¡¸¸š¸ú› ¸ (œ¸¸ƒœ¸¥¸¸ƒ›¸) ÷¸˜¸¸ Ÿ¸¸¥¸ Š¸¸½™¸Ÿ¸ú (¨¸½¡¸£í¸„¢¬¸¿Š¸) □¸¸½¢‰¸Ÿ¸

14.12 प्रकटीकरण अपेक्षाएं

निम्नलिखित खंडों में सारणी के रूप में स्तम्भ 3 के अंतर्गत प्रकटीकरण अपेक्षाएं दी गयी है अतिरिक्त परिभाषाएं तथा स्पष्टीकरण पाद टिप्पणियों में दिए गए हैं।

सारणी डीएफ - 1 : लागू किये जाने का दायरा

गुणात्मक प्रकटीकरण

(क) जिस समूह पर ढांचा लागू होता है उसमें सर्वोच्च बैंक का नाम (ख) लेखांकन तथा विनियामक प्रयोजनों के लिए समेकन के आधार में भिन्नताओं की रूपरेखा और समूह के भीतर उन संस्थाओं [29] का संक्षिप्त वर्णन जो कि i) पूर्णतः समेकित [30]हैं; ii) आनुपातिक आधार पर समेकित [31]हैं; iii) कटौती की गयी है; तथा iv) न ही समेकित हैं और न ही जिनके संबंध में कटौती की गई है (उदा. जहां निवेश जोखिम भारित हैं)
मात्रात्मक प्रकटीकरण (ग) समेकन में शामिल नहीं की गयी सभी सहायक कंपनियों में पूंजीगत अपूर्णता[32] की कुल राशि अर्थात् उनकी कटौती की गयी है तथा ऐसी अनुषंगी कंपनियों का /के नाम। (घ) बीमा कंपनियों में बैंक के कुल हित की कुल राशि जो कि जोखिम भारित[33] है । (उदा. वर्तमान बही मूल्य)। इन बीमा कंपनियों के नाम, उनके निगमन का अथवा निवासी देश, स्वामित्व हित का अनुपात तथा भिन्न होने की स्थिति में इन कंपनियों में मताधिकार का अनुपात भी दिया जाना चाहिए। इसके अलावा इस पद्धति का प्रयोग करने के बदले कटौती करने से विनायमक पूंजी पर होने वाले मात्रात्मक प्रभाव को दर्शाएं।

सारणी डीएफ - 2

[29] ¬¸¿¬˜¸¸ = œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸, ¤¸úŸ¸¸ ÷¸˜¸¸ ‚›¡¸ ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ¬¸í¸¡¸ˆÅ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿, ¨¸¸¢µ¸¢□¡¸ˆÅ ¬¸í¸¡¸ˆÅ ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸¿, ¤¸úŸ¸¸ ¢¨¸÷÷¸ú¡¸ ÷¸˜¸¸ ¨¸¸¢µ¸¢□¡¸ˆÅ ¬¸¿¬˜¸¸‚¸½¿ Ÿ¸½¿ Ÿ¸í÷¨¸œ¸»µ¸Ä ‚¥œ¸ Ÿ¸÷¸ ƒ¢Æ¨¸’ú ¢›¸¨¸½©¸ —

[30] ‚˜¸¸Ä÷¸Ã ¬¸Ÿ¸½¢ˆÅ÷¸ ¥¸½‰¸¸¿ˆÅ›¸ Ÿ¸½¿ ‚›¸º«¸¿Š¸ú ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸¿ „™¸. ‡‡¬¸ (¥¸½‰¸¸¿ˆÅ›¸ Ÿ¸¸›¸ˆÅ) 21 —

[31] ‚˜¸¸Ä÷¸Ã ¬¸Ÿ¸½¢ˆÅ÷¸ ¥¸½‰¸¸¿ˆÅ›¸ Ÿ¸½¿ ¬¸¿¡¸ºÆ÷¸ „Ô¸Ÿ¸ „™¸. ‡‡¬¸ 27.

[32] ¢¨¸¢›¸¡¸¸Ÿ¸ˆÅ œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ ‚œ¸½®¸¸ ¬¸½ ¨¸¸¬÷¸¢¨¸ˆÅ œ¸¿»□¸ú ¢□¸÷¸›¸ú ˆÅŸ¸ í¾ ¨¸í £¸¢©¸ œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ ‚œ¸»µ¸Ä÷¸¸ í¾— ˆÅ¸½ƒÄ ž¸ú ˆÅŸ¸ú ¢□¸›í½¿ ‡½¬¸ú ‚›¸º«¸¿Š¸ú ˆ¿Åœ¸¢›¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¢›¸¨¸½©¸ ˆ½Å ‚¢÷¸¢£Æ÷¸ ¬¸Ÿ¸»í ¬÷¸£ œ¸£ ‹¸’¸¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾, ˆÅ¸½ ˆºÅ¥¸ œ¸»¿□¸úŠ¸÷¸ °¸º¢’ Ÿ¸½¿ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸›¸¸ í¾—

[33] ™½‰¸½¿ œ¸¾£¸ŠÏ¸œ¸€ 3.

पूंजी ढांचा गुणात्मक प्रकटीकरण

(क) सभी पूंजीगत लिखतों विशेषतः टीयर 1 अथवा अपर टीयर II में शामिल किए जाने के लिए पात्र पूंजीगत लिखतों के मामले में उनके प्रमुख तत्वों की शर्तों से संबंधित संक्षिप्त जानकारी

मात्रात्मक प्रकटीकरण

(ख) टीयर 1 पूंजी की राशि, जिसमें निम्नलिखित का अलग प्रकटीकरण है :

- प्रदत्त शेयर पूंजी;
- प्रारक्षित निधियां;
- नवोन्मेषी लिखत;[34]
- अन्य पूंजीगत लिखत;
- टीयर 1 पूंजी से घटाई गयी राशियां जिनमें गुडविल तथा निवेश शामिल हैं

(ग) टीयर II पूंजी की कुल राशि (टीयर II पूंजी से कटौतियों को घटाकर)

(घ) अपर टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने के लिए पात्र ऋण पूंजी लिखत

- कुल बकाया राशि
- उसमें से वर्तमान वर्ष के दौरान जुटाई गयी राशि
- पूंजीगत निधियों के रूप में गणना करने के लिए पात्र राशि

(ड.) लोअर टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने के लिए पात्र अधीनस्थ ऋण

- कुल बकाया राशि
- उसमें से वर्तमान वर्ष के दौरान जुटाई गयी राशि
- पूंजीगत निधियों के रूप में गणना करने के लिए पात्र राशि

(च) पूंजी में से अन्य कटौतियां, यदि कोई हैं।

(छ) कुल पात्र पूंजी

सारणी डीएफ - 3

पूंजी पर्याप्तता

[34] ›¸¨¸¸›Ÿ¸½«¸ú ¢›¸£¿÷¸£ †µ¸ ¢¥¸‰¸÷¸ (‚˜¸¨¸¸ ¬¸Ÿ¸¸›¸ ˆÅ¸£Ä¨¸¸ƒÄ ˆ½Å ¢¥¸‡ œ¸¸°¸ ¢¨¸™½©¸ú ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆ½Å Ÿ¸º‰¡¸ ˆÅ¸¡¸¸Ä¥¸¡¸ „š¸¸£) ÷¸˜¸¸ ¢¥¸‰¸÷¸ ˆ½Å ˆÅ¸½ƒÄ ‚›¡¸ œÏˆÅ¸£Ÿ¸¬¸¡¸-¬¸Ÿ¸¡¸ œ¸£ ‚›¸ºŸ¸¢÷¸ ™ú □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸ú í¾—

गुणात्मक प्रकटीकरण (क) वर्तमान तथा भावी गतिविधियों के समर्थन के लिए अपनी पूंजी की पर्याप्तता का मूल्यांकन करने के लिए बैंक के दृष्टिकोण की संक्षिप्त चर्चा
मात्रात्मक प्रकटीकरण (ख) ऋण जोखिम के लिए पूंजीगत अपेक्षाएं • मानकीकृत दृष्टिकोण के अधीन संविभाग • प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र्स
(ग) बाज़ार जोखिम के लिए पूंजीगत अपेक्षाएं • मानकीकृत अवधि दृष्टिकोण - ब्याज दर जोखिम - विदेशी मुद्रा विनिमय जोखिम (स्वर्ण सहित) - ईक्विटी जोखिम
(घ) परिचालन जोखिम के लिए पूंजीगत अपेक्षाएं : • मूल निर्देशक दृष्टिकोण
(ङ) कुल तथा टीयर 1 पूंजी अनुपात • सर्वोच्च समेकित समूह के लिए; तथा • महत्वपूर्ण बैंक अनुषंगी कंपनियों (ढांचे को लागू किए जाने के आधार पर स्टैण्ड एलोन अथवा उप समेकित) के लिए।

14.13 जोखिम एक्सपोज़र और मूल्यांकन

बाज़ार के सहभागी किसी संस्था का मूल्यांकन करते समय बैंक के जोखिमों और उन जोखिमों का पता लगाने, उनका मापन करने, निगरानी करने तथा नियंत्रण करने के लिए बैंक द्वारा प्रयुक्त तकनीकों पर विचार करते हैं। इस खंड में कई महत्वपूर्ण बैंकिंग जोखिमों पर विचार किया गया है : ऋण जोखिम, बाज़ार जोखिम, और बैंकिंग बहियों में ब्याज दर जोखिम तथा परिचालनगत जोखिम । इस भाग में ऋण जोखिम कम करने संबंधी तथा परिसंपत्ति के प्रतिभूतीकरण संबंधी प्रकटीकरण का भी समावेश है। ये दोनों संस्था का जोखिम प्रोफाइल परिवर्तित करते हैं। विनियामक पूंजी के मूल्यांकन के लिए विभिन्न दृष्टिकोनों का उपयोग करने वाले बैंकों के लिए जहां लागू हो, अलग प्रकटीकरण का वर्णन किया गया है ।

14.14 सामान्य गुणात्मक प्रकटीकरण अपेक्षा

प्रत्येक अलग जोखिम क्षेत्र (अर्थात् ऋण, बाजार, परिचालन, बैंकिंग बही ब्याज दर जोखिम) के लिए बैंकों को अपने जोखिम प्रबंधन के उद्देश्यों और नीतियों का वर्णन करना होगा, जिसमें निम्नलिखित शामिल हो;

(i) कार्यनीतियां और प्रक्रियाएं;

(ii) संबंधित जोखिम प्रबंधन कार्य का ढांचा और गठन;

(iii) जोखिम रिपोर्टिंग और /या मापन प्रणाली का दायरा और स्वरूप;

(iv) जोखिम बचाव और/या उसे कम करने के लिए नीतियां और बचाव/कम करने वाले कारक की निरंतर कारगरता की निगरानी करने के लिए कार्यनीतियाँ और प्रक्रिया ।

ऋण जोखिम

ऋण जोखिम के सामान्य प्रकटीकरण से बाज़ार के सहभागियों को समग्र ऋण एक्सपोज़र के संबंध में जानकारी मिलती है और यह आवश्यक नहीं है कि यह विनियामक प्रयोजनों के लिए तैयार की गई जानकारी पर अनिवार्यतः आधारित हो । पूंजी मूल्यांकन तकनीकों संबंधी प्रकटीकरण, एक्सपोज़र के विशिष्ट स्वरूप, पूंजी मूल्यांकन के साधन और प्रकट की गई जानकारी की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करने हेतु डाटा संबंधी जानकारी देते हैं।

सारणी डीएफ - 4

ऋण जोखिम : सभी बैंकों के लिए सामान्य प्रकटीकरण

गुणात्मक प्रकटीकरण (क) ऋण जोखिम के संबंध में सामान्य गुणात्मक प्रकटीकरण अपेक्षा (पैरा 10.13) में निम्नलिखित शामिल हैं : • विगत देय और क्षतिग्रस्त (लेखाकंन प्रयोजनों के लिए) की परिभाषाएं; • बैंक की ऋण जोखिम प्रबंधन नीति की चर्चा;
मात्रातक प्रकटीकरण (ख) कुल सकल ऋण जोखिम एक्सपोज़र[35], निधि आधारित और निधीतर आधारित अलग से। (ग) एक्सपोज़रों का भौगोलिक वितरण[36], निधि आधारित और निधीतर आधारित अलग से • ओवरसीज • देशी (घ) एक्सपोज़रों का उद्योग[37] के प्रकार के अनुसार वितरण, निधि आधारित और निधीतर आधारित अलग से (ङ) परिसंपत्तियों का अवशिष्ट संविदागत परिपक्वता विश्लेषण,[38] (च) अनर्जक परिसंपत्तियों की राशि (सकल) • अवमानक • संदिग्ध 1 • संदिग्ध 2 • संदिग्ध 3 • हानि (छ) निवल अनर्जक परिसंपत्तियां

---

35 ,˜¸¸Ä÷¸Ã ¥¸¸Š¸» ¥¸½‰¸¸¿ˆÅ›¸ œÏµ¸¸¥¸ú ˆ½Å ,›¸º¬¸¸£ œÏ¢÷¸¬¸¿÷¸º¥¸›¸ (,¸Áœ¸€¬¸½’) ˆÅ¸½ ¢í¬¸¸¤¸ Ÿ¸½¿ ¥¸½›¸½ ˆ½Å ¤¸¸™ ,¸¾£ †µ¸ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ÷¸ˆÅ›¸úˆÅ¸½¿, „™¸í£µ¸¸˜¸Ä, ¬¸¿œ¸¸¢©¨¸ÄˆÅ ,¸¾£ ›¸½¢’¿Š¸ ˆ½Å œ¸¢£µ¸¸Ÿ¸¸½¿ ˆÅ¸½ ¢í¬¸¸¤¸ Ÿ¸½¿ ¢¥¸‡ ¤¸Š¸¾£ —

36 ,˜¸¸Ä÷¸Ã ‡‡¬¸ 17 ˆ½Å ,›¸ºœ¸¸¥¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ,œ¸›¸¸ƒÄ Š¸ƒÄ ‰¸¿” ¢£œ¸¸½¢’ôŠ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸˜¸¸ ¬¨¸ú ˆ¼Å÷¸ ,¸š¸¸£ œ¸£—

37 „Ô¸¸½Š¸¸½¿ ˆÅ¸ ¤¡¸¸¾£¸ ”ú‡¬¸¤¸ú ¢¨¸¨¸£¢µ¸¡¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸˜¸¸ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«’ ¤¡¸¸¾£½ ˆÅú íú ÷¸£í ¢™¡¸¸ □¸¸‡— ¡¸¢™ ¢ˆÅ¬¸ú ¢¨¸¢©¸«’ „Ô¸¸½Š¸ ˆÅ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ „Æ÷¸ (‰¸) ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ Š¸µ¸›¸¸ ¢ˆÅ‡ Š¸‡ ,›¸º¬¸¸£ ¬¸ˆÅ¥¸ †µ¸ ‡Æ¬¸œ¸¸½{¸£ ˆ½Å 5% ¬¸½ ,¢š¸ˆÅ í¾ ÷¸¸½ ¨¸í ,¥¸Š¸ œÏˆÅ’ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸‡—

38 ‡‡¥¸‡Ÿ¸ ¢¨¸¨¸£¢µ¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ œ¸¸½¢{¸©¸›¸ ˆÅú ¢£œ¸¸½¢’ôŠ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ „œ¸¡¸¸½Š¸ Ÿ¸½¿ ¥¸¸‡ □¸¸›¸½¨¸¸¥¸½ œ¸¢£œ¸¸Æ¨¸÷¸¸ ¤¸ÿ” ˆÅ¸ íú ¤¸ÿˆÅ „œ¸¡¸¸½Š¸ ˆÅ£½¿Š¸½—

(ज) अनर्जक परिसंपत्ति अनुपात

- सकल अग्रिमों के प्रति सकल अनर्जक परिसंपत्तियां
- निवल अग्रिमों के प्रति निवल अनर्जक परिसंपत्तियां

(झ) अनर्जक परिसंपत्त्यिों (सकल) की घट-बढ़

- प्रारंभिक शेष
- जोड़
- कटौतियां
- इति शेष

(ञ) अनर्जक परिसंपत्तियों के लिए किए गए प्रावधानों में घट-बढ़

- प्रारंभिक शेष
- संबंधित अवधि में किए गए प्रावधान
- बट्टे खाते
- अतिरिक्त प्रावधानों को निकाल देना
- इति शेष

(ट) अनर्जक निवेशों की राशि

(ठ) अनर्जक निवेशों के लिए रखे गए प्रावधानों की राशि

(ड) निवेशों पर मूल्यहृास के लिए रखे गए प्रावधानों की राशि

- प्रारंभिक शेष
- संबंधित अवधि में किए गए प्रावधान
- बट्टे खाते
- अतिरिक्त प्रावधानों को निकाल देना
- इति शेष

सारणी डीएफ - 5

ऋण जोखिम : मानकीकृत दृष्टिकोण के अधीन संविभागों के लिए प्रकटीकरण

गुणात्मक प्रकटीकरण

(क) मानकीकृत दृष्टिकोण के अधीन संविभागों के लिए :

- प्रयुक्त ऋण पात्रता निर्धारण एजेन्सियों के नाम, तथा यदि कोई परिवर्तन है तो उसके कारण;
- एक्सपोज़रों के प्रकार जिनके लिए प्रत्येक एजेन्सी का उपयोग किया गया; और
- सार्वजनिक निर्गम पात्रता निर्धारणों को बैंकिंग बही में तुलनीय परिसंपत्तियों पर अंतरित करने हेतु प्रयुक्त प्रक्रिया का वर्णन;

मात्रात्मक प्रकटीकरण

(ख) मानकीकृत दृष्टिकोण के अधीन जोखिम कम करने के बाद एक्सपोज़र[39] की राशियों के लिए, निम्नलिखित तीन प्रमुख जोखिम समूहों में बैंक की बकाया (पात्रता निर्धारण किए तथा पात्रता निर्धारण न किए) राशि तथा वे जिनकी कटौती की गयी है;

---

[39] ¬¸¸£µ¸ú 4 Ÿ¸½¿ œï¨Å'ú¨Å£µ¸ ˜½Å ¢¥¸‡ ¡¸˜¸¸ œ¸¢£ž¸¸¢«¸÷¸

• 100% जोखिम भार से नीचे • 100% जोखिम भार • 100% से अधिक जोखिम भार • कटौती की गई

सारणी डीएफ - 6

ऋण जोखिम कम करना : मानकीकृत दृष्टिकोणों के लिए प्रकटीकरण[40]

गुणात्मक प्रकटीकरण
(क) ऋण जोखिम कम करने के संबंध में सामान्य गुणात्मक प्रकटीकरण अपेक्षा (पैरा 10.13) में निम्नलिखित शामिल हैं : • ***बैंक किस हद तक तुलन पत्र और तुलनपत्रेतर नेटिंग का प्रयोग करते हैं उसके संबंध में नीतियां और प्रक्रियाएं*** • संपार्श्विक मूल्यांकन और प्रबंधन के लिए नीतियां और प्रक्रियाएं; • बैंक द्वारा ली गई संपार्श्विक के मुख्य प्रकारों का वर्णन; • गारंटीकर्ता काउंटर पार्टी के मुख्य प्रकार और उनकी विश्वसनीयता; और • जोखिम कम करने हेतु किए गए उपायों में (बाज़ार या ऋण) जोखिम संकेंद्रणों के संबंध में जानकारी
मात्रात्मक प्रकटीकरण *(ख) अलग से प्रकट किये गये प्रत्येक ऋण जोखिम पोर्टफोलियो के लिए कुल एक्सपोज़र (जहां लागू हो वहां तुलन पत्र या तुलन पत्रेतर नेटिंग के बाद) जिसे हेयरकट लागू करने के बाद पात्र वित्तीय संपार्श्विक द्वारा कवर किया गया हो ।* *(ग) अलग से प्रकट किये गये प्रत्येक पोर्टफोलियो के लिए कुल एक्सपोज़र (जहां लागू हो वहां तुलन पत्र या तुलनपत्रेतर नेटिंग के बाद) जो गारंटी/ऋण डेरिवेटिव (जहां भारतीय रिज़र्व बैंक की विनिर्दिष्ट अनुमति हो)द्वारा कवर हो*

सारणी डीएफ - 7[41]

प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र : मानकीकृत विधि के लिए प्रकटीकरण

गुणात्मक	***(क)***	प्रतिभूतिकरण के संबंध में सामान्य गुणात्म्क प्रकटीकरण जिसमें

[40] ˆÅŸ¸-¬¸½-ˆÅŸ¸, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ƒ¬¸ ¸¿¸½ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ œ¸»¿¸ú ˆÅú ,¸¨¸©¡¸ˆÅ÷¸¸‡¿ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å œÏ¡¸¸½¸›¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸ œÏ¸œ÷¸ †µ¸ ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½ ¨¸¸¥¸½ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ƒ¬¸ ¬¸¸£µ¸ú Ÿ¸½¿ œÏˆÅ'úˆÅ£µ¸ ™½›¸½ í¸½¿Š¸½— ¸í¸¿ ¬¸¿Š¸÷¸ í¸½, ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½, ¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅŸ¸ ˆÅ£›¸½¨¸¸¥¸½ „›¸ ˆÅ¸£ˆÅ¸½¿ ˆ½Å ¤¸¸£½ Ÿ¸½¿ ,¸¾£ ¸¸›¸ˆÅ¸£ú ™½›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ œÏ¸½÷¬¸¸¢í÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ ¸¸÷¸¸ í¾ ¢¸›í½¿ „¬¸ œÏ¡¸¸½¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ,¢ž¸¢›¸š¸¸Ä¢£÷¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾—

[41] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£ú 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

प्रकटीकरण		निम्नलिखित की चर्चा हो : • प्रतिभूतिकरण गतिविधि के संबंध में बैंक का उद्देश्य,किस हद तक ये गतिविधियां आधारभूत प्रतिभूतिकृत एक्सपोज़र के ऋण जोखिम को बैंक से दूसरी संस्थाओं को अंतरित करती हैं । • प्रतिभूतिकृत आस्तियों में निहित अन्य जोखिम (उदाहरण के लिए चलनिधि जोखिम) की प्रकृति • प्रतिभूतिकरण प्रक्रिया में बैंक की विभिन्न भूमिका (उदाहरण के लिए, प्रवर्तक, निवेशक, सेवा प्रदाता, ऋण संवर्धन प्रदाता, चलनिधि प्रदाता, स्वैप प्रदाता@, सुरक्षा प्रदाता# तथा प्रत्येक भूमिका में बैंक किस हद तक शामिल है । • प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के ऋण और बाजार जोखिम में परिवर्तन की निगरानी करने के लिए स्थापित प्रणाली का वर्णन (उदाहरण के लिए, आधारभूत आस्तियों का उतार-चढ़ाव किस प्रकार प्रतिभूतिकरण एक्सपोजर को प्रभावित करता है, जैसा कि एनसीएएफ पर 1 जुलाई 2009 के मास्टर परिपत्र के पैरा 5.16.1 में परिभाषित किया गया है) • प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के माध्यम से धारित जोखिम को कम करने के लिए ऋण जोखिम कम करने वाले तत्वों के प्रयोग से संबंधित बैंक की नीति का वर्णन @ यदि विनियामक नियमों के अंतर्गत अनुमति दी गयी हो तो कोई बैंक ब्याज दर/मुद्रा जोखिम को कम करने के लिए ब्याज दर स्वैप या मुद्रा स्वैप के रूप में प्रतिभूतिकरण संरचना को समर्थन दे सकता है । # यदि विनियामक नियमों के अंतर्गत अनुमति दी गयी हो तो कोई बैंक गारंटी, ऋण डेरिवेटिव या अन्य समान उत्पाद के माध्यम से किसी प्रतिभूतिकरण लेनदेन को ऋण सुरक्षा प्रदान कर सकता है ।
	(ख)	**प्रतिभूतिकरण गतिविधियों के लिए बैंक की लेखांकन नीतियों का संक्षेप, जिनमें निम्नलिखित सूचना भी हो :**
		• क्या लेनदेन बिक्री है या वित्तपोषण • धारित या खरीदी गयी स्थितियों (पोजीशन) के मूल्यांकन में प्रयुक्त विधि और मुख्य अवधारणाएं (इनपुट सहित) • पिछली अवधि की तुलना में विधियों और मुख्य अवधारणाओं में परिवर्तन और उन परिवर्तनों का प्रभाव • यदि किसी व्यवस्था के अंतर्गत प्रतिभूतिकृत आस्तियों को वित्तीय समर्थन देने की बैंक से अपेक्षा की जाती है तो तुलन पत्र में देयता में उसे दर्शाने संबंधी नीति
	(ग)	बैंकिंग बही में प्रतिभूतिकरण के लिए प्रयुक्त ईसीएआई के नाम तथा प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के प्रकार जिनके लिए प्रत्येक एजेंसी की सहायता ली गयी है ।

मात्रात्मक प्रकटीकरण बैंकिंग बही	(घ)	बैंक द्वारा प्रतिभूतिकृत एक्सपोज़र कीकुल राशि
	(ङ)	एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार (उदाहरण केलिए क्रेडिट कार्ड, आवास ऋण, वाहन ऋण आदि आधारभूत प्रतिभूति के ब्यौर सहित) वर्तमान अवधि के दौरान बैंक द्वारा मान्य प्रतिभूतिकृत हानि एक्सपोज़र के लिए
	(च)	एक वर्ष के भीतर प्रतिभूतिकृत की जाने वाली आस्तियों की राशि
	(छ)	('छ') में से प्रतिभूतिकरण के पहले एक वर्ष के भीतर ओरिजिनेट होने वाली आस्तियों की राशि
	(ज)	प्रतिभूतिकृत एक्सपोज़र (एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार) की कुल राशि तथा एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार लाभ हानि जिसे नहीं दर्शाया गया है ।
	(झ)	निम्नलिखित की कुल राशि : • धारित या खरीदा गया तुलन पत्र प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र, जो एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार वर्गीकृत हो । • एक्सपोज़र के प्रका र के अनुसार वर्गीकृत तुलनपत्रेतर प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र
	(ञ)	• पूरी तरह घटाये गये धारित अथवा खरीदे गये प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र की कुल राशि तथा उससे जुड़ा पूंजी प्रभार, जिसका एक्सपोज़र के अनुसार वर्गीकरण किया गया हो और प्रत्येक विनियामक पूंजी विधि के लिए विभिन्न जोखिम भार बैंडों में भी वर्गीकरण किया गया हो । टीयर 1 पूंजी से एक्सपोज़र, कुल पूंजी से घटाये गये ऋण संवर्द्धक आई/ओ तथा कुल पूंजी से घटाये गये अन्य एक्सपोज़र (एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार)
मात्रात्मक प्रकटीकरण ट्रेडिंग बही		
	(ट)	बैंक द्वारा प्रतिभूतिकृत एक्सपोज़र की कुल राशि जिसके लिए बैंक ने कुछ एक्सपोज़र धारित किया है और जो बाजार जोखिम विधि के अधीन है -- एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार विवरण
	(ठ)	निम्नलिखित की कुल राशि :

		• धारित या खरीदा गया तुलन पत्र प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र, जो एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार वर्गीकृत हो । • एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार वर्गीकृत तुलनपत्रेतर प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र
	(ड)	निम्नलिखित के लिए अलग-अलग धारित या खरीदे गये प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र की कुल राशि : • धारित या खरीदे गये प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र जो विनिर्दिष्ट जोखिम के लिए समग्र जोखिम माप के अधीन हैं; और • प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र जो विनिर्दिष्ट जोखिम के लिए प्रतिभूतिकरण फ्रेम वर्क के अधीन हैं और जिन्हें विभिन्न जोखिम भार बैंडों में वर्गीकृत किया गया है ।
	(ढ)	निम्नलिखित की कुल राशि : • उन प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र के लिए पूंजी अपेक्षा, जो प्रतिभूतिकरण फ्रेमवर्क के अधीन हैं और जिन्हें विभिन्न जोखिम भार बैंडों में वर्गीकृत किया गया है । • प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र जिन्हें पूरी तरह टीयर I पूंजी से घटाया गया है, कुल पूंजी से घटये गये ऋण संवर्धक आई/ओ तथा कुल पूंजी से घटाये गये अन्य एक्सपोज़र (एक्सपोज़र के प्रकार के अनुसार)

सारणी - डीएफ - 8

ट्रेडिंग बही में बाज़ार जोखिम

गुणात्मक प्रकटीकरण (क) मानकीकृत दृष्टिकोण द्वारा कवर किए गए संविभागों सहित बाज़ार जोखिम के लिए सामान्य गुणात्मक प्रकटीकरण अपेक्षा (पैरा 10.13)
मात्रात्मक प्रकटीकरण (ख) निम्नलिखित के लिए पूंजी अपेक्षाएं • ब्याज दर जोखिम; • ईक्विटी पोजिशन जोखिम; और • विदेशी मुद्रा जोखिम

सारणी डीएफ - 9
परिचालन जोखिम

गुणात्मक प्रकटीकरण
• सामान्य गुणात्मक प्रकटीकरण अपेक्षा (पैरा 10.13) के अतिरिक्त, परिचालनगत जोखिम पूंजी मूल्यांकन दृष्टिकोण जिसके (जिनके) लिए बैंक पात्र है।

सारणी डीएफ - 10
बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम (आइआरआरबीबी)

गुणात्मक प्रकटीकरण
(क) आइआरआरबीबी के स्वरूप तथा ऋण चुकौतियों और परिपक्वता रहित जमाराशियों के व्यवहार के संबंध में धारणाओं सहित महत्वपूर्ण धारणाओं, और आइआरआरबी के मापन की बारंबारता के साथ सामान्य गुणात्मक प्रकटीकरण अपेक्षा (पैरा 10.13)
मात्रात्मक प्रकटीकरण
(ख) आइआरआरबी का मापन करने की प्रबंध तंत्र की पद्धति के अनुसार दरों के अत्यधिक उतार-चढ़ाव के झटकों के लिए अर्जन और आर्थिक मूल्य (या प्रबंध तंत्र द्वारा प्रयुक्त संगत मापन) में वृद्धि (गिरावट) जो मुद्रावार वर्गीकृत हो (जहां आवर्त कुल आवर्त के 5 प्रतिशत से अधिक है)।

अनुबंध - 1
[देखें पैरा 2.3(ii)]

. . . . .को समाप्त तिमाही के लिए नये पूंजी पर्याप्तता ढाँचे के कार्यान्वयन में
<u>प्रगति की सूचना देने वाली समांतर प्रयोग रिपोर्ट का फार्मेट</u>

<u>बैंक का नाम</u> : . . . .

<u>स्तम्भ I के पहलू</u>

1.1 पूंजी पर्याप्तता

						(करोड़ रुपये)
1.1.1	जोखिम भारित आस्तियाँ		बासल - I		बासल - II	
			बही मूल्य	जोखिम भारित मूल्य	बही मूल्य	जोखिम भारित मूल्य
	ऋण जोखिम के लिए जोखिम भारित आस्तियाँ					
	क)	<u>तुलन पत्र की मदों पर</u>				

	i.	ऋण और निवेश संविभाग				
		• मानक				
		• अनर्जक आस्तियाँ /अनर्जक निवेश				
	ii.	अन्य आस्तियाँ				
	ख)	<u>तुलनपत्रेतर मदें</u> :				
	i.	बाज़ार से संबद्ध				
	ii.	बाज़ार से असंबद्ध				
	बाज़ार जोखिम के लिए जोखिम भारित आस्तियाँ					
	परिचालन जोखिम के लिए जोखिम भारित आस्तियाँ					
	कुल पूंजी					
1.1.2		टीयर I पूंजी				
1.1.3		टीयर II पूंजी				
1.1.4						
1.1.5	जोखिम भारित आस्ति की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर)					

1.2 एक्सपोज़रों का श्रेणी निर्धारण

क्र. सं.	एक्सपोज़र का प्रकार		राशि	कुल ऋण की तुलना में ऋण राशि का प्रतिशत
1.2.1	**कार्पोरेट ऋण (एसएमई को छोड़कर)**			
	क)	श्रेणीकृत		
	ख)	अश्रेणीकृत		
1.2.2	**कार्पोरेट ऋण (एसएमई)**			
	क)	श्रेणीकृत		
	ख)	अश्रेणीकृत		
1.2.3	**प्रतिभूतीकृत एक्सपोज़र**			लागू नहीं
	क)	श्रेणीकृत		
	ख)	अश्रेणीकृत		

<u>टिप्पणी</u> : श्रेणीकृत के अंतर्गत जारीकर्ता के श्रेणी निर्धारण/ उसी जारीकर्ता के अन्य श्रेणी निर्धारित लिखतों के श्रेणी निर्धारण के आधार पर प्राप्त श्रेणी निर्धारण शामिल हैं।

1.3 सीआरएम तकनीकों का प्रयोग - प्रयुक्त सीआरएम की सीमा

क्रमांक	पात्र वित्तीय	प्रयुक्त	कुल	हेयरकट के	कुल जोखिम	वित्तीय संपार्श्विक के

	संपार्श्विक	वित्तीय संपार्श्विकों की राशि	राशि का %	बाद वित्तीय संपार्श्विक की निवल राशि	भारित आस्तियों की तुलना में वित्तीय संपार्श्विक का प्रतिशत	आधार पर प्राप्त पूंजी राहत (हेयरकट के बाद वित्तीय संपार्श्विक की निवल राशि का 9%)
1.3.1	नकदी					
1.3.2	स्वर्ण					
1.3.3	सरकारी प्रतिभूतियां					
1.3.4	किसान विकास पत्र/एनएससी					
1.3.5	भारतीय जीवन बीमा पालिसी					
1.3.6	ऋण प्रतिभूतियां					
	(i) श्रेणीकृत					
	(ii) अश्रेणीकृत					
1.3.7	म्यूचुअल फंड के यूनिट					

1.4 संपार्श्विक जोखिम प्रबंधन

	सरकारी प्रतिभूतियां	ऋण प्रतिभूतियां	स्वर्ण	एलआइसी/ एनएससी/ केवीपी	म्यूचुअल फंड के यूनिट
वित्तीय संपार्श्विक के मूल्यांकन की बारंबारता					

1.4.1 संपार्श्विकों के स्वरूप के कारण क्या कोई ऋण संकेंद्रण पाया गया ?

1.4.2 क्या वित्तीय संपार्श्विक में होनेवाले बाजार चलनिधि जोखिम के संबंध में बैंक ने कोई मूल्यांकन किया है ? उसे स्तंभ II के अंतर्गत पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन में कैसे शामिल किया गया है ?

1.4.3 संपार्श्विकों से होनेवाले परिचालन जोखिम विशेष रूप से विधिक जोखिम के संबंध में बैंक का क्या मूल्यांकन है (उदाहरण के लिए अपर्याप्त/अधूरे प्रलेख के कारण) ।

1.4.4 क्या बैंक अपनी किसी उधारकर्ता कंपनी या उनकी सहयोगी संस्था द्वारा जारी प्रतिभूतियों को वित्तीय संपार्श्विक के रूप में रख रहा है ? यदि हां, तो निम्नलिखित सारणी में ऐसे वित्तीय संपार्श्विक का मूल्य दिया जाए ।

नवीनतम बाजार मूल्य	हेयरकट लागू करने के बाद मूल्य

1.4.5 क्या बैंक के एक्सपोज़र के लिए कोई संपार्श्विक प्रतिभूति अभिरक्षक के पास रखी गयी है ? क्या बैंक यह सुनिश्चित करता है कि अभिरक्षक इन प्रतिभूतियों को अपनी प्रतिभूतियों से अलग रखता है ?

1.4.6 एक्सपोज़र की वह राशि जो तुलनपत्र नेटिंग के अधीन हो ।

1.4.7 पात्र गैर-वित्तीय संपार्श्विकों के ब्योरे

	बासल - I	**बासल - II**
	भौतिक संपार्श्विक की जमानत वाली अनर्जक आस्तियों की राशि (ऐसे मामलों में जहां रखे गये प्रावधान की राशि बकाये का कम-से-कम 15% है)	अनर्जक आस्तियों के सुरक्षित अंश की राशि । इसमें केवल भौतिक संपार्श्विक को शामिल किया जाएगा, जो 27 अप्रैल 2007 के हमारे परिपत्र के पैरा 5.12.4 के अनुसार पात्र है ।

स्तंभ II पहलू

2.1 आइसीएएपी का अस्तित्व

2.1.1 क्या बैंक ने बोर्ड के अनुमोदन से आइसीएएपी बनाया है ?

2.1.2 यदि हां तो उसके मुख्य अंग क्या हैं और किन जोखिमों को शामिल किया गया है ?

2.1.3 क्या आइसीएएपी के परिणामों को आवधिक रूप से बोर्ड और भारतीय रिज़र्व बैंक को भेजा जाता है ? बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंध तंत्र द्वारा आइसीएएपी के परिणामों की समीक्षा की आवधिकता क्या है ?

2.2 बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंध तंत्र द्वारा पर्यवेक्षण

2.2.1 क्या बैंक में जोखिम प्रबंधन समिति है ? क्या यह बोर्ड स्तरीय समिति है ?

2.2.2 यदि हां तो कृपया जोखिम प्रबंधन समिति का गठन तथा उसके सदस्यों की योग्यता और अनुभव बताएं ।

2.2.3 पूंजी स्थिति और बैंक की भावी पूंजी आवश्यकताओं की समीक्षा करनेवाली रिपोर्टों को बोर्ड में प्रस्तुत करने की आवधिकता

2.2.4 क्या बैंक मध्यावधि में पूंजी आवश्यकताओं का अनुमान करता है ? यदि हां, तो ऐसे अनुमान के लिए किन मानदंडों का प्रयोग किया जाता है ?

2.2.5 क्या पूंजी योजना की आवधिक रूप से समीक्षा की जाती है ? यदि हां, तो आवधिकता की क्या बारंबारता है ? कृपया पिछली समीक्षा की तारीख बताएं ।

2.2.6 क्या बैंक ने एक अलग जोखिम प्रबंधन विभाग स्थापित किया है ? यदि हां, तो मोटे तौर पर उसका गठन बताएं ।

2.2.7 क्या बैंक ने एक लिखित ब्योरेवार नीति और प्रक्रिया निर्धारित की है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बैंक सभी महत्वपूर्ण जोखिमों की पहचान करता है, उसकी माप करता है तथा बोर्ड को सूचित करता है ?

2.2.8 क्या बैंक में ऐसी कोई प्रक्रिया है जिससे उसकी पूंजी आवश्यकताओं को जोखिम से जोड़ा जा सके ।

2.2.9 क्या आइसीएएपी स्वतंत्र वैधीकरण प्रक्रिया के अधीन है ? यदि हां तो कौन-सी एजेंसी ऐसा वैधीकरण संचालित करती है - बैंक के भीतर या बैंक के बाहर ? क्या वैधीकरण को आंतरिक लेखा परीक्षा के दायरे में लाया गया है ?

2.3 आइसीएएपी के अंतर्गत विनिर्दिष्ट जोखिमों का मूल्यांकन

2.3.1 **ऋण जोखिम**

क. क्या बैंक ने अपने ऋण संविभाग में ऋण संकेंद्रण जोखिम जैसे अतिरिक्त ऋण जोखिमों की पहचान की है ?

ख. क्या बैंक यह सोचता है कि उसका ऋण संविभाग अच्छी तरह विविधीकृत है ?

ग. क्या बैंक अपने गैर-खुदरा संविभाग में संकेंद्रण जोखिम के स्तर का मूल्यांकन एकल उधारकर्ता और समूह उधारकर्ताओं के एक्सपोज़रों की विनियामक सीमा के भीतर विभिन्न बांडों में ऐसे एक्सपोज़रों के विवरण को विश्लेषित करते हुए करता है उदाहरण के लिए, पूंजी निधि का 5%, पूंजी निधि का 5-10%, पूंजी निधि का 10-15% आदि

घ. शीर्षस्थ 20 एकल उधारकर्ता और शीर्षस्थ 20 उधारकर्ता समूह के बकाया ऋण

राशि	कुल ऋण का %

ङ. ऋण संविभाग का कितना प्रतिशत बैंक की आंतरिक श्रेणी निर्धारण प्रणाली के अंतर्गत आता है ?

2.3.2 परिचालन जोखिम

क. क्या बैंक ने अपने परिचालन जोखिम एक्सपोज़र के प्रबंधन के लिए कोई प्रणाली विकसित की है?

ख. क्या बैंक यह मानता है कि बीआइए के अनुसार रखी गयी पूंजी बैंक के परिचालन जोखिम के स्तर के लिए पर्याप्त है ?

ग. क्या बैंक ने परिचालन जोखिम को बैंक के बाहर अंतरित करने की कोई रणनीति बनायी है, उदाहरण के लिए बीमा के माध्यम से ?

घ. बैंक के विभिन्न कारोबार और परिचालन रणनीति को देखते हुए वर्तमान में बैंक के लिए परिचालन जोखिम के पांच सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत बताएं ।

2.3.3 बाजार जोखिम

क. क्या बैंक अपने किसी बाजार जोखिम एक्सपोज़र का प्रबंधन करने के लिए VaR (जोखिम पर मूल्य) का प्रयोग करता है ? यदि हां, तो ऐसे एक्सपोज़रों का नाम बताएं ?

ख. जहां भी VaR माप का प्रयोग किया जाता है क्या वहां उसके पूरक के रूप में दबाव परीक्षण भी किया जाता है ?

ग. यदि हां तो कृपया बताएं कि पिछली तिमाही के दौरान किन क्षेत्रों पर दबाव परीक्षण किया गया ?

घ. क्या दबाव परीक्षण अभ्यास के स्वतंत्र वैधीकरण की कोई प्रणाली है ? यदि हां, तो यह किसके द्वारा किया जाता है ?

2.3.4 बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम

क. क्या बैंक बैंकिंग बही में ब्याज जोखिम के प्रति अपने एक्सपोज़र का मूल्यांकन करता है ?

ख. यदि हां, तो क्या बैंक ब्याज दरों में 200 आधार अंकों के परिवर्तन से ईक्विटी के बाज़ार मूल्य में संभावित गिरावट की गणना करता है? यदि हाँ, तो कृपया बताएँ कि पिछली तिमाही की समाप्ति में ऐसे आधात का अनुमानित प्रभाव क्या था ?

2.3.5 चलनिधि जोखिम

क. बैंक अपने चलनिधि जोखिम एक्सपोज़र का मूल्यांकन कैसे करता है? क्या वह विनिर्दिष्ट रूप से बाज़ार निधीयन जोखिम और बाजार नकदीकरण जोखिम का अनुमान लगाता है?

ख. बैंक में चलनिधि जोखिम की निगरानी और प्रबंधन करने के लिए किस प्राधिकारी / हस्ती को नामित किया गया है? कृपया ब्योरे दें।

ग. क्या बैंक में चलनिधि जोखिम के लिए पूंजी के आंतरिक निर्धारण की कोई प्रणाली है ? यदि हाँ, तो संक्षेप में वर्णन करें ।

घ. बैंक द्वारा अपने चलनिधि जोखिम को नियंत्रित करने के लिए उठाये गये पाँच महत्वपूर्ण कदम कौन-से हैं?

ङ सबसे बड़े 20 जमाकर्ताओं की बड़ी जमाराशियों की कुल राशि तथा कुल जमाराशियों में इन जमाराशियों का प्रतिशत।

2.3.6 ऐसे जोखिम जिन्हें मात्रा में व्यक्त नहीं किया जा सकता

प्रतिष्ठा जोखिम और रणनीतिगत जोखिम जैसे गैर-मात्रात्मक जोखिमों के मूल्यांकन और नियंत्रण की क्या प्रणाली है ?

2.4 एमआइएस और लेखा परीक्षा

2.4.1 कृपया विभिन्न जोखिमों में एक्सपोज़र की निगरानी करने के लिए बैंक द्वारा तैयार की जानेवाली रिपोर्टों के नाम और उनकी संक्षिप्त विषय-वस्तु बताएँ तथा यह भी बताएँ कि किस अंतिम प्राधिकारी को ये रिपोर्टें प्रस्तुत की जाती हैं? कृपया इस संबंध में अलग शीट संलग्न करें।

2.4.2 क्या बाह्य लेखापरीक्षक बैंक के आइसीएएपी और अन्य जोखिम प्रबंधन रिपोर्टों की जाँच /समीक्षा करते हैं? क्या ऐसी रिपोर्टें सूचना के लिए लेखा परीक्षा समिति /आरएमसी /बोर्ड को प्रस्तुत की जाती हैं।

2.4.3 क्या आंतरिक लेखा परीक्षा में जोखिम प्रबंधन और पूंजी पर्याप्तता पर प्रस्तुत एमआइएस रिपोर्टों की परिशुद्धता की जाँच की जाती है? क्या बोर्ड को दबाव परीक्षण के परिणाम प्रस्तुत किये जाते हैं ?

2.4.4 क्या बैंक के पास मानकीकृत दृष्टिकोण के कार्यान्वयन और आइसीएएपी को समर्थन देने के लिए पर्याप्त एमआइएस, कंप्यूटरीकरण का स्तर और नेटवर्किंग है? यदि नहीं, तो उसे प्राप्त करने के लिए क्या योजनाएँ और लक्ष्य /निर्धारित अवधि (डेडलाइन) हैं ?

2.4.5 कृपया उपर्युक्त के संबंध में पायी गयी प्रमुख कमियों को बताएँ ।

2.4.6 कृपया बताएँ कि उपर्युक्त कमियों को दूर करने के लिए तिमाही के दौरान क्या कदम उठाये गये।

2.5 बैंक द्वारा मूल्यांकित अतिरिक्त पूंजी अपेक्षा के ब्योरे

<table>
<tr><th rowspan="2">क्रमांक</th><th rowspan="2" colspan="2">जोखिम का प्रकार</th><th colspan="2">मूल्यांकित पूंजी वृद्धि</th></tr>
<tr><th>राशि</th><th>सीआरएआर का प्रतिशत</th></tr>
<tr><td>2.5.1</td><td colspan="2">ऋण संकेंद्रण जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.2</td><td colspan="2">चलनिधि जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.3</td><td colspan="2">निपटान जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.4</td><td colspan="2">प्रतिष्ठा जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.5</td><td colspan="2">रणनीतिगत जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.6</td><td colspan="2">ऋण जोखिम के कम आकलन का जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.7</td><td colspan="2">मॉडेल जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.8</td><td colspan="2">ऋण जोखिम कम करनेवाले तत्वों की कमजोरी का जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.9</td><td colspan="2">आइआरआर बीबी</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.5.10</td><td colspan="2">कोई और जोखिम ः</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td rowspan="2">2.5.11</td><td>(i)
(ii)</td><td>मात्रा में व्यक्त करने योग्य
मात्रा में व्यक्त नहीं करने योग्य</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">स्तंभ-I के अंतर्गत पहले ही शामिल किये गये जोखिमों के संबंध में</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>(क)</td><td>ऋण जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>(ख)</td><td>बाजार जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>(ग)</td><td>परिचालन जोखिम</td><td></td><td></td></tr>
</table>

2.6 दबाव परीक्षण

क. क्या बैंक के पास बोर्ड द्वारा अनुमोदित दबाव परीक्षण प्रणाली है ? दबाव परीक्षण प्रणाली की समीक्षा की आवधिकता क्या है ?

ख. दबाव परीक्षण प्रणाली के अंतर्गत किन जोखिमों को शामिल किया गया है ?

ग. कितने अंतराल पर दबाव परीक्षरण किया जाता है तथा उसके परिणामों की बैंक के बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंध तंत्र द्वारा समीक्षा की जाती है ?

घ. क्या पिछले एक वर्ष में दबाव सहनशीलता स्तरों में कोई उल्लंघन हुआ है? यदि हाँ तो बैंक ने कौन-से प्रतिकारात्मक उपाय किये हैं ?

ङ. दबाव परीक्षण और उनके निष्कर्षों के वैधीकरण /पुष्टीकरण की कोई प्रणाली है ।

2.7 कौशल विकास के लिए उठाये गये हुए कदम

बैंक बासल II ढाँचे के सहज कार्यान्वियन के लिए अपेक्षित कौशल और विशेषज्ञता की दृष्टि से अपने मानव संसाधन की पर्याप्तता का मूल्यांकन कैसे करता है। कृपया बैंक द्वारा अपनायी गयी मानव संसाधन विकास नीति तथा तिमाही के दौरान कौशल विकास के लिए उठाये गये प्रमुख कदम बतायें ।

2.8 विविध

क. प्रकटीकरण के संबंध में बोर्ड अनुमोदित नीति क्या है ?

ख. नये पूंजी पर्याप्तता ढाँचे के अनुसार गणना की गयी सीआरएआर स्थिति के वैधीकरण /पुष्टि के लिए कौन-सी प्रणाली स्थापित है ?

ग. इन वैधीकरण अभ्यासों के आकलन /निष्कर्ष /सिफारिशें क्या हैं ?

अनुबंध - 2

[(देखें पैरा 4.2.1(iii)]

टीयर 1 पूंजी के रूप में शामिल किए जाने हेतु नवोन्मेषी बेमीयादी
ऋण लिखत पर लागू शर्तें

नवोन्मेषी निरंतर ऋण लिखतों (नवोन्मेषी लिखत), जो बांडों या डिबेंचरों के रूप में भारतीय बैंक जारी कर सकते हैं, को पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन के लिए टीयर 1 पूंजी के रूप में शामिल किए जाने के लिए पात्र बनने हेतु निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति करना चाहिए :

1. भारतीय रुपयों में नवोन्मेषी लिखतों को जारी करने की शर्तें

i) *राशि :* नवोन्मेषी लिखतों द्वारा जुटाई जानेवाली राशि बैंकों के निदेशक मंडल द्वारा निर्धारित की जाए।

ii) *सीमाएं :* बैंक द्वारा नवोन्मेषी लिखतों के माध्यम से प्राप्त की गई कुल राशि कुल टीयर I पूंजी के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए । पिछले वित्त वर्ष के 31 मार्च की स्थिति के अनुसार टीयर I पूंजी की राशि के संदर्भ में पैरा 4.4 के अनुसार गुडविल, डीटीए तथा अन्य अमूर्त आस्तियों को घटाकर, लेकिन निवेशों को घटाने से पहले पात्र राशि की गणना की जाएगी । उपर्युक्त सीमा से अधिक नवोन्मेषी लिखत टीयर II के अंतर्गत शामिल करने के पात्र होंगे जो टीयर II पूंजी के लिए निर्धारित सीमाओं के अधीन होंगे । तथापि, निवेशकों के अधिकार तथा दायित्व में कोई परिवर्तन नहीं होगा ।

iii) *परिपक्वता अवधि :* नवोन्मेषकारी लिखत निरंतर बने रहेंगे ।

iv) *ब्याज दर :* निवेशकों को देय ब्याज दर नियत दर या बाज़ार द्वारा निर्धारित रुपया ब्याज बेंचमार्क दर से संबद्ध अस्थायी दर पर होगी ।

v) *विकल्प:* नवोन्मेषी लिखतों को 'पुट ऑप्शन' के साथ जारी नहीं किया जाएगा । तथापि बैंक 'कॉल ऑप्शन' के साथ लिखत जारी कर सकते हैं बशर्ते निम्नलिखित शर्तों में से प्रत्येक का सख्ती से अनुपालन हो :

(क) लिखत कम-से-कम दस वर्षों तक चलने के बाद ही कॉल ऑप्शन का प्रयोग किया जाए; तथा

(ख) रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) की पूर्वानुमति से ही कॉल ऑप्शन का प्रयोग किया जाए । कॉल ऑप्शन का प्रयोग करने के लिए प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करते समय रिज़र्व बैंक, अन्य बातों के

साथ-साथ, कॉल ऑप्शन का प्रयोग करते समय और कॉल ऑप्शन प्रयोग करने के बाद, बैंक की सीआरएआर स्थिति को ध्यान में रखेगा ।

vi) *स्टेप-अप ऑप्शन*: जारीकर्ता बैंक स्टेप-अप ऑप्शन का प्रयोग कर सकते हैं जो कि लिखत की पूर्ण अवधि के दौरान सिर्फ एक बार जारी होने की तारीख से दस वर्ष हो जाने बाद, कॉल ऑप्शन के साथ प्रयोग कर सकते हैं । स्टेप-अप 100 बीपीएस से अधिक नहीं होना चाहिए । स्टेप-अप की सीमाएं जारीकर्ता बैंक के ऋण की संपूर्ण लागत (ऑल इन कॉस्ट) पर लागू होंगी ।

vii) *लॉक-इन शर्त* :

(क) नवोन्मेषी लिखत लॉक-इन शर्त पर होंगे जिसके अनुसार जारीकर्ता बैंक को ब्याज की देयता नहीं होगी, यदि

i) बैंक का सीआरएआर, रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित विनियामक अपेक्षाओं से कम है; अथवा

ii) ऐसे भुगतान के परिणामस्वरूप बैंक का सीआरएआर कम हो जाए या रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित विनियामक अपेक्षाओं से कम हो जाए ।

(ख) तथापि, बैंक, रिज़र्व बैंक के अनुमोदन से ब्याज का भुगतान कर सकते हैं, जब ऐसे भुगतान से निवल हानि हो या निवल हानि में वृद्धि हो बशर्ते सीआरएआर विनियामक मानदंड से अधिक हो ।

(ग) ब्याज संचयी नहीं होगा ।

(घ) बैंकों द्वारा लॉक-इन शर्त का प्रयोग करने के हर मौके पर जारीकर्ता बैंक को बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग और बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई के प्रभारी मुख्य महाप्रबंधकों को सूचित करना चाहिए ।

viii) *वरिष्ठता का दावा*: नवोन्मेषी लिखतों में निवेशकों के दावे निम्नलिखित होंगे :

क) इक्विटी शेयरों मे निवेशकों के दावों से वरिष्ठ; तथा

ख) अन्य सभी ऋणकर्ताओं के दावों से अधीनस्थ

ix) *डिस्काउंट* : नवोन्मेषी लिखतों को पूंजी पर्याप्तता उद्देश्यों के लिए उत्तरोत्तर डिस्काउंट नहीं दिया जाएगा क्योंकि ये निरंतर हैं ।

x) *अन्य शर्तें*

क) नवोन्मेषी लिखत पूर्णतः भुगतान किए गए, अप्रतिभूतित और प्रतिबंधित शर्तें रहित होना चाहिए ।

ख) भारतीय रुपयों में जारी नवोन्मेषी लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा किए गए निवेश, विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा कंपनी ऋण लिखतों में निवेश के लिए तयशुदा रुपया मूल्यांकित कंपनी ऋण की बाह्य वाणिज्यिक उधार (इसीबी) सीमा (वर्तमान में 1.5 बिलियन अमेरिकी डालर) से बाहर होंगे । इन लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशक और अनिवासी भारतीयों द्वारा निवेश निर्गम के क्रमशः 49 प्रतिशत और 24 प्रतिशत की समग्र सीमा में होंगे, बशर्ते प्रत्येक विदेशी संस्थागत निवेशक निर्गम के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं तथा प्रत्येक अनिवासी भारतीय निर्गम के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं निवेश करता है ।

(ग) बैंकों को इन लिखतों के संबंध में सेबी/अन्य विनियामक प्राधिकरणों द्वारा निर्धारित शर्तों का अनुपालन करना चाहिए ।

2. विदेशी मुद्रा में नवोन्मेषी लिखतों के निर्गम की शर्तें

अपनी पूंजी निधि को बढ़ाने के लिए बैंक विदेशी मुद्रा में रिज़र्व बैंक का पूर्वानुमोदन प्राप्त किये बिना नवोन्मेषी लिखत जारी कर सकते हैं, बशर्ते निम्नलिखित अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया हो :

i) विदेशी मुद्रा में जारी नवोन्मेषी लिखतों को भारतीय रुपयों में जारी लिखतों पर लागू होनेवाली सभी शर्तों का अनुपालन करना चाहिए ।

ii) पात्रता राशि का अधिकतम 49 प्रतिशत विदेशी मुद्रा में जारी किया जा सकता है ।

iii) विदेशी मुद्रा में जारी नवोन्मेषी लिखत विदेशी मुद्रा उधारों की सीमाओं के अतिरिक्त होंगे जिन्हें नीचे दर्शाया गया है

क) विदेशी मुद्रा में जारी अपर टीयर II लिखतों की कुल राशि अक्षत टीयर I पूंजी के 25 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए । यह पात्र राशि पिछले वित्त वर्ष की 31 मार्च की स्थिति के अनुसार गुडविल और अन्य अमूर्त आस्तियों को घटाने के बाद लेकिन इस मास्टर परिपत्र के पैरा 4.4.6 के अनुसार निवेशों के घटाने से पहले टीयर I की राशि के संदर्भ में संगणित की जाएगी ।

ख) यह, 1 जुलाई 2006 के जोखिम प्रबंध और अंतर-बैंक व्यवहार पर मास्टर परिपत्र सं. आरबीआइ/2006-07/24 के अनुसार प्राधिकृत विक्रेताओं (एडी) के लिए विदेशी मुद्रा उधार की वर्तमान सीमा के अतिरिक्त होगी ।

3. रिज़र्व अपेक्षाओं का अनुपालन

किसी बैंक द्वारा नवोन्मेषी लिखतों के माध्यम से अर्जित कुल राशि को रिज़र्व अपेक्षाओं के उद्देश्य के लिए निवल मांग और मीयादी देयताओं के आकलन के लिए देयता के रूप में गणना नहीं की जाएगी तथा इसलिए इन पर सीआरआर/एसएलआर अपेक्षाएं लागू नहीं होंगी ।

4. रिपोर्टिंग अपेक्षाएं

नवोन्मेषी लिखत जारी करनेवाले बैंकों को निर्गम पूर्ण हो जाने के बाद जुटाये गये ऋण के विवरणों के साथ एक रिपोर्ट प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग,

भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई को प्रस्तुत करनी होगी जिसमें उपर्युक्त पैरा I में निर्दिष्ट निर्गम की शर्तों के साथ ऑफर दस्तावेज की एक प्रति भी शामिल होनी चाहिए ।

5. अन्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी नवोन्मेषी बेमीयादी ऋण लिखतों में निवेश

i) अन्य बैंकों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी नवोन्मेषी लिखतों में किसी बैंक के निवेश की गणना पूंजी स्थिति के लिए पात्र ऐसे अन्य लिखतों में निवेश के साथ 6 जुलाई 2004 के परिपत्र बैंपविवि. बीपी. बीसी. सं. 3/21.01.002/2004-05 द्वारा निर्धारित बैंक/वित्तीय संस्थाओं के बीच पूंजी की क्रास होल्डिंग के लिए कुल निर्धारित सीमा 10 प्रतिशत के अनुपालन की गणना करते समय तथा क्रास होल्डिंग सीमाओं के अधीन की जाएगी ।

ii) अन्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी किए गए नवोन्मेषी लिखतों में बैंक के निवेश करने पर पूंजी पर्याप्तता उद्देश्यों के लिए इस मास्टर परिपत्र के पैरा 5.6 में निर्धारित किए गए अनुसार जोखिम भार लगाया जाएगा ।

6. नवोन्मेषी लिखतों की प्रतिभूति पर अग्रिमों की मंजूरी

बैंकों को अपने द्वारा जारी किए गए नवोन्मेषी लिखतों की प्रतिभूति के बदले अग्रिम मंजूरी नहीं करना चाहिए ।

7. तुलनपत्र में वर्गीकरण

नवोन्मेषी लिखतों द्वारा जुटायी गयी राशि को तुलनपत्र में 'अनुसूची4- उधार' के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।[42]

8. भारत में स्थित विदेशी बैंकों द्वारा टीयर I पूंजी के रूप में शामिल करने के लिए नवोन्मेषी लिखत जारी करना

भारत में स्थित विदेशी बैंक विदेशी मुद्रा में टीयर I पूंजी के तौर पर शामिल करने के लिए हेड ऑफिस (एचओ) उधार जुटा सकते हैं जिनपर भारतीय बैंकों के लिए उपर्युक्त मद 1 से 5 में उल्लिखित शर्तें लागू होंगी । इसके अलावा निम्नलिखित शर्तें भी लागू होंगी :

i) *परिपक्वता अवधि:* हेड ऑफिस उधार के रूप में नवोन्मेषी टीयर I पूंजी की राशि सतत आधार पर भारत में रखी जाएगी ।

ii) *ब्याज दर :* हेड ऑफिस उधार के रूप में नवोन्मेषी टीयर I पूंजी पर ब्याज दर तत्कालीन बाज़ार दर से अधिक नहीं होनी चाहिए । ब्याज अर्ध-वार्षिक अन्तराल पर अदा किया जाना चाहिए ।

iii) *विदहोल्डिंग कर :* हेड ऑफिस को भुगतान होनेवाला ब्याज यथाप्रयोज्य विदहोल्डिंग कर के अधीन होगा ।

iv) *प्रलेखीकरण :* हेड ऑफिस उधार के रूप में नवोन्मेषी टीयर I पूंजी जुटाने वाले विदेशी बैंक को अपने मुख्य कार्यालय से एक पत्र प्राप्त करना होगा कि वह विदेशी बैंक के भारत में परिचालन के लिए पूंजी आधार के पूरक के तौर ऋण देने के लिए सहमत है । ऋण

---

[42] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 30 Ÿ¸¸□¸Ä 2010 ˆÅ¸ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.81/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

प्रलेख इस बात की पुष्टि करेगा कि मुख्य कार्यालय द्वारा दिया गया ऋण उसी स्तर की वरिष्ठता के दावे (सीनियारटी क्लेम) का पात्र है जितना कि भारतीय बैंकों द्वारा जारी नवोन्मेषी लिखत पूंजी लिखत में निवेशकों की वरिष्ठता का दावा होता है । ऋण करार की भारतीय कानून के अनुरूप व्याख्या एवं क्रियान्वयन किया जाएगा ।

v) *प्रकटीकरण:* हेड ऑफिस उधारों की कुल पात्र राशि तुलन पत्र में निम्नलिखित शीर्ष के अंतर्गत प्रकट की जाएगी "विदेशी मुद्रा में हेड ऑफिस उधार के तौर पर जुटायी गई नवोन्मेषी टीयर I पूंजी " ।

vi) *हेजिंग:* हेड ऑफिस उधारों की कुल पात्र राशि पूरे समय भारतीय रुपयों में पूर्णतः बदली हुई होनी चाहिए ।

vii) *रिपोर्टिंग और प्रमाणीकरण:* हेड ऑफिस उधारों के तौर पर एकत्र की गई कुल नवोन्मेषी टीयर I पूंजी के संबंध में विस्तृत ब्योरे, इस प्रमाणीकरण के साथ कि यह उधार इन दिशानिर्देशों के अनुरूप हैं प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग (अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग अनुभाग), प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक बाह्य निवेश और परिचालन विभाग तथा प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, विदेशी मुद्रा विभाग (विदेशी मुद्रा बाज़ार प्रभाग), भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई को सूचित किये जाने चाहिए ।

अनुबंध -3

[देखें पैरा 4.2.1(iv)]

टीयर I पूंजी के रूप में पात्रता के लिए बेमीयादी असंचयी अधिमान शेयरों (पी एन सी पी एस) पर लागू शर्तें

1. निर्गम की शर्तें

i) *सीमाएं :* नवोन्मेषी टीयर 1 लिखतों सहित टीयर 1 अधिमान शेयरों की बकाया राशि किसी भी समय टीयर I की कुल पूंजी के 40 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी । यह सीमा सुनाम तथा अन्य अमूर्त आस्तियों को घटाने के बाद लेकिन, निवेशों के घटाने से पूर्व, टीयर 1 पूंजी की राशि पर आधारित होगी । 40 प्रतिशत की समग्र अधिकतम सीमा से अधिक टीयर 1 अधिमान शेयरों का निर्गम टीयर II पूंजी के लिए निर्धारित सीमाओं के अधीन, उच्चतर टीयर II पूंजी में शामिल किये जाने हेतु पात्र होगा ; लेकिन निवेशकों के अधिकारों और दायित्वों में कोई परिवर्तन नहीं होगा ।

ii) *राशि :* बेमीयादी असंचयी अधिमान शेयरों द्वारा जुटायी जानेवाली राशि के संबंध में निर्णय बैंकों के निदेशक बोर्ड द्वारा लिया जाएगा ।

iii) *परिपक्वता अवधि :* पीएनसीपीएस बेमीयादी होंगे ।

iv) *विकल्प :*

(क) पीएनसीपीएस 'पुट ऑप्शन' अथवा 'स्टेप अप ऑप्शन' सहित निर्गमित नहीं किये जाएंगे ।

(ख) लेकिन निम्नलिखित शर्तों के अधीन बैंक किसी तारीख विशेष को कॉल ऑप्शन के साथ लिखत जारी कर सकते हैं;

(i) लिखत पर कॉल ऑप्शन की अनुमति लिखत के कम-से-कम 10 वर्ष तक चलते रहने पर दी जाएगी; तथा

(ii) कॉल ऑप्शन का प्रयोग भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) के पूर्व अनुमोदन से ही किया जा सकेगा । भारतीय रिज़र्व बैंक कॉल ऑप्शन का प्रयोग करने के लिए बैंकों से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करते समय अन्य बातों के साथ-साथ कॉल ऑप्शन का प्रयोग करते समय तथा उसके बाद बैंक की सीआरएआर स्थिति को विचार में लेगा ।

v) *तुलन पत्र में वर्गीकरण :* इन लिखतों को पूंजी के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा और तुलन पत्र में "अनुसूची I-पूंजी" के अंतर्गत दर्शाया जाएगा ।

vi) *लाभांश :* निवेशकों को देय लाभांश की दर या तो निश्चित दर होगी अथवा बाज़ार निर्धारित रुपया ब्याज बेंचमार्क दर से संबंधित अस्थिर दर होगी ।

vii) *लाभांश का भुगतान :*

(क) निर्गमकर्ता बैंक चालू वर्ष की आय में से वितरण योग्य अधिशेष की उपलब्धता के अधीन लाभांश अदा कर सकेगा, साथ ही वह ऐसा तभी कर सकेगा जब

(i) बैंक का सीआरएआर भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से अधिक हो;

(ii) ऐसे भुगतान के परिणामस्वरूप बैंक का सीआरएआर भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से कम न हो जाए अथवा कम न बना रहे;

(iii) लाभांश के छमाही भुगतान के मामले में पिछले वर्ष के अंत के तुलन पत्र में संचित हानि न हो, तथा

(iv) लाभांश के वार्षिक भुगतान के मामले में चालू वर्ष के तुलन पत्र में कोई संचित हानि न हो ।

(ख) लाभांश संचयी नहीं होगा अर्थात् किसी एक वर्ष में न दिये गये लाभांश को आगे के वर्षों में अदा नहीं किया जाएगा चाहे पर्याप्त लाभ उपलब्ध हो और सीआरएआर न्यूनतम विनियामक अपेक्षा के अनुरूप हो । यदि लाभांश निर्धारित दर से कम दर पर अदा किया गया है तो अदा न की गयी राशि आगे के वर्षों में अदा नहीं की जाएगी, चाहे पर्याप्त लाभ उपलब्ध हो और सीआरएआर का स्तर न्यूनतम विनियामक अपेक्षा के अनुरूप हो ।

(ग) उपर्युक्त (क) में दी गयी शर्तों के परिणामस्वरूप लाभांश की अदायगी न होने/निर्धारित दर से कम दर पर लाभांश की अदायगी होने के सभी मामले निर्गमकर्ता बैंकों द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग तथा बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग के प्रभारी मुख्य महाप्रबंधकों को रिपोर्ट किये जाने चाहिए ।

viii) दावों की वरिष्ठता : पीएनसीपीएस में निवेशकों के दावे ईक्विटी शेयरों में निवेशकों के दावों से वरिष्ठ माने जाएंगे तथा अन्य सभी लेनदारों और देनदारों के दावों से गौण होंगे ।

ix) अन्य शर्तें :

(क) पीएनसीपीएस पूर्णतया चुकता, गैर-जमानती तथा सभी प्रतिबंधक शर्तों से मुक्त होना
चाहिए ।

(ख) विदेशी संस्थागत निवेशक और अनिवासी भारतीयों द्वारा निवेश क्रमशः निर्गम के 49% तथा निर्गम के 24% की समग्र सीमा के भीतर होना चाहिए बशर्ते प्रत्येक विदेशी संस्थागत निवेशक का निवेश निर्गम के 10% से अधिक न हो तथा प्रत्येक अनिवासी भारतीय द्वारा निवेश निर्गम के 5% से अधिक न हो । इन लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा निवेश रुपये में मूल्यवर्गित कार्पोरेट ऋण के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर तय की गई बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) सीमा से बाहर होगा । सरकारी क्षेत्र के बैंकों में अधिमान शेयरों और ईक्विटी शेयरों की समग्र अनिवासी धारिता सांविधिक/विनियामक सीमा के अधीन होगी ।

(ग) बैंकों को लिखतों के निर्गम के संबंध में सेबी/अन्य विनियामक प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित शर्तों का, यदि कोई हो, अनुपालन करना चाहिए ।

2. आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं का अनुपालन

(क) आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं की गणना करने के उद्देश्य से बैंक की विभिन्न शाखाओं या अन्य बैंकों द्वारा निर्गम के लिए संगृहीत तथा टीयर I अधिमान शेयरों के आबंटन को अंतिम रूप दिये जाने तक रखी गयी निधि को गणना में लेना होगा ।

(ख) तथापि, बैंक द्वारा पीएनसीपीएस के निर्गम द्वारा जुटायी गई कुल राशि आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं के उद्देश्य के लिए निवल मांग और मीयादी देयताओं की गणना के लिए देयता के रूप में नहीं मानी जाएगी और इस प्रकार इन पर सीआरआर/एसएलआर अपेक्षाएं लागू नहीं होंगी ।

3. रिपोर्टिंग अपेक्षाएं

i) पीएनसीपीएस निर्गमित करनेवाले बैंकों को निर्गम पूर्ण होने के तुरंत बाद प्रस्ताव दस्तावेज़ की प्रति के साथ प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई को उपर्युक्त पैरा 1 में विनिर्दिष्ट निर्गम की शर्तों तथा जुटायी गयी पूंजी के ब्योरे सहित एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी ।

ii) बैंक द्वारा विदेशी संस्थागत निवेशकों/अनिवासी भारतीयों से टीयर I पूंजी के पात्र पीएनसीपीएस के तौर पर जुटायी गयी राशि के निर्गम-वार ब्योरे निर्गम के 30 दिनों के भीतर इस **अनुबंध** के अंत में दिए गए प्रोफार्मा में मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, विदेशी मुद्रा विभाग, विदेशी निवेश प्रभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई - 400 001 रिपोर्ट किया जाना चाहिए । स्टाक एक्सचेंज के फ्लोर पर इन लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों/अनिवासी भारतीयों द्वारा द्वितीयक बाज़ार में की गयी बिक्री/खरीद के ब्योरे क्रमशः अभिरक्षकों तथा प्राधिकृत बैंकों द्वारा समय-समय पर यथासंशोधित 3 मई 2000 की फेमा अधिसूचना संख्या 20 की अनुसूची 2 और 3 में निर्धारित एलईसी रिटर्न की सॉफ्ट कॉपी के माध्यम से दैनिक आधार पर रिज़र्व बैंक को रिपोर्ट किये जाने चाहिए ।

4. अन्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी बेमीयादी असंचयी अधिमान शेयरों में निवेश

(क) 6 जुलाई 2004 के परिपत्र बैंपविवि. बीपी. बीसी. सं. 3/ 21.01.002/ 2004-05 के द्वारा निर्धारित निवेशक बैंक की पूंजी निधि की 10 प्रतिशत की समग्र सीमा के अनुपालन की गणना करने के लिए किसी बैंक द्वारा अन्य बैंकों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी पीएनसीपीएस में किया गया निवेश पूंजी स्थिति के लिए पात्र अन्य लिखतों में उसके निवेश के साथ गिना जाएगा ।

(ख) अन्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी पीएनसीपीएस में किसी बैंक के निवेश पर पूंजी पर्याप्तता उद्देश्यों के लिए इस मास्टर परिपत्र के पैरा 5.6.1 में दिए गए अनुसार जोखिम भार लागू होगा ।

(ग) अन्य बैंकों के पीएनसीपीएस में किसी बैंक के निवेश को पूंजी बाज़ार में एक्सपोज़र के तौर पर माना जाएगा तथा इस संबंध में पूंजी बाज़ार एक्सपोज़र के लिए रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित विवेकपूर्ण सीमा का अनुपालन किया जाना होगा ।

5. टीयर 1 अधिमान शेयरों के बदले अग्रिमों की मंजूरी

बैंकों को स्वयं उनके द्वारा जारी पीएनसीपीएस की जमानत पर अग्रिम मंजूर नहीं करना चाहिए ।

6. तुलनपत्र में वर्गीकरण

इन लिखतों को पूंजी के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा और इन्हें तुलनपत्र में 'अनुसूची4- उधार' के अन्तर्गत दर्शाया जाना चाहिए।[43]

रिपोर्टिंग फॉर्मेट

[देखें अनुबंध - 3 का पैरा 3 (ii)]

टीयर 1 पूंजी के रूप में पात्र बेमीयादी असंचयी अधिमान शेयरों में विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ) तथा अनिवासी भारतीयों (एनआरआइ) द्वारा किए गए निवेशों के ब्यौरे

(क) बैंक का नाम :

(ख) निर्गम की कुल मात्राा /जुटायी गयी कुली राशि (रूपये में) :

(ग) निर्गम की तारीख :

वित्तीय संस्थागत निवेशक			अनिवासी भारतीय		
वित्तीय संस्थागत निवेशकों की संख्या	जुटाई गई राशि		अनिवासी भारतीयों की संख्या	जुटाई गई राशि	
	रूपये में	निर्गम की मात्रा के प्रतिशत के रूप में		रूपये में	निर्गम की मात्रा के प्रतिशत के रूप में

यह प्रमाणित किया जाता है कि

(i) सभी वित्तीय संस्थागत निवेशकों द्वारा कुल निवेश, निर्गम की मात्रा के 49 प्रतिशत से अधिक नहीं है और किसी भी एक वित्तीय संस्थागत निवेशक का निवेश, निर्गम की मात्रा के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं है।

(ii) सभी अनिवासी भारतीयों द्वारा कुल निवेश, निर्गम की मात्रा के 24 प्रतिशत से अधिक नहीं है और किसी एक अनिवासी भारतीय का निवेश, निर्गम की मात्रा के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं है।

[43] ˆ¼Åœ¸¡¸¸ 30 Ÿ¸¸□¸Ä 2010 ˆÅ¸ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.81/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता

तारीख

बैंक की मोहर

अनुबंध 4
(देखें पैरा 4.3.3)

<u>अपर टीयर II पूंजी के रूप में शामिल किये जाने के लिए ऋण पूंजी लिखतों के संबंध में लागू शर्तें :</u>

भारतीय बैंकों द्वारा बांडों/डिबेंचरों के रूप में जारी किये जानेवाले ऋण पूंजी लिखतों को पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए अपर टीयर II पूंजी के रूप में शामिल किये जाने के लिए निम्नलिखित शर्तें पूरी करनी चाहिए :

भारतीय रुपये में अपर टीयर II पूंजी लिखत जारी करने की शर्तें

i) <u>*राशि :*</u> जुटायी जानेवाली अपर टीयर II लिखतों की राशि बैंकों के निदेशक बोर्ड द्वारा निश्चित की जाए ।

ii) सीमाएं : टीयर II पूंजी के अन्य घटकों सहित अपर टीयर II लिखत टीयर I पूंजी के 100% से अधिक नहीं होगी । उपर्युक्त सीमा साख, डीटीएल तथा अन्य अगोचर आस्तियों को घटाने के बाद परंतु निवेशों को घटाने के पहले, जैसा कि पैरा 4.4 में अपेक्षित है , टीयर I की पूंजी की राशि के आधार पर होगी ।

iii) परिपक्वता अवधि: अपर टीयर II लिखतों की 15 वर्ष की न्यूनतम परिपक्वता होनी चाहिए ।

iv) ब्याज दर: निवेशकों को अदा किया जानेवाला ब्याज नियत दर अथवा अस्थिर दर पर हो सकता है जो बाज़ार द्वारा निर्धारित रुपया ब्याज बेंच मार्क दर से संबद्ध होगी ।

v) ऑप्शन: अपर टीयर II लिखत 'पुट ऑप्शन' के साथ जारी नहीं किये जाएंगे । किंतु बैंक कॉल ऑप्शन के साथ इस शर्त के अधीन लिखत जारी कर सकते हैं बशर्ते निम्नलिखित प्रत्येक शर्त का कड़ाई से पालन किया गया हो :

क) कॉल ऑप्शन का उपयोग तभी किया जाए जब लिखत कम-से-कम 10 वर्ष चल चुका हो;

ख) कॉल ऑप्शन का उपयोग केवल रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) के पूर्व अनुमोदन से किया जाए । कॉल ऑप्शन का उपयोग करने के लिए बैंकों से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करते समय रिज़र्व बैंक अन्य बातों के साथ-साथ कॉल ऑप्शन का उपयोग करने के समय तथा कॉल ऑप्शन का उपयोग करने के बाद की बैंक की सीआरएआर स्थिति को ध्यान में रखेगा ।

vi) स्टेप-अप ऑप्शन: जारीकर्ता बैंक के पास स्टेप-अप ऑप्शन होगा जिसका लिखत की पूरी अवधि के दौरान केवल एक बार, कॉल-ऑप्शन के साथ-साथ, जारी करने की तारीख से 10 वर्ष बीतने के बाद उपयोग किया जा सकेगा । स्टेप-ॲप 100 आधार अंक से अधिक नहीं होगा । स्टेप-ॲप संबंधी सीमाएं जारीकर्ता बैंकों के ऋण की समग्र लागत पर लागूं होंगी ।

vii) अवरूद्धता शर्त :

क) अपर टीयर II लिखत अवरूद्धता (लॉक-इन) खंड के अधीन होंगे जिसके अनुसार जारीकर्ता बैंक परिपक्वता पर भी ब्याज या मूल धन अदा करने के लिए बाध्य नहीं होगा यदि

I. बैंक का सीआरएआर रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से कम हो **अथवा**

II. ऐसी अदायगी के परिणामस्वरूप बैंक का जोखिम भारित आस्तियों से पूंजी अनुपात (सीआरएआर) भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से नीचे गिर जाता है या नीचे बना रहता है ।

ख) तथापि बैंक उस स्थिति में रिज़र्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से ब्याज अदा कर सकते हैं जब ऐसी अदायगी के परिणामस्वरूप हानि या निवल हानि में वृद्धि हो बशर्ते सीआरएआर विनियामक मानदंड के ऊपर बना रहे ।

ग) प्राप्य तथा अदत्त बनी रहने वाली ब्याज राशि को बाद के वर्षों में नकद/चेक के रूप में अदा करने की अनुमति दी जा सकती है बशर्ते बैंक उपर्युक्त विनियामक अपेक्षा का पालन करे ।

घ) अवरुद्धता शर्त लागू करने के सभी मामलों के संबंध में जारीकर्ता बैंकों द्वारा प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग तथा प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई को सूचित किया जाना चाहिए ।

viii) <u>दावे की वरिष्ठता</u>: अपर टीयर II लिखतों में निवेशकों के दावे

क) टीयर I पूंजी में शामिल किये जाने के लिए पात्र लिखतों में निवेशकों के दावों से वरिष्ठ होंगे; तथा

ख) सभी अन्य लेनदारों के दावों से अधीनस्थ होंगे ।

ix) <u>बट्टा</u>: अपर टीयर II लिखत उनकी अवधि के अंतिम पांच वर्षों में दीर्घावधि अधीनस्थ ऋण के मामले की तरह पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजनों के लिए प्रगामी बट्टे के अधीन होंगे । जैसे-जैसे वे परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं ये लिखत प्रगामी बट्टे के अधीन किये जाने चाहिए, जैसा कि टीयर II पूंजी में शामिल होने के लिए पात्र होने हेतु नीचे की सारणी में दर्शाया गया है ।

लिखत की शेष परिपक्वता	बट्टा दर (%)
एक वर्ष से कम	100
एक वर्ष और उससे अधिक परंतु दो वर्ष से कम	80
दो वर्ष और उससे अधिक परंतु तीन वर्ष से कम	60
तीन वर्ष और उससे अधिक परंतु चार वर्ष से कम	40
चार वर्ष और उससे अधिक परंतु पांच वर्ष से कम	20

x) <u>प्रतिदान</u>: अपर टीयर II लिखत धारक की पहल पर प्रतिदेय नहीं होंगे । सभी प्रतिदान केवल भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) के पूर्व अनुमोदन से किये जाएंगे ।

xi) <u>अन्य शर्तें</u> :

क) अपर टीयर II लिखत पूर्णतः चुकता, बेजमानती तथा किसी प्रतिबंधक शर्त से मुक्त होने चाहिए ।

ख) भारतीय रुपये में जुटाये जानेवाले अपर टीयर II लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा निवेश कंपनी ऋण लिखतों में निवेश की सीमा समय-समय पर भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए अनुसार होगी । किंतु इन लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा किया जानेवाला निवेश 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की अलग उच्चतम सीमा के अधीन होगा । इसके अलावा, अनिवासी भारतीय भी वर्तमान नीति के अनुसार इन लिखतों में निवेश करने के पात्र होंगे ।

ग) बैंकों को चाहिए कि वे उक्त लिखतों के निर्गम के संबंध में सेवी/अन्य विनियामक प्राधिकारियों द्वारा यदि कोई शर्तें निर्दिष्ट की गई हों तो उनका पालन करें ।

2. <u>विदेशी मुद्रा में अपर टीयर II पूंजी लिखतों के निर्गम की शर्तें</u>

बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक का पूर्व अनुमोदन लिये बिना नीचे उल्लिखित अपेक्षाओं का पालन करने की शर्तों पर विदेशी मुद्रा में अपर टीयर II लिखत जारी कर अपनी पूंजीगत निधियां बढ़ा सकते हैं :

i) विदेशी मुद्रा में जारी अपर टीयर II लिखत को भारतीय रूपयों में जारी लिखतों पर लागू शर्तों का पालन करना चाहिए ।

ii) विदेशी मुद्रा में जारी अपर टीयर II लिखतों की कुल राशि अक्षत (अनइम्पेयर्ड) टीयर I पूंजी के 25% से अधिक नहीं होगी । इस पात्र राशि की गणना साख तथा अन्य अगोचर आस्तियों को घटाने के बाद परंतु इस मास्टर परिपत्र के पैरा 4.4.6 के अनुसार निवेशों को घटाने के पहले पिछले वित्तीय वर्ष की 31 मार्च की स्थिति के अनुसार टीयर 1 पूंजी की राशि के संदर्भ में की जाएगी ।

iii) यह जोखिम प्रबंधन और अंतर बैंक लेनदेनों के संबंध में 1 जुलाई 2006 के मास्टर परिपत्र सं. आरबीआइ/2006-07/24 के अनुसार प्राधिकृत व्यापारियों के विदेशी मुद्रा उधारों के लिए वर्तमान सीमा के अतिरिक्त होगी ।

3. <u>आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं का पालन</u>

I. बैंक या अन्य बैंक की विभिन्न शाखाओं द्वारा निर्गम हेतु एकत्र की गयी निधियों, जिन्हें अपर टीयर II लिखतों के आबंटन को अंतिम रूप दिये जाने तक लम्बित रखा गया है, को आरक्षित अपेक्षाओं की गणना करने के प्रयोजन के लिए हिसाब में लिया जाएगा ।

II. अपर टीयर II लिखतों के माध्यम से किसी बैंक द्वारा जुटायी गयी कुल राशि को आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं के प्रयोजन के लिए निवल मांग और मीयादी देयताओं की गणना के लिए देयता के रूप में गिना जाएगा तथा इस प्रकार इस पर सीआरआर/एसएलआर अपेक्षाएं लागू होंगी ।

4. <u>रिपोर्टिंग संबंधी अपेक्षाएं</u>

अपर टीयर II लिखत जारी करनेवाले बैंक निर्गम पूरा होने के तुरंत बाद प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक को रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे जिसमें जुटाये गये ऋण के ब्योरे तथा प्रस्ताव दस्तावेज की प्रति सहित उपर्युक्त पैरा 1 में निर्दिष्ट निर्गम की शर्तें दी गयी हों ।

5. **अन्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी अपर टीयर II लिखतों में निवेश**

i) 6 जुलाई 2004 के परिपत्र बैंपविवि. बीपी. बीसी.सं. 3/21.01.002/2004-05 द्वारा निर्दिष्ट बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के बीच पूंजी के क्रास होल्डिंग के लिए 10

प्रतिशत की समग्र उच्चतम सीमा के अनुपालन की गणना करते समय तथा क्रॉस होल्डिंग सीमाओं के अधीन अन्य बैंकों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी अपर टीयर II लिखतों में किसी बैंक के निवेश की गणना पूंजी स्थिति के लिए पात्र अन्य लिखतों में निवेश के साथ की जाएगी ।

ii) अन्य बैंकों/वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी अपर टीयर II लिखतों में बैंक के निवेश पर पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए इस मास्टर परिपत्र के पैरा 5.6.1 में दिए गए अनुसार जोखिम भार लगेगा ।

6. अपर टीयर II लिखतों की जमानत पर अग्रिम प्रदान करना

बैंकों को उनके द्वारा जारी अपर टीयर II लिखतों की जमानत पर अग्रिम प्रदान नहीं करने चाहिए ।

7. तुलन पत्र में वर्गीकरण

अपर टियर II पूंजी लिखतों द्वारा जुटायी गयी पूंजी तुलन पत्र में ‘ अनुसूची4-उधार’ के अन्तर्गत वर्गीकृत की जाएगी।[44]

8.भारत में विदेशी बैंकों द्वारा अपर टीयर II लिखत जुटाना

भारत में विदेशी बैंक अपर टीयर II पूंजी के रूप में शामिल किये जाने के लिए विदेशी मुद्रा में प्रधान कार्यालय उधार उन्हीं शर्तों पर जुटा सकते हैं जो भारतीय बैंकों के लिए उपर्युक्त 1 से 5 तक की मदों में दी गयी हैं । इसके अलावा निम्नलिखित शर्तें भी लागू होंगी :

1) *परिपक्वता अवधि* : यदि प्रधान कार्यालय उधारों के रूप में जुटायी गयी अपर टीयर II पूंजी की राशि श्रृंखलाओं में है तो प्रत्येक श्रृंखला 15 वर्ष की न्यूनतम अवधि के लिए भारत में रखी जाएगी ।

2) *ब्याज दर* : प्रधान कार्यालय उधारों के रूप में जुटायी गयी अपर टीयर II पूंजी पर ब्याज दर चालू बाज़ार दर से अधिक नहीं होनी चाहिए । ब्याज छमाही अंतरालों पर अदा किया जाना चाहिए ।

3) *विदहोल्डिंग कर* : प्रधान कार्यालय को ब्याज की अदायगी यथाप्रयोज्य विदहोल्डिंग कर के अधीन होगी ।

4) *प्रलेखीकरण*: प्रधान कार्यालय उधारों के रूप में अपर टीयर II जुटाने वाले विदेशी बैंक को अपने प्रधान कार्यालय से एक पत्र प्राप्त करना चाहिए जिसमें विदेशी बैंक के भारतीय कार्यकलापों के लिए पूंजी आधार में सहायता देने के लिए ऋण देने की सहमति हो । ऋण प्रलेखीकरण में इस बात की पुष्टि हो कि प्रधान कार्यालय द्वारा दिया गया ऋण दावे की वरिष्ठता के उसी स्तर के लिए पात्र होगा जैसे कि भारतीय बैंकों द्वारा जारी अपर टीयर II ऋण पूंजी लिखतों में निवेशक हैं । ऋण करार भारतीय कानून द्वारा नियंत्रित होगा और उसके अनुसार उसका अर्थ निकाला जाएगा ।

---

[44] ˜¼Åœ¸¡¸¸ 30 Ÿ¸¸□¸Ä 2010 ˆÅ¸ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú. ¬¸¿.81/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

5) *प्रकटीकरण:* प्रधान कार्यालय के उधारों की कुल पात्र राशि तुलन पत्र में 'विदेशी मुद्रा में प्रधान कार्यालय उधारों के रूप में जुटायी गयी अपर टीयर II पूंजी' शीर्ष के अंतर्गत प्रकट की जाएगी ।

6) *हेजिंग:* प्रधान कार्यालय उधार की कुल पात्र राशि बैंक के पास हर समय भारतीय रुपये में पूर्णतः स्वैप रूप में बनी रहनी चाहिए ।

7) *रिपोर्टिंग और स्पष्टीकरण:* प्रधान कार्यालय उधारों के रूप में जुटायी गयी अपर टीयर II पूंजी की कुल राशि के संबंध में ब्योरे तथा इस आशय का प्रमाण पत्र कि ये उधार इन दिशानिर्देशों के अनुरूप हैं, प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग (अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग प्रभाग), बाह्य निवेश और परिचालन विभाग तथा विदेशीं मुद्रा विभाग (विदेशी मुद्रा बाज़ार प्रभाग), भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई को दिया जाना चाहिए ।

अनुबंध -5
(देखें पैरा 4.3.3)

उच्चतर टीयर II पूंजी के भाग के रूप में पात्रता के लिए बेमीयादी संचयी अधिमान शेयर (पीसीपीएस)/प्रतिदेय असंचयी अधिमान शेयर (आरएनसीपीएस)/ प्रतिदेय संचयी अधिमान शेयर (आरसीपीएस) पर लागू शर्तें

1. **निर्गम की शर्तें**

i) *लिखतों की विशेषताएं :*

क. ये लिखत बेमीयादी (पीसीपीएस) अथवा दिनांकित (आरएनसीपीएस और आरसीपीएस) हो सकते हैं जिनकी नियत परिपक्वता अवधि न्यूनतम 15 वर्ष होगी ।

ख. बेमीयादी लिखत संचयी होंगे । दिनांकित लिखत संचयी अथवा असंचयी हो सकते हैं ।

ii) *सीमा :* टीयर II पूंजी के अन्य घटकों के साथ इन लिखतों की बकाया राशि किसी भी समय टीयर I पूंजी के 100 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी । उक्त सीमा सुनाम तथा अन्य अमूर्त

आस्तियों को घटाने के बाद परंतु निवेशों को घटाने से पूर्व की टीयर I पूंजी की राशि पर आधारित होगी ।

iii) *राशि :* राशि जुटाने के संबंध में निर्णय बैंकों के निदेशक बोर्ड द्वारा किया जाना चाहिए ।

iv) *विकल्पः*

(i) इन लिखतों को किसी 'पुट ऑप्शन' के साथ निर्गमित नहीं किया जाएगा ।

(ii) लेकिन, निम्नलिखित शर्तों के अधीन बैंक किसी तारीख विशेष को कॉल ऑप्शन के साथ लिखत जारी कर सकते हैं ।

(क) लिखत पर कॉल ऑप्शन की अनुमति लिखत के कम-से-कम 10 वर्ष तक चलते रहने पर दी जाएगी; तथा

(ख) कॉल ऑप्शन का प्रयोग भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) के पूर्व अनुमोदन से ही किया जाएगा । भारतीय रिज़र्व बैंक कॉल ऑप्शन का प्रयोग करने के लिए बैंकों से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करते समय अन्य बातों के साथ-साथ कॉल ऑप्शन का प्रयोग करते समय तथा उसके बाद बैंक की सीआरएआर स्थिति को विचार में लेगा ।

v) *स्टेप-अप ऑप्शन* : निर्गमकर्ता बैंक के पास स्टेप-अप ऑप्शन हो सकता है जिसका प्रयोग निर्गम की तारीख से दस वर्ष समाप्त हो जाने के बाद तथा लिखत के संपूर्ण जीवनकाल में केवल एक ही बार किया जा सकता है । उक्त स्टेप-अप 100 आधार अंक से अधिक नहीं होगा। स्टेप-अप संबंधी सीमाएं निर्गमकर्ता बैंकों की ऋण से संबंधित संपूर्ण लागत पर लागू हैं।

vi) *तुलन पत्र में वर्गीकरण* : इन लिखतों को उधार राशियों के रूप में तुलन पत्र की अनुसूची 4 में मद सं. 1 अर्थात भारत में लिए गए उधार) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा।

vii) *कूपन :* निवेशकों को देय कूपन की दर या तो निश्चित दर होगी अथवा बाज़ार निर्धारित रुपया ब्याज बेंच मार्क दर से संबंधित अस्थिर दर होगी।

viii) *कूपन का भुगतान :*

क) इन लिखतों पर देय कूपन को ब्याज के रूप में माना जाएगा और तदनुसार लाभ-हानि लेखे में नामे डाला जाएगा। तथापि, यह केवल तब देय होगा जब,

I. बैंक का सीआरएआर भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से अधिक हो;

II. ऐसे भुगतान के प्रभाव के कारण बैंक का सीआरएआर भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से कम न हो जाए अथवा कम न बना रहे;

III. बैंक को कोई निवल हानि न हुई हो। इस प्रयोजन हेतु निवल हानि की परिभाषा (i) पिछले वित्तीय वर्ष /छमाही के अंत में, जैसी स्थिति हो, संचित हानि; अथवा (ii) चालू वित्तीय वर्ष के दौरान हुई हानि के रूप में की गई है ।

IV. पीसीपीएस तथा आरसीपीएस के मामले में अदत्त/अंशतः अदत्त कूपन को देयता के रूप में माना जाएगा। ब्याज की देय तथा अदत्त रहने वाली राशि को अगले वर्षों में भुगतान करने की अनुमति दी जा सकती है बशर्ते बैंक उपर्युक्त अपेक्षाओं को पूरा करता हो।

V. आरएनसीपीएस के मामले में, यदि पर्याप्त लाभ उपलब्ध भी हो और सीआरएआर का स्तर विनियामक न्यूनतम के अनुरूप हो तो भी आस्थगित कूपन का भुगतान आगामी वर्षों में नहीं किया जाएगा । तथापि बैंक निर्धारित दर से कम दर पर कूपन अदा कर सकता है, बशर्ते पर्याप्त लाभ उपलब्ध हो और सीआरएआर का स्तर न्यूनतम विनियामक अपेक्षा के अनुरूप हो ।

ख) ब्याज भुगतान न किए जाने/निर्धारित दर से कम दर पर ब्याज भुगतान किये जाने के सभी मामले निर्गमकर्ता बैंक द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग तथा बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग के प्रभारी मुख्य महाप्रबंधकों को सूचित किए जाने चाहिए ।

ix) <u>मोचन/चुकौती</u>:

क) आरएनसीपीएस और आरसीपीएस लिखत धारक की पहल पर प्रतिदेय नहीं होंगे।

ख) परिपक्वता पर इन लिखतों का मोचन अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित शर्तों के अधीन केवल भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग) के पूर्व अनुमोदन से किया जाएगा :

I. बैंक का सीआरएआर भारिबैं द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से अधिक हो,

II. ऐसे भुगतान के परिणामस्वरूप बैंक का सीआरएआर भारतीय रिज़र्व बेंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामक अपेक्षा से कम न हो जाए अथवा कम न बना रहे ।

1.10 <u>दावे की वरिष्ठता</u> : इन लिखतों में निवेश करनेवालों के दावे टीयर 1 पूंजी में शामिल किए जाने के लिए पात्र लिखतों में निवेश करनेवालों के दावों से वरिष्ठ होंगे तथा सभी अन्य ऋणदाताओं, जिनमें निम्नतर टीयर II के ऋणदाता तथा जमाकर्ता शामिल हैं, के दावों से गौण होंगे। उच्चतर टीयर II में सम्मिलित विभिन्न लिखतों के निवेशकों के बीच उनके दावों की वरिष्ठता एक दूसरे के समान होगी।

1.11 <u>सीआरएआर की गणना के प्रयोजन के लिए परिशोधन</u> : नीचे दी गयी सारणी में दर्शाए गए अनुसार टीयर II पूंजी में शामिल किए जाने के लिए पात्र होने के लिए उनकी परिपक्वता अवधि निकट आने के समय अंतिम पांच वर्ष के दौरान पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए प्रतिदेय अधिमान शेयरों (संचयी तथा असंचयी, दोनों) पर प्रगामी बट्टा लगाया जाएगा।

लिखतों की शेष परिपक्वता अवधि	बट्टे की दर (प्रतिशत में)
एक वर्ष से कम	100
एक वर्ष तथा उससे अधिक लेकिन दो वर्ष से कम	80
दो वर्ष तथा उससे अधिक लेकिन तीन वर्ष से कम	60
तीन वर्ष तथा उससे अधिक लेकिन चार वर्ष से कम	40
चार वर्ष तथा उससे अधिक लेकिन पांच वर्ष से कम	20

1.12 *अन्य शर्तें :*

क) ये लिखत पूर्णतया चुकता, गैर-जमानती तथा सभी प्रकार की प्रतिबंधक शर्तों से मुक्त होने चाहिए।

ख) विदेशी संस्थागत निवेशक और अनिवासी भारतीयों द्वारा निवेश निर्गम के क्रमशः 49% तथा 24% की समग्र सीमा के भीतर होने चाहिए बशर्ते प्रत्येक विदेशी संस्थागत निवेशक का निवेश निर्गम के 10% से अधिक न हो तथा प्रत्येक अनिवासी भारतीय द्वारा निवेश निर्गम के 5% से अधिक न हो । इन लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा निवेश रूपये में मूल्यवर्गित कार्पोरेट ऋण के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर तय की गई बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) सीमा से बाहर होगा । तथापि, इन लिखतों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा किया गया निवेश 500 मिलियन अमरीकी डॉलर की अलग सीमा के अधीन होगा। सरकारी क्षेत्र के बैंकों में अधिमान शेयरों और ईक्विटी शेयरों की समग्र अनिवासी धारिता सांविधिक/विनियामक सीमा के अधीन होगी ।

ग) बैंकों को चाहिए कि वे लिखतों के निर्गम के संबंध में सेबी / अन्य विनियामक प्राधिकारियों द्वारा यदि कोई शर्तें निर्धारित की गई हों तो उनका अनुपालन करें।

2. आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं का अनुपालन

क) निर्गम के लिए बैंक अथवा अन्य बैंकों की विभिन्न शाखाओं द्वारा संगृहीत की गयी तथा इन लिखतों के आबंटन को अंतिम रूप दिए जाने तक धारित निधियों को आरक्षित निधि अपेक्षाओं की गणना करने के प्रयोजन के लिए विचार में लेना होगा।

ख) इन लिखतों के निर्गम के माध्यम से बैंक द्वारा जुटाई गयी कुल राशि को आरक्षित निधि अपेक्षाओं के प्रयोजन के लिए निवल मांग तथा मीयादी देयताओं की गणना के लिए देयता के रूप में समझा जाएगा और इसलिए उस पर सीआरआर /एसएलआर अपेक्षाएं लागू होंगी।

3. रिपोर्टिंग अपेक्षाएं

उक्त लिखत जारी करने वाले बैंकों को चाहिए कि वे जुटाये गये ऋण के ब्यौरे तथा प्रस्ताव दस्तावेज़ की प्रतिलिपि सहित उक्त मद 1 पर विनिर्दिष्ट निर्गम की शर्तों के ब्यौरे देते हुए, संबंधित निर्गम पूरा होने के तुरंत बाद एक रिपोर्ट प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई को प्रस्तुत करें।

4. अन्य बैंकों /वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी इन लिखतों में निवेश

क) अन्य बैंकों /वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी इन लिखतों में किसी बैंक के निवेश को 6 जुलाई 2004 के परिपत्र बैंपविवि. बीपी. बीसी. सं. 3/21.01.002/2004-05 द्वारा विनिर्दिष्ट, निवेशकर्ता बैंकों की पूंजी के 10 प्रतिशत की समग्र उच्चतम सीमा के साथ अनुपालन की गणना करते समय पूंजी स्तर के लिए पात्र अन्य लिखतों में किये गये निवेश के साथ गिना जाएगा तथा ये परस्पर धारिता सीमाओं के भी अधीन होंगे।

ख) अन्य बैंकों /वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी इन लिखतों में किसी बैंक के निवेशों पर पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए इस मास्टर परिपत्र के पैरा 5.6 में दिए गए अनुसार जोखिम भार लगेगा।

5. <u>इन लिखतों की जमानत पर अग्रिमों की मंजूरी</u>

बैंकों को अपने द्वारा जारी इन लिखतों की जमानत पर अग्रिम मंजूर नहीं करने चाहिए ।

अनुबंध 6
(देखें पैरा 4.3.4)

लोअर टीयर II पूंजी के भाग के रूप में पात्रता के लिए अधीनस्थ ऋण पर लागू शर्तें

रिज़र्व बैंक ने निम्नलिखित शर्तों के कड़ाई से अनुपालन की शर्त पर भारतीय बैंकों को टीयर II पूंजी के रूप में रुपया अधीनस्थ ऋण जुटाने की स्वतंत्रता दी है। विदेशी बैंकों को भी प्रधान कार्यालय से उधारों के जरिये टीयर II पूंजी में शामिल करने के लिए विदेशी मुद्रा में अधीनस्थ ऋण जुटाने की स्वतंत्रता दी है, परंतु शर्त यह है कि इस **अनुबंध** के भाग 2 में दी गयी शर्तों का कड़ाई से पालन किया जाए।

भाग 1 - भारतीय बैंकों द्वारा रुपये में मूल्यवर्गित अधीनस्थ ऋण जारी करना जो लोअर टीयर II पूंजी में शामिल किये जाने के लिए पात्र हैं

1. <u>बांड जारी करने की शर्तें</u>

टीयर II पूंजी में शामिल करने हेतु पात्र होने के लिए अधीनस्थ ऋण लिखत के रूप में बांड जारी करने की शर्तें निम्मिलिखित के अनुरूप होनी चाहिए :

(i) *<u>राशि :</u>* जुटायी जानेवाली अधीनस्थ ऋण की राशि बैंकों के निदेशक मंडलों द्वारा निश्चित की जानी चाहिए।

(ii) *<u>परिपक्वता अवधि :</u>*

क) ऐसे अधीनस्थ ऋण लिखतों को जिनकी प्रारभिक परिपक्वता अवधि 5 वर्ष से कम है, या जिनकी एक वर्ष की शेष परिपक्वता है, टीयर -II पूंजी के भाग के रूप शामिल

नहीं किया जाना चाहिए। साथ ही, जैसे -जैसे वे परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं वैसे-वैसे वे नीचे दी गयी दरों पर प्रगामी बट्टा के अधीन होने चाहिए :

लिखत की शेष परिपक्वता	बट्टा दर (%)
एक वर्ष से कम	100
एक वर्ष से अधिक और दो वर्ष से कम	80
दो वर्ष से अधिक और तीन वर्ष से कम	60
तीन वर्ष से अधिक और चार वर्ष से कम	40
चार वर्ष से अधिक और पांच वर्ष से कम	20

ख) बांडों की 5 वर्ष की न्यूनतम परिपक्वता होनी चाहिए। किन्तु यदि बांड वर्ष की अंतिम तिमाही, अर्थात् 1 जनवरी से 31 मार्च, में जारी किये जाते हैं तो उनकी 63 महीनों की न्यूनतम अवधि होनी चाहिए।

(iii) *ब्याज दर :* बैंक अपने बोर्ड द्वारा निश्चित कूपर दरों पर अधीनस्थ टीयर II बांड जारी कर सकते हैं ।लिखत 'वेनीला' होना चाहिए जिसमें ऑपशन आदि जैसी विशेषताएं न हों।

(iv) *अन्य शर्तें :*

क) लिखत पूर्णतः चुकता, बेजमानती, अन्य लेनदारों के दावों से अधीनस्थ, प्रतिबंधात्मक शर्तों से मुक्त होना चाहिए तथा वे धारक की पहल पर या भारतीय रिज़र्व बैंक की सहमति के बिना प्रतिदेय नहीं होने चाहिए।

ख) अनिवासी भारतीयों/ओसीबी/एफआइआइ को जारी किये जाने के लिए विदेशी मुद्रा विभाग से आवश्यक अनुमति ली जानी चाहिए।

ग) बैंकों को चाहिए कि अगर सेबी/अन्य विनियामक प्राधिकारियों द्वारा इन लिखतों के निर्गम के संबंध में कोई शर्तें निर्धारित की गयी हों तो वे उनका पालन करें।

घ) विदेशी बैंकों के मामले में रुपया अधीनस्थ ऋण बैंक के प्रधान कार्यालय द्वारा भारतीय शाखा के माध्यम से विदेशी मुद्रा विभाग का विशिष्ट अनुमोदन प्राप्त करने के बाद जारी किया जाना चाहिए।

2. टीयर II पूंजी में शामिल करना

अधीनस्थ ऋण लिखत बैंक की टीयर - 1 पूंजी के 50 प्रतिशत तक सीमित होंगे। टीयर II पूंजी के अन्य घटकों के साथ ये लिखत टीयर 1 पूंजी के 100 प्रतिशत से अधिक नहीं होने चाहिए।

3. बांडों की जमानत पर अग्रिम प्रदान करना

बैंकों को अपने स्वयं के बांडों की जमानत पर अग्रिम पदान नहीं करने चाहिए।

4. आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाओं का पालन

बैंक द्वारा जुटायी गयी अधीनस्थ ऋण की कुल राशि को आरक्षित निधि की अपेक्षाओं के प्रयोजन के लिए निवल मांग और मीयादी देयताओं के लिए देयता के रूप में गिना जाना है और इस प्रकार उस पर सीआरआर/एसएलआर संबंधी अपेक्षाएं लागू होंगी।

5. अधीनस्थ ऋण में निवेश पर कार्रवाई

बैंकों द्वारा अन्य बैंकों के अधीनस्थ ऋण में निवेशों पर पूंजी पर्याप्तता प्रयोजन के लिए इस मास्टर परिपत्र के पैरा 5.6.1 के अनुसार जोखिम भार दिया जायेगा। साथ ही, अन्य बैंकों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा जारी टीयर II बांडों में बैंक का कुल निवेश निवेशकर्ता बैंक की कुल पूंजी की 10 प्रतिशत की समग्र उच्चतम सीमा के भीतर होगा। इस प्रयोजन के लिए पूंजी वही होगी जो पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन के लिए गिनी जाती है।

6. खुदरा निवेशकों को अधीनस्थ ऋण

विनियामक पूंजी अपेक्षाओं की जोखिम विशेषताओं के संबंध में निवेशकों को अधिक शिक्षित करने के लिए खुदरा निवेशकों को अधीनस्थ ऋण जारी करने वाले बैंकों को निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना चाहिए -

क) लिखत की विशेषताओं और जोखिम को समझने के प्रमाण के रूप में प्रस्तावित ऋण निर्गम के सामान्य आवेदन पत्र में निम्नलिखित अंश शामिल होना चाहिए, जिसके नीचे निवेशक का हस्ताक्षर होना चाहिए ।

"यह आवेदन पत्र देकर, मैं/हम यह स्वीकार करते हैं कि मैंने/हमने [बैंक का नाम] के [निर्गत किये जाने वाले लिखत] के निर्गम की शर्तों को समझा है, जैसा कि ड्राफ्ट शेल्फ प्रोसपेकटस, शेल्फ प्रोस्पेक्टस और ट्रांस दस्तावेज में वर्णित किया गया है ।"

ख) अस्थायी दर लिखतों के लिए बैंकों अपनी मीयादी जमा दर को बेंचमार्क के रूप में उपयोग नहीं करना चाहिए ।

ग) सभी प्रचार सामग्री, आवेदन पत्र और निवेशक को दी जाने वाली अन्य प्रकार की सूचना में मोटे अक्षरों में (फांट आकार 14) यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित होना चाहिए कि अधीनस्थ बांड मीयादी जमा से किस तरह अलग है और इसे जमा बीमा की सुरक्षा प्राप्त नहीं है ।

7. विदेशी मुद्रा में अधीनस्थ ऋण

बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक से मामला-दर मामला आधार पर अनुमोदन ले सकते हैं।

8. रिपोर्टिंग संबंधी अपेक्षाएं

बैंकों को चाहिए कि वे निर्गम पूरा होने के तुरंत बाद ऑफर दस्तावेज की प्रति सहित जुटायी गयी पूंजी के ब्यौरे जैसे जुटायी गयी राशि, लिखत की परिपक्वता ब्याज दर देते हुए रिपोर्ट भारतीय रिज़र्व बैंक को प्रस्तुत करें।

9. तुलनपत्र में वर्गीकरण

जुटायी गयी पूंजी तुलनपत्र में 'अनुसूची 4- उधार' के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

भाग 2 - टीयर II पूंजी में शामिल करने के लिए भारत में कार्यरत विदेशी बैंकों द्वारा विदेशी मुद्रा में प्रधान कार्यालय उधार जुटाना

1. <u>उधार की शर्तें :</u>

टीयर II पूंजी में अधीनस्थ ऋण के रूप में शामिल करने के लिए भारत में कार्यरत विदेशी बैंकों द्वारा विदेशी मुद्रा में जुटाये जानेवाले प्रधान कार्यालय (प्रका) उधारों के लिए मानक अपेक्षाओं और शर्तों संबंधी विस्तृत दिशानिर्देश नीचे दिये अनुसार होंगे : -

i) *<u>उधार की राशि</u> :* विदेशी मुद्रा में प्रधान कार्यालय उधार की कुल राशि विदेशी बैंक के विवेकाानुसार होगी। किंतु टीयर II पूंजी में अधीनस्थ ऋण के रूप में शामिल किये जाने के लिए पात्र राशि भारत में रखी टीयर 1 पूंजी के 50 प्रतिशत की उच्चतम सीमा तथा नीचे पैरा 5 में उल्लिखित लागू बट्टा दर की शर्त के अधीन होगी। साथ ही, मौजूदा अनुदेशों के अनुसार कुल टीयर II पूंजी टीयर 1 पूंजी के 100 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

ii) *<u>परिपक्वता अवधि</u> :* प्रधान कार्यालय उधार की 5 वर्ष की न्यूनतम प्रारंभिक परिपक्वता होनी चाहिए। यदि उधार शृंखलाओं में है, तो प्रत्येक शृंखला को भारत में पांच वर्ष की न्यूनतम अवधि के लिए रखना होगा। निरंन्तर अधीनस्थ ऋण के स्वरूप में प्रधान कार्यालय उधार, जहां कोई अंतिम परिपक्वता तारीख नहीं है, की अनुमति नहीं होगी।

iii) *<u>विशेषताएं</u> :* प्रधान कार्यालय पूर्णतः चुकता होने चाहिए अर्थात् संपूर्ण उधार या उधार की प्रत्येक शृंखला भारत की शाखा में पूर्ण रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। यह बेजमानती, भारत में विदेशी बैंक के अन्य लेनदारों के दावों से अधीनस्थ, प्रतिबंधक शर्तों से मुक्त होना चाहिए तथा प्रधान कार्यालय के कहने पर प्रतिदेय नहीं होना चहिए।

iv) *<u>बट्टा दर</u> :* जैसे-जैसे प्रधान कार्यालय उधार परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं वैसे-वैसे वे नीचे दी गयी दरों पर प्रगामी बट्टे के अधीन होंगे :

उधार की शेष परिपक्वता	बट्टा दर
5 वर्ष से अधिक	लागू नहीं (संपूर्ण राशि पैरा 2 में दी गयी सीमा के अधीन टीयर II पूंजी में अधीनस्थ ऋण के रूप में शामिल की जा सकती है)
4 वर्ष से अधिक और 5 वर्ष से कम	20%
3 वर्ष से अधिक और 4 वर्ष से कम	40%
2 वर्ष से अधिक और 3 वर्ष से कम	60%
1 वर्ष से अधिक और 2 वर्ष से कम	80%
1 वर्ष से कम	100% (कोई राशि टीयर II पूंजी के लिए अधीनस्थ ऋण के रूप में नहीं मानी जा सकती)

v) *<u>ब्याज दर</u> :* प्रधान कार्यालय उधार पर ब्याज दर चालू बाज़ार दर से अधिक नहीं होनी चाहिए। ब्याज छमाही अंतरालों पर अदा किया जाना चाहिए।

vi) विदहोल्डिंग कर : प्रधान कार्यालय को ब्याज की अदायगियां यथाप्रयोज्य विदहोल्डिंग कर के अधीन होंगी।

vii) *<u>चुकौतियां</u> :* मूलधन की राशि की सभी चुकौतियां भारतीय रिज़र्व बैंक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग के पूर्व अनुमोदन की शर्त पर होंगी।

viii) *<u>प्रलेखीकरण</u> :* बैंक को विदेशी बैंक के भारतीय कार्यकलापों के लिए पूंजी आधार की अनुपूर्ति के लिए ऋण देने हेतु अपने प्रधान कार्यालय से सहमति पत्र प्राप्त करना चाहिए।

ऋण के प्रलेखन में इस बात की पुष्टि होनी चाहिए कि प्रधान कार्यालय द्वारा दिया गया ऋण भारत में विदेशी बैंक के अन्य सभी लेनदारों के दावों से अधीनस्थ होगा। ऋण-करार भारतीय कानून से नियंत्रित होगा तथा उसके अनुसार उसका अर्थ लगाया जायेगा । निर्गम की मूल शर्तों में किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के मामले में रिज़र्व बैंक का पूर्व अनुमोदन लेना चाहिए।

2. प्रकटीकरण

प्रधान कार्यालय उधार की कुल राशि तुलनपत्र में 'प्रधान कार्यालय से विदेशी मुद्रा में दीर्घावधि उधारों के स्वरूप में अधीनस्थ ऋण' शीर्ष में प्रकट की जाए।(अनुसूची 4- उधार)

3. आरक्षित निधि संबंधी अपेक्षाएं

प्रधान कार्यालय उधारों की कुल राशि को आरक्षित निधि की अपेक्षाओं के प्रयोजन के लिए निवल मांग और मीयादी देयताओं के लिए देयता के रूप में गिना जाना है तथा इस प्रकार उस पर सीआरआर/ एसएलआर संबंधी अपेक्षाएं लागू होंगी।

4. प्रतिरक्षा (हैजिंग)

प्रधान कार्यालय उधार की पूरी राशि हर समय बैंकों के पास पूर्णतः स्वैप बनी रहनी चाहिए। स्वैप भारतीय रुपये में होना चाहिए।

5. रिपोर्टिंग तथा प्रमाणन

ऊपर दिये गये दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए लिये जानेवाले ऐसे उधारों के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक का पूर्व अनुमोदन अपेक्षित नहीं होगा। किंतु इस परिपत्र के अधीन प्रधान कार्यालय से जुटायी गयी उधार की कुल राशि के संबंध में सूचना, इस आशय के प्रमाणपत्र के साथ कि उधार दिशानिर्देशों के अनुसार है, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग (अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग अनुभाग), बाह्य निवेश और परिचालन विभग तथा विदेशी मुद्रा विभाग) विदेशी मुद्रा बाजार प्रभाग) के प्रभारी मुख्य महाप्रबंधकों, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुबई को दी जानी चाहिए।

अनुबंध-7
(देखें पैरा 5.16.1)

1 फरवरी 2006 के परिपत्र बैंपविवि सं बीपी. बीसी.60/ 21.04.048/2005-06 द्वारा <u>जारी "मानक आस्तियों के प्रतिभूतिकरण के संबंध में दिशानिर्देश" से उद्धरण</u>

<u>"व्याप्ति</u>

1. दिशानिर्देशों में दिये गये विनियामक ढांचे में बैंकों, अखिल भारतीय मीयादी ऋण देनेवाली और पुनर्वित्त प्रदान करनेवाली संस्थाओं तथा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (अवशिष्ट गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों सहित) द्वारा मानक आस्तियों का प्रतिभूतिकरण शामिल है। दिशानिर्देशों में 'बैंक' के अंतर्गत उपर्युक्त सभी संस्थाएं शामिल होंगी ।

2. प्रतिभूतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा दिवालियेपन की बहुत ही कम संभावना वाली (बैंकरप्टसी रिमोट) विशेष प्रयोजन संस्था (एसपीवी) को आस्तियां बेची जाती हैं जिसके बदले में तत्काल नकदी भुगतान मिलता है । स्पेशल परपज़ वेहिकल (एसपीवी) द्वारा जारी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय के लिए आस्तियों के आधार समूह से नकदी प्राप्त होती है । इस प्रकार, प्रतिभूतिकरण में दो चरण की प्रक्रिया अपनायी जाती है । पहले चरण में एकल आस्ति या समूह की बिक्री और आस्तियों के समूह (पूल) की बिक्री ऐसे विशेष प्रयोजन संस्था (एसपीवी) को की जाती है जिसमें दिवालियेपन की बहुत ही कम संभावना रहती है, जिसके बदले में तत्काल नकदी भुगतान मिलता है तथा दूसरे चरण में पुनः पेकैजिंग की जाती है और क्रय-विक्रय योग्य ऋण प्रतिभूतियां जारी कर तीसरी पार्टी के निवेशकों को उक्त आस्ति या आस्तियों के समूह से प्राप्त होनेवाली नकदी पर दावों के प्रतिभूति लाभों की बिक्री की जाती है ।

3. प्रतिभूतिकरण लेनदेन के संबंध में बैंकों के ऋणा आदि जोखिम का "प्रतिभूतिकरण जोखिम" के रूप में उल्लेख किया गया है । प्रतिभूतिकरण जोखिम में निम्नलिखित शामिल हैं, परंतु वह उन तक ही सीमित नहीं है : एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों के संबंध में जोखिम, ऋण वृद्धि सुविधा, चलनिधि सुविधा, हामीदारी सुविधा, ब्याज दर या मुद्रा अदला-बदली तथा नकदी संपार्श्विक खाते ।

<u>"परिभाषा</u>

5. इन दिशानिर्देशों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की व्यापक परिभाषाएँ नीचे दी गई हैं। ये शब्द इन दिशानिर्देशों के विभिन्न संबंधित भागों में उपयुक्त स्थान पर पूरक रूप में दिये गये हैं ।

(i) "दिवालियेपन की बहुत ही कम संभावना वाले" का अर्थ है मूल प्रवर्तक अथवा उसके ऋणदाताओं सहित किसी के द्वारा किसी संस्था पर स्वैच्छिक अथवा अनैच्छिक तौर पर दिवालियेपन की कार्यवाही किये जाने की बहुत ही कम संभावना वाले;

(ii) "ऋण वृद्धि" किसी विशेष प्रयोजन संस्था (एसपीवी) को आस्तियों के समूह से संबद्ध हानियों से बचाव के लिए प्रदान की जाती है। एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों को किसी रेटिंग एजेन्सी द्वारा दी गई रेटिंग इस वृद्धि के स्तर को प्रतिबिंबित करेगी;

(iii) "प्रथम हानि सुविधा" एसपीवी द्वारा जारी की गई प्रतिभूतियों को निवेश के स्तर तक लाने की प्रक्रिया के भाग के रूप में एसपीवी को दी जानेवाली वित्तीय सहायता के प्रथम स्तर की द्योतक है। इस सुविधा को प्रदान करनेवाला एसपीवी द्वारा धारित आस्तियों के साथ संबद्ध अधिकांश (अथवा सभी) जोखिमों को वहन करता है;

(iv) "द्वितीय हानि सुविधा" संभाव्य हानियों के विरुद्ध किसी एसपीवी को सुरक्षा का द्वितीय (अथवा परवर्ती) स्तर प्रदान करनेवाली ऋण वृद्धि की द्योतक है;

(v) "चलनिधि सुविधाएं" निवेशकों को समय पर भुगतान करने में एसपीवी को समर्थ बनाती हैं । इनमें समूहित आस्तियों के संबंध में ब्याज और मूलधन के भुगतान के बीच समय के अंतरालों को एवं निवेशकों को देय अदायगियों को सुविधाजनक बनाना शामिल है;

(vi) "मूल प्रवर्तक' किसी प्रतिभूतिकरण संबंधी लेनदेन के भाग के रूप में अपने तुलन-पत्र से एक आस्ति अथवा आस्तियों के समूह को किसी एसपीवी को अंतरित करनेवाले बैंक का सूचक है तथा इसमें उस समेकित समूह की अन्य संस्थाएं भी शामिल हैं जिससे बैंक संबद्ध है;

(vii) "प्रतिभूतिकरण" का आशय उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा एक अर्जक आस्ति अथवा अर्जक आस्तियों के समूह की बिक्री किसी दिवालियेपन की बहुत ही कम संभावना वाले एसपीवी को की जाती है तथा तत्काल नकद भुगतान के बदले में मूल प्रवर्तक के तुलन-पत्र से इसका/इनका अंतरण एसपीवी को किया जाता है;

(viii) "सेवा प्रदाता" से आशय उस बैंक से है जो एसपीवी की ओर से (क) प्रतिभूतिकरण के अंतर्निहित ऋण आदि जोखिम अथवा जोखिमों के समूह के नकदी प्रवाहों से संबंधित प्रशासनिक कार्य; (ख) निधि प्रबंधन; तथा (ग) निवेशकों से संबंधित सेवा कार्य करता है;

(ix) "विशेष प्रयोजन संस्था (एसपीवी)" से आशय ऐसी किसी कंपनी, न्यास, अथवा अन्य संस्था से है जो किसी विशेष प्रयोजन के लिए गठित की गई हो- (क) जिसके कार्यकलाप स्थिति के अनुसार उक्त कंपनी, न्यास अथवा अन्य संस्था के उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए सीमित हों; तथा (ख) जिसकी संरचना इस प्रकार से की गई हो कि उसमें दिवालियेपन की बहुत ही कम संभावना वाले बनाने के लिए मूल प्रवर्तक के ऋण जोखिम से, स्थिति के अनुसार निगम, न्यास अथवा संस्था को अलग करने के उद्देश्य को पूरा किया जा सके;

(x) "हामीदारी" से आशय उस व्यवस्था से है जिसके अंतर्गत कोई भी बैंक यदि कोई अन्य खरीदार आगे नहीं आता है तो निश्चित तारीख को निश्चित मूल्य पर नए निर्गम में प्रतिभूतियों की विशिष्ट मात्रा को खरीदने के लिए निर्गम से पहले सहमति देता है ।

वास्तविक बिक्री

6. प्रतिभूतिकरण के ढांचे में मूल प्रवर्तक के तुलन-पत्र से अंतरित आस्तियों को निकालने की सुगमता के लिए मूल प्रवर्तक से आस्तियों का पृथक्करण अथवा एसपीवी को 'वास्तविक बिक्री' एक अनिवार्य अपेक्षा है। यदि मूल प्रवर्तक द्वारा एसपीवी को आस्तियों का अंतरण नीचे दी गई वास्तविक बिक्री की सभी शर्तों के पूर्ण अनुपालन में किया जाता है, तो उक्त अंतरण को 'वास्तविक बिक्री' माना जाएगा तथा मूल प्रवर्तक के लिए यह आवश्यक नहीं होगा कि वह ऐसे अंतरण की तारीख से इस प्रकार अंतरित की गई आस्तियों के मूल्य हेतु कोई पूंजी बनाए रखे । ऐसे अंतरण की प्रभावी तारीख विद्यमान करार में सुस्पष्ट रूप से निर्दिष्ट की जानी चाहिए । अंतरित आस्तियों के "वास्तविक बिक्री" के मानदंडों के अनुरूप न होने की स्थिति में आस्तियों को मूल प्रवर्तक के तुलन-पत्र में विद्यमान माना जाएगा और तदनुसार मूल प्रवर्तक से यह अपेक्षित होगा कि वह उन आस्तियों के लिए पूंजी बनाए रखे। वास्तविक बिक्री के जो मानदंड नीचे निर्धारित हैं, केवल उदाहरण स्वरूप हैं और परिपूर्ण नहीं हैं ।

7. **आस्तियों की "वास्तविक बिक्री" के लिए मानदंड**

7.1 बिक्री के परिणामस्वरूप उन आस्तियों से मूल प्रवर्तक को तुरंत कानूनी तौर पर अलग हो जाना चाहिए जिनकी बिक्री नये स्वामी अर्थात् एसपीवी को हो चुकी है । एसपीवी को अंतरण के बाद आस्तियों को मूल प्रवर्तक से पूर्णतः पृथक होना चाहिए, अर्थात् उन्हें मूल प्रवर्तक एवं उनके ऋणदाताओं की पहुँच से, मूल प्रवर्तक के दिवालियेपन की स्थिति में भी दूर रखा जाना चाहिए ।

7.2 मूल प्रवर्तक को चाहिए कि वह आस्ति से संबंधित सभी जोखिमों/प्रतिफलों तथा अधिकारों/ दायित्वों का प्रभावी रूप में अंतरण कर दे तथा एसपीवी को आस्ति की बिक्री के बाद उसमें किसी भी प्रकार का लाभकारी हित न रखे। एसपीवी द्वारा जारी की गई प्रतिभूतियों की पूरी अवधि की समाप्ति पर प्रतिभूतिकृत आस्तियों पर किसी भी अतिरिक्त आय के लिए मूल प्रवर्तक को हकदार बनानेवाले करार को वास्तविक बिक्री के मानदंडों का उल्लंघन नहीं माना जाएगा। एसपीवी को चाहिए कि वह आस्तियों को किसी प्रतिबंधात्मक शर्त के बिना बंधक रखने, बेचने, अंतरित करने अथवा विनिमय करने या किसी भी अन्य प्रकार से निपटान करने का बंधनरहित अधिकार प्राप्त करे ।

7.3 बिक्री के बाद मूल प्रवर्तक का आस्तियों में कोई आर्थिक हित नहीं होगा तथा एसपीवी को इन दिशानिर्देशों में विशेष रूप से अनुमत बातों को छोड़कर किसी भी व्यय अथवा हानि के लिए मूल प्रवर्तक का किसी भी प्रकार से आश्रय नहीं लेना होगा।

7.4 मूल प्रवर्तक पर बिक्री के समय की गई वारंटियों अथवा अभ्यावेदनों के उल्लंघन से उत्पन्न होनेवाली जिम्मेदारियों को छोड़कर किसी भी समय आस्ति अथवा उसके किसी भाग की पुनः खरीद करने या पुनर्भुगतान का निधीयन करने या एसपीवी द्वारा धारित आस्तियों को

प्रतिस्थापित करने या उसे अतिरिक्त आस्तियाँ उपलब्ध कराने का कोई दायित्व नहीं होगा । मूल प्रवर्तक को यह दर्शाने में समर्थ होना चाहिए कि एसपीवी को इस आशय की सूचना दी गई है और एसपीवी ने ऐसे दायित्व के न होने की स्वीकृति दी है ।

7.5 प्रतिभूतिकरण योजना की समाप्ति पर पूर्णतः अर्जक आस्तियों की पुनः खरीद करने का विकल्प मूल प्रवर्तक द्वारा रखा जा सकता है जहाँ ऐसी आस्तियों का अवशिष्ट मूल्य कुल मिलाकर एसपीवी को बेची गई मूल राशि के 10 प्रतिशत से कम हो गया हो ("क्लीन अप कॉल्स") जैसा कि पैरा 10 के अनुसार अनुमति दी गई है ।

7.6 मूल प्रवर्तक को यह दर्शाने में समर्थ होना चाहिए उसने कि यह सुनिश्चित करने के लिए सभी उचित पूर्व सावधानियां बरती हैं कि वह उक्त योजना अथवा निवेशकों द्वारा उठाई गई किसी भी हानि को वहन करने के लिए बाध्य नहीं है, न ही वह ऐसी बाध्यता के लिए प्रेरित होनेवाला है ।

7.7 बिक्री केवल नकदी आधार पर ही होगी और प्रतिफल एसपीवी को आस्तियाँ अंतरित करने के समय तक प्राप्त किया जाएगा । बिक्री का प्रतिफल बाजार-आधारित होना चाहिए तथा उसकी गणना पारदर्शी तरीके से पर्याप्त दूरी के आधार पर की जानी चाहिए ।

7.8 इन दिशानिर्देशों में विशिष्ट रूप में दी गयी अनुमति के अनुसार कुछ सेवाओं (जैसे ऋण की वृद्धि, चलनिधि सुविधा, हामीदारी, आस्तियों का शोधन, आदि) तथा मूल प्रवर्तकों द्वारा परिणामी जोखिमों /दायित्वों को ग्रहण करने की व्यवस्था, लेनदेन के 'वास्तविक बिक्री' के स्वरूप से कम नहीं होगी बशर्ते सेवा संबंधी ऐसे दायित्वों के कारण प्रतिभूतिकृत आस्तियों पर किसी भी प्रकार का अवशिष्ट ऋण जोखिम नहीं आएगा अथवा उनके लिए ऐसी सेवाओं के संबंध में संविदागत निष्पादन बाध्यताओं से अधिक कोई भी अतिरिक्त दायित्व नहीं होगा ।

7.9 मूल प्रवर्तक बैंक के विधिक परामर्शदाता की राय रिकार्ड में रखी जानी चाहिए जिसमें यह सूचित किया गया हो कि (i) आस्तियों के सभी अधिकार, स्वामित्व हित और लाभों को एसपीवी को अंतरित कर दिया गया है; (ii) ऋण वृद्धि/चलनिधि सुविधा जैसे कुछ अनुमत संविदागत दायित्वों की देयताओं को छोड़कर इन आस्तियों के संबंध में मूल प्रवर्तक का किसी भी प्रकार से निवेशकों के प्रति कोई दायित्व नहीं है, और (iii) मूल प्रवर्तक के ऋणकर्ता को संबंधित मूल प्रवर्तक के दिवालियेपन के मामले में भी इन आस्तियों के मामले में किसी भी प्रकार से कोई अधिकार नहीं है ।

7.10 एसपीवी को आस्तियों के अंतरण के बाद प्रभावी हुए आधारभूत करारों की शर्तों का कोई पुनर्निर्धारण, पुनर्रचना अथवा पुनः परक्रामण एसपीवी पर बाध्य होगा, न कि मूल प्रवर्तक पर तथा वह निवेशकों, ऋण वृद्धि प्रदाताओं और अन्य सेवा प्रदाताओं की स्पष्ट सहमति से ही किया जाएगा । बिक्री लेनदेन दस्तावेज़ों में इसका स्पष्ट रूप से प्रावधान किया जाना चाहिए ।

7.11 मूल प्रवर्तक से आस्तियों के अंतरण से आस्तियों को नियंत्रित करनेवाले किसी आधारभूत करार की शर्तों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए और बाध्यताधारियों (अन्य पक्षों सहित, जहां आवश्यक हो) से सभी आवश्यक सहमतियां प्राप्त की जानी चाहिए ।

7.12 यदि मूल प्रवर्तक एसपीवी के साथ किये करार के अंतर्गत, प्रतिभूतिकरण के बाद आस्तियों के क्रय-विक्रय का भी प्रावधान करता है और ऋणकर्ता से भुगतान/चुकौती उसके माध्यम से की जाती है तो वह जब तक संबंधित ऋणकर्ताओं से प्राप्त नहीं होती तब तक एसपीवी/निवेशकों को निधि प्रेषित करने के लिए बाध्य नहीं है ।

7.13 मूल प्रवर्तक पर एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियां खरीदने का कोई दायित्व नहीं होना चाहिए और उनके प्राथमिक निर्गमों में उसे अंशदान नहीं करना चाहिए। तथापि, मूल प्रवर्तक एसपीवी द्वारा जारी पुरानी प्रतिभूतियां ही निवेश प्रयोजनों के लिए बाज़ार मूल्य पर खरीद सकते हैं यदि वे कम-से-कम 'निवेश ग्रेड' हों । ऐसी खरीद, हामीदारी प्रतिबद्धताओं के कारण सुपुर्द की गयी प्रतिभूतियों सहित संबंधित निर्गम की मूल राशि के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए ।

7.14 मूल प्रवर्तक एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों के मार्केट-मेकिंग या लेनदेन में रुचि नहीं लेगा।

7.15 एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों के लिए कोई विक्रय विकल्प नहीं होगा। आधारभूत आस्तियों पर भुगतानपूर्व जोखिम से निपटने के लिए उक्त प्रतिभूतियों के लिए क्रय विकल्प हो सकता है।

<u>एसपीवी द्वारा पूरे किये जानेवाले मानदंड</u>

8. एसपीवी एक विशेष प्रयोजन वाली संस्था है जो ऐसी प्रतिभूतिकरण प्रक्रिया के दौरान गठित की गयी जिसे प्रतिभूतिकृत आस्तियों में लाभार्थियों के हित को बिना विकल्प आधार पर बेचा/अंतरित किया जाता है । एसपीवी एक भागीदारी फर्म, न्यास या कंपनी हो सकती है । इन दिशानिर्देशों में एसपीवी के किसी संदर्भ का अर्थ प्रतिभूतिकरण की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में एसपीवी द्वारा स्थापित या घोषित न्यास भी होगा । वास्तविक बिक्री के रूप में एसपीवी को मूल प्रवर्तक द्वारा अंतरित आस्तियों पर कार्रवाई कर सकने, पूंजी पर्याप्तता संबंधी विवेकपूर्ण दिशानिर्देश तथा उसके द्वारा लिये गये प्रतिभूतिकरण जोखिमों से संबंधित अन्य पहलुओं को लागू करने के लिए एसपीवी को निम्नलिखित मानदंडों को पूरा करना होगा :

8.1 मूल प्रवर्तक तथा एसपीवी के बीच लेनदेन पूरी तरह पर्याप्त दूरी के आधार पर होना चाहिए । साथ ही, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि एसपीवी के साथ कोई लेनदेन जानबूझकर भावी हानि को पूरा करने के लिए न हो ।

8.2 आस्तियों के मूल प्रवर्तक के साथ एसपीवी और न्यासी के नाम में समानता नहीं होनी चाहिए या उसके शीर्षक अथवा नाम में कोई संबद्धता या संबंध नहीं होना चाहिए ।

8.3 एसपीवी मूल प्रवर्तक से पूर्णतः स्वतंत्र होनी चाहिए। प्रवर्तक का एसपीवी में कोई मालिकाना, स्वामित्व अथवा लाभकारी हित नहीं होना चाहिए । मूल प्रवर्तक को एसपीवी में कोई शेयर पूंजी धारित नहीं करनी चाहिए ।

8.4 एसपीवी के बोर्ड में मूल प्रवर्तक का केवल एक प्रतिनिधि होगा जिसे वीटो का अधिकार नहीं होगा, बशर्ते उक्त बोर्ड में कम-से-कम चार सदस्य हों और स्वतंत्र निदेशकों की अधिकता हो ।

8.5 मूल प्रवर्तक एसपीवी और न्यासियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष नियंत्रण नहीं करेगा और न्यास विलेख का निर्णय नहीं करेंगे ।

8.6 एसपीवी दिवालियेपन की बहुत ही कम संभावना वाला होगा और विवेकाधिकार रहित होगा ।

8.7 न्यास विलेख में न्यासियों द्वारा निष्पादित किये जानेवाले कार्यों, उनके अधिकारों, दायित्वों तथा प्रतिभूतिकृत आस्तियों के संबंध में निवेशकों के अधिकारों और दायित्वों को विस्तार से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए । न्यास विलेख से न्यासी को न्यास संपत्ति के निपटान और प्रबंधन अथवा अनुप्रयोग की पद्धति में किसी प्रकार का विवेकाधिकार नहीं मिलना चाहिए । अपने हितों की रक्षा के लिए न्यास विलेख में निवेशकों को किसी भी समय न्यासी को बदलने के अधिकार दिये जाने चाहिए ।

8.8 न्यासी को एसपीवी के संबंध में केवल न्यास संबंधी कार्य करने चाहिए और एसपीवी के साथ अन्य कोई कारोबार नहीं करना चाहिए ।

8.9 इन दिशानिर्देशों में स्पष्टतः अनुमत सुविधाओं के अंतर्गत आनेवाली हानियों को छोड़कर मूल प्रवर्तक एसपीवी की हानियों को वहन नहीं करेगा और एसपीवी के आवर्ती व्ययों को पूरा करने के लिए भी बाध्य नहीं होगा ।

8.10 एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों का श्रेणी निर्धारण अनिवार्यतः सेबी में पंजीकृत श्रेणी निर्धारक एजेन्सी द्वारा किया जाना चाहिए और किसी भी समय यह श्रेणी निर्धारण 6 महीने से अधिक पुराना न हो । ऋण पात्रता श्रेणी निर्धारण सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होना चाहिए । श्रेणी निर्धारण और उसके बाद के अद्यतनीकरण के लिए एसपीवी को चाहिए कि वह समय पर संबंधित श्रेणी निर्धारण एजेन्सी को आवश्यक जानकारी की आपूर्ति करे । एसपीवी और श्रेणी निर्धारक एजेन्सी के बीच यदि हित की समानता अथवा भिन्नता है तो उसे भी प्रकट किया जाना चाहिए ।

8.11 एसपीवी को चाहिए कि वह उसके द्वारा जारी की गयी प्रतिभूतियों में निवेशकों को सूचित करे कि ये प्रतिभूतियां बीमाकृत नहीं हैं और वे मूल प्रवर्तक, सर्विसर या न्यासियों की जमा देयताएं नहीं है ।

8.12 एसपीवी के न्यास विलेख तथा लेखों एवं कार्यकलापों की एक प्रतिलिपि मांगे जाने पर भारतीय रिज़र्व बैंक को उपलब्ध करायी जाए ।

<u>खास विशेषताएं</u>

9. अभ्यावेदन और वारंटियां

एसपीवी को आस्तियां बेचनेवाले मूल प्रवर्तक को उन आस्तियों के संबंध में अभ्यावेदन तथा वारंटियां तैयार करनी होगी । जहां निम्नलिखित शर्तों को पूरा किया गया हो वहां मूल प्रवर्तक के लिए ऐसे अभ्यावेदन तथा वारंटियों हेतु पूंजी धारित करना अनिवार्य नहीं होगा ।

(क). किसी भी अभ्यावेदन अथवा वारंटी का प्रावधान केवल औपचारिक लिखित करार के जरिए किया गया है ।

(ख) किसी भी अभ्यावेदन या वारंटी का प्रावधान करने या उसे स्वीकृत करने से पहले मूल प्रवर्तक उचित सतर्कता बरतता है ।

(ग) अभ्यावेदन या वारंटी में तथ्यों की वर्तमान स्थिति का संदर्भ है जिसका सत्यापन आस्तियों के विक्रय के समय मूल प्रवर्तक द्वारा किया जा सकता है ।

(घ) अभ्यावेदन या वारंटी निरंतर स्वरूप की नहीं है, और विशेष रूप में आस्तियों की भविष्य में उधार पात्रता, एसपीवी के और/अथवा एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों के कार्य निष्पादन से संबंधित नहीं है ।

(ङ) एसपीवी को बेची गयी आस्तियों (या उसके किसी भाग) को प्रतिस्थापित करने के लिए मूल प्रवर्तक को बाध्य करते हुए अभ्यावेदन या वारंटी का प्रयोग

* एसपीवी को आस्तियों के अंतरण से 120 दिनों के भीतर किया जाना चाहिए ।
* मूल बिक्री की जैसी शर्तों पर किया जाना चाहिए ।

(च) मूल प्रवर्तक को अभ्यावेदन या वारंटी भंग के लिए हर्जाना भुगतान की अपेक्षा की जाती है तो वह ऐसा कर सकता है बशर्ते हर्जाना भुगतान करार की निम्नलिखित शर्तों का पालन किया गया हो -

* अभ्यावेदन या वारंटी भंग के लिए प्रमाण का दायित्व पूर्णतः ऐसा आरोप करनेवाले पक्ष पर होगा;
* वारंटी भंग का आरोप करनेवाले पक्ष ने मूल प्रवर्तक को दावे के लिए आधार स्पष्ट करते हुए लिखित दावा नोटिस भेजा हो; और
* वारंटी भंग के परिणामस्वरूप हुई प्रत्यक्ष हानि तक ही हर्जाना सीमित हो ।

(छ) मूल प्रवर्तक को भारतीय रिज़र्व बैंक (बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग) को ऐसे सभी प्रसंगों के बारे में सूचित करना चाहिए जहां वह एसपीवी को बेची गयी आस्तियों को प्रतिस्थापित करने या किसी भी अभ्यावेदन अथवा वारंटी से उत्पन्न हर्जाने का भुगतान करने के लिए सहमत हुआ हो ।

10. एसपीवी से आस्तियों की पुनर्खरीद

प्रतिभूतिकरण योजना के अंत में पूर्णतः अर्जक आस्तियों की पुनर्खरीद का विकल्प, प्रवर्तक द्वारा रखा जा सकता है जहां ऐसी आस्तियों का अवशिष्ट मूल्य कुल मिलाकर, एसपीवी को बेची गयी मूल राशि के 10 प्रतिशत से नीचे गया हो (क्लीन अप कॉल) और इसे 'प्रभावी नियंत्रण' के अर्थ में न लिया जाए, बशर्ते :

i) बाज़ार की शर्तों (कीमत/फीस को शामिल करते हुए) से पर्याप्त दूरी रखकर खरीद की जाती है और यह मूल प्रवर्तक की सामान्य ऋण स्वीकृति तथा समीक्षा प्रक्रिया के अधीन है; और

ii) क्लीन अप कॉल उसके विवेक पर किया जाता है ।

<u>ऋण संवर्धन सुविधाओं के प्रावधान संबंधी नीति</u>

11. विस्तृत नीति

ऋण वृद्धि सुविधाओं में एसपीवी को प्रदान की गयीं वे सभी व्यवस्थाएं शामिल हैं जिनके परिणामस्वरूप एसपीवी या उसके निवेशकों की हानि को बैंक समा ले सकता है । इस प्रकार की सुविधाएं मूल प्रवर्तक और तीसरी पार्टी दोनों द्वारा प्रदान की जा सकती है । जब कोई बैंक विशेष प्रयोजन संस्था अथवा उसके निवेशकों को, सुनिश्चित या अव्यक्त रूप में ऋण वृद्धि प्रदान करता है तो उसे लिये गये ऋण जोखिम हेतु पूंजी धारित करना चाहिए । ऋण वृद्धि सुविधा प्रदान करनेवाली संस्था को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि निम्नलिखित शर्तें पूरी की जाती हैं । जहां इनमें से कोई शर्त पूरी नहीं की जाती तो ऋण वृद्धि सुविधा प्रदान करनेवाले बैंक को प्रतिभूति आस्ति के संपूर्ण मूल्य हेतु पूंजी धारित करनी होगी जैसे कि वे उसके तुलन पत्र में रखी गयी हो ।

11.1 इस सुविधा के प्रावधान का ढांचा इस तरह बनाया जाए कि अन्य सुविधाओं से इसे स्पष्ट रूप में भिन्न रखा जा सके और बैंक द्वारा प्रदान की जानेवाली अन्य किसी सुविधा से भिन्न रूप में उसका प्रलेख बनाया जाए । सुविधा का स्वरूप, प्रयोजन, सुविधा का विस्तार और कार्य निष्पादन के सभी आवश्यक मानक को ऐसे लिखित करार में विनिर्दिष्ट किया जाना चाहिए जो लेनदेन के प्रारंभ में निष्पादित किया जाए और प्रस्ताव दस्तावेज में प्रकट किया जाए ।

11.2 यह सुविधा बाज़ार की शर्तों पर 'दूरी रखने के आधार' पर प्रदान की जाती है और सुविधा प्रदाता की सामान्य ऋण स्वीकृति तथा समीक्षा प्रक्रिया के अधीन होती है ।

11.3 इस सुविधा के लिए किसी फीस का भुगतान अथवा अन्य आय अधीनस्थ नहीं है अथवा आस्थगन या छूट के अधीन नहीं है ।

11.4 यह सुविधा विशिष्ट राशि तथा अवधि तक सीमित है ।

11.5 इस सुविधा की अवधि निम्नलिखित के संदर्भ में पहले पड़ने वाली तारीख तक सीमित है :

i) आधार आस्तियों का मोचन किया गया

ii) एसपीवी द्वारा जारी की गयी प्रतिभूतियों से संबंधित दावों का भुगतान किया गया; अथवा

iii) बैंक के दायित्वों को अन्यथा समाप्त किया गया ।

11.6 सुविधा प्रदाता को निर्धारित संविदागत दायित्वों से अधिक दायित्व नहीं लेना चाहिए । विशेष रूप से सुविधा प्रदाता को चाहिए कि वह प्रतिभूतिकरण के आवर्ती व्यय का वहन न करे ।

11.7 सुविधा प्रदाता के पास अपने विधि परामर्शदाताओं से यह लिखित राय है कि करार की शर्तें उसे प्रतिभूतिकरण में निवेशकों या एसपीवी/न्यासी के, सुविधा के प्रावधान को नियंत्रित करनेवाले करार के अनुसरण में आनेवाले उनके संविदागत दायित्वों के संबंध में होनेवाली देयताओं को छोड़कर, किसी भी देयता से बचाव करती है ।

11.8 एसपीवी और/अथवा एसपीवी द्वारा जारी की गयी प्रतिभूतियों के निवेशकों को सुविधा प्रदान करने के लिए वैकल्पिक पक्ष को चुनने का स्पष्ट अधिकार होता है ।

11.9 ऋण वृद्धि सुविधा केवल प्रतिभूतिकरण लेनदेन के प्रारंभिक समय पर ही प्रदान की जाए ।

11.10 प्रतिभूतिकरण लेनदेन के प्रारंभ में प्रदान की गयी ऋण वृद्धि की राशि एसपीवी को एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों के संपूर्ण कार्यकाल के दौरान उपलब्ध होनी चाहिए । ऋण वृद्धि की राशि में एसपीवी या इसके निवेशकों को होनेवाली हानियों से निर्मित आकस्मिकताओं को पूरा करने के लिए किये जानेवाले आहरण तक ही कमी की जाएगी । एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों के कार्यकाल के दौरान प्रदाता को ऋण वृद्धि का कोई भी भाग नहीं दिया जाएगा ।

11.11 ऋण वृद्धि के किसी उपयोग/आहरण को तत्काल लाभ-हानि लेखा में नामे डालकर बट्टे खाते लिख देना चाहिए ।

11.12 जब कोई पहली हानि-सुविधा ठोस पर्याप्त रक्षा प्रदान नहीं करती, तो दूसरी हानि-सुविधा शायद जोखिम का असमानुपाती भाग वहन कर सकती है । इस संभावना को सीमित करने के लिए ऋण वृद्धि सुविधा को दूसरी हानि सुविधा केवल वहीं माना जाएगा :

* जहां उसे पर्याप्त पहली हानि सुविधा द्वारा संरक्षण प्राप्त हो;
* जहां पहली हानि सुविधा पूर्णतः समाप्त हो जाने पर ही इसका आहरण किया जा सकता है;
* जहां वह पहली हानि सुविधा द्वारा रक्षा प्राप्त सीमा से आगे की हानियों को ही रक्षा प्रदान करती है, तथा
* जहां पहली हानि सुविधा का प्रदाता अपने दायित्वों को पूरा करना जारी रखता हो

यदि दूसरी हानि सुविधा उपर्युक्त मानदंडों को पूरा नहीं करती तो उसे पहली हानि सुविधा के रूप में माना जाएगा ।

11.13 पहली हानि सुविधा को वहां पर्याप्त माना जाएगा जहां वह अनुरूपण या अन्य तकनीकों द्वारा अनुमानित अनेक पारंपरिक हानियों का अथवा अत्यंत खराब मामलों से संबद्ध हानियों का बचाव करती हो । दूसरी हानि सुविधा का प्रदाता पर्याप्त दूरी बनाये रखने के आधार पर पहली हानि सुविधा की पर्याप्तता का मूल्यांकन करेगा और छह महीने में कम-से-कम एक बार इसकी आवधिक समीक्षा करेगा । मूल्यांकन तथा समीक्षा करते समय निम्नलिखित तत्वों को ध्यान में लिया जाए :

i) एसपीवी द्वारा धारित आस्तियों का वर्ग और गुणवत्ता;

ii) आस्तियों के संबंध में चूक दरों का वृतांत;

iii) आस्तियों के संबंध में अपेक्षित चूक दरों के मूल्यांकन हेतु बैंकों द्वारा उपयोग किये गये किसी भी सांख्यिकीय मॉडलों के परिणाम;

iv) किस प्रकार के कार्यकलापों में एसपीवी लगी है अथवा लगने के लिए उसे अनुमति दी गयी है ;

v) पहली हानि सुविधा प्रदान करनेवाली पार्टियों की गुणवत्ता; और

vi) पहली हानि बचाव की पर्याप्तता के बारे में प्रतिष्ठित रेटिंग एजेन्सियों द्वारा प्रदान की गयी राय अथवा रेटिंग पत्र ।

12. मूल प्रवर्तक द्वारा प्रदान किये गये ऋण संवर्धन पर कार्रवाई

12.1 पहली हानि सुविधा के संबंध में कार्रवाई : मूल प्रवर्तक द्वारा प्रदान की गयी पहली हानि ऋण वृद्धि, पूंजी निधि से कम की जाएगी और इस कटौती को उस पूंजी राशि में लिया जाएगा जो बैंक के लिए आस्तियों के संपूर्ण मूल्य हेतु उस स्थिति में धारित करना अपेक्षित होता यदि उनका प्रतिभूतिकरण नहीं होता । यह कटौती टीयर 1 पूंजी से 50 प्रतिशत और टीयर II पूंजी से 50 प्रतिशत की जाएगी ।

12.2 दूसरी हानि-सुविधा के संबंध में कार्रवाई : मूल प्रवर्तक द्वारा प्रदान की गयी दूसरी हानि को पूंजी निधि से पूर्णतः कम किया जाएगा । यह कटौती टीयर 1 पूंजी से 50 प्रतिशत और टीयर II पूंजी से 50 प्रतिशत की जाएगी ।

13. तीसरी पार्टी द्वारा प्रदान किये गये ऋण संवर्धन के संबंध में कार्रवाई

13.1 पहली हानि सुविधा के संबंध में कार्रवाई : तीसरी पार्टी सेवा प्रदाता द्वारा प्रदान किये गये पहली हानि ऋण संवर्धन को उपर्युक्त पैरा 12.1 में उल्लेख किये अनुसार पूंजी से पूर्णतः कम किया जाएगा ।

13.2 दूसरी हानि सुविधा के संबंध में कार्रवाई : दूसरी हानि ऋण संवर्धन को 100 प्रतिशत ऋण परिवर्तन कारक के साथ प्रत्यक्ष ऋण प्रतिस्थापक के रूप में और सुविधा की राशि हेतु 100 प्रतिशत जोखिम भार के रूप में माना जाएगा ।

<u>चलनिधि सुविधाओं के प्रावधान के संबंध में नीति</u>

14. चलनिधि समर्थन के प्रावधान पर ब्योरे-वार नीति

एसपीवी द्वारा सामना किये जानेवाले आधार आस्तियों से प्राप्त नकदी प्रवाह और निवेशकों को किये जानेवाले भुगतान के बीच समय के अंतर को ठीक करने के लिए चलनिधि सुविधा प्रदान की जाती है । ऋण वृद्धि और/या ऋण समर्थन के रूप में इस सुविधा का उपयोग किये जाने की संभावना से बचने हेतु चलनिधि सुविधा को निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना चाहिए । यदि यह सुविधा इन शर्तों को पूरा नहीं कर पाती तो इसे ऋण वृद्धि का आर्थिक प्रयोजन सिद्ध करनेवाला माना जाएगा और तीसरी पार्टी द्वारा प्रदान की जानेवाली चलनिधि सुविधा को पहली हानि सुविधा के रूप में माना जाएगा और मूल प्रवर्तक द्वारा प्रदान की गयी चलनिधि सुविधा को दूसरी हानि सुविधा माना जायेगा ।

14.1 उपर्युक्त पैरा 11.1 से 11.8 में निर्दिष्ट सभी शर्तें ।

14.2 प्रतिभूतिकृत आस्तियों को पर्याप्त पहली हानि वृद्धि द्वारा रक्षा प्रदान की गई हो ।

14.3 सुविधा के लिए प्रलेखीकरण में स्पष्ट तौर पर उन परिस्थितियों को परिभाषित किया जाए जिनमें इस सुविधा के अंतर्गत आहरण किया जा सकता है या नहीं किया जा सकता ।

14.4 इस सुविधा के अंतर्गत आहरण तभी किये जा सकने चाहिए जब आहरणों को कवर करने के लिए पर्याप्त स्तर की गैर-चूककारी आस्तियां हों या आस्तियों की कुल राशि जो कि अनर्जक बन गई हो, पर्याप्त ऋण वृद्धि से रक्षा प्राप्त हो ।

14.5 इस सुविधा से निम्नलिखित उद्देश्य के लिए आहरण न किया जाए

क) ऋण वृद्धि प्रदान करने के लिए

ख) एसपीवी की हानियों की पूर्ति के लिए

ग) स्थायी परिक्रामी निधि के तौर पर उपयोग करने; तथा

घ) आहरण के पहले निवेशों के आधार समूह में हुई हानियों को पूरा करने के लिए

14.6 चलनिधि सुविधा निम्नलिखित के लिए उपलब्ध नहीं होनी चाहिए (क) प्रतिभूतिकरण के आवर्ती व्ययों को पूरा करने के लिए; (ख) एसपीवी द्वारा अतिरिक्त आस्तियों के अभिग्रहण हेतु निधियन के लिए; (ग) निवेशकों की अंतिम निर्धारित चुकौती का निधीयन करने के लिए तथा (घ) वारंटियों के भंग के निधीयन के लिए ।

14.7 एसपीवी को निधियन दिया जाना चाहिए, न कि सीधे निवेशकों को ।

14.8 जब चलनिधि सुविधा से आहरण किया गया है तब सुविधा प्रदान करनेवाले को आधार आस्तियों से होनेवाले भविष्य के नकदी प्रवाहों पर दावे की प्राथमिकता होनी चाहिए जो वरिष्ठतम निवेशक के दावों से भी वरिष्ठ होगा ।

14.9 जब मूल प्रवर्तक चलनिधि सुविधा प्रदान कर रहा है तब मूल प्रवर्तक के समूह की संस्थाओं से भिन्न स्वतंत्र तीसरी पार्टी द्वारा उस चलनिधि सुविधा का कम-से-कम 25% अंश सह-प्रदान करना चाहिए जिससे आहरण किया जाएगा तथा समानुपातिक आधार पर चुकौती की जानी चाहिए । स्वतंत्र पार्टी द्वारा प्रदान की गई चलनिधि सहायता में किसी भी कमी को पूरा करने का दायित्व मूल प्रवर्तक का नहीं होना चाहिए । प्रारंभिक चरण में किसी बैंक द्वारा चलनिधि सुविधा की पूरी राशि इस आधार पर प्रदान की जा सकती है कि वह उपर्युक्त सुविधा में भाग लेने के लिए एक स्वतंत्र पार्टी को शामिल कर लेगा । मूल प्रवर्तक को ऐसी स्वतंत्र तीसरी पार्टी ढूंढ निकालने के लिए 3 महीनों का समय मिलेगा ।

15. चलनिधि सुविधा के संबंध में कार्रवाई

15.1 आहरित न किये जाने की सीमा तक चलनिधि सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता तुलन-पत्र से बाहर की मद होगी तथा इस पर 100% ऋण परिवर्तन तत्व तथा 100% जोखिम भार लागू होगा । जिस सीमा तक प्रतिबद्धता निधिक सुविधा बन जाती है, उस सीमा तक इस पर 100% जोखिम भार लागू होगा ।

15.2 चूंकि चलनिधि सुविधा, अस्थायी बेमेल नकदी प्रवाह को ठीक करने के लिए बनाई गई है, अतः यह सुविधा अल्प अवधियों के लिए ही आहरणयोग्य रहेगी । यदि इस सुविधा के अंतर्गत आहरण 90 दिनों से अधिक तक बकाया रहते हैं तो इन्हें अनर्जक आस्तियों के रूप में वर्गीकृत कर इसका पूरा प्रावधानीकरण किया जाए ।

<u>हामीदारी सुविधाओं के प्रावधान संबंधी नीति</u>

16. सामान्य नीति

एक मूल प्रवर्तक या तीसरी पार्टी का सेवा प्रदाता एसपीवी द्वारा प्रतिभूतियों के निर्गम के लिए हामीदार की भूमिका निभा सकता है तथा पूंजी पर्याप्तता प्रयोजनों के लिए इसे निम्नलिखित शर्तों पर हामीदारी सुविधा मान सकता है । यदि शर्तों में से कोई पूरी नहीं की जाती, तो यह सुविधा ऋण वृद्धि के रूप में मानी जाएगी तथा तीसरी पार्टी द्वारा प्रदान करने पर पहली हानि सुविधा मानी जाएगी और प्रवर्तक द्वारा प्रदान करने पर दूसरी हानि सुविधा मानी जाएगी ।

16.1 पैरा 11.1 से 11.8 तक में विनिर्दिष्ट सभी शर्तें

16.2 हामीदारी तभी उपयोग में लायी जा सकती है, जब एसपीवी हामीदारी करार में पूर्वनिर्धारित आधार मूल्य के बराबर या उससे अधिक मूल्य पर बाज़ार में प्रतिभूतियां जारी नहीं कर सकती ।

16.3 बैंक को किसी भुगतान को रोके रखने तथा यदि आवश्यक हुआ तो सुविधा को समाप्त करने का उस स्थिति में अधिकार है जब विशिष्ट घटनाक्रम हो (जैसे आस्तियों में निर्दिष्ट स्तर से अधिक महत्वपूर्ण प्रतिकूल परिवर्तन या चूक हो); तथा

16.4 हामीदारी प्रतिभूतियों के प्रकार के लिए बाज़ार उपलब्ध है ।

17. हामीदारी

17.1 मूल प्रवर्तक द्वारा हामीदारी

मूल प्रवर्तक सिर्फ एसपीवी द्वारा जारी की गई निवेश श्रेणी वरिष्ठ प्रतिभूतियों की ही हामीदारी कर सकता है । हामीदारी के माध्यम से प्राप्त प्रतिभूतियों की धारिता को अभिग्रहण करने के तीन महीने की अवधि के भीतर तीसरी पार्टी को बेच देना चाहिए । निर्धारित समयावधि में प्राप्त की गयी प्रतिभूतियों की कुल बकाया राशि 100 प्रतिशत जोखिम भार के अधीन होगी । यदि द्वितीयक बाज़ार से की गयी खरीद सहित निर्गम की मूल राशि के 10 प्रतिशत से अधिक किसी भी धारिता की निर्धारित समय सीमा के भीतर बिक्री नहीं की जाती तो उसे टीयर 1 पूंजी से 50% और टीयर II पूंजी से 50% घटा दिया जाएगा ।

17.2 तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं द्वारा हामीदारी

एसपीवी द्वारा निर्गमित प्रतिभूतियों की हामीदारी तीसरी पार्टी का सेवा प्रदाता ले सकता है । हामीदारी के माध्यम से अंतरित प्राप्त प्रतिभूतियों की धारिता को अभिग्रहण करने के बाद तीन महीने के भीतर तीसरी पार्टी को बेच देना चाहिए । प्राप्त की गयी प्रतिभूतियों की कुल बकाया राशि निर्धारित समयावधि में 100 प्रतिशत जोखिम भार के अधीन होगी । यदि निर्धारित समयावधि में बिक्री नहीं की जाती तो प्राप्त की गयी प्रतिभूतियां जो कम से कम निवेश श्रेणी की हों की कुल बकाया राशि पर 100% जोखिम भार लागू होगा तथा जो निवेश श्रेणी से नीचे हैं वे पूंजी से टीयर 1 से 50% तथा टीयर II से 50% घटाई जाएंगी ।

सर्विसेज़ के प्रावधान संबंधी नीति

18. एक सर्विसिंग बैंक, प्रतिभूतिकृत आस्तियों का प्रबंधन या शोधन (सर्विस) करता है । अतः इसे किसी एसपीवी की हानि हो जाने पर उसे मदद करने में प्रतिष्ठा संबंधी बाध्यता नहीं होनी चाहिए तथा वह अपने निवेशकों को इस बात को बताने में समर्थ होना चाहिए । किसी स्वामित्व के लिए अथवा तीसरी पार्टी प्रतिभूतिकरण लेनदेन के लिए सेवा प्रदाता की भूमिका अदा करनेवाला बैंक यह सुनिश्चित करें कि निम्नलिखित शर्तें पूरी की गयी हों । जहां निम्नलिखित शर्तें पूरी नहीं की जातीं वहां सेवा प्रदाता को एसपीवी या निवेशकों को चलनिधि सुविधा प्रदान करनेवाला माना जाएगा तथा पूंजी पर्याप्तता के प्रयोजन के लिए तदनुसार माना जाएगा ।

18.1 उपर्युक्त पैरा 11.1 से 11.8 में विनिर्दिष्ट सभी शर्तें ।

18.2 जब तक आधार आस्तियों से निधि पैदा नहीं होती तब तक सेवा प्रदाता को किसी भी एसपीवी या निवेशकों को निधि विप्रेषित करने की बाध्यता नहीं होनी चाहिए, सिवाय उस स्थिति के जहां वह पात्र चलनिधि सुविधा का प्रदाता हो ।

18.3 सेवा प्रदाता आधार आस्ति से प्राप्त होनेवाले नकदी प्रवाह को निवेशकों की ओर से ट्रस्ट में धारित करेगा तथा उसे अपने नकदी प्रवाहों से इन नकदी प्रवाहों को आपस में मिलने से बचाना चाहिए ।

19. एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों में निवेश के लिए विवेकपूर्ण मानदंड

19.1 चूंकि एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियां गैर-एसएलआर प्रतिभूतियों के प्रकार की होंगी, अतः बैंकों के इन प्रतिभूतियों में निवेश पर रिज़र्व बैंक द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट गैर-एसएलआर निवेशों पर लागू सभी विवेकपूर्ण मानदंड लागू होंगे ।

19.2 <u>मूल प्रवर्तक द्वारा प्रतिभूतियों में निवेश संबंधी सीमाएं</u>

एसपीवी द्वारा जारी प्रतिभूतियों में मूल प्रवर्तक द्वारा कुल निवेश, पैरा 7.13 में दिये अनुसार होंगे ।

19.3 <u>पीटीसी में निवेश के लिए निवेश संबंधी मानदंड</u>

प्रतिभूतियों में निवेशकों के लिए काउंटर पार्टी एसपीवी नहीं होगी, बल्कि आधार आस्तियां होंगी जिनके संदर्भ में देयताकारों/उधारकर्ताओं से नकदी प्रवाह अपेक्षित हैं । किसी विशेष उधारकर्ता/उधारकर्ता समूह, उद्योग या भौगोलिक क्षेत्र को जोखिम संकेन्द्रण के प्रबंध के प्रयोजन के लिए समग्र निवेशों (एक्सपोज़र) को संगठित करते समय तथा वर्तमान विवेकपूर्ण निवेश मानदंडों का अनुपालन करने के लिए जहां कहीं संबंधित समूह के कुल प्राप्यों के 5% या इससे अधिक प्राप्य अथवा 5 करोड़ रुपये, इनमें से जो भी कम हो, समूह के देयताकारों के होते हैं, तब इनको ध्यान में रखना चाहिए ।

19.4 <u>पीटीसी में निवेशकों के लिए आय निर्धारण और प्रावधानीकरण मानदंड</u>

चूंकि प्रतिभूतियां सीमित कालावधि के लिए अपेक्षित होती हैं, अतः ब्याज वाले ऋण लिखतों, प्रतिभूतियों पर आय को सामान्यतः उपचय आधार पर माना जाए । तथापि, यदि प्रतिभूतियों पर आय (या मोचन राशि भी) 90 दिनों से अधिक तक बकाया रहती है, तो भविष्य में कोई भी आय सिर्फ वसूली होने पर ही मानी जानी चाहिए तथा उपचय आधार पर मानी गयी वसूली के लिए बाकी आय को प्रत्यावर्तित किया जाना चाहिए । प्रतिभूतियों पर लंबित प्राप्य राशि के मामले में ऐसे अतिदेयों के कारण प्रतिभूतियों के मूल्य में ह्रास के लिए उपयुक्त प्रावधान भी किये जाने चाहिए, जैसा कि बैंकों द्वारा निवेश वर्गीकरण और मूल्यांकन के लिए रिज़र्व बैंक के वर्तमान मानदंडों में पहले ही परिकल्पित है ।

20. प्रतिभूतीकरण लेनदेनों पर लेखांकन कार्रवाई

20.1 <u>मूल प्रवर्तक की बहियों में लेखांकन</u>

इन दिशानिर्देशों के अनुसार, बैंक सिर्फ नकद आधार पर एसपीवी को आस्तियां बेच सकते हैं तथा एसपीवी को आस्तियां अंतरित होने के पहले ही बिक्री प्रतिफल प्राप्त हो जाना चाहिए । अतः बिक्री से पैदा हुई किसी हानि को तदनुसार लेखाबद्ध किया जाना चाहिए तथा जिस अवधि में बिक्री संपन्न हुई उस अवधि के लाभ-हानि लेखे में दर्शाया जाना चाहिए तथा बिक्री से पैदा हुए किसी लाभ/प्रीमियम को एसपीवी द्वारा निर्गमित या निर्गमित की जानेवाली प्रतिभूतियों के जीवनकाल तक परिशोधित कर देना चाहिए ।

i) ऐसी प्रतिभूतिकृत आस्तियों के मामले में जो मूल प्रवर्तक की बहियों में शामिल न करने योग्य हैं, उनके लेनदेन पर हुए सभी प्रकार के व्यय जैसे विधिक फीस आदि को लेनदेन के समय व्यय किया जाना चाहिए और इसे आस्थगित नहीं करना चाहिए ।

ii) जहां प्रतिभूतिकृत आस्तियां शामिल करने योग्य नहीं है, वहां प्राप्त बिक्री प्रतिफल को उधार के रूप में माना जाएगा ।

20.2 मूल प्रवर्तक, एसपीवी तथा प्रतिभूतियों के निवेशकों की बहियों में प्रतिभूतिकरण लेनदेनों का लेखांकन व्यवहार, इन दिशानिर्देशों में विशिष्ट रूप से शामिल न होने वाले पहलुओं के संदर्भ में आइसीएआइ द्वारा जारी मार्गदर्शी नोट के अनुसार किया जाएगा ।

अनुबंध - 8
(देखें पैरा 7.3.6)

<u>भाग - क</u>

ऋण जोखिम कम करने के संबंध में उदाहरण
<u>(ऋण एक्सपोजर)</u>

<u>संपार्श्विकीकृत लेनदेनों के लिए एक्सपोजर राशि की गणना</u>

$E^* = max$ ज़O, $[E \ x \ (1+H_e)-C \ x \ (1-H_C-H_{fx})]$

जहां

E* = जोखिम कम करने के बाद एक्सपोज़र का मूल्य

E = एक्सपोज़र का वर्तमान मूल्य

H_e = एक्सपोज़र के लिए उपयुक्त हेयरकट

C = प्राप्त संपार्श्विक का वर्तमान मूल्य

H_C = संपार्श्विक के लिए उपयुक्त हेयरकट

H_{fx}= संपार्श्विक और एक्सपोज़र के बीच में मुद्रा विसंगति के लिए उपयुक्त हेयरकट

क्र.सं.	विवरण	मामला 1	मामला 2	मामला 3	मामला 4	मामला 5
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
1	**एक्सपोजर**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**
2	एक्सपोजर की परिपक्वता अवधि	2	3	6	3	3
3	एक्सपोजर का स्वरूप	कंपनी ऋण	कंपनी ऋण	कंपनी ऋण	कंपनी ऋण	कंपनी ऋण
4	मुद्रा	भारतीय रुपये	भारतीय रुपये	अमेरिकी डालर	भारतीय रुपये	भारतीय रुपये
5	रुपये में एक्सपोजर	100	100	4000 (पंक्ति 1 x विनिमय दर ##)	100	100
6	एक्सपोजर की रेटिंग	बीबी	ए	बीबीबी -	एए	बी-
	लागू जोखिम भार	150	50	100@	30	150
7	एक्सपोजर* के लिए हेयरकट	0	0	0	0	0
8	**संपार्श्विक**	100	100	4000	2	100
9	मुद्रा	भारतीय रुपये	भारतीय रुपये	अमेरिकी डालर	भारतीय रुपये	भारतीय रुपये
10	**रुपये में संपार्श्विक**	**100**	**100**	**4000**	**80** (पंक्ति 1 x विनिमय दर)	**100**
11	संपार्श्विक की अवशिष्ट परिपक्वता (वर्ष)	2	3	6	3	5
12	संपार्श्विक का स्वरूप	सरकारी (भारत सरकार) प्रतिभूति	बैंक बांड	कंपनी बांड	विदेशी कंपनी बांड	म्युच्युअल फंड के यूनिट
13	संपार्श्विक की रेटिंग	लागू नहीं	रेटिंग नहीं की गयी	बीबीबी	एएए (एस एंड पी)	एए
14	संपार्श्विक के लिए हेयरकट (%)	0.02	0.06	0.12	0.04	0.08
15	मुद्रा विसंगति के लिए हेयरकट (%) [देखें परिपत्र का पैरा 7.3.7	0	0	0.08	0.08	0

	(vi)]					
16	संपार्श्विक पर कुल हेयरकट ज़10वीं पंक्ति X (14वीं + 15वीं पंक्ति.)	2	6	800	9.6	8
17	हेयरकट के बाद संपार्श्विक (10वीं पंक्ति - 16वीं पंक्ति)	98	94	3200	70.4	92
18	**निवल एक्सपोजर (पंक्ति 5 - पंक्ति 17)**	**2**	**6**	**800**	**29.6**	**8**
19	जोखिम भार (%)	150	50	100@	30	150
20	**जोखिम भारित परिसंपत्ति (पंक्ति 18 x 19)**	**3**	**3**	**800**	**8.88**	**12**

1 अमरीकी डॉलर = 40 रु विनिमय दर माना गया है ।

लागू नहीं

@ परिपत्र के पैरा 6.4.2 के अनुसार दीर्घावधि रेटिंग के मामले में जहां रेटिंग के साथ "+" अथवा "-" नोटेशन है वहां तदनुरूपी मुख्य रेटिंग श्रेणी के जोखिम भार का प्रयोग किया जाना है । अतः जोखिम भार 100% है ।

(*) एक्सपोजर के लिए हेयरकट शून्य लिया गया है क्योंकि ऋण बाजार मूल्य पर अंकित नहीं किये जाते हैं और अतः वे अस्थिर नहीं हैं ।

मामला 4 : हेयरकट सारणी-14 के अनुसार लागू

मामला 5 : यह मान लिया गया है कि म्युच्युअल फंड पैरा 7.3.5 (viii) में विनिर्दिष्ट मानदंडों की पूर्ति करते हैं और उनके ऐसी प्रतिभूतियों में निवेश हैं जिनकी 5 वर्ष से अधिक परिपक्वता शेष है और जो एए अथवा उससे अधिक रेटिंग वाले हैं जिन पर परिपत्र की सारणी 14 के अनुसार 8 प्रतिशत का हेयरकट लागू किया जाएगा ।

भाग - ख

प्रतिपक्षी ऋण जोखिम (सीसीआर) के लिए पूंजी भार की गणना संबंधी उदाहरण - रिपो लेनदेन

बासल II के अधीन आधारभूत प्रतिभूति के लिए ऋण/बाजार जोखिम तथा प्रतिपक्षी ऋण जोखिम के लिए पूंजी भार सहित रिपो लेनदेन के लिए कुल पूंजी भार की गणना दर्शानेवाला एक उदाहरण नीचे दिया गया है :

क. रिपो लेनदेन के

यह मान लिया जाए कि एक परिकल्पित रिपो लेनदेन के निम्नलिखित परिमाप हैं :

प्रतिभूति का प्रकार	भारत सरकार की प्रतिभूति
अवशिष्ट परिपक्वता	5 वर्ष

कूपन	6%
वर्तमान बाजार मूल्य	1050 रु
उधार ली गयी नकदी	1000 रु
प्रतिभूति की आशोधित अवधि	4.5 वर्ष
मार्जिन करने की परिकल्पित बारंबारता	दैनिक
प्रतिभूति के लिए हेयरकट	2% (देखें परिपत्र की सारणी 14 मद क (i))
नकदी पर हेयरकट	शून्य (देखें परिपत्र की सारणी 14 की मद ग)
न्यूनतम धारण अवधि	5 कारोबारी दिन (देखें परिपत्र का पैरा 7.3.7 (ix))
सामान्य बाजार जोखिम के लिए पूंजी भार की गणना के लिए प्रतिफल में परिवर्तन	0.7% वार्षिक (देखें परिपत्र की सारणी 17 का क्षेत्र 3)

ख. आधारभूत प्रतिभूति के लिए प्रतिपक्षी ऋण जोखिम (सीसीआर) और ऋण/बाजार जोखिम के लिए पूंजी भार सहित कुल पूंजी भार की गणना

ख 1. निधि उधार लेनेवाले की बहियों में (रिपो के अधीन प्रतिभूति को उधार दिए जाने के कारण तुलनपत्रेतर एक्सपोजर के लिए)

(इस मामले में उधार दी गई प्रतिभूति उधार देनेवाले का एक्सपोजर है, जबकि उधार ली गयी नकदी संपाश्र्विक है ।)

क्रम सं.	**मद**	**विवरण**	**राशि (रु में)**
क.	**सीसीआर के लिए पूंजी भार**		
1.	एक्सपोजर	प्रतिभूति का बाजार मूल्य	1050
2.	एक्सपोजर के लिए सीसीएफ	100%	
3.	तुलनपत्र में ऋण समतुल्य	1050* 100%	1050
4.	हेयरकट	**1.4%@**	

5.	परिपत्र की सारणी 14 के अनुसार हेयरकट समायोजित करने के बाद एक्सपोजर	1050* 1.014	1064.70
6.	उधार दी गई प्रतिभूति के लिए संपार्श्विक	नकदी	1000
7.	एक्सपोजर के लिए हेयरकट	0%	
8.	हेयरकट समायोजित करने के बाद संपार्श्विक	1000* 1.00	1000
9.	निवल एक्सपोजर (5-8)	1064.70 - 1000	64.70
10.	जोखिम भार (अनुसूचित सीआरएआर - अनुपालक बैंक के लिए)	20%	
11.	सीसीआर के लिए जोखिम भारित परिसंपत्तियां	**64.70* 20%**	**12.94**
12.	सीसीआर के लिए पूंजी भार (11 X 9%)	12.94* 0.09	1.16
ख.	**प्रतिभूति के ऋण/बाजार जोखिम के लिए पूंजी**		
1.	ऋण जोखिम के लिए पूंजी (यदि प्रतिभूति परिपक्व होने तक रखी जाती है।)	ऋण जोखिम	शून्य (सरकारी प्रतिभूति होने के कारण)
2.	बाजार जोखिम के लिए पूंजी (यदि प्रतिभूति ‘बिक्री के लिए उपलब्ध’/‘व्यापार के लिए रखी गयी’ के तहत रखी जाती है)	विनिर्दिष्ट जोखिम	शून्य (सरकारी प्रतिभूति होने के कारण)
		सामान्य बाजार जोखिम (4.5* 0.7%* 1050) ज्आशोधित अवधि* परिकल्पित प्रतिफल परिवर्तन (%)* प्रतिभूति का बाजार मूल्य़	33.07
कुल अपेक्षित पूंजी (सीसीआर + ऋण जोखिम + विनिर्दिष्ट जोखिम + सामान्य बाजार जोखिम)			34.23

@ परिपत्र के पैरा 7.3.7 में दर्शाये गये फार्मूले का उपयोग करते हुए 2% का पर्यवेक्षी हेयरकट कम किया गया
है ।

<u>ख. 2</u> निधि उधार देनेवाले की बहियों में (रिपो के अधीन निधि उधार दिये जाने के कारण तुलन पत्र में शामिल एक्सपोज़र के लिए)

(इस मामले में उधार दी गई नकदी एक्सपोज़र है और उधार ली गयी प्रतिभूति संपाश्र्विक है)

क्र. सं.	मद	विवरण	राशि (रूपयों में)
क.	**सीसीआर के लिए पूंजी भार**		
1.	एक्सपोज़र	नकदी	1000
2.	एक्सपोजर के हेयरकट	0%	
3.	*परिपत्र की सारणी 14 के अनुसार हेयरकट समायोजित करने के बाद एक्सपोज़र*	1000 * 1.00	1000
4.	उधार दी गई नकदी के लिए संपाश्र्विक	प्रतिभूति का बाज़ार मूल्य	1050
5.	संपाश्र्विक के लिए हेयरकट	1.4 % @	
6.	*हेयरकट समायोजित करने के बाद संपाश्र्विक*	1050 * 0.986	1035.30
7.	निवल एक्सपोज़र (3 - 6)	अधिकतम ज्ञ1000 - 1035.30	0
8.	जोखिम भार (अनुसूचित सीआरएआर - अनुपालक बैंक के लिए)	20%	
9.	सीसीआर के लिए जोखिम भारित परिसंपत्तियां (7 x 8)	**0* 20 %**	**0**
10.	सीसीआर के लिए पूंजी भार	0	**0**
ख.	**प्रतिभूति के ऋण /बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी**		
1.	ऋण जोखिम के लिए पूंजी (यदि प्रतिभूति परिपक्वता तक रखी जाती है)	ऋण जोखिम	निधि उधार लेने वाले द्वारा रखी जाती है, अतः लागू नहीं
2.	बाज़ार जोखिम के लिए पूंजी (यदि प्रतिभूति 'बिक्री के लिए उपलब्ध'/ 'व्यापार के लिए रखी गयी' के अधीन रखी जाती है)	विनिर्दिष्ट जोखिम	निधि उधार लेने वाले द्वारा रखी जाती है, अतः लागू नहीं
		सामान्य बाज़ार जोखिम	निधि उधार लेने वाले द्वारा रखी जाती है, अतः लागू नहीं

@ परिपत्र के पैरा 7.3.7 में दर्शाये गये फार्मूले का उपयोग करते हुए पर्यवेक्षी हेयरकट 2% कम किया गया है।

अनुबंध -9
(देखें पैरा 8.3.10)

ब्याज दर डेरिवेटिव और ऑप्शन के संबंध में बाज़ार जोखिमों के लिए <u>पूंजी भार की माप</u>

अ. <u>ब्याज दर डेरिवेटिव</u>

माप पद्धति में व्यापार बही में सभी ब्याज दर डेरिवेटिव और तुलनपत्रेतर लिखतों का समावेश होना चाहिए, जो ब्याज दरों के परिवर्तनों के अनुरूप बदलती है (उदाहरण के लिए, वायदा दर करार (एफआरए), अन्य वायदा संविदा, बांड फ्यूचर्स, ब्याज दर स्वैप और दो मुद्राओं में स्वैप तथा वायदा विदेशी मुद्रा पोजिशन)। ऑप्शन्स को निम्न आ- 1 में वर्णन किए गए अनुसार विभिन्न तरीकों से माना जा सकता है। ब्याज दर डेरिवेटिव पर विचार करने के लिए इस भाग के अंत में दी गई सारणी में नियमों का सारांश दिया गया है।

1. पोजिशन की गणना

डेरिवेटिव को संगत आधारभूत में पोजिशन में परिवर्तित किया जाना चाहिए तथा उन पर दिशानिर्देशों में यथावर्णित, निर्दिष्ट और सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभारों को लागू करना चाहिए। पूंजी भार की गणना के लिए रिपोर्ट की गई राशि आधारभूत की अथवा कल्पित आधारभूत की मूल राशि का बाज़ार मूल्य होनी चाहिए। जिन लिखतों के संबंध में कल्पित राशि प्रभावी कल्पित राशि से भिन्न दिखाई देती है वहाँ <u>बैंकों को प्रभावी कल्पित राशि का उपयोग करना होगा।</u>

(क) वायदा दर करारों सहित फ्यूचर्स और वायदा संविदा

ये लिखत किसी नोशनल सरकारी प्रतिभूति में दीर्घ अथवा अल्प पोजिशन के संयोग के रूप में समझे जाएंगे। फ्यूचर अथवा वायदा दर संविदा की परिपक्वता, सुपुर्दगी या उक्त संविदा के प्रयोग तक की अवधि, तथा जहां लागू हो वहां, आधारभूत लिखत की अवधि सहित अवधि होगी। उदाहरण के लिए, जून तीन-माह ब्याज दर फ्यूचर (अप्रैल में लिया हुआ) में दीर्घ पोजिशन को पांच माह की परिपक्वतावाली किसी सरकारी प्रतिभूति में दीर्घ पोजिशन तथा दो माह की परिपक्वतावाली किसी सरकारी प्रतिभूति में अल्प पोजिशन के रूप में सूचित किया जाएगा । जहां सुपुर्दगी योग्य लिखतों को संबंधित संविदा की पूर्ति के लिए सुपुर्द किया जा सकता है, वहां संबंधित बैंक को यह चुनने का लचीलापन प्राप्त है कि कौनसी सुपुर्दगी योग्य प्रतिभूति अवधि क्रम (ड्यूरेशन लैडर) में जाती है। परंतु यदि शेयर बाजार ने किसी परिवर्तन गुणक की परिभाषा की है तो बैंक को उसे ध्यान में लेना होगा।

(ख) स्वैप

स्वैप को संगत परिपक्वतावाली सरकारी प्रतिभूतियों में दो परिकल्पित (नोशनल) पोजिशन के रूप में माना जाएगा। उदाहरण के लिए, जिस ब्याज दर स्वैप के तहत बैंक अस्थिर दर ब्याज प्राप्त कर रहा है और नियत दर अदा कर रहा है, उसे आगामी ब्याज निर्धारण तक की अवधि के बराबर परिपक्वता वाले अस्थिर दर लिखत में दीर्घ पोजिशन के रूप में और संबंधित स्वैप की अवशिष्ट अवधि के बराबर परिपक्वता वाले नियत-दर लिखत में अल्प पोजिशन के रूप में समझा जाएगा। किसी अन्य संदर्भ मूल्य उदाहरण के लिए स्टॉक इंडेक्स के संदर्भ में नियत या

अस्थिर ब्याज दर अदा करने या प्राप्त करनेवाले स्वैप के लिए, ब्याज दर घटक ईक्विटी ढांचे में शामिल किए जा रहे ईक्विटी घटक के साथ समुचित पुनर्मूल्यन परिपक्वता श्रेणी में वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

भिन्न मुद्रा स्वैप के अलग चरणों को संबंधित मुद्राओं के लिए संगत परिपक्वता क्रम में रिपोर्ट किया जाना है।

2. मानकीकृत पद्धति के अंतर्गत डेरिवेटिव के लिए पूंजी भारों की गणना

(क) संतुलित पोजिशन का अनुमत प्रतिसंतुलन

बैंक ब्याज दर परिपक्वता ढांचे से निम्नलिखित को पूर्णतः बाहर रख सकते हैं (विनिर्दिष्ट और सामान्य बाजार जोखिम दोनों के लिए);

- एक ही जारीकर्ता, कूपन, मुद्रा और परिपक्वता वाले एक जैसे लिखतों में दीर्घ और अल्प पोजिशन (वास्तविक और परिकल्पित दोनों)।
- फ्यूचर अथवा वायदा और उसके तदनुरूपी आधारभूत में संतुलित पोजिशन को भी पूर्णतः प्रतिसंतुलित किया जाए, (तथापि, फ्यूचर की समाप्ति के समय का प्रतिनिधित्व करनेवाले चरण की रिपोर्ट की जानी चाहिए) और इस प्रकार गणना से बाहर रखा जाए।

जब फ्यूचर अथवा वायदा में अनेक सुपुर्दगी योग्य लिखत हों, फ्यूचर अथवा वायदा संविदा और उसके आधारभूत में पोजिशन का प्रतिसंतुलन केवल उन मामलों में लागू होगा जहां तत्काल पहचानी जाने योग्य ऐसी आधारभूत प्रतिभूति है जो सुपुर्दगी के लिए अल्प पोजिशन का व्यापार करनेवाले के लिए सर्वाधिक फायदेमंद है । इस प्रतिभूति के मूल्य को कभी-कभी 'सुपुर्दगी के लिए सबसे सस्ता' कहा जाता है, और फ्यूचर अथवा वायदा संविदा का मूल्य ऐसे मामलों में इसके निकट होना चाहिए।

दो भिन्न मुद्राओं की पोजिशन में प्रतिसंतुलन अनुमत नहीं होगा। दो भिन्न मुद्राओं के स्वैप या वायदा विदेशी मुद्रा लेनदेन के अलग-अलग चरणों को भी संबद्ध लिखतों में परिकल्पित पोजिशन के रूप में समझा जाए और प्रत्येक मुद्रा के लिए समुचित गणना में शामिल किया जाए।

इसके अलावा, एक ही श्रेणी के लिखतों के विपरीत पोजिशन विशिष्ट परिस्थितियों में संतुलित समझे जा सकते हैं और उनको पूर्णतः प्रतिसंतुलित करने की अनुमति दी जा सकती है। इस व्यवहार के लिए पात्र होने हेतु संबंधित पोजिशन एक ही आधारभूत लिखतों से संबद्ध होनी ही चाहिए तथा उनका एक ही अंकित मूल्य होना चाहिए और एक ही मुद्रा में मूल्यवर्गित होनी चाहिए । साथ ही :

- <u>फ्यूचर के लिए</u> : परिकल्पित या आधारभूत लिखतों जिनसे फ्यूचर संविदाएं संबद्ध हैं, में पोजिशन को प्रतिसंतुलित करना समान उत्पादों के लिए ही हो और एक दूसरे के 7 दिन के भीतर परिपक्व हो;
- <u>स्वैप और एफआरए के लिए</u> : संदर्भ दर (अस्थायी दर पोजिशन के लिए) एक जैसी हो और कूपन अधिकतर मिलते-जुलते हो (अर्थात् 15 आधार बिंदुओं के भीतर); और

* <u>स्वैप, एफआरए और वायदा के लिए</u> : अगली ब्याज निर्धारण तीारख या नियत कूपन पोजिशन अथवा वायदा के लिए अवशिष्ट परिपक्वता निम्नलिखित सीमाओं में तदनुरूप हो :

  o अब से एक महीने से कम अतः : उसी दिन;

  o एक माह और एक वर्ष के बीच अतः : सात दिन के भीतर

  o एक वर्ष से अधिक अतः तीस दिन के भीतर

बड़ी स्वैप बहियोंवाले बैंक, अवधि क्रम में शामिल किए जानेवाले पोजिशन की गणना हेतु इन स्वैप के लिए वैकल्पिक फॉर्म्यूले का इस्तेमाल कर सकते हैं । इसकी विधि यह होगी कि उक्त अवधि पद्धति में प्रयुक्त आय में परिवर्तन में निहित निवल वर्तमान मूल्य की संवेदनशीलता की गणना की जाए तथा इन संवेदनशीलताओं को इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 की सारणी 17 में वर्णित टाइम-बैंड में आबंटित किया जाए ।

(ख) विशिष्ट जोखिम

ब्याज दर और मुद्रा स्वैप, एफआरए, वायदा विदेशी मुद्रा संविदाएं और ब्याज दर फ्यूचर किसी विनिर्दिष्ट जोखिम प्रभार के अधीन नहीं होंगे। यह छूट ब्याज दर सूचकांक (उदाहरणार्थ लाइबोर) से संबंधित फ्यूचर पर भी लागू होगी। तथापि, फ्यूचर संविदाओं के मामले में, जहां कोई ऋण प्रतिभूति आधारभूत है, या ऋण प्रतिभूतियों के किसी समूह का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई सूचकांक आधारभूत है है तो विनिर्दिष्ट जोखिम प्रभार जारीकर्ता के ऋण जोखिम के अनुसार लागू होगा जैसा कि उपर्युक्त पैराग्राफों में दिया गया है।

(ग) सामान्य बाज़ार जोखिम

सामान्य बाज़ार जोखिम सभी डेरिवेटिव उत्पादों में पोज़ीशन्स पर उसी तरह लागू होता है जैसे कि नकदी पोज़ीशन्स पर, केवल ऊपर के पैराग्राफों मे यथा परिभाषित समान लिखतों में पूर्णतः या काफी हदतक मैच होनेवाली पोज़ीशनों के लिए छूट की शर्त है। लिखतों की विभिन्न श्रेणियों को परिपक्वता सोपान (लेडर) में वर्गीकृत किया जाना चाहिए और पहले निर्दिष्ट किये गये नियमों के अनुसार उनके संबंध में कार्रवाई करनी चाहिए।

सारणी - ब्याज दर डेरिवेटिव के व्यवहार का सारांश

लिखत	विनिर्दिष्ट जोखिम भार	सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभार
एक्सचेंज में क्रय-विक्रय किये जानेवाले फ्यूचर		
-सरकारी ऋण प्रतिभूति	नहीं	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
-कंपनी ऋण प्रतिभूति	हां	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
-ब्याज दर संबंधी सूचकांक (जैसे माइबोर)	नहीं	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
ओटीसी फॉरवर्ड		
-सरकारी ऋण प्रतिभूति	नहीं	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
-कंपनी ऋण प्रतिभूति	हां	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
-ब्याज दर संबंधी सूचकांक (जैसे माइबोर)	नहीं	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
एफआरए, स्वैप	नहीं	हां, दो पोज़ीशनों के रूप में
वायदा विदेशी मुद्रा	नहीं	हां, प्रत्येक मुद्रा में एक पोज़िशन के रूप में
ऑपशन्स		
-सरकारी ऋण प्रतिभूति	नहीं	
-कंपनी ऋण प्रतिभूति	हां	
-ब्याज दर संबंधी सूचकांक (जैसे माइबोर)	नहीं	
-एफआरए, स्वैप	नहीं	

आ. ऑपशन्स का ट्रीटमेंट

1. ऑपशन में बैंकों की गतिविधियों की व्यापक विविधता तथा ऑपशन के लिए मूल्य जोखिम मापने की कठिनाइयों को देखते हुए, निम्नानुसार वैकल्पिक दृष्टिकोण की अनुमति है :

- जो बैंक सिर्फ क्रय किये गये ऑपशन[45] का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें नीचे खंड 1 में बताये गये सरलीकृत दृष्टिकोण का इस्तेमाल करने की स्वतंत्रता होगी;
- जो बैंक ऑपशन लिखते भी हैं, उनसे यह अपेक्षित होगा कि वे नीचे खंड II में दिये गये मध्यवर्ती दृष्टिकोणों में से एक दृष्टिकोण का इस्तेमाल करेंगे।

2. ***सरलीकृत दृष्टिकोण*** में, ऑपशन के लिए पोजीशन तथा उनसे संबद्ध अंडरलाइंग, चाहे वह नकद हो या वायदा, मानकीकृत पद्धति के अधीन नहीं होंगे बल्कि उन पर अलग से परिगणित ऐसे प्रभार लागू होंगे जिसमें सामान्य बाज़ार जोखिम और निर्दिष्ट जोखिम दोनों शामिल हैं। इस प्रकार प्राप्त जोखिम आंकड़ों को संबंधित श्रेणी अर्थात् ब्याज दर संबद्ध लिखतों, इक्विटी तथा विदेशी मुद्रा के पूंजी भारों में जोड़ा जाता है जैसा कि इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 से 8.5 में

[45] ¡¸¢™ „›¸ˆÅú ¬¸ž¸ú ¢¥¸¢‰¸÷¸¸,¸Áœ©¸›¸ œ¸¸½¢{¸©¸›¸ ˆÅú œÏ¢÷¸£®¸¸ œ¸»£ú ÷¸£í „›íú ,¸Áœ©¸›¬¸ Ÿ¸½¿ œ¸»µ¸Ä÷¸¡¸¸ ¬¸¿÷¸º¢¥¸÷¸ ¥¸¸ÂŠ¸ œ¸¸½¢{¸©¸›¸¸½¿ ×¸£¸ ˆÅú □¸¸÷¸ú í¾ ÷¸¸½ „¬¸ ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ ¤¸¸{¸¸£ □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆÅ¸½ƒÄ œ¸»¿□¸ú œÏž¸¸£ ‚œ¸½¢®¸÷¸ ›¸íì í¾—

बताया गया है। डेल्टा-प्लस पद्धति में संवदेनशीलता पेरामीटरों या ऑपशन्स से संबद्ध "ग्रीक लेटर्स" का उपयोग उनके बाज़ार जोखिम तथा पूंजीगत आवश्यकताओं को मापने के लिए किया जता है। इस पद्धति के अधीन प्रत्येक ऑपशन की डेल्टा-समतुल्य स्थिति इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 से 8.5 में में दी गयी मानकीकृत पद्धति का भाग बन जाती हैं तथा डेल्टा समतुल्य राशि लागू सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभारों के अधीन है। उसके बाद ऑपशन पोज़िशनों के गामा और वेगा जोखिमों पर पृथक पूंजी भार लागू किये जाते हैं। सिनेरियो दृष्टिकेण में ऑपशन पोर्टफोलियों से संबद्ध अंडरलाइंग के स्तर और अस्थिरता में बदलाव के लिए पोर्टफोलियो के मूल्य में परिवर्तन की गणना के लिए सिमुलेशन तकनीक का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभार 'ग्रिड' परिदृश्य (अर्थात् अंडरलाइंग तथा स्थिरता परिवर्तनों के उनके निर्दिष्ट संयोग) द्वारा निर्धारित होता है जो सर्वाधिक हानि उत्पन्न करता है। डेल्टा-प्लस पद्धति तथा सिनेरियो दृष्टिकोण के लिए निर्दिष्ट जोखिम पूंजी भार इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 से 8.4 में में दिये गये विनिर्दिष्ट जोखिम भार द्वारा प्रत्येक ऑपशन के डेल्टा-समतुल्य राशि को गुणा कर अलग से निश्चित किया जाता है।

1. सरलीकृत दृष्टिकोण

3. जो बैंक सिर्फ क्रय किए गए ऑप्शन का सीमित इस्तेमाल करते हैं नीचे सारणी क में वर्णित सरलीकृत दृष्टिकोण का खरीद-बिक्री के लिए प्रयोग कर सकते हैं । गणना के एक उदाहरण के रूप में, यदि कोई धारक के पास 100 शेयर हैं जिनका वर्तमान मूल्य 10 रुपया प्रति शेयर है तथा यदि उसके पास 11 रुपये के स्ट्राइक प्राइस का समान पुट ऑप्शन है तो पूंजी भार =1000 रुपये X 18 प्रतिशत (अर्थात् 9 प्रतिशत विनिर्दिष्ट जोखिम तथा 9 प्रतिशत सामान्य बाज़ार जोखिम) = 180 तथा उसमें वह राशि घटायी जाएगी जितने से ऑप्शन 'इन द मनी है अर्थात् (11 रुपये - 10 रुपये) X 100=100 रुपये । अर्थात् पूंजी भार 80 रुपये होगा । जिन ऑप्शनों का अंडरलाइंग विदेशी मुद्रा पर ब्याज दर आधारित लिखत है उनपर भी वही विधि लागू होगी ।

सारणी क - *सरलीकृत दृष्टिकोण : पूंजी भार*

पोजिशन	ट्रीटमेंट
लोंग कैश और लोंग पुट अथवा शार्ट कैश और लोंग कॉल	पूंजी भार आधारभूत प्रतिभूति [46]के बाज़ार मूल्य को आधारभूत प्रतिभूति के विनिर्दिष्ट और सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभारों [47] के योग से गुणा कर तथा उसमें से ऑप्शन की इन-द-मनी राशि (यदि कोई हो) को घटाकर प्राप्त की जाएगी । इन-द-मनी की सीमा शून्य होगी[48]।

[46] ˆºÅŽ Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½¿ Ÿ¸½¿, „™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¨¸™½©¸ú Ÿ¸ºÍ¸ ˆ½Å Ÿ¸¸Ÿ¸¥¸¸½ Ÿ¸½¿ ¡¸í ,¬œ¸«’ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ¢ˆÅ ',¸š¸¸£ž¸»÷¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸' ˆÅ¸¾›¸ ¬¸¸ œ¸®¸ í¾ — ‡½¬¸ú ¢¬˜¸¢÷¸ Ÿ¸½¿ „¬¸ ,¸¢¬÷¸ ˆÅ¸½ ,¸š¸¸£ž¸»÷¸ Ÿ¸¸›¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸¸½ ,¸Áœ©¸›¸ ‡Æ¬¸£¬¸¸ƒ□¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¤¸¸™ œÏ¸œ÷¸ í¸½ — ƒ¬¸ˆ½Å ,¥¸¸¨¸¸ ƒ›¸ Ÿ¸™¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¬¸¸¿ˆ½Å¢÷¸ˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ¢¥¸¡¸¸ □¸¸›¸¸ □¸¸¢í‡ □¸í¸¿ ,¸š¸¸£ž¸»÷¸ ¢¥¸‰÷¸ ˆÅ¸ Ÿ¸»¥¡¸ ©¸»›¡¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾, „™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆ¾Åœ¬¸ ,¸¾£ œ¸Ã€¥¸¸½¬¸Ä, ¬¨¸¾œ©¸¿¬¸ ,¸¢™ —

[47] ˆºÅŽ ,¸Áœ©¸›¸ („™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ □¸í¸¿ ,¸š¸¸£ž¸»÷¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ ¤¡¸¸□¸ ™£ ¡¸¸ Ÿ¸ºÍ¸ í¸½) Ÿ¸½¿ ˆÅ¸½ƒÄ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«' □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ›¸íì £í÷¸¸ í¾, œ¸£¿÷¸º ¤¸¡¸¸□¸ ™£ ¬¸½ □¸º”õú ˆºÅŽ ¢¥¸‰÷¸¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ,¸Áœ©¸›¸ Ÿ¸½¿ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«' □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ £í½Š¸¸ („™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆ¿Åœ¸›¸ú †µ¸ œÏ¢÷¸ž¸»¢÷¸ ¡¸¸ ˆ¿Åœ¸›¸ú ¤¸¸¿” ¬¸»□¸ˆÅ¸¿ˆÅ ¬¸¿¤¸¿š¸ú ,¸Áœ©¸›¸ À ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ œ¸»¿□¸ú œÏž¸¸£ ˆ½Å ¢¥¸‡ ‰¸¿” ‰¸ ™½‰¸½¿) ÷¸˜¸¸ ƒ¢Æ¨¸’ú ,¸¾£ ¬’¸ÁˆÅ ¬¸»□¸ˆÅ¸¿ˆÅ¸½¿ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ,¸Áœ©¸›¸ (‰¸¿” Š¸ ™½‰¸½¿) — Ÿ¸ºÍ¸ ¢¨¸ˆÅ¥œ¸¸½¿ ˆ½Å ¢¥¸‡ ƒ¬¸ Ÿ¸¸œ¸ ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ œÏž¸¸£ 9% í¸½Š¸¸ —

लोंग कॉल या लोंग पुट	पूंजी भार इनमें से न्यूनतर होगा : (i) आधारभूत प्रतिभूति के बाज़ार मूल्य को आधारभूत प्रतिभूति के विनिर्दिष्ट और सामान्य बाज़ार जोखिम प्रभारों के योग से गुणा कर प्राप्त राशि (ii) ऑप्शन का बाज़ार मूल्य[49]

II. मध्यवर्ती दृष्टिकोण

(क) डेल्टा प्लस विधि

4. ऑप्शन लिखनेवाले बैंकों को यह अनुमति होगी कि वे इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 से 8.5 में वर्णित मानकीकृत क्रियाविधि के अंतर्गत डेल्टा भारित ऑप्शन पोजिशन शामिल कर सकते हैं । ऐसे ऑप्शन को आधारभूत प्रतिभूति के बाज़ार मूल्य को डेल्टा से गुणाकर प्राप्त राशि के बराबर पोजिशन के रूप में सूचित किया जाना चाहिए ।

तथापि, चूंकि ऑप्शन पोज़िशन से जुड़े जोखिमों को डेल्टा पर्याप्त रूप से कवर नहीं करता है, अतः बैंकों से यह भी अपेक्षा की जाएगी कि वे कुल पूंजी भार की गणना करने के लिए गामा (जो डेल्टा में परिवर्तन की दर मापता है) और वेगा (जो अस्थिरता में परिवर्तन के प्रति ऑप्शन के मूल्य की संवेदनशीलता मापता है) संवेदनशीलताओं की भी माप करें । इन संवेदनशीलताओं की गणना अनुमोदित एक्सचेंज मॉडल अथवा बैंक की प्रोपराइटरी ऑप्शन प्राइसिंग मॉडल के अनुसार की जाएगी तथा यह भारतीय रिज़र्व बैंक के पर्यवेक्षण के अधीन होगा[50]।

5. ऋण प्रतिभूतियो अथवा ब्याज दरों के रूप में आधारभूत प्रतिभूति से संबंधित डेल्टा-भारित पोज़िशन को निम्नलिखित प्रक्रिया के अनुसार ब्याज दर अवधि-बैंड में विभाजित किया जाएगा, जैसा कि इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 की **सारणी 17** में दर्शाया गया है। अन्य डेरिवेटिव की तरह ही इसमें दोतरफा दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए जिसमें आधारभूत संविदा प्रभावी होने के समय एक प्रविष्टि तथा आधारभूत संविदा की परिपक्वता के समय दूसरी प्रविष्टि होगी। उदाहरण के लिए, जून त्रिमासिक ब्याज दर फ्यूचर से संबंधित खरीदा गया कॉल ऑप्शन अप्रैल में, उसके डेल्टा-सममूल्य के आधार पर, 5 महीने की परिपक्वता अवधि के साथ लोंग पोज़िशन तथा 2 महीने की परिपक्वता अवधि के साथ शार्ट पोज़िशन माना जाएगा[51] । इसी प्रकार लिखित ऑप्शन का वर्गीकरण दो महीने की परिपक्वता के साथ लोंग पोज्ज़िशन के रूप

---

[48] ‡½¬¸½ ,¸Áœ©¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢□¸›¸ˆÅú ¤¸□¸ú íºƒÄ œ¸¢£œ¸Æ¨¸÷¸¸ ,¨¸¢š¸ Ží Ÿ¸íú›¸½ ¬¸½ ,¢š¸ˆÅ í¾, ¬'ï¸ƒˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ ˆÅú ÷¸º¥¸›¸¸ ¨¸÷¸ÄŸ¸¸›¸ Ÿ¸»¥¡¸ ¬¸½ ›¸íì ,¢œ¸÷¸º ¨¸¸¡¸™ Ÿ¸»¥¡¸ ¬¸½ ˆÅú □¸¸›¸ú □¸¸¢í‡ — □¸¸½ ¤¸ÿˆÅ ‡½¬¸¸ ›¸ ˆÅ£ ¬¸ˆ½Å „¬¸½, `ƒ›¸-™-Ÿ¸›¸ú' £¸¢©¸ ©¸»›¡¸ ¥¸½›¸¸ □¸¸¢í‡ —
[49] □¸¤¸ œ¸¸½¢{¸©¸›¸ 'ï½¢"¿Š¸ ¤¸íú ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ›¸íì ,¸¡¸½ (,˜¸¸Ä÷¸Ã 'ï½¢"¿Š¸ ¤¸íú ˆ½Å ,¿÷¸Š¸Ä÷¸ ›¸íì ,¸›¸½¨¸¸¥¸½ ¢¨¸™½©¸ú Ÿ¸ºÍ ¡¸¸ œ¸µ¡¸ œ¸¸½¢{¸©¸›¸ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ,¸Áœ©¸›¸¸), ÷¸¤¸ ¤¸íú Ÿ¸»¥¡¸ ˆÅ¸ œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ¬¨¸úˆÅ¸¡¸Ä í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —
[50] ž¸¸£÷¸ú¡¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ‡Æ¬¸¸½¢'ˆÅ ,¸Áœ©¸›¸ ˆÅú ˆºÅŽ ª½¢µ¸¡¸¸½¿ („™¸í£µ¸¸˜¸Ä, ¤¸¾¢£¡¸¬¸Ä, ¢"¢□¸'¥¬¸) ,˜¸¨¸¸ `‡'-™-Ÿ¸›¸ú' ,¸Áœ©¸›¸, □¸¸½ ¬¸Ÿ¸¸¢œ¸÷¸ ˆ½Å ¢›¸ˆÅ' íÿ, Ÿ¸½¿ ˆÅ¸£¸½¤¸¸£ ˆÅ£›¸½ ¨¸¸¥¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ¬¸½ ¡¸í ,œ¸½®¸¸ ˆÅ£ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ ¢ˆÅ ¨¸½ ¡¸¸ ÷¸¸½ œ¸¢£´©¡¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ,˜¸¨¸¸ ,¸¿÷¸¢£ˆÅ Ÿ¸¸Á"¥¸ ¢¨¸ˆÅ¥œ¸ ˆÅ¸ œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ˆÅ£½¿ — ƒ›¸ ™¸½›¸¸½¿ œ¸Ö¢÷¸¡¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ,¢š¸ˆÅ ¢¨¸¬÷¸¼÷¸ œ¸º›¸Ÿ¸»Ä¥¡¸¸¿ˆÅ›¸ ´¢«'ˆÅ¸½µ¸ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ í¸½ ¬¸ˆÅ÷¸¸½ íÿ —

[51] ¤¸¸¿" œ¸Ã€¡¸»□¸£ Ÿ¸½¿ ˆÅ¸½ƒÄ ™¸½-Ÿ¸¸í ˆÅ¸ ˆÅ¸Á¥¸ ,¸Áœ©¸›¸, □¸í¸¿ ¤¸¸¸¿" ˆÅú ¬¸ºœ¸º™ÄŠ¸ú ¢¬¸÷¸¿¤¸£ Ÿ¸½¿ í¸½ ÷¸¸½, ,œ¸Ï¾¥¸ Ÿ¸½¿ ¤¸¸¿" Ÿ¸½¿ ¥¸¸ÂŠ¸ ,¸¾£ œ¸¸¿□¸ - Ÿ¸¸í □¸Ÿ¸¸ Ÿ¸½¿ ©¸¸'Ä Ÿ¸¸›¸¸
□¸¸‡Š¸¸ — ™¸½›¸¸½¿ œ¸¸½¢{¸©¸›¸ "½¥'¸ ž¸¸¢£÷¸ íÿ —

में तथा पांच महीनों की परिपक्वता के साथ शॉर्ट पोज़िशन के रूप में किया जाएगा । कैप्स या फ्लोर्स के साथ फ्लोटिंग रेट लिखतों को फ्लोटिंग रेट प्रतिभूति और यूरोपीय शैली के ऑप्शन की शृंखला के मिले-जुले रूप में माना जाएगा। उदाहरण के लिए 15% कैप के साथ छह महीने के लाइबोर के आधार पर सूचकांकित त्रिवर्षीय फ्लोटिंग रेट बांड के धारक उसे निम्नानुसार मानेंगे -

(i) एक ऋण प्रतिभूति जिसका छह महीने में पुनर्मूल्यन होता है; और

(ii) एफआरए पर पांच लिखित कॉल ऑप्शन की एक शृंखला जिसकी संदर्भ दर 15% होगी तथा प्रत्येक ऑप्शन में आधारभूत एफआरए लागू होते समय नकारात्मक चिह्न तथा आधारभूत प्रतिभूति परिपक्व होते समय सकारात्मक चिह्न होगा[52] ।

6. ईक्विटी के रूप में आधारभूत प्रतिभूति वाले ऑप्शन पर पूंजी भार की गणना भी डेल्टा-भारित पोज़िशनों पर आधारित होगी, जिसे इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.4 में वर्णित बाज़ार जोखिम की माप में शामिल किया जाएगा । इस गणना के प्रयोजन से प्रत्येक राष्ट्रीय बाज़ार को पृथक आधारभूत माना जाएगा । विदेशी मुद्रा पर ऑप्शन तथा गोल्ड पोज़िशन के लिए पूंजी भार खंड घ में वर्णित क्रियाविधि पर आधारित होगा । डेल्टा जोखिम के लिए संबंधित मुद्रा (अथवा स्वर्ण पोज़िशन) के एक्सपोज़र की माप में विदेशी मुद्रा और स्वर्ण पोज़िशन का निवल डेल्टा-आधारित समतुल्य शामिल किया जाएगा ।

7. डेल्टा जोखिम के लिए उपर्युक्त पूंजी भार के अलावा गामा और वेगा जोखिम के लिए और पूंजी भार होंगे । जो बैंक डेल्टा प्लस विधि का प्रयोग करेंगे उनसे अपेक्षा की जाएगी कि वे प्रत्येक ऑप्शन पोज़िशन (हेज पोज़िशन सहित) के लिए गामा और वेगा की भी अलग से गणना करें । पूंजी भारों की गणना निम्नलिखित रूप में की जानी चाहिए -

(i) **प्रत्येक ऑप्शन** के 'गामा प्रभाव' की गणना टेलर सिरीज़ एक्सपेंशन के अनुसार निम्नवत् की जानी चाहिए

गामा प्रभाव = ` X गामा X VU^2

जहां VU = ऑप्शन के आधारभूत में अंतर

(ii) VU की गणना निम्नानुसार की जाएगी -

- ब्याज दर ऑप्शन में यदि आधारभूत प्रतिभूति बांड है तो पहले वर्णित विधि के अनुसार मूल्य संवेदनशीलता की गणना की जानी चाहिए । जहां आधारभूत ब्याज दर हो वहां समतुल्य गणना की जानी चाहिए ।

- इक्विटी और इक्विटी सूचकांकों पर आधारित ऑप्शनों, जिनकी अभी अनुमति नहीं है, की गणना के लिए आधारभूत प्रतिभूति के बाज़ार मूल्य को 9% से गुणा किया जाना चाहिए[53]।

---

52 ƒ¬¸ ,›¸º¤¸¿š¸ ˆ½Å œ¸¾£¸ 2(ˆÅ) Ÿ¸½¿ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ Æ¥¸¸½□¸¥¸ú-Ÿ¸¾□” œ¸¸½¢{¸©¸›¸ œ¸£ ¥¸¸Š¸» ¢›¸¡¸Ÿ¸ ƒ¬¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸½¿ ž¸ú ¥¸¸Š¸» í¸½¿Š¸½ —

53 ¤¡¸¸□¸ ™£¸½¿ ,¸¾£ ƒ¢Æ¨¸'ú ,¸Áœ©¸›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¡¸í¸¿ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ ¤¸º¢›¸¡¸¸™ú ¢›¸¡¸Ÿ¸¸½¿ Ÿ¸½¿, Š¸¸Ÿ¸¸ œ¸»¿□¸ú œ¸Ïž¸¸£ ˆÅú Š¸µ¸›¸¸ ˆ½Å ¬¸Ÿ¸¡¸ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«' □¸¸½¢‰¸Ÿ¸ ˆÅ¸½ ©¸¸¢Ÿ¸¥¸ ˆÅ£›¸½ ˆÅ¸ œ¸Ï¡¸¸¬¸ ›¸íì ¢ˆÅ¡¸¸ Š¸¡¸¸ í¾ — ÷¸˜¸¸¢œ¸ ¢£{¸¨¸Ä ¤¸ÿˆÅ ¢¨¸¢›¸¢™Ä«' ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ‡½¬¸¸ ˆÅ£›¸½ ˆ½Å ¢¥¸‡ ˆÅí ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —

- विदेशी मुद्रा और स्वर्ण पोज़िशन के लिए आधारभूत प्रतिभूति के बाज़ार मूल्य को 9% से गुणा किया जाना चाहिए ।

(iii) इस गणना के प्रयोजन से निम्नलिखित पोज़िशनों में **एक ही आधारभूत** माना जाना चाहिए

- ब्याज दरों के लिए[54] दिशानिर्देशों की सारणी 17 में दिया गया प्रत्येक अवधि बैंड[55]
- इक्विटी और स्टॉक सूचकांकों के लिए प्रत्येक राष्ट्रीय बाज़ार
- विदेशी मुद्रा और स्वर्ण के लिए प्रत्येक मुद्रा द्वय और स्वर्ण

(iv) एक ही आधारभूत वाले प्रत्येक ऑप्शन का गामा प्रभाव होगा जो या तो सकारात्मक होगा या नकारात्मक । इन गामा प्रभावों को जोड़ा जाएगा जिससे प्रत्येक आधारभूत के लिए निवल गामा प्रभाव प्राप्त होगा जो या तो सकारात्मक होगा या नकारात्मक । केवल वही निवल गामा प्रभाव जो नकारात्मक हैं पूंजी की गणना में शामिल किया जाएगा ।

(v) कुल गामा पूंजी भार उपर्युक्त रीति से की गयी गणना से प्राप्त निवल नकारात्मक गामा प्रभाव के निरपेक्ष मूल्य का योग होगा ।

(vi) **अस्थिरता जोखिम** के लिए बैंकों से यह अपेक्षित है कि वे पूंजी भार की गणना ऊपर दी गयी परिभाषा के अनुसार एक ही आधारभूत पर सभी ऑप्शन के लिए वेगा के योग को अस्थिरता में ± 25% के अनुपातिक अंतर से गुणा कर करें ।

(vii) वेगा जोखिम के लिए **कुल पूंजी भार** वेगा जोखिम के लिए गणना किये गये सभी पूंजी भारों के निरपेक्ष मूल्य का योग होगा ।

ख) परिदृश्य दृष्टिकोण

8. अत्याधुनिक बैंकों को यह भी अधिकार होगा कि वे ऑप्शन पोर्टफोलियो तथा संबद्ध हेजिंग पोज़िशन के लिए बाज़ार जोखिम पूंजी भार परिदृश्य मैट्रिक्स विश्लेषण पर आधारित करें । ऐसा ऑप्शन पोर्टफोलियो के जोखिम घटकों में परिवर्तनों के नियत दायरे को विनिर्दिष्ट कर तथा इस "ग्रिड" के विभिन्न बिन्दुओं पर ऑप्शन पोर्टफोलियो के मूल्य में परिवर्तन की गणना कर किया जाएगा । पूंजी भार की गणना के प्रयोजन से बैंक ऑप्शन की आधारभूत दर अथवा मूल्य और उक्त दर अथवा मूल्य की अस्थिरता में साथ-साथ होने वाले परिवर्तनों के लिए मैट्रिक्स का प्रयोग करते हुए ऑप्शन पोर्टफोलियो का पुनर्मूल्यन करेगा । जैसा कि ऊपर पैरा 7 में परिभाषित किया गया है प्रत्येक आधारभूत के लिए अलग मैट्रिक्स स्थापित किया जाएगा । वैकल्पिक रूप से प्रत्येक राष्ट्रीय प्राधिकार के विवेकाधिकार के अनुसार ब्याज दर ऑप्शन में महत्वपूर्ण ऑप्शन व्यापार करनेवाले बैंकों को यह अनुमति दी जाएगी कि वे अवधि

---

54 œ¸¸½¢{¸©¸›¸ ˆÅú Ÿ¸ºÍ¸ ˆ½Å ‚›¸º¬¸¸£ ‚¥¸Š¸ œ¸¢£œ¸Æ¨¸÷¸¸ ¬¸¸½œ¸¸›¸¸½¿ Ÿ¸½¿ ¨¸Š¸úÄˆ¼Å÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ ¸¸›¸¸ ¸¸¢í‡ —

55 ‚¨¸¢š¸ œ¸Ö¢÷¸ ˆÅ¸ œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ˆÅ£›¸½¨¸¸¥¸½ ¤¸ÿˆÅ¸½¿ ˆÅ¸½ ¢™©¸¸¢›¸™½Ä©¸ ˆÅú ¬¸¸£µ¸ú 18 Ÿ¸½¿ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ ‚¨¸¢š¸ ¤¸ÿ”¸½¿ ˆÅ¸ œ¸Ï¡¸¸½Š¸ ˆÅ£›¸¸ ¸¸¢í‡ —

बैंडों के न्यूनतम छह समूहों के आधार पर गणना करें । इस अवधि का प्रयोग करते समय इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 में परिभाषित अधिक से अधिक तीन अवधि बैंडों को एक समूह में शामिल किया जाना चाहिए ।

9. ऑप्शन और संबद्ध हेजिंग पोजिशन का मूल्यांकन आधारभूत के वर्तमान मूल्य से ऊपर और नीचे एक विनिर्दिष्ट दायरे में किया जाएगा । ब्याज दरों के लिए दायरा इस मास्टर परिपत्र के पैरा 8.3 में सारणी 17 में प्रतिफल के लिए परिकल्पित परिवर्तनों के अनुरूप है । जो बैंक ऊपर पैरा 8 में वर्णित ब्याज दर ऑप्शन के लिए वैकल्पिक विधि का प्रयोग करेंगे, उन्हें प्रत्येक अवधि बैंड के समूह के लिए, संबंधित समूह पर लागू प्रतिफल में परिकल्पित उच्चतम परिवर्तन का प्रयोग करना चाहिए[56]। अन्य दायरे हैं - इक्विटी के लिए ± 9% और विदेशी मुद्रा तथा स्वर्ण के लिए ± 9% । सभी जोखिम संवर्गों के लिए दायरे को समान अंतरालों में विभाजित करने के लिए कम-से-कम सात प्रेक्षण (वर्तमान प्रेक्षण सहित) का प्रयोग करना चाहिए ।

10. मैट्रिक्स के दूसरे आयाम के कारण आधारभूत दर या मूल्य की अस्थिरता में परिवर्तन होगा । अधिकांश मामलों में आधारभूत दर या मूल्य की अस्थिरता में + 25% और - 25% का परिवर्तन पर्याप्त होने की आशा है । परिस्थिति के अनुसार रिज़र्व बैंक यह अपेक्षा कर सकता है कि अस्थिरता में अलग परिवर्तन का प्रयोग किया जाए और/अथवा ग्रिड में मध्यवर्ती बिन्दुओं की गणना की जाए ।

11. मैट्रिक्स की गणना करने के बाद प्रत्येक सेल में ऑप्शन तथा आधारभूत हेज लिखत का निवल लाभ या हानि होगी । इसके बाद प्रत्येक आधारभूत के पूंजी भार की गणना मैट्रिक्स में निहित अधिकतम हानि के रूप में की जाएगी ।

12. इन मध्यवर्ती दृष्टिकोणों की रचना करते समय यह प्रयास किया गया है कि ऑप्शन से जुड़े प्रमुख जोखिमों को कवर किया जाए । ऐसा करते समय यह तथ्य ध्यान में है कि जहां तक विनिर्दिष्ट जोखिम का संबंध है केवल डेल्टा-संबद्ध तत्वों को शामिल किया गया है । अन्य जोखिमों को शामिल करने के लिए अधिक जटिल प्रणाली की आवश्यकता होगी । दूसरी ओर, अन्य क्षेत्रों में सरलीकृत परिकल्पना का प्रयोग करने के फलस्वरूप कुछ ऑप्शन पोज़िशन का अपेक्षाकृत पारंपरिक ट्रीटमेंट हुआ है ।

13. उपर्युक्त ऑप्शन जोखिम के अलावा भारतीय रिज़र्व बैंक ऑप्शन से जुड़े अन्य जोखिमों के संबंध में सचेत है । उदाहरण के लिए रो (ब्याज दर की तुलना में ऑप्शन के मूल्य में परिवर्तन की दर) और थेटा (समय की तुलना में ऑप्शन के मूल्य में परिवर्तन की दर) । अभी उन जोखिमों की माप प्रणाली के संबंध में प्रस्ताव नहीं किया जा रहा है, तथापि ऐसी आशा की जाती है कि ऑप्शन कारोबार करने वाले बैंक ऐसे जोखिमों की कम-से-कम निरंतर निगरानी करेंगे । इसके अलावा यदि बैंक चाहें तो उन्हें ब्याज दर जोखिम के लिए अपनी पूंजी की गणना में 'रो' को शामिल करने की अनुमति दी जाएगी ।

---

[56] „™¸í£µ¸ ˆ½Å ¢¥¸‡, ¡¸¢™ 3 ¬¸½ 4 ¨¸«¸Ä, 4 ¬¸½ 5 ¨¸«¸Ä ¸¸¾£ 5 ¬¸½ 7 ¨¸«¸¸½ô ˆ½Å ,¨¸¢š¸ ¤¸ÿ”¸½¿ ˆÅ¸½ ¢Ÿ¸¥¸¸¡¸¸ □¸¸‡ ÷¸¸½ ƒ›¸ ÷¸ú›¸ ¤¸ÿ”¸½¿ ˆÅú ,¸¡¸ ˆÅ¸ „□□¸÷¸Ÿ¸ œ¸¢£ˆÅ¢¥œ¸÷¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸ 0.75 í¸½Š¸¸ —

अनुबंध - 10

(देखें पैरा 11.4.5)

स्तंभ II के अंतर्गत बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम (आइआरआरबीबी) <u>की माप की विधि का एक उदाहरण</u>

बासल II ढांचे (पैरा 739 और 762) में यह अपेक्षा की गयी है कि बैंक बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम (आइआरआरबी) की माप करेंगे तथा उसके अनुरूप पूंजी रखेंगे । यदि पर्यवेक्षक यह पाते हैं कि बैंक ब्याज दर जोखिम के स्तर के अनुरूप पूंजी नहीं रख रहे हैं तो उन्हें बैंक से यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वे अपना जोखिम कम करें, पूंजी की विनिर्दिष्ट अतिरिक्त राशि रखें अथवा दोनों का मिला-जुला रूप रखें । आइआरआरबीबी से संबंधित स्तंभ II की अपेक्षा का अनुपालन करने के लिए अनेक विनियामकों द्वारा स्तंभ II के संबंध में जारी दिशानिर्देशों में ऐसे निश्चित प्रावधान हैं जिनमें बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए पर्यवेक्षकों द्वारा अपनायी गयी विधि और यदि ब्याज दर जोखिम का स्तर उल्लेखनीय है तो की जानेवाली कार्रवाई निर्दिष्ट की गयी है ।

बासल II ढांचे के पैरा 764 के अनुसार बैंक आइआरआरबीबी के लिए पूंजी की पर्याप्तता का मूल्यांकन करने के लिए बीसीबीएस द्वारा जारी "ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत" नामक समर्थक दस्तावेज में निर्धारित निदर्शात्मक विधि का अनुसरण कर सकते हैं ।

2. "ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत" नामक बीसीबीएस के पर्चे में <u>निर्धारित विधि</u>

उपर्युक्त समर्थक दस्तावेज में उल्लिखित विधि के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं :

क) मूल्यांकन में ब्याज दर जोखिम का आय दृष्टिकोण और आर्थिक मूल्य दृष्टिकोण दोनों को ध्यान में रखना चाहिए ।

ख) आय अथवा ईक्विटी के आर्थिक मूल्य के प्रभाव की गणना 200 आधार अंकों का एक कल्पित (नोशनल) ब्याज दर आघात लागू करके की जानी चाहिए ।

ग) ब्याज दर जोखिम की माप करने की सामान्य विधियां इस प्रकार हैं :

क) आय दृष्टिकोण

अंतराल (गेप) विश्लेषण, अनुरूपण (सिमुलेशन) तकनीकें और जोखिम पर मूल्य के आधार पर आंतरिक मॉडल

ख) इकॉनॉमिक दृष्टिकोण

अवधि अंतराल विश्लेषण, अनुरूपण तकनीकें और जोखिम मूल्य के आधार पर आंतरिक मॉडल सहित अंतराल (गेप) विश्लेषण

3. <u>आइआरआरबीबी की माप की विधियां</u>

3.1 <u>आय पर प्रभाव</u>

आय पर प्रभाव की गणना करने की प्रमुख विधियां अंतराल विश्लेषण, अनुरूपपण और जोखिम पर मूल्य आधारित तकनीकें हैं । भारत में बैंक अंतराल विधि के माध्यम से आय पर ब्याज दर की प्रतिकूल घट-बढ़ के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए अंतराल रिपोर्ट का प्रयोग करते आ रहे हैं । बैंक इसे जारी रख सकते हैं । तथापि, बैंक अनुरूपण का भी प्रयोग कर सकते हैं । बैंक एक वर्ष में प्रतिफल में 200 आधार अंकों का परिवर्तन मानते हुए अंतराल विश्लेषण या किसी अन्य विधि से आय पर प्रभाव की गणना कर सकते हैं । तथापि, आय पर प्रभाव के लिए कोई पूंजी आबंटित करने की आवश्यकता नहीं है ।

3.2 <u>ईक्विटी के बाजार मूल्य (एमवीई) पर आइआरआरबीबी का प्रभाव</u>

बैंक एमवीई पर ब्याज दर आघात के प्रभाव की गणना के लिए बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासल समिति के पर्चे "ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत" (जुलाई 2004) में निर्दिष्ट विधि का प्रयोग कर सकते हैं ।

3.2.1 <u>*"ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत" नामक बीसीबीएस के पर्चे में निर्दिष्ट विधि*</u>

इस विधि में निम्नलिखित चरण हैं :

क) आस्ति/देयता की प्रत्येक मद (आस्ति/देयता की प्रत्येक श्रेणी) के लिए परिपक्वता/पुनर्मूल्यन की तारीख, कूपन दर, बारंबारता और मूल धन जैसे आंकड़े प्राप्त किये जाते हैं ।

ख) हर एक टाइम-बैंड में ‘लांग’ और ‘शार्ट’ को प्रतिसंतुलित किया जाता है ।

ग) इसके परिणामस्वरूप जो ‘शार्ट’ और ‘लांग’ पोजीशन उत्पन्न होती हैं उन्हें एक ऐसे घटक द्वारा भारांकित किया जाता है जिसे ब्याज दर में माने गये परिवर्तन के प्रति विभिन्न टाइम बैंड में पोजिशन की संवेदनशीलता दर्शाने के लिए बनाया गया है । ये घटक पूरे समय परिदृश्य के दौरान 200 आधार अंकों के कल्पित समांतर परिवर्तन तथा प्रत्येक टाइम बैंड के मध्यमें स्थित पोजीशनों के परिवर्तित ड्यूरेशन की प्रोक्सी और 5 प्रतिशत प्रतिफल पर आधारित हैं ।

घ) इसके परिणामस्वरूप भारित पोजीशनों को जोड़ा जाता है, लांग और शार्ट को प्रतिसंतुलित किया जाता है जिससे निवल शार्ट - या लांग - भारित स्थितियां प्राप्त होती हैं ।

ङ) भारित पोजीशन की तुलना पूंजी से की जाती है । ब्योरे के लिए बैंक बीसीबीएल द्वारा जारी उपर्युक्त पर्चा देखें । सुविधा के लिए पर्चे का अनुबंध 3 और 4, जिसमें फ्रेम वर्क तथा मानकीकृत ढांचे का उदाहरण दिया गया है, **अनुबंध 11 और अनुबंध 12** में पुनः प्रस्तुत किया जाता है ।

3.2.2 ब्याज दर जोखिम माप की अन्य तकनीकें

बैंक आइआरआरबीबी की माप करने के लिए उपर्युक्त के अलग प्रकार/रूप अपना सकते हैं या पूरी तरह से अलग तकनीक का प्रयोग कर सकते हैं बशर्ते वे उन्हें धारणात्मक दृष्टि से त्रुटिहीन पायें । बीसीबीएस के पर्चे के उपर्युक्त अनुबंध 1 और 2 में ब्याज दर जोखिम माप की तकनीकों के सामान्य ब्योरे दिये गये हैं तथा ब्याज दर जोखिम के प्रति किसी बैंक के एक्सपोज़र के संबंध में सूचना प्राप्त करने तथा उनका विश्लेषण करने के लिए जिन कुछ घटकों पर पर्यवेक्षीय प्राधिकारी विचार कर सकते हैं उनका एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है । इन अनुबंधों को क्रमशः **अनुबंध 13 और 14** में प्रस्तुत किया गया है ।

4. पूंजी पर आइआरआरबीबी के प्रभाव की माप के लिए सुझायी गयी विधि

4.1 बासल II ढांचे के अनुसार, यदि पर्यवेक्षक यह महसूस करता है कि बैंक आइआरआरबीबी के स्तर के अनुरूप पूंजी नहीं रख रहा है तो बैंक को जोखिम कम करने या अतिरिक्त पूंजी आबंटित करने या इन दोनों की मिली-जुली अपेक्षा का पालन करने के लिए कहा जा सकता है ।

4.2 बैंक अपने बोर्ड के अनुमोदन से बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम के उस समुचित स्तर के संबंध में निर्णय ले सकते हैं, जिसे वे अपने पूंजी स्तर, ब्याज दर प्रबंधन दक्षता और ब्याज दरों में प्रतिकूल घट-बढ़ के मामले में बैंकिंग बही संविभाग को पुनः संतुलित करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए रखना चाहते हैं । किसी भी हालत में, ब्याज दर जोखिम का वह स्तर उच्च माना जाएगा जिसमें 200 आधार अंकों के ब्याज दर आघात से एमवीई में 20 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आ जाए । सामान्यतः भारतीय रिज़र्व बैंक ऐसे बैंकों से यह अपेक्षा करेगा कि आइआरआरबीबी के लिए अतिरिक्त पूंजी रखे, जिसे एसआरईपी के दौरान निर्धारित किया गया हो । जिन बैंकों का आइआरआरबीबी एक्सपोजर एमवीई में 20 प्रतिशत गिरावट से कम के बराबर हो उनसे भी अतिरिक्त पूंजी रखने के लिए कहा जा सकता है यदि भारतीय रिज़र्व बैंक के विचार में बैंक के पूंजी स्तर अथवा ब्याज दर जोखिम प्रबंधन ढांचे की गुणवत्ता की तुलना में ब्याज दर जोखिम का स्तर उच्चतर है । यद्यपि बैंक अपने एमवीई में संभावित गिरावट, ब्याज दर जोखिम प्रबंधन दक्षता और ब्याज दरों में प्रतिकूल घट-बढ़ के मामले में संविभागों को शीघ्र पुनः संतुलित करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए आइआरआरबीबी के लिए अतिरिक्त पूंजी रखने के संबंध में स्वयं निर्णय ले सकते हैं, तथापि अतिरिक्त पूंजी, यदि आवश्यक समझी गयी, की वास्तविक राशि का निर्णय भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंक के साथ विचार-विमर्श करते हुए एसआरईपी के एक अंग के रूप में किया जाएगा ।

5. सीमा निर्धारण

यह उचित होगा कि बैंक अपने आइआरआरबीबी को नियंत्रित करने के लिए आंतरिक सीमाएं निर्धारित करे । सीमा निर्धारित करने के कुछ संकेतात्मक तरीके नीचे दिये गये हैं -

क) आंतरिक सीमाएं 200 या 300 आधार अंकों के ब्याज दर आघात के परिणामस्वरूप आय में अधिकतम गिरावट (आधारभूत आय परिदृश्य के प्रतिशत के रूप में) अथवा पूंजी में अधिकतम गिरावट (आधारभूत पूंजी स्थिति परिदृश्य के प्रतिशत के रूप में) के रूप में निर्धारित की जा सकती है ।

ख) सीमाएं बैंक की निवल मालियत/पूंजी के प्रतिशत के रूप में बैंक की निवल स्थिति के PV01 मूल्य (एक आधार अंक का वर्तमान मूल्य) के रूप में निर्धारित की जा सकती है ।

अनुबंध 11

(देखें अनुबंध 10 का पैरा 3.2.1)

ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत संबंधी बीसीबीएस के जुलाई 2004 के पर्चे का अनुबंध 3

मानकीकृत ब्याज दर आघात

1. संस्थाओं के ब्याज दर जोखिम एक्सपोज़र की पर्यवेक्षकों द्वारा की जाने वाली निगरानी को सुसाध्य बनाने के लिए बैंकों को अपनी आंतरिक माप प्रणालियों के परिणाम उपलब्ध कराने होंगे, जिन्हें मानकीकृत ब्याज दर आघात का प्रयोग करते हुए पूंजी की तुलना में आर्थिक मूल्य में परिवर्तन के रूप में व्यक्त किया गया हो। इस अनुबंध में मानकीकृत दर आघात के चयन की तकनीकी पृष्ठभूमि दी गयी है। आघात का चयन करते समय निम्नलिखित मार्गदर्शी सिद्धांतों का अनुसरण किया गया :

- दर आघात को काफी असामान्य और दबावपूर्ण दर वातावरण को व्यक्त करना चाहिए;
- दर आघात की मात्रा उल्लेखनीय होनी चाहिए ताकि वह अंतर्निहित ऑप्शन तथा बैंक की आस्तियों और देयताओं के भीतर कन्वेक्सिटी को व्यक्त कर सके ताकि अंतर्निहित जोखिम प्रकट हो सके;
- दर आघात कार्यान्वयन में सरल और व्यावहारिक होना चाहिए तथा बैंकिंग बही पोजीशन के लिए एक-दर-पथ अनुरूपण मॉडल और सांख्यिकीय आधारित जोखिम-दर-मूल्य मॉडलों में अंतर्निहित अलग-अलग दृष्टिकोणों को समायोजित करने में सफल होना चाहिए।
- अंतर्निहित क्रियाविधि में जी-10 मुद्रा और महत्वपूर्ण गैर- जी-10 मुद्रा एक्सपोज़र, दोनों के लिए आघात होना चाहिए;
- अंतर्निहित क्रियाविधि उन गैर-जी-10 पर्यवेक्षकों के लिए स्वीकार्य होनी चाहिए जो अपने देशों में इस दृष्टिकोण को कार्यान्वित करना चाहते हैं।

2. इन सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित दर आघात बैंकों द्वारा सिद्धांततः निम्नलिखित के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए :

- जी-10 देशों की मुद्राओं में एक्सपोज़र के लिए

  क) एक ऊर्ध्वमुखी और अधोमुखी 200 आधार अंक का समांतर दर आधात; अथवा

  ख) एक-वर्ष (240 कार्य दिवस) धारण अवधि का और कम-से-कम 5 वर्षों के प्रेक्षण पर आधारित ब्याज दर परिवर्तनों का पहला औरर 99वाँ पर्सेन्टाइल

- गैर -जी-10 देशों की मुद्राओं में एक्सपोज़र के लिए

  क) एक समांतर दर आघात जो एक -वर्ष (240 कार्य दिवस) धारण अवधि और गैर- जी-10 के मुद्रा विशेष के लिए कम-से-कम 5 वर्षों के प्रेक्षण पर आधारित ब्याज दर परिवर्तनों का पहले और 99वें पर्सेटाइल के साथ सुसंगत हो; अथवा

  ख) एक वर्ष (240 कार्य दिवस) धारण अवधि और कम-से-कम 5 वर्षों के प्रेक्षण पर आधारित ब्याज दर परिवर्तनों का पहला और 99वाँ पर्सेंटाइल ।

3. संभावित दर आघातों पर विचार करते समय अनेक जी-10 देशों में ऐतिहासिक दर परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया । एक वर्ष धारण अवधि (240 कारोबार दिवस) का चयन व्यावहारिक प्रयोजनों से तथा इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया है कि अधिकांश संस्थाओं के पास यह क्षमता होती है कि वे अत्यधिक अस्थिर दरों की स्थिति में आर्थिक मूल्य में और अधिक हानि रोकने के लिए अपने पोजीशन की पुनर्रचना कर सकते हैं या उनकी बचाव-व्यवस्था (हेजिंग) कर सकते हैं। पाँच वर्ष के दर परिवर्तन प्रेक्षणों के लिए कम-से-कम छह वर्षों के ऐतिहासिक आँकड़े चाहिए ताकि चक्रीय आधार पर एक वर्ष धारण अवधि के दर अंतर की गणना की जा सके। उदाहरण के लिए, पाँच वर्ष पहले के पहले प्रेक्षण के लिए हमें छह वर्ष पहले के दर वातावरण को देखना होगा ताकि हम पहले दर परिवर्तन की गणना कर सकें।

4. निकट अतीत के प्रासंगिक ब्याज दर चक्रों को व्यक्त करने के लिए पंचवर्षीय ऐतिहासिक प्रेक्षण अवधि (आँकड़ों के छह वर्ष)पर्याप्त रूप से दीर्घ मानी गयी है। उक्त समयावधि उन संस्थाओं को भी समुचित आँकड़े प्रदान कर सकेगी, जो सांख्यिकी आधारित जोखिम-पर-मूल्य मॉडल या गैर-जी-10 मुद्राओं के लिए उपयुक्त समांतर दर आघात के संबंध में अपने मूल्यांकन में उन आँकड़ों का प्रयोग करना चाहते हैं। असामान्य और दबावपूर्ण परिदृश्यों को परिभाषित करते समय उस परिमाण के दर आघात को पर्याप्त माना गया जो 99 प्रतिशत कन्फिडेन्स इन्टरवल के साथ और अधिक होने की आशा नहीं है।

5. जी 10 आघातों के आंकड़ों का मूल्यांकन करते समय यह पाया गया कि पहले और 99 पर्सेंटाइल में दर की घट-बढ़ अधिकांश मुद्राओं में खासकर दीर्घतर अवधि के मामले में आपस में

सामान्यतः तुलनीय थे । 200 आधार अंकों का ऊर्ध्वमुखी और अधोमुखी दर आघात जी 10 मुद्राओं की अस्थिरता को पर्याप्त रूप से व्यक्त करता प्रतीत होता है । प्रस्तावित आघात की उपयुक्तता की जांच निरंतर आधार पर की जानी चाहिए तथा यदि दर वातावरण में भारी परिवर्तन होता है तो उसका पुनर्निर्धारण किया जाना चाहिए । महत्वपूर्ण बात यह है कि समांतर आघात का निर्धारण इस प्रकार किया गया है ताकि वह उन आघातों के साथ मोटे तौर पर सुसंगत हो जिन्हें अधिक परिष्कृत दृष्टिकोण (99 प्रतिशत कन्फिडेंस इंटरवल, एक वर्षीय धारण अवधि, पंचवर्षीय प्रेक्षण) का प्रयोग करते हुए सांख्यिकी आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से लागू किया जाएगा । अतः इस अवधि के प्रयोग से अधिक नवोन्मेषी जोखिम माप प्रणालियों के प्रयोग का मार्ग अवरूद्ध नहीं होता है । इससे संस्थाएं जी-10 देशों के बाहर के महत्वपूर्ण एक्सपोज़र के मामले में उपयुक्त आघात की स्वयं गणना करने के लिए इन मानदंडों का प्रयोग कर सकती हैं तथा उभरते बाजार और अन्य गैर-जी 10 देशों के पर्यवेक्षक अपने देशों के लिए सरल आघात की गणना कर सकते हैं ।

6. अब तक के विश्लेषण में यह बात मान ली गयी है कि बैंक केवल अपने देश की मुद्रा में ब्याज दर जोखिम वहन करते हैं । तथापि अनेक बैंकों के समक्ष एक से अधिक मुद्रा में ब्याज दर जोखिम होगा । ऐसे मामलों में बैंकों को अपनी बैंकिंग बही आस्तियों या देयताओं के 5 प्रतिशत या उससे अधिक भाग वाली प्रत्येक मुद्रा के लिए ऊपर वर्णित किसी एक अवधि के अनुसार ब्याज दर आघात का प्रयोग करते हुए समान प्रकार का विश्लेषण करना चाहिए । बैंकिंग बही को पूरी तरह कवर करने के लिए बाकी एक्सपोज़रों को जोड़कर उस पर 200 आधार अंक का आघात लागू करना चाहिए ।

7. 200 आधार अंक समांतर दर आघात की सापेक्षिक सरलता का एक दोष यह है कि इसमें उन एक्सपोज़रों की उपेक्षा की गयी है जिन्हें यील्ड, कर्व ट्विस्ट, इनवर्सन या अन्य परिदृश्यों के माध्यम से प्रकट किया जा सकता था । जैसा कि इस पर्चे में अन्यत्र उल्लेख किया गया है इस प्रकार के वैकल्पिक परिदृश्य ब्याज दर जोखिम के समग्र प्रबंधन के आवश्यक घटक हैं । पर्यवेक्षक संस्थाओं से यह अपेक्षा रखेंगे कि वे अपने जोखिम के स्तर और स्वरूप के अनुरूप अपने ब्याज दर जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए बहुविध परिदृश्यों का प्रयोग करते रहेंगे ।

8. यद्यपि अधिक सूक्ष्म विश्लेषण वाले दर परिदृश्य कतिपय अंतर्निहित जोखिम विशेषताओं को प्रकट कर सकते हैं, तथापि, पर्यवेक्षकों के लिए ब्याज दर जोखिम के महत्वपूर्ण स्तरों वाली संस्थाओं का पता लगाने के अधिक सामान्य प्रयोजन के लिए सरल समांतर आघात पर्याप्त है । इस प्रकार के दृष्टिकोण में नकली परिशुद्धता की संभावना को भी ध्यान में रखा जाता है जो अक्सर तब उत्पन्न होती है जब माप प्रणाली के किसी एक पहलू के सूक्ष्म ब्यौरे पर आवश्यकता से अधिक ध्यान दिया जाता है , बिना इस बात को ध्यान में रखे कि कुछ आस्ति और देयता के संवर्गों के लिए, उदाहरण के लिए कोर जमाराशियों के लिए, जो पूर्व धारणाएं स्वीकार की जाती हैं वे आवश्यक रूप से निर्णय पर आधारित होती हैं । ब्याज दर जोखिम मॉडल के इस प्रकार के निर्णयात्मक पहलू अक्सर जोखिम की माप और निष्कर्षों को प्रभावित करते हैं, भले ही जोखिम माप के अन्य पहलुओं पर विस्तृत ध्यान दिया गया हो ।

अनुबंध - 12

(देखें अनुबंध 10 का पैरा 3.2.1)

ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत संबंधी बीसीबीएस के जुलाई 2004 के पर्चे का अनुबंध 4

मानकीकृत ढांचे का एक उदाहरण

1. इस अनुबंध में मानकीकृत ढांचे के एक रूप की कार्यविधि और गणना प्रक्रिया दर्शाते हुए एक उदाहरण दिया गया है । इस परिप्रेक्ष्य में संबंधित बैंक की परिस्थितियों के आधार पर अन्य कार्यविधियां और गणना प्रक्रियाएं भी समान रूप से प्रयोज्य हो सकती हैं । इस प्रकार का ढांचा केवल पर्यवेक्षीय रिपोर्टिंग के प्रयोजन से बनाया गया है तथा यह आंतरिक जोखिम प्रबंधन के लिए उपयुक्त ढांचे का प्रतिनिधित्व नहीं करता ।

अ. कार्यविधि

2. बैंक के तुलन पत्र के पोजीशन निम्नलिखित सिद्धांतों के अनुसार परिपक्वता दृष्टिकोण में वर्गीकृत किये जाएंगे :

(क) बैंकिंग बही की सभी आस्तियों और देयताओं को तथा बैंकिंग बही की सभी तुलन पत्र की मदों को, जो ब्याज दर परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील हों (ब्याज दर डेरिवेटिव सहित), परिपक्वता सोपान में वर्गीकृत किया जाता है, जिसमें कई टाइम बैंड होंगे और जो इतने बड़े होंगे कि राष्ट्रीय बैंकिंग बाजार में ब्याज दर जोखिम की प्रकृति को व्यक्त कर सकेंगे । अनुबंध 2 में उपयुक्त टाइम बैंड के चयन से संबंधित मुद्दों की चर्चा की गयी है । बैंकिंग बही की आस्तियों या देयताओं के 5 प्रतिशत से अधिक अंश वाली प्रत्येक मुद्रा के लिए अलग परिपक्वता सोपान का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

(ख) तुलन पत्र की मदों के संबंध में बही मूल्य पर कार्रवाई की जाती है ।

(ग) नियत दर लिखतों को परिपक्वता की शेष अवधि के अनुसार तथा अस्थायी दर लिखतों को पुनर्मूल्यन की अगली तारीख तक बची अवधि के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है ।

(घ) ऐसे एक्सपोज़र, जिनकी बड़ी संख्या और अपेक्षाकृत छोटी अलग-अलग राशियों (उदाहरण के लिए बंधक ऋण की किस्तें) के कारण प्रसंस्करण की व्यावहारिक समस्या हो सकती है, सांख्यिकीय रूप से समर्थित मूल्यांकन विधियों के आधार पर वर्गीकृत किये जा सकते हैं ।

(ङ) मुख्य (कोर) जमाराशियों को अधिकतम पांच वर्षों की मानी गयी परिपक्वता अवधि के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है ।

(च) राष्ट्रीय पर्यवेक्षक इस संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे कि किस प्रकार ऐसी परिपक्वता या पुनर्मूल्यन वाली मदों को टाइम बैंड संरचना में वर्गीकृत किया जाए जो संविदागत परिपक्वता या पुनर्मूल्यन से अलग हैं ।

(छ) डेरिवेटिव को संबंधित अंडरलाइंग में पोजीशन के रूप में परिवर्तित किया जाता है । जिस राशि को लिया जाता है वह अंडरलाइंग अथवा नोशनल अंडरलाइंग की मूल राशि होती है ।

(ज) फ्यूचर्स और वायदा संविदाओं को, जिनमें वायदा दर करार भी शामिल हैं, लांग और शॉर्ट पोजीशन के मिले-जुले रूप में माना जाता है । किसी फ्यूचर या वायदा दर करार की परिपक्वता उसकी सुपुर्दगी अथवा संविदा लागू करने तक की अवधि होगी तथा जहां लागू होगा, वहां अंतर्निहित लिखत की अवधि भी जोड़ी जाएगी । उदाहरण के लिए किसी जून त्रैमासिक ब्याज दर फ्यूचर में (अप्रैल में) लिये गये लांग पोजीशन की रिपोर्टिंग पांच महीने की परिपक्वता के साथ लांग पोजीशन के रूप में तथा दो महीनों की परिपक्वता के साथ शॉर्ट पोजीशन के रूप में की जानी चाहिए ।

(झ) स्वैप को संबंधित परिपक्वताओं के दो नोशनल पोजीशन के रूप में माना जाता है । उदाहरण के लिए, यदि किसी ब्याज दर स्वैप के अंतर्गत बैंक अस्थायी-दर पर ब्याज लेता है और नियत-दर पर ब्याज अदा करता है, तो उसे लांग अस्थायी दर पोजीशन माना जाएगा, जिसकी परिपक्वता अवधि अगले ब्याज निर्धारण तक की अवधि होगी तथा उसे शॉर्ट नियत दर पोजीशन भी माना जाएगा जिसकी परिपक्वता स्वैप की शेष अवधि के बराबर होगी । क्रॉस करेंसी स्वैप के अलग-अलग पक्षों को संबंधित मुद्राओं के संबंधित परिपक्वता सोपानों में वर्गीकृत किया जाएगा ।

(ञ) ऑप्शन के संबंध में अंतर्निहित लिखत या कल्पित अंतर्निहित लिखत की डेल्टा समकक्ष राशि के अनुसार विचार किया जाएगा ।

आ. गणना प्रक्रिया

3. गणना प्रक्रिया के पांच चरण हैं -

   (क) पहला चरण है प्रत्येक टाइम बैंड में लांग और शॉर्ट को प्रतिसंतुलित करना, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक टाइम बैंड में एक शॉर्ट या लांग पोजीशन होगा ।

   (ख) दूसरा चरण है इस प्रकार प्राप्त शॉर्ट और लांग पोजीशन को ऐसे गुणक से भारांकित किया जाए जिसे ब्याज दर में माने गये परिवर्तन के प्रति विभिन्न टाइम

बैंडों में पोजीशन की संवेदनशीलता दर्शाने के लिए बनाया गया हो । प्रत्येक टामइ बैंड के लिए भारांकन गुणकों का समूह नीचे सारणी 1 में दिया गया है । ये गुणक पूरे टाइम स्पेक्ट्रम में 200 आधार अंकों के माने गये समांतर अंतर पर तथा प्रत्येक टाइम बैंक के मध्य में स्थित पोजीशनों की परिवर्तित ड्यूरेशन की प्रोक्सी और 5 प्रतिशत प्रतिफल पर आधारित हैं ।

(ग) तीसरा चरण इन भारित पोजीशन को जोड़ना तथा लांग और शॉर्ट को प्रतिसंतुलित करना है, जिससे संबंधित मुद्रा की बैंकिंग बही में निवल शॉर्ट और लांग-भारित पोजीशन प्राप्त होते हैं ।

(घ) चौथा चरण है विभिन्न मुद्राओं के लिए निवल शॉर्ट और लांग भारित पोजीशन की गणना कर जोड़ते हुए पूरे बैंकिंग बही के भारित पोजीशन की गणना करना ।

(ङ) पांचवां चरण है पूरे बैंकिंग बही के भारित पोजीशन की तुलना पूंजी से करना ।

सारणी 1

टाइम बैंड के अनुसार भारांकन गुणक (गणना प्रक्रिया में दूसरा चरण)

टाइम बैंड	टाइम बैंड का मध्य	संशोधित अवधि की प्रॉक्सी	प्रतिफल में माना गया परिवर्तन	भारांकन गुणक
1 महीने तक	0.5 महीने	0.04 वर्ष	200 बीपी	0.08%
1 से तीन महीने तक	2महीने	0.16 वर्ष	200 बीपी	0.32%
3 से 6 महीने तक	4.5 महीने	0.36 वर्ष	200 बीपी	0.72%
6 से 12 महीने तक	9 महीने	0.71वर्ष	200 बीपी	1..43%
1 से 2 वर्ष तक	1.5 वर्ष	1.38 वर्ष	200 बीपी	2.77%
2 से 3 वर्ष तक	2.5 वर्ष	2.25 वर्ष	200 बीपी	4.49%
3 से 4 वर्ष तक	3.5 वर्ष	3.07 वर्ष	200 बीपी	6.14%
4 से 5 वर्ष तक	4.5 वर्ष	3.85 वर्ष	200 बीपी	7.71%
5 से 7 वर्ष तक	6वर्ष	5.08 वर्ष	200 बीपी	10.15%
7 से 10 वर्ष तक	8.5 वर्ष	6.63 वर्ष	200 बीपी	13.26%
10 से 15 वर्ष तक	12.5 वर्ष	8.92वर्ष	200 बीपी	17.84%
15 से 20 वर्ष	17.5 वर्ष	11.21 वर्ष	200 बीपी	22.43%

तक				
20 वर्ष तक	22.5 वर्ष	13.01वर्ष	200 बीपी	26.03%

अनुबंध - 13
(देखें अनुबंध 10 का पैरा 3.2.2)

ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के सिद्धांत संबंधी बीसीबीएल के जुलाई 2004 के पर्चे का अनुबंध I

ब्याज दर जोखिम माप तकनीकें

1. इस अनुबंध में ब्याज दरों में परिवर्तन के प्रति आय और आर्थिक मूल्य के एक्सपोज़र की माप के संबंध में बैंकों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न तकनीकों का एक संक्षिप्त विहगावलोकन दिया गया है । इन विविध तकनीकों में सरल परिपक्वता और पुनर्मूल्यन सारणियों पर आधारित गणना, चालू तुलन पत्र और तुलनपत्रेतर पोजीशन के आधार पर स्टैटिक सिमुलेशन से लेकर अत्यधिक परिष्कृत गतिशील मॉडलिंग तकनीकें भी हैं जिनमें ब्याज दर वातावरण में परिवर्तनों के प्रति बैंक और उनके ग्राहकों की प्रतिक्रिया के बारे में पूर्व धारणाओं को शामिल किया जाता है । इनमें से कुछ सामान्य विधियों का प्रयोग आय और आर्थिक मूल्य दोनों दृष्टिकोणों से किया जा सकता है, जबकि अन्य विधियां इन दो में से केवल एक दृष्टिकोण से जुड़ी हैं । इसके अलावा, ब्याज दर एक्सपोज़र के विभिन्न रूपों को व्यक्त करने की इन विधियों की क्षमता अलग-अलग है । सरलतम विधियों का उद्देश्य मुख्यतः परिपक्वता और पुनर्मूल्यन विसंगतियों से उत्पन्न होनेवाले जोखिमों को व्यक्त करना है, जबकि अधिक परिष्कृत विधियां आसानी से जोखिम एक्सपोज़र के पूरे दायरे को व्यक्त कर सकती हैं ।

2. जैसा कि इस चर्चा से स्पष्ट है कि ब्याज दर जोखिम एक्सपोज़र की शुद्ध और तर्कसंगत माप की दृष्टि से नीचे वर्णित विभिन्न माप विधियों के अपने गुण और दोष हैं । आदर्श स्थिति में किसी बैंक की ब्याज दर जोखिम माप प्रणाली में प्रत्येक ब्याज दर संवेदी स्थिति की खास विशेषता को ध्यान में रखा जाएगा तथा ब्याज दरों की संभावित घट-बढ़ के पूरे दायरे को विस्तार से व्यक्त किया जाएगा । तथापि, व्यवहार में माप प्रणालियों में सरलीकृत रूप अपनाये जाते हैं जो आदर्श स्थिति से अलग होते हैं । उदाहरण के लिए, कुछ विधियों में पोजीशनों को व्यापक संवर्गों में एकत्रित रूप में दर्शाया जा सकता है न कि अलग-अलग मॉडल के रूप में । इससे उनकी ब्याज दर संवेदनशीलता के आकलन में कुछ हद तक माप संबंधी त्रुटि आ जाती है । इसी प्रकार प्रत्येक विधि में ब्याज दर घट-बढ़ का जो स्वरूप शामिल किया जा सकता है वह सीमित हो सकता है, कुछ मामलों में प्रतिफल वक्र (यील्ड कर्व) के केवल समांतर अंतर को माना जा सकता है या ब्याज दरों के बीच पूर्ण संबंध से कमतर स्थिति को हिसाब में नहीं लिया जा

सकता है । अंत में, विभिन्न पोजीशनों और लिखतों में अंतर्निहित विकल्प-सुविधा को व्यक्त करने की क्षमता विभिन्न विधियों में अलग-अलग हो सकती है । निम्नलिखित खंडों में प्रस्तुत चर्चा में सरलीकरण के उन क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है, जो प्रमुख ब्याज दर जोखिम माप तकनीकों में से प्रत्येक की प्रमुख विशेषता है ।

क. पुनर्मूल्यन अनुसूची

3. बैंक के ब्याज दर जोखिम एक्सपोज़र मापने की सबसे सरल तकनीकें परिपक्वता/पुनर्मूल्यन अनुसूची के साथ आरंभ होती हैं, जो ब्याज-संवेदी आस्तियों, देयताओं और तुलनपत्रेतर स्थितियों को उनकी परिपक्वता (यदि नियत-दर हो) या अगले पुनर्मूल्यन तक की शेष अवधि (यदि अस्थायी दर हो) के अनुसार कुछ पूर्वनिर्धारित टाइम बैंडों में वितरित करती है । ऐसी आस्तियां और देयताएं जिनमें कोई निश्चित पुनर्मूल्यन अंतराल न हो (उदाहरण के लिए साइट डिपोज़िट या बचत खाते) अथवा जिनकी वास्तविक परिपक्वता अवधि संविदागत परिपक्वता से अलग हो (उदाहरण के लिए, जल्दी चुकौती के विकल्प वाले बंधक) बैंक के निर्णय और पिछले अनुभव के आधार पर पुनर्मूल्यन बैंड में वर्गीकृत की जाती है ।

1. अंतराल विश्लेषण

4. बदलती ब्याज दरों के प्रति आय और आर्थिक मूल्य दोनों की ब्याज दर जोखिम संवेदनशीलता के सरल संकेतक प्राप्त करने के लिए सरल परिपक्वता/पुनर्मूल्यन अनुसूचियों का प्रयोग किया जा सकता है । जब इस विधि का प्रयोग वर्तमान आय के ब्याज दर जोखिम के आकलन के लिए किया जाता है, तब उसे अंतराल विश्लेषण कहा जाता है । किसी बैंक के ब्याज दर जोखिम एक्सपोज़र की माप करने के लिए विकसित की गयी विधि में अंतराल विश्लेषण पहली विधियों में से एक है और आज भी बैंकों द्वारा उसका व्यापक प्रयोग हो रहा है । आय एक्सपोज़र का मूल्यांकन करने के लिए प्रत्येक टाइम बैंड में ब्याज दर संवेदी देयताओं को तदनुरूप ब्याज दर संवेदी आस्तियों से घटाया जाता है जिससे उस टाइम बैंड का पुनर्मूल्यन ‘अंतराल’ प्राप्त होता है । इस अंतराल को प्रतिफल की तुलना में ब्याज दर में माने गये परिवर्तन से, जो ब्याज दर की ऐसी घट-बढ़ से निवल ब्याज में होनेवाले परिवर्तन के लगभग बराबर होगा, गुणा किया जा सकता है । इस विश्लेषण में ब्याज दर घट-बढ़ का जो परिमाण प्रयुक्त होता है वह विविध घटकों पर निर्भर करता है जिनमें ऐतिहासिक अनुभव, संभावित भावी ब्याज दर घट-बढ़ का अनुरूपण और बैंक प्रबंधन का निर्णय शामिल हैं ।

5. किसी टाइम -बैंड में नकारात्मक या देयता-संवेदी अंतराल तब होता है जब देयताएँ आस्तियों से अधिक हो (तुलनपत्रेतर स्थितियों सहित)। इसका अर्थ यह है कि बाज़ार ब्याज दरों में वृद्धि से निवल ब्याज आय में गिरावट आ सकती है। इसके विपरीत एक सकारात्मक या आस्ति-संवेदी अंतराल का अर्थ यह है कि ब्याज दरों के स्तर में गिरावट के कारण बैंक की निवल ब्याज आय में गिरावट आ सकती है।

6. प्रत्येक टाइम बैंड में आस्तियों और देयताओं पर औसत कूपन से संबंधित सूचना द्वारा इन सरल अंतराल गणनाओं का संवर्धन किया जा सकता है। इस सूचना की सहायता से अंतराल गणनाओं के परिणाम को संदर्भ दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए औसत कूपन दर संबंधी सूचना का प्रयोग किसी टाइम बैंड में स्थितियों के परिपक्व होने पर पुनर्मूल्यन के कारण निवल

ब्याज आय के स्तर के अनुमान की गणना में किया जा सकता है, जो अंतराल विश्लेषण द्वारा व्यक्त आय में परिवर्तन का मूल्यांकन करने के लिए एक "पैमाना" प्रदान करेगा।

7. यद्यपि, ब्याज दर जोखिम एक्सपोज़र का मूल्यांकन करने के लिए अंतराल विश्लेषण विधि का सामान्यतया अधिक प्रयोग किया जाता है, तथापि इसके कई दोष हैं। पहला, अंतराल विश्लेषण किसी एक टाइम बैंड के भीतर विभिन्न स्थितियों की विशेषताओं के बीच के फर्क को ध्यान में नहीं रखता। विशेष रूप से किसी एक टाइम बैंड के भीतर सभी स्थितियों के संबंध में यह मान लिया जाता है कि वे एक साथ परिपक्व होंगी या उनका एक साथ पुनर्मूल्यन होगा। यह एक ऐसा सरलीकरण है जिनका अनुमान की शुद्धता पर बृहत्तर प्रभाव पड़ेगा, यदि टाइम बैंड के भीतर एग्रीगेशन का स्तर बढ़ता जाता है। इसके अलावा, अंतराल विश्लेषण बाज़ार ब्याज दर के स्तर में परिवर्तन होने (आधार जोखिम) से ब्याज दरों के बीच स्प्रेड में होने वाले अंतर की उपेक्षा करता है। इसके अलावा, ब्याज दर वातावरण में परिवर्तन के फलस्वरूप अदायगी के समय में होने वाले परिवर्तन को भी इसमें ध्यान में नहीं रखा जाता है। इस प्रकार, विकल्प से जुड़ी स्थितियों से उत्पन्न होने वाली आय संवेदनशीलता के भेद को इसमें शामिल नहीं किया जता है। इन कारणों से अंतराल विश्लेषण ब्याज दरों के स्वरूप में चयनित परिवर्तन से निवल ब्याज आय में होने वाले वास्तविक परिवर्तन का एक मोटा अनुमान ही प्रस्तुत करता है। अंत में, अधिकांश अंतराल विश्लेषण ब्याजेतर आय और व्यय की परिवर्तनशीलता को व्यक्त नहीं कर पाता है, जो चालू आय के जोखिम का एक संभावित महत्वपूर्ण स्रोत है।

II. अवधि (ड्यूरेशन)

8. प्रत्येक टाइम बैंड को संवेदनशीलता भारांकन देते हुए परिपक्वता /पुनर्मूल्यन अनुसूची का प्रयोग बैंक के आर्थिक मूल्य पर बदलती ब्याज दरों के प्रभाव के मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है। आम तौर पर ऐसे भार प्रत्येक टाइम बैंक के भीतर आस्तियों और देयताओं की अवधि के अनुमान पर आधारित होते है। अवधि (ड्यूरेशन) किसी स्थिति के आर्थिक मूल्य में होने वाले उस प्रतिशत परिवर्तन की माप है, जो ब्याज दरों के स्तर में छोटे परिवर्तन के कारण उत्पन्न होता है [57]। यह लिखत की संविदागत परिपक्वता के पहले होने वाले नकदी प्रवाह के समय और परिमाण को प्रतिबिम्बित करता है। आम तौर पर लिखत की परिपक्वता अवधि या अगली पुनर्मूल्यन की तारीख जितनी देर से हो तथा परिपक्वता के पहले होने वाला भुगतान जितना कम हो (उदाहरण के लिए कूपन भुगतान), उतना ही ड्यूरेशन (निरपेक्ष मूल्य के रूप में) उच्चतर होगा। उच्चतर ड्यूरेशन का अर्थ यह है कि ब्याज दरों के स्तर में किसी प्रदत्त परिवर्तन का आर्थिक मूल्य पर उच्चतर प्रभाव पड़ेगा।

[57] œ¸¢£¨¸¢÷¸Ä÷¸ ”Ã¡¸»£½©¸›¸ ‡ˆÅ `ƒ¥¸¸¢¬’¢¬¸’ú' í¾ ¢□¸¬¸½ Ÿ¸¸›¸ˆÅ ”Ã¡¸»£½©¸›¸ ˆÅ¸½ 1+r ¬¸½ ž¸¸Š¸ ™½ˆÅ£ œÏ¸œ÷¸ ¢ˆÅ¡¸¸ □¸¸÷¸¸ í¾, ¢□¸¬¸Ÿ¸½¿ r ¤¸¸{¸¸£ ¤¡¸¸□¸ ™£ ˆÅ¸ ¬÷¸£ í¾ — ,÷¸À ¡¸í 1+÷¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸©¸÷¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸ ˆ½Å ¢¥¸‡ ¢¥¸¢‰¸÷¸ ˆ½Å ,¸¢˜¸ÄˆÅ Ÿ¸»¥¡¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸©¸÷¸ œ¸¢£¨¸°¸›¸ ™©¸¸Ä÷¸¸ í¾ — ¬¸£¥¸ ”Ã¡¸»£½©¸›¸ ˆÅú ÷¸£í íú ¡¸í Ÿ¸»¥¡¸ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸©¸÷¸ œ¸¢£¨¸°¸›¸ ,¸¾£ ¤¡¸¸□¸ ™£¸½¿ Ÿ¸½¿ œÏ¢÷¸©¸÷¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸ ˆ½Å ¤¸ú□¸ ¬¸úš¸¸ ¬¸¿¤¸¿š¸ Ÿ¸¸›¸÷¸¸ í¾ — ”Ã¡¸»£½©¸›¸ ˆ½Å ™»¬¸£½ œ¸€¸Ÿ¸Ä Ÿ¸½¿ ƒ¬¸ Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸ Ÿ¸½¿ ÷¸˜¸¸ž¸ºŠ¸÷¸¸›¸ ˆÅ¸ ¬¸Ÿ¸¡¸ ¢›¸¡¸÷¸ í¸½›¸½ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ Ÿ¸¸›¡¸÷¸¸ Ÿ¸½¿ □ú¥¸ ™ú □¸¸÷¸ú í¾ — œÏž¸¸¨¸ú ”Ã¡¸»£½©¸›¸ œÏ¢÷¸œ¸€¥¸ Ÿ¸½¿ ‡ˆÅ ,¸š¸¸£ ,¿ˆÅ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸ ¬¸½ ¬¸¿¤¸¿¢š¸÷¸ ¢¥¸‰¸÷¸ ˆ½Å Ÿ¸»¥¡¸ Ÿ¸½¿ í¸½›¸½¨¸¸¥¸¸ œÏ¢÷¸©¸÷¸ œ¸¢£¨¸÷¸Ä›¸ í¾ —

9. परिपक्वता /पुनर्मूल्यन अनुसूची के साथ ड्यूरेशन आधारित भार का प्रयोग बाजार ब्याज दरों के स्तर में किसी खास परिवर्तन से बैंक के आर्थिक मूल्य में होने वाले परिवर्तन का एक मोटा अनुमान प्राप्त करके किया जा सकता है। विशेष रूप से प्रत्येक टाइम बैंड में आनेवाले पोजीशनों के लिए 'औसत' ड्यूरेशन मान लिया जाता है। इसके बाद, औसत ड्यूरेशनों को ब्याज दरों के कल्पित परिवर्तन से गुणा किया जाता है, जिससे प्रत्येक टाइम बैंड का भार प्राप्त किया जाता है। कुछ मामलों में एक टाइम बैंड के भीतर अलग पोजीशनों के लिए अलग भारों का प्रयोग किया जाता है, जो कूपन दरों और परिपक्वता अवधियों के व्यापक अंतर को दर्शाता है (उदाहरण के लिए आस्तियों के लिए एक भार तथा देयताओं के लिए दूसरा भार)। इसके अलावा, विभिन्न टाइम बैंडों के लिए कभी-कभी अलग-अलग ब्याज दर परिवर्तन प्रयुक्त किये जाते हैं, जिसका आम तौर पर यह प्रयोजन रहता है कि यील्ड कर्व के अनुरूप ब्याज दर की अस्थिरता के अंतर को दर्शाया जाए। विभिन्न टाइम बैंडों के भारित अंतरालों को जोड़कर बैंक के आर्थिक मूल्य में परिवर्तन का अनुमान प्राप्त किया जाता है, जो ब्याज दरों में कल्पित परिवर्तन से उत्पन्न होगा।

10. एक वैकल्पिक विधि के रूप में कोई संस्था किसी टाइम बैंड के सभी पोजीशनों पर एक अनुमानित औसत ड्यूरेशन लागू करने के बजाय प्रत्येक आस्ति, देयता और तुलनपत्रेतर स्थिति के सही-सही ड्यूरेशन की गणना कर बदलती बाज़ार दरों के प्रभाव का अनुमान कर सकती है और इन अधिक सही मापों के आधार पर बैंक की निवल स्थिति प्राप्त कर सकती है। इससे पोजीशनों/नकदी प्रवाहों को जोड़ते समय हो सकनेवाली त्रुटियों को दूर किया जा सकता है । इसका एक दूसरा रूप हो सकता है जिसमें बदलती बाजार दरों के विनिर्दिष्ट परिदृश्य के परिणामस्वरूप काल्पनिक लिखतों के बाजार मूल्य में वास्तविक प्रतिशत परिवर्तन के आधार पर प्रत्येक टाइम बैंड के लिए जोखिम भार दिया जा सकता है । इस विधि को कभी-कभी प्रभावी ड्यूरेशन कहा जाता है । इसमें बाजार ब्याज दरों में महत्वपूर्ण परिवर्तन से होनेवाली मूल्य घट-बढ़ की गैर-समानुपातिकता भी बेहतर ढंग से व्यक्त होती है और इस प्रकार ड्यूरेशन विधि की एक महत्वपूर्ण कमी से बचा जा सकेगा

11. मानक ड्यूरेशन विधि के आधार पर प्राप्त अनुमान अपेक्षाकृत कम जटिल बैंकों के लिए आर्थिक मूल्य के परिवर्तनों के प्रति बैंक के एक्सपोज़र के संबंध में स्वीकार्य अनुमान दे सकते हैं । तथापि, ऐसे अनुमान आम तौर पर केवल एक प्रकार के ब्याज दर एक्सपोज़र-पुनर्मूल्यन जोखिम पर केंद्रित रहते हैं । इसके फलस्वरूप, वे ऐसे ब्याज दर जोखिम को नहीं दर्शाते, जो, उदाहरण के लिए, एक टाइम बैंड के भीतर ब्याज दरों के बीच के संबंध में परिवर्तन (आधार जोखिम) के कारण उत्पन्न होते हैं । इसके अलावा, चूंकि ऐसी विधियों में प्रत्येक टाइम बैंड के लिए आम तौर पर औसत ड्यूरेशन का उपयोग किया जाता है, अतः ये अनुपात कूपन दरों और भुगतान के समय के अंतर के कारण पोजीशनों की वास्तविक संवेदनशीलता के अंतरों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं । अंत में, मानक ड्यूरेशन की गणना में जो सरलीकृत पूर्वानुमान निहित है, उसका अर्थ यह है कि ऑप्शन के जोखिम सही-सही व्यक्त नहीं भी हो सकते हैं ।

आ. अनुरूपण (सिमुलेशन) विधियां

12. अनेक बैंक (खास कर जटिल वित्तीय लिखतों का प्रयोग करनेवाले अथवा अन्य प्रकार से जटिल जोखिम प्रोफाइल वाले बैंक) सरल परिपक्वता/पुनर्मूल्यन अनुसूचियों पर आधारित

प्रणालियों के बजाय अधिक उन्नत ब्याज दर जोखिम माप प्रणालियों का प्रयोग करते हैं । इन अनुरूपण तकनीकों में ब्याज दरों की भावी दिशा और नकदी प्रवाह पर उनके प्रभाव का अनुरूपण करते हुए ब्याज दरों में परिवर्तन का अर्जन और आर्थिक मूल्य पर पड़नेवाले संभावित प्रभाव का विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है ।

13. कुछ अर्थों में अनुरूपण तकनीकों को परिपक्वता/पुनर्मूल्यन अनुसूचियों पर आधारित सरल विश्लेषण का विस्तृत और परिष्कृत रूप माना जा सकता है, परंतु अनुरूपण विधियों में तुलन पत्र और तुलनपत्रेतर स्थितियों की विभिन्न श्रेणियों का अधिक विस्तृत विश्लेषण होता है, ताकि प्रत्येक प्रकार की स्थिति से उत्पन्न ब्याज और मूल धन भुगतान और ब्याजेतर आय और व्यय से संबंधित विशिष्ट पूर्वधारणाओं को शामिल किया जा सके । इसके अलावा अनुरूपण तकनीकों में ब्याज दर वातावरण के अधिक विविध और परिष्कृत परिवर्तनों को शामिल किया जा सकता है - जिनमें प्रतिफल वक्र की ढलान और आकार में परिवर्तन से लेकर मोंटे कार्लो अनुरूपणों से प्राप्त ब्याज दर परिदृश्य शामिल हैं ।

I. स्थैतिक अनुरूपण

14. स्थैतिक अनुरूपणों में बैंकों के केवल वर्तमान तुलनपत्र व तुलन पत्रेतर स्थितियों से उत्पन्न नकदी प्रवाहों का मूल्यांकन किया जाता है । अर्जन के जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए एक या एक से अधिक कल्पित ब्याज दर परिदृश्यों के आधार पर एक विनिर्दिष्ट अवधि के दौरान नकदी प्रवाह और उनसे प्राप्त आय प्रवाह का अनुमान करते हुए अनुरूपण संचालन किया जाता है । सामान्यतया, यद्यपि हमेशा नहीं, इन अनुरूपणों में प्रतिफल वक्र में अपेक्षाकृत सीधा परिवर्तन या विभिन्न ब्याज दरों के बीच स्प्रेड का अंतर होता है । जब बैंक की धारिता की पूरी प्रत्याशित अवधि के संबंध में नकदी प्रवाह का अनुरूपण किया जाता है तथा उन्हें उनके वर्तमान मूल्य तक डिस्काउंट किया जाता है, तब बैंक के आर्थिक मूल्य में परिवर्तन का अनुमान लगाया जा सकता है [58] ।

II गत्यात्मक अनुरूपण

15. गत्यात्मक अनुरूपण विधि में ब्याज दरों की भावी दिशा तथा बैंक की कारोबारी गतिविधि में उस अवधि के दौरान होनेवाले प्रत्याशित परिवर्तन के बारे में अधिक विस्तृत पूर्व धारणाओं के आधार पर अनुरूपण किया जाता है । उदाहरण के लिए अनुरूपण में प्रशासित ब्याज दर (उदाहरण के लिए बचत जमाराशि पर) बदलने की बैंक की रणनीति, बैंकों के ग्राहकों के आचरण (उदाहरण के लिए दर्शनी और बचत जमाराशियों से आहरण) तथा/अथवा बैंक के समक्ष उपस्थित होनेवाली भावी कारोबारी स्थिति (नये ऋण अथवा अन्य लेनदेन) के संबंध में पूर्व धारणाएं शामिल हो सकती हैं । ऐसे अनुरूपणों में भावी गतिविधियों और पुनर्निवेश रण नीतियों के संबंध में इन पूर्व धारणाओं का प्रयोग कर प्रत्याशित नकदी प्रवाह तथा गत्यात्मक अर्जन और आर्थिक मूल्य परिणामों के संबंध में अनुमान लगाया जाता है । इन अधिक परिष्कृत तकनीकों में भुगतान सरणी और ब्याज दरों के बीच अधिक गतिशील क्रिया-प्रतिक्रिया होती है और ये अन्तर्निहित या स्पष्ट ऑप्शनों के प्रभाव को बेहतर व्यक्त करते हैं ।

---

[58] ¢œ¸Ž¥¸½ ‰¸¸¿” Ÿ¸½¿ ¨¸¢µ¸Ä÷¸ ”Ã¡¸»£½©¸›¸ ¢¨¸©¥¸½«¸µ¸ ‡ˆÅ ¬¸£¥¸ ¬¸’¾¢’ˆÅ œ¸€¸ÁŸ¸Ä Ÿ¸½¿ ™½‰¸¸ □¸¸ ¬¸ˆÅ÷¸¸ í¾ —

16. अन्य विधियों की तरह ही अनुरूपण आधारित ब्याज दर जोखिम माप तकनीकों की उपयोगिता अंतर्निहित अनुमानों की वैधता और मूल कार्यविधि की शुद्धता पर निर्भर करती है । परिष्कृत अनुरूपणों के परिणाम का मूल्यांकन मुख्यतया भावी ब्याज दर और बैंक तथा उसके ग्राहकों के आचरण के संबंध में अनुरूपण की पूर्वधारणाओं की वैधता के आधार पर करना चाहिए । इस संबंध में प्रमुख चिंता यह है कि ऐसे अनुरूपण 'ब्लैक बॉक्स' न बन जाएं जिनसे अनुमानों की शुद्धता के संबंध में गलत आत्मविश्वास न हो जाए ।

ग. अन्य मुद्दे

17. ब्याज दर जोखिम की माप करते समय एक बड़ी कठिनाई यह है कि उन स्थितियों के संबंध में क्या किया जाए जब संविदागत परिपक्वता अवधि से व्यावहारिक परिपक्वता अवधि अलग हो (अथवा जहां कोई स्पष्ट संविदागत परिपक्वता न हो) । तुलन पत्र के आस्ति पक्ष में ऐसे पोजीशनों में बंधक और बंधक-संबद्ध प्रतिभूतियां हो सकती हैं, जिनका समयपूर्व भुगतान हो सकता है । कुछ देशों में उधारकर्ताओं के पास यह विवेकाधिकार होता है कि वे अपने बंधक का थोड़े जुर्माने के साथ या बिना किसी जुर्माने के समयपूर्व भुगतान कर सकते हैं । इससे इन लिखतों से जुड़े नकदी प्रवाह के समय के संबंध में अनिश्चितता उत्पन्न होती है । हालांकि जनसंख्या संबंधी घटकों (यथा मृत्यु, तलाक या नौकरी में स्थानांतरण) के कारण तथा समष्टि आर्थिक परिस्थितियों के कारण समयपूर्व भुगतान में कुछ अनिश्चितता हमेशा रहती है, तथापि इस संबंध में अधिकांश अनिश्चितता ब्याज दरों में घट-बढ़ के प्रति उधारकर्ता की प्रतिक्रिया के कारण उत्पन्न होती है । आम तौर पर ब्याज दरों में गिरावट होने पर समय पूर्व भुगतान बढ़ते हैं क्योंकि उधारकर्ता अपने ऋणों का निम्नतर प्रतिफल पर पुनर्वित्त करते हैं । इसके विपरीत जब अचानक ब्याज दरें बढ़ती हैं तब समय पूर्व भुगतान की दरें घट जाती हैं और बैंक के पास चालू बाजार दरों से कम भुगतान करनेवाले बंधकों की संख्या आशा से अधिक हो जाती है ।

18. देयता पक्ष में ऐसे पोजीशनों में तथाकथित गैर-परिपक्वता जमाराशियां, जैसे, दर्शनी जमाराशियां और बचत जमाराशियां आती हैं, जिन्हें जमाकर्ता अपने विवेक से अक्सर बिना किसी दंड के, आहरण कर सकता है ।ऐसी जमाराशियों पर कार्रवाई इस कारण भी जटिल हो जाती है, क्योंकि इन पर जमाकर्ता जो दरें पाते हैं वे बाज़ार ब्याज दरों के सामान्य स्तर में आए परिवर्तनों के साथ-साथ घटती-बढ़ती नहीं हैं । वस्तुतः बैंक धारित जमाराशियों की मात्रा को नियंत्रित करने के विशिष्ट उद्देश्य से खातों की दरों को नियंत्रित कर सकते हैं और करते हैं ।

19. ब्याज दर परिवर्तनों के प्रति चालू अर्जन और आर्थिक मूल्य, दोनों के एक्सपोज़र की माप करते समय अंतर्निहित ऑप्शन वाले पोजीशनों के संबंध में कार्रवाई एक विशेष चिंता का विषय है । इसके अलावा यह मुद्दा ब्याज दर माप की विधियों के पूरे परिदृश्य में - सरल अंतराल विश्लेषण से सर्वाधिक परिष्कृत अनुरूपण तकनीकों तक - उभरता है । परिपक्वता/पुनर्मूल्यन अनुसूची विधि में बैंक आम तौर पर इन पोजीशनों की अदायगी और आहरण के संभावित समय के संबंध में अनुमान लगाते हैं और तदनुसार टाइम बैंडों में शेष राशियों को वितरित करते हैं । उदाहरण के लिए यह माना जा सकता है कि 30 वर्षीय बंधकों के एक समूह के एक निश्चित प्रतिशत का समयपूर्व भुगतान बंधक के चालू रहने के दौरान निश्चित वर्षों में हो जाएगा । इसके फलस्वरूप बंधक शेष का एक बहुत बड़ा हिस्सा जिसे 30 वर्षीय लिखतों वाले टाइम बैंड में डाला

जाना था अपेक्षाकृत अल्पावधिक टाइम बैंड में वितरित किया जाएगा । अनुरूपण विधि में अधिक परिष्कृत पूर्वधारणाओं का प्रयोग किया जा सकता है । उदाहरण के लिए विभिन्न ब्याज दर वातावरणों में नकदी प्रवाह की मात्रा और समय के संबंध में बेहतर आकलन के लिए ऑप्शन-समायोजित मूल्य निर्धारण मॉडलों का प्रयोग किया जा सकता है । इसके अलावा, अनुरूपण में गैर-परिपक्वता जमाराशियों पर प्रशासित ब्याज दर की संभावित भावी कार्रवाई के संबंध में बैंक की पूर्व धारणाओं को शामिल किया जा सकता है ।

20. ब्याज दर जोखिम माप के अन्य घटकों की तरह ब्याज दर एक्सपोज़र के अनुमान की गुणवत्ता अनिश्चित परिपक्वता वाले पोजीशन में भावी नकदी प्रवाह संबंधी पूर्व धारणाओं की गुणवत्ता पर निर्भर करती है । आम तौर पर बैंक इन पूर्व धारणाओं के संबंध में मार्गदर्शन पाने के लिए ऐसे पोजीशनों के अतीत में प्रदर्शन को ध्यान में रखते हैं । उदाहरण के लिए, अतीत में ब्याज दर घट-बढ़ के प्रति बैंक की धारिता के प्रदर्शन का विश्लेषण करने के लिए अर्थमितिक अथवा सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सकता है । इस प्रकार का विश्लेषण विशेष रूप से गैर-परिपक्वता वाली जमाराशियों के संभावित प्रदर्शन का आकलन करने में उपयोगी हो सकता है । गैर-परिपक्वता जमाराशियां बैंक विशेष के घटकों से प्रभावित हो सकती हैं, उदाहरण के लिए बैंक के ग्राहकों की प्रवृति और स्थानीय या क्षेत्रीय बाजार स्थितियां । इसी प्रकार बैंक बंधक आधारित नकदी प्रवाह का अनुमान प्राप्त करने के लिए सांख्यिकीय समय पूर्व भुगतान मॉडल का प्रयोग कर सकते हैं, जिन्हें बैंक आंतरिक रूप से विकसित कर सकता है या बाहरी डेवलपर से खरीद सकता है । अंत में, बैंक के भीतर प्रबंधकीय और कारोबारी इकाइयों से प्राप्त इनपुट का महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है, क्योंकि ये क्षेत्र कारोबारी या पुनर्मूल्यन कार्य नीतियों में उन योजनाबद्ध परिवर्तनों के संबंध में सेचत हो सकते हैं, जो अनिश्चित परिपक्वता वाले पोजीशनों के भावी नकदी प्रवाह प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं ।

अनुबंध - 14
(देखें अनुबंध 10 का पैरा 3.2.2)

ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण के संबंध में
बीसीबीएस के जुलाई 2004 के पर्चे का अनुबंध 2

पर्यवेक्षीय प्राधिकारियों द्वारा ब्याज दर जोखिम की निगरानी

1. इस अनुबंध में ब्याज दर जोखिम के प्रति अलग-अलग बैंकों के एक्सपोज़र के संबंध में सूचना प्राप्त करने और उनका विश्लेषण करने में पर्यवेक्षीय प्राधिकारी जिन घटकों पर विचार कर सकते हैं उनमें से कुछ घटकों का संक्षिप्त विहगावलोकन प्रस्तुत किया गया है । जैसा कि खंड VII में चर्चा की गयी है, पर्यवेक्षीय प्राधिकारियों को सामयिक रूप से ब्याज दर जोखिम के प्रति बैंकों के एक्सपोज़र का मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त सूचना प्राप्त करनी चाहिए । इस प्रकार की सूचना प्रत्यक्ष परीक्षणों के माध्यम से, नियमित आधार पर बैंकों द्वारा भेजी जानेवाली रिपोर्टों के माध्यम से तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त की जा सकती है ।

2. यद्यपि भिन्न-भिन्न पर्यवेक्षीय प्राधिकारियों द्वारा मांगी गयी सूचना अलग-अलग होगी, तथापि कुछ लोग एक यह विधि अपना सकते हैं जिसमें एक रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क होगा जो शेष बची परिपक्वता अवधि या अगले पुनर्मूल्यन के लिए शेष बची अवधि के आधार पर बैंक के पोजीशनों के संबंध में सूचना एकत्रित करेगा । इस प्रकार की विधि में बैंक अपनी ब्याज संबंधी आस्तियों, देयताओं और तुलनपत्रेतर स्थितियों को पुनर्मूल्यन टाइम बैंडों की श्रृंखला या परिपक्वता संवर्गों में वर्गीकृत करेगा । नीचे दो खंडों में यह चर्चा की गयी है कि टाइम बैंडों की संख्या विनिर्दिष्ट करते हुए तथा रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क में पोजीशनों को समूहबद्ध करते समय पर्यवेक्षक को किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए । इस अनुबंध के अंतिम खंड में उन सामान्य दृष्टिकोणों की चर्चा की गयी है, जिन्हें इस प्रकार के रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क के माध्यम से प्राप्त सूचना का विश्लेषण करते समय पर्यवेक्षीय प्राधिकारी अपना सकते हैं ।

क. टाइम बैंड

3. यदि ऐसे रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क का प्रयोग किया जाता है जिसमें अगले पुनर्मूल्यन तक बचे समय के आधार पर सूचना एकत्रित की जाती है, तो टाइम बैंडों की संख्या और विनिर्दिष्ट संवर्ग इतने पर्याप्त होने चाहिए ताकि पर्यवेक्षकों को उल्लेखनीय पुनर्मूल्यन विसंगतियों की पहचान करने के लिए एक तर्क संगत आधार मिल सके । तथापि विभिन्न देशों में संख्या और दायरा दोनों दृष्टियों से टाइम बैंड अलग-अलग हो सकते हैं । यह अलग-अलग बाजारों में ऋण और निवेश प्रथाओं और बैंकों के अनुभव पर निर्भर करेगा ।

4. पर्यवेक्षीय विश्लेषण की उपयोगिता मुख्यतया इस बात पर निर्भर करती है कि पोजीशनों की परिपक्वता और नकदी प्रवाह को प्रणाली में कितनी शुद्धता के साथ रिकार्ड किया गया है । ब्याज दर संवेदनशीलता का विश्लेषण करते समय केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि कोई लिखत कब परिपक्व होता है । इसके बजाय महत्वपूर्ण घटक यह है कि लिखत का पुनर्मूल्यन कब होता है । अतः इस खंड में परिपक्वता के बजाय पुनर्मूल्यन पर जोर दिया गया है । जिन नकदी प्रवाहों के पुनर्मूल्यन के संबंध में कोई अस्पष्टता नहीं है, वहां सही विधि यह होगी कि पुनर्मूल्यन की सही तारीख का प्रयोग किया जाए । टाइम बैंडों या टाइम ज़ोन में पोजीशनों /नकदी प्रवाहों का समूहन करने से सूचना की क्षति हो सकती है तथा शुद्धता का स्तर न्यूनतर हो सकता है । इस कारण किसी पुनर्मूल्यन सोपान फ्रेमवर्क में टाइम बैंडों की संख्या में हमेशा शुद्धता के आवश्यक स्तर तथा और अधिक शुद्धता की खोज की लागत के संबंध में निर्णय झलकता है। पर्यवेक्षीय प्राधिकारी अपनी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने वाले रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क को विकसित करते समय एक आरंभिक बिन्दु के रूप में बाजार जोखिम संशोधन की मानकीकृत विधि में पुनर्मूल्यन सोपान का प्रयोग कर सकते हैं। उन बैंकों के लिए, जिनकी कारोबारी गतिविधियों की प्रकृति के कारण अलग रिपोर्टिंग फार्म आवश्यक है, पर्यवेक्षक सामान्य रूप से या विनिर्दिष्ट रूप से सूचना के परिवर्तित /संशोधित ब्यौरे मांग सकते हैं।

ख. मदें

5. टाइम बैंडों की तरह ही आस्तियों और देयताओं के ब्यौरे अलग-अलग पर्यवेक्षकों में अलग-अलग हो सकते हैं। किसी रिपोर्टिंग प्रणाली में सभी दर-संवेदी आस्तियों, देयताओं तथा तुलनपत्रेतर स्थितियों के संबंध में सूचना होनी चाहिए तथा जिन लिखतों की नकदी प्रवाह संबंधी विशेषताएँ महत्वपूर्ण रूप से अलग हों उनके संबंध में लिखतों के विनिर्दिष्ट प्रकार के अनुसार शेष राशियों का निर्धारण किया जाना चाहिए। उन मदों की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिनका व्यावहारिक पुनर्मूल्यन संविदाकृत परिपक्वता अवधि से अलग है, जैसे बचत जमाराशियाँ तथा, कुछ देशों में, बंधक आधारित लिखत । इन मुद्दों पर और जानकारी अनुबंध 1 में दी गयी है। यदि इन पोजीशनों की मात्रा काफी है, तो इनकी सूचना अलग से दी जानी चाहिए ताकि बैंक की तुलनपत्र संरचना में अंतर्निहित ऑप्शन जोखिम का मूल्यांकन आसान हो सके।

6. यदि बैंक ट्रेडिंग गतिविधि में लगा हो तो ब्याज दर जोखिम का विश्लेषण अधिक कठिन हो सकता है। एक सामान्य नियम यह है कि किसी भी माप प्रणाली में बैंक की संपूर्ण गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले ब्याज दर एक्सपोज़रों को शामिल किया जाना चाहिए जिसमें ट्रेडिंग और गैर-ट्रेडिंग दोनों स्रोत शामिल हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि विभिन्न गतिविधियों के लिए

विभिन्न माप प्रणालियाँ और जोखिम प्रबंधन विधियाँ नहीं अपनायी जाएँ; तथापि विभिन्न उत्पादों और कारोबारी क्षेत्रों के ब्याज दर जोखिम के संबंध में प्रबंधतंत्र को एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। जो बैंक अपने ब्याज दर जोखिम एक्सपोज़रों का प्रबंधन समन्वित आधार पर करते हैं, उन्हें पर्यवेक्षक समग्र रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क के अंतर्गत ट्रेडिंग और गैर-ट्रेडिंग पोजीशनों को एकत्रित करने की अनुमति दे सकते हैं। तथापि इसे ध्यान में रखना आवश्यक है कि अनेक देशों में ट्रेडिंग बही और पारस्परिक बैंकिंग बही पर भिन्न लेखांकन नियम लागू हो सकते हैं। इन लेखांकन नियमों के अंतर्गत ट्रेडिंग बही में हुई हानि बैंकिंग बही में हुए लाभ से प्रतिसंतुलित नहीं भी हो सकती है, यदि वे लाभ अभी प्राप्त नहीं हुए हों। इसके अलावा, बैंकिंग बही के विपरीत ट्रेडिंग संविभाग के गठन में साप्ताहिक आधार पर, यहाँ तक कि दैनिक आधार पर महत्वपूर्ण बदलाव आता है, क्योंकि उसका प्रबंधन अलग किया जाता है तथा बैंकिंग बही की अपेक्षा अलग (अल्पावधिक) जोखिम दृष्टिकोण के अनुसार किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि यदि किसी दिन हेज मौजूद है तो वह कुछ दिनों बाद गायब हो सकता है। अतः पर्यवेक्षकों को उन बैंकों की जोखिम प्रबंध प्रथाओं और सूचना प्रणालियों के समीक्षा करनी चाहिए जो महत्वपूर्ण ट्रेडिंग गतिविधियां करते हैं तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि ट्रेडिंग और गैर-ट्रेडिंग दोनों गतिविधियों में ब्याज दर जोखिम का समुचित प्रबंधन और नियंत्रण हो रहा है, उनसे आवश्यक सूचना प्राप्त की जानी चाहिए।

ग. पर्यवेक्षीय विश्लेषण

7. उपर्युक्त आधार पर निर्मित रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क से पर्यवेक्षकों को ब्याज दर जोखिम का विश्लेषण करने के लिए एक लचीला साधन प्राप्त हो सकता है। पर्यवेक्षक इस बुनियादी सूचना का उपयोग बैंक के एक्सपोज़र और जोखिम प्रोफाइल के अपने मूल्यांकन में कर सकते हैं।

8. ऐसे मूल्यांकन या तो सांख्यिकीय संभाव्यता के आधार पर या बदतरीन हालात विश्लेषण के आधार पर विभिन्न मात्रा के दर परिवर्तनों के साथ यील्ड कर्व में समांतर परिवर्तन या यील्ड कर्व के चपटा, ऊर्ध्वमुखी, अधोमुखी होने के प्रति संस्था के एक्सपोज़र के संबंध में निष्कर्ष प्रदान कर सकते हैं। विदेशी मुद्राओं में महत्वपूर्ण एक्सपोज़रों वाले बैंकों के लिए विभिन्न मुद्राओं में ब्याज दरों के बीच अंतर्सबंधों के संबंध में विभिन्न पूर्वधारणाओं का शोध करने वाला विश्लेषण उपयोगी हो सकता है। व्यावहारिक परिपक्वता वाले लिखतों के संबंध में पर्यवेक्षक संस्था द्वारा प्रयुक्त पूर्वधारणाओं से अलग पूर्वधारणाओं के आधार पर मूल्यांकन कर सकते हैं।

9. पर्यवेक्षकों के मात्रात्मक विश्लेषण का केंद्र बिंदु चालू अर्जन पर अथवा बैंक के संविभाग के आर्थिक मूल्य पर ब्याज दर परिवर्तनों का प्रभाव हो सकता है। विश्लेषण करते समय प्रत्येक टाइम बैंड में आस्तियों और देयताओं पर औसत प्रतिफल के संबंध में सूचना उपयोगी हो सकती है तथा पर्यवेक्षक केवल पोजीशन संबंधी आँकड़ों के अलावा ऐसी सूचना एकत्रित करना चाहेंगे।

10. अपने समग्र दृष्टिकोण के आधार पर पर्यवेक्षक ब्याज दर जोखिम का विश्लेषण मामला-दर-मामला आधार पर सकते हैं अथवा एक ऐसी व्यापक प्रणाली के अंग के रूप में कर सकते हैं, जिसका उद्देश्य अत्यधिक जोखिम उठानेवालों की पहचान करना है।

11. प्रस्तावित फ्रेमवर्क का प्रयोग करते हुए ब्याज दर जोखिम का मूल्यांकन करने से पर्यवेक्षक संस्था के जोखिम प्रोफाइल को बेहतर समझ सकते हैं बजाय इसके कि वे ऐसी रिपोर्टिंग प्रणाली

का सहारा लें जो ब्याज दर जोखिम की जटिलता को एक एकल संख्या में बदल देती है। ऐसा करते समय पर्यवेक्षक अंतर्निहित पूर्वधारणाओं में परिवर्तन के प्रति जोखिम माप की संवदेनशीलता से अधिक परिचित हो सकते हैं तथा मूल्यांकन प्रक्रिया से उतनी अंतर्दृष्टि मिल सकती है जितनी मात्रात्मक परिणाम से मिलती है।

12. पर्यवेक्षक के अपने स्वतंत्र मात्रात्मक विश्लेषण का विस्तार कुछ भी हो, बैंक की अपनी ब्याज दर जोखिम माप का पर्यवेक्षीय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है, चाहे उसकी रिपोर्ट बुनियादी पर्यवेक्षीय सूचना प्रणाली के अंग के रूप में की गयी हो या उसकी समीक्षा बैंक के जोखिम प्रबंधन के वैयक्तिक मूल्यांकन के रूप में की गयी हो। बैंक के आंतरिक मॉडल के परिणामों की समीक्षा अत्यंत सूचनाप्रद हो सकती है, लेकिन यह एक कठिन प्रक्रिया भी हो सकती है क्योंकि इसमें अनेक महत्वपूर्ण पूर्वधारणाएँ और मॉडलिंग तकनीकें होती हैं जिन्हें पर्यवेक्षकों के लिए पारदर्शी बनाने की आवश्यकता है। प्राप्त सूचना को अधिक उपयोगी बनाने के लिए उसमें ब्याज दर परिवर्तनों और बाजार प्रतिक्रिया के संबंध में विभिन्न पूर्वधारणाओं के अंतर्गत जोखिम प्रोफाइल में बैंक के संविभाग के मुख्य तत्वों का योगदान बताया जाना चाहिए। अंत में, किसी भी मात्रात्मक विश्लेषण को आंतरिक प्रबंधन रिपोर्टों की समीक्षा से परिपुष्ट किया जाना चाहिए ताकि प्रबंध तंत्र द्वारा जोखिम के आकलन और प्रबंधन, एक्सपोज़र मापने की उनकी विधियों तथा पर्यवेक्षकों को भेजी जानी वाली सीमित सूचना प्रणाली में उपलब्ध सूचनाओं में जो घटक प्रतिबिम्बित नहीं होते, उनके संबंध में अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सके ।

अनुबंध - 15

(देखें पैरा 10.2)

आइसीएएपी दस्तावेज की निदर्शी रूपरेखा

1. आइसीएएपी दस्तावेज क्या है ?

आइसीएएपी दस्तावेज एक व्यापक पेपर होगा जिसमें बैंक के जोखिमों के संपूर्ण परिदृश्य के निरंतर मूल्यांकन, बैंक उन जोखिमों को किस प्रकार से कम करनेवाला है और अन्य प्रशमन तत्वों की गणना करते हुए उस बैंक के लिए कितनी वर्तमान तथा भावी पूंजी आवश्यक होगी के संबंध में विस्तृत जानकारी दी होगी । आइसीएएपी दस्तावेज का प्रयोजन है बैंक के बोर्ड को इन पहलूओं से अवगत कराना तथा भारतीय रिज़र्व बैंक को बैंक की आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया तथा पूंजी प्रबंधन के प्रति बैंक का दृष्टिकोण स्पष्ट करना । आइसीएएपी बैंक के मौजूदा आंतरिक दस्तावेजों के आधार पर भी तैयार किया जा सकता है ।

भारतीय रिज़र्व बैंक को प्रस्तुत किए गए आइसीएएपी दस्तावेज के लिए बैंक के बोर्ड का औपचारिक अनुमोदन प्राप्त होना चाहिए । यह अपेक्षा की जाती है कि यह दस्तावेज एक ऐसे फॉर्मेट में तैयार किया जाएगा जिसे प्रबंध तंत्र के वरिष्ठ स्तरों पर आसानी से समझा जा सकेगा और उसमें वह सभी संबंधित जानकारी होगी जो बैंक तथा भारतीय रिज़र्व बैंक को बैंक के उचित पूंजी स्तर तथा उसके जोखिम प्रबंधन दृष्टिकोण के बारे में सुविज्ञ निर्णय लेने के लिए आवश्यक होगी । जहां उचित है वहां यदि जोखिम मापन पद्धतियों, पूंजी मॉडेल्स को प्रयोग में लाया गया हो तो उनसे संबंधित तकनीकी जानकारी तथा उक्त दृष्टिकोण को विधिमान्य बनाने के लिए किए गए समस्त कार्य (उदाहरण बोर्ड पेपर तथा कार्यवृत्त, आंतरिक अथवा बाहरी समीक्षाएं) को आइसीएएपी दस्तावेज के परिशिष्टों के रूप में भारतीय रिज़र्व बैंक को प्रस्तुत किया जा सकता है ।

2. विषयवस्तु

आइसीएएपी दस्तावेज में निम्नलिखित भाग होने चाहिए :

I. कार्यपालक सारांश

II. पृष्ठभूमि

III. वर्तमान तथा अनुमानित वित्तीय तथा पूंजीगत स्थितियों का सारांश

IV. पूंजी पर्याप्तता

V. प्रमुख संवेदनशीलताएं तथा भावी अनुमान

VI. एकत्रीकरण तथा विविधिकरण

VII. आइसीएएपी का परीक्षण तथा उसे अपनाना

VIII. बैंक में आइसीएएपी का प्रयोग

1. कार्यपालक सारांश

कार्यपालक सारांश का प्रयोजन है आइसीएएपी पद्धतियों तथा निष्कर्षों का विहंगावलोकन प्रस्तुत करना । इस विहंगावलोकन में सामान्यतः निम्नलिखित शामिल होगा :

क) रिपोर्ट का प्रयोजन तथा बैंकिंग समूह के भीतर ऐसी विनियमित संस्थाएं जो कि आइसीएएपी के दायरे के अंतर्गत आती हैं;

ख) आइसीएएपी विश्लेषण के मुख्य निष्कर्ष:

   i. 'पिलर 1' अभिकलन के अंतर्गत न्यूनतम सीआरएआर अपेक्षा की तुलना में बैंक कितनी और किस विन्यास में आंतरिक पूंजी धारण करना आवश्यक समझता है, तथा

   ii. बैंक की जोखिम मूल्यांकन प्रक्रियाओं की पर्याप्तता;

ग) बैंक की कार्यनीतिगत स्थिति, उसके तुलन पत्र की मजबूती तथा भावी लाभप्रदता सहित बैंक की वित्तीय स्थिति का सारांश;

घ) पूंजी जुटाने तथा लाभांश योजना का संक्षिप्त वर्णन जिसमें बैंक आगे के दिनों में अपनी पूंजी का कैसे और किन प्रयोजनों से प्रबंध करेगा भी शामिल हो;

ङ) बैंक के प्रति अत्यंत महतवपूर्ण जोखिमों, दिया गया जोखिम का स्तर क्यों स्वीकार्य पाया गया है अथवा स्वीकार्य नहीं है तो उसे कम करने के लिए क्या कार्रवाई आयोजित की गई है पर टिप्पणी;

च) उन मुख्य मामलों पर टिप्पणियां जहां और अधिक विश्लेषण तथा निर्णय अपेक्षित हैं; तथा

छ) मूल्यांकन किसने किया है, उस संबंध में क्या आपत्तियां उठाई गई/उसका विधिकरण/दबाव परीक्षण कैसे किया गया है तथा उसका अनुमोदन किसने किया है ।

II. पृष्ठभूमि

इस भाग में बैंक के संबंधित संगठनात्मक तथा ऐतिहासिक वित्तीय आंकड़े/जानकारी दी जाएगी । उदाहरण के लिए समूह रचना (विधिक तथा परिचालनागत), परिचालनगत लाभ, कर पूर्व

लाभ, करोत्तर लाभ, लाभांश, शेयरधारक निधियां, विनियामक अपेक्षाओं की तुलना में धारित पूंजीगत निधियां, ग्राहक जमाराशियां, बैंकों द्वारा की गई जमा, कुल आस्तियां तथा उस जानकारी में पायी जानेवाली प्रवृत्तियों से निकाले जानेवाले ऐसे कोई निष्कर्ष जिनका बैंक के भविष्य पर प्रभाव पड़ सकता है ।

III. <u>वर्तमान तथा अनुमानित वित्तीय तथा पूंजीगत स्थितियों का सारांश</u>

इस भाग में बैंक की वर्तमान वित्तीय स्थिति तथा व्यवसाय की वर्तमान रूपरेखा में अपेक्षित परिवर्तन, वह जिस परिवेश में कार्य करने की अपेक्षा करते हैं, उसकी व्यवसाय संबंधी अनुमानित योजनाएं (व्यवसाय के उचित नियमों के अनुसार), अनुमानित वित्तीय स्थिति तथा पूंजी के आयोजित भावी स्रोत को स्पष्ट किया जाएगा ।

संदर्भ के रूप में प्रयोग में लाए गए प्रारंभिक तुलन पत्र और जिस तारीख की स्थिति के अनुसार मूल्यांकन किया गया है, को दर्शाया जाए ।

अनुमानित वित्तीय स्थिति में परिकल्पित व्यवसाय योजनाओं के आधार पर उपलब्ध अनुमानित पूंजी तथा अनुमानित पूंजीगत अपेक्षाओं, दोनों की गणना की जा सकती है । इसके बाद में एक आधार मिलेगा जिसके समक्ष प्रतिकूल परिस्थितियों की तुलना की जा सकेगी ।

IV. <u>पूंजी पर्याप्तता</u>

इस भाग की शुरुआत बैंक के बोर्ड द्वारा अनुमोदन दिए गए अनुसार तथा आइसीएएपी में प्रयोग में लाई गई मात्रात्मक रूप में बैंक की जोखिम लेने की अभिलाषा के वर्णन से होगी । इस दस्तावेज में यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट करना आवश्यक है कि जिसे प्रस्तुत किया जा रहा है उसमें न्यूनतम **विनियामक आवश्यकताओं** को पूरा करने के लिए आवश्यक पूंजी की राशि के संबंध में बैंक के अभिमत का प्रतिनिधित्व किया गया है अथवा यह कि उसमें पूंजी की वह राशि दर्शाई गई है जिसे बैंक **अपनी व्यवसाय संबंधी योजनाओं को पूरा करने के लिए** आवश्यक समझता है । उदाहरण के लिए यह स्पष्ट रूप से प्रकट किया जाना चाहिए कि अपेक्षित पूंजी बैंक द्वारा वांछित किसी विशिष्ट क्रेडिट रेटिंग पर आधारित है अथवा उसमें कार्यनीतिगत प्रयोजनों के लिए कोई सुरक्षा निधि शामिल है अथवा उसका विनियामक अपेक्षाओं के उल्लंघन की संभावना को कम करने का उद्देश्य है । जहां आंतरिक पूंजी मूल्यांकन के लिए आर्थिक पूंजी मॉडेल्स का प्रयोग किया जाता है वहां विश्वास का स्तर, समय सीमा तथा विश्वास जिस घटना से संबंधित है उसका वर्णन भी दिया जाना चाहिए । जहां पूंजी मूल्यांकन के लिए सिनॅरियो विश्लेषण अथवा अन्य माध्यमों का उपयोग किया जाता है वहां प्रयोग में लाए गए सिनॅरियोज़ की चुनी हुई गंभीरता के चयन का आधार/तर्क भी शामिल किया जाए ।

समय

- आइसीएएपी अभिकलनों की प्रभावी तारीख सहित इस तारीख तथा बोर्ड/भारतीय रिज़र्व बैंक को प्रस्तुति की तारीख के बीच होनेवाली कोई भी ऐसी घटनाओं के ब्योरे जिनका आइसीएएपी अभिकलनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा और उनके परिणाम; तथा
- पूंजी अपेक्षाओं के मूल्यांकन के लिए चयनित समयावधि के ब्योरे तथा उसका मूलाधार ।

विश्लेषित जोखिम

- निम्नलिखित में से प्रत्येक श्रेणी में बैंक द्वारा उठाए गए प्रमुख जोखिमों का निर्धारण :

  क) ऋण जोखिम

  ख) बाज़ार जोखिम

  ग) परिचालनगत जोखिम

  घ) चलनिधि जोखिम

  ङ) केंद्रीकरण जोखिम

  च) बैंकिंग की बही में ब्याज दर जोखिम

  छ) प्रतिभूतिकरण का अवशिष्ट जोखिम

  ज) कार्यनीतिगत जोखिम

  झ) व्यवसाय जोखिम

  ञ) प्रतिष्ठागत जोखिम

  त) पेंशन प्रतिबद्धता जोखिम

  थ) अन्य अवशिष्ट जोखिम; तथा

  द) निर्धारित किए गए अन्य कोई जोखिम

- इन जोखिमों में से प्रत्येक के संबंध में उसका मूल्यांकन कैसे किया गया है संबंधी स्पष्टीकरण तथा जहां तक संभव हो उस मूल्यांकन के **मात्रात्मक परिणाम**;
- जहां इन में से कोई जोखिमों को भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा किए गए बैंक के ऑन-साइट निरीक्षण की रिपोर्ट में विशिष्ट रूप से दर्शाया गया है वहां बैंक ने इन्हें कैसे कम किया है संबंधी स्पष्टीकरण;
- जहां आवश्यक है वहां ऑन-साइट निरीक्षण के दौरान भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा मूल्यांकित सीआरएआर की आइसीएएपी के अंतर्गत बैंक के सीआरएआर के अभिकलनों के परिणामों के साथ तुलना;
- जोखिम श्रेणी के अनुसार मात्रात्मक आधार पर बैंक की जोखिम लेने की अभिलाषा तथा बैंक के विभिन्न जोखिमों के समग्र मूल्यांकन के साथ उसकी सुसंगतता (उसकी अनुरूपता) की सीमा को स्पष्टतः प्रकट किया जाए; तथा
- जहां संगत हो वहां जोखिमों को कम करने के लिए बैंक द्वारा पूंजी के अलावा अपनाई गई कोई अन्य पद्धतियां

पद्धतियां तथा धारणाएं

मुख्य जोखिमों में से प्रत्येक का मूल्यांकन कैसे किया गया है तथा की गई मुख्य धारणाओं का वर्णन

उदाहरण के लिए बैंक अपने आइसीएएपी को सीआरएआर अभिकलनों, जिनमें अतिरिक्त जोखिमों (उदाहरण केंद्रीकरण जोखिम, बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम, आदि) के लिए पूंजी

का अलग से मूल्यांकन किया गया है और पिलर 1 अभिकलनों में जोड़ा गया है के निष्कर्षों पर आधारित कर सकते हैं । इसके विकल्प के रूप में बैंक अपने आइसीएएपी को सीआरएआर के अंतर्गत शामिल जोखिमों (अर्थात् ऋण, बाज़ार तथा परिचालनगत जोखिम) सहित सभी जोखिमों के लिए आंतरिक मॉडलों पर भी आधारित कर सकते हैं ।

यहां दिए गए वर्णनों से यह स्पष्ट होगा कि किन जोखिमों को किस मॉडेलिंग अथवा अभिकलन दृष्टिकोण द्वारा कवर किया गया है । इसमें प्रत्येक निर्धारित श्रेणी में जोखिमों की गणना करने के लिए प्रयोग में लाई गई पद्धति तथा प्रक्रिया के ब्योरे तथा प्रत्येक मामले में प्रयोग में लाई गई पद्धति को चुनने का कारण शामिल होगा ।

जहां बैंक अपने जोखिमों को मात्रात्मक रूप देने के लिए कोई आंतरिक मॉडेल का उपयोग करता है वहां इस भाग में उन मॉडेलों में से प्रत्येक के संबंध में निम्नलिखित को स्पष्ट करेगा :

- प्रमुख मॉडेलिंग कार्य के भीतर मुख्य धारणाएं तथा मानदंड तथा किसी भी मुख्य धारणाओं की व्युत्पत्ति की पृष्ठभूमि;
- मानदंडों को चुनने का तरीका तथा उसके लिए प्रयोग में लाई गई ऐतिहासिक अवधि तथा मापन प्रक्रिया;
- मॉडेल की सीमाएं;
- चुनी हुई मुख्य धारणाओं अथवा मानदंडों में हुए परिवर्तनों के प्रति मॉडेल की संवेदनशीलता; तथा
- मॉडेल की निरंतर पर्याप्तता को सुनिश्चित करने के लिए किए जानेवाला वैधीकरण कार्य

जहां मॉडेलिंग के अन्य दृष्टिकोणों के निष्कर्षों को विधिमान्य, संपूरक अथवा परीक्षण करने के लिए दबाव परीक्षण अथवा सिनॅरियो विश्लेषणों का उपयोग किया गया है वहां इस अनुभाग में निम्नलिखित दिया जाए :

- बैंक के आंतरिक पूंजी मॉडेल द्वारा योग्य रूप से अनुमानित न किए गए जोखिमों (उदाहरण नॉन-लिनियर उत्पाद, केंद्रीकरण, अनकदी तथा संकट की अवधि में सहसंबंधों में परिवर्तन) को रोकने के अनुरूपण के ब्योरे;
- बैंक द्वारा किए गए दबाव परीक्षण तथा सिनॅरियो विश्लेषणों के मात्रात्मक परिणाम तथा उन विश्लेषणों के आधार माने गए विश्वास स्तर तथा मुख्य धारणाएं तथा अलग-अलग मुख्य जोखिम तत्वों के लिए प्राप्त परिणामों के वितरण के ब्योरे
- लागू किए गए संयुक्त प्रतिकूल सिनॅरियों के दायरे, इन्हें कैसे व्युत्पन्न किया गया तथा परिणामी पूंजीगत अपेक्षाओं के ब्योरे; तथा
- जहां लागू हो वहां, कोई भी अतिरिक्त व्यवसाय यूनिट विशेष अथवा व्यवसाय योजना विशेष के अनुसार चयनित दबाव परीक्षणों के ब्योरे ।

पूंजी अंतरणीयता

बड़े समूह वाली संरचना के बैंकों के मामले में लागू होनेवाले संविदागत, वाणिज्यिक, विनियामक अथवा सांविधिक जैसे प्रतिबंधों के कारण बैंकिंग व्यवसाय (व्यवसायों) में अथवा उससे बाहर पूंजी को अंतरित करने की प्रबंध तंत्र की क्षमता पर किसी भी प्रकार के प्रतिबंधों के ब्योरे प्रस्तुत किए जाने चाहिए । समूह की संस्थाओं द्वारा लाभांश के वितरण पर लागू प्रतिबंध तथा उस संबंध में उपलब्ध लचीलेपन को भी दिया जाए । बैंकों की विदेश स्थित बैंकिंग सहायक कंपनियों के मामले में विनियामक प्रतिबंधों में लाभांश की घोषणा के बाद सहायक कंपनी के विनियामक मेजबान देश को स्वीकार्य विनियामक पूंजी का न्यूनतम स्तर शामिल होगा ।

V. पूरी फर्म का जोखिम पर्यवेक्षण तथा जोखिम प्रबंध के विशिष्ट पहलू[59]

V.1 <u>बैंक में जोखिम प्रबंध प्रणाली</u>

इस खंड में बैंक के भीतर जोखिम प्रबंध संरचना का निम्न रूपों में वर्णन किया जाएगा :

- बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंधन का पर्यवेक्षण
- नीतियां, प्रक्रियाएं और सीमाएं
- जोखिमों की पहचान, माप, उसे कम करना, उसका नियंत्रण और रिपोर्टिंग
- पूरी फर्म के स्तर पर एकआइएस
- आंतरिक नियंत्रण

V.2 <u>तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र - विशेषतया प्रतिभूतिकरण</u>

इस खंड में तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र विशेष रूप से स्ट्रक्चर्ड उत्पादों में बैंक के निवेश में अंतर्निहित जोखिम मी समग्र चर्चा और विश्लेषण किया जाएगा । प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र का मूल्यांकन करते समय बैंक को आधारभूत एक्सपोज़र की ऋण गुणवत्ता और जोखिम विशेषता का पूरा विश्लेषण करना चाहिए । इस खंड में प्रतिभूतिकरण लेनदेन के आधारभूत एक्सपोज़र की परिपक्वता की तुलना निर्गत देयताओं से की जानी चाहिए ताकि संभावित परिपक्वता विसंगतियों का आकलन किया जा सके ।

V.3 <u>प्रतिष्ठज्ञ जोखिम और अव्यक्त समर्थन का मूल्यांकन</u>

इस खंड में प्रतिष्ठा जोखिम की संभावनाओं की चर्चा की जानी चाहिए जिसके कारण अव्यक्त समर्थन करना पड़ सकता है और जिससे ऋण, बाज़ार और कानूनी जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं । इस खंड में बैंक के प्रतिष्ठा जोखिम के संभावित स्रोतों की पूरी चर्चा की जानी चाहिए ।

V.4 मूल्य और चलनिधि जोखिम का मूल्यांकन

इस खंड में जोखिम प्रबंध और वित्तीय रिपोर्टिंग के प्रयोजन से एक्सपोज़र का मूल्यन करने के लिए गवर्नेंस संरचना और नियंत्रण प्रक्रियाओं का वर्णन किया जाएगा, जिसमें गैर-तरल स्थितियों के मूल्यन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । इस खंड में संबंधित

---

[59] ˜¼Åœ¸¡¸¸ 8 ûÅ£¨¸£úÄ 2010 ˆÅ¸ Ÿ¸¸¬'£ œ¸¢£œ¸°¸ ¤¸ÿœ¸¢¨¸¢¨¸.¤¸úœ¸ú.¤¸ú¬¸ú.
¬¸¿.73/21.06.001/2009-2010 ™½‰¸½¿—

ब्यौरे दिये जाएंगे ताकि बैंक के लिखतों और लेनदेन के मूल्यन और उसका सत्यापन हो सके ।

V.5 दबाव परीक्षण प्रथाएं

इस खंड में दबाव परीक्षण के उद्देश्य, परिदृश्य की परिभाषा, दबाव परीक्षण के परिणाम की चर्चा, संभावित कार्रवाई का आकलन और दबाव परीक्षण के परिणामों के आधार पर निर्णय लेने में बांड और वरिष्ठ प्रबंध की भूमिका स्पष्ट की जाएगी । इस खंड में त्रुटिहीन भविष्यमुखी दबाव परीक्षक का वर्णन किया जाएगा जो बाजार परिस्थितियों की ऐसी संभव घटनाओं या परिवर्तनों की पहचान करेगा जो बैंक को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकते हैं । भारतीय रिज़र्व बैंक संबंधित संवेदनशीलता की पहचान करने में बैंकों के बदाव परीक्षण कार्यक्रम की प्रभावशालिता का मूल्यांकन करेगा ।

V.6 सुदृढ़ पारिश्रमिक प्रथाएं

इस खंड में बैंक की पारिश्रमिक प्रथाओं का वर्णन किया जाएगा तथा यह स्पष्ट किया जाएगा कि पारिश्रमिक प्रथाएं फर्म के दीर्घकालिक पूंजी संरक्षण और वित्तीय सुदृढ़ता से किस प्रकार संबद्ध हैं । इस खंड में कर्मचारियों के जोखिम समायोजित कार्य निष्पादन माप की गणना और पारिश्रमिक के साथ उसके संबंध को स्पष्ट रूप से प्रकट किया जाना चाहिए ।

VI. प्रमुख संवेदनशीलताएं तथा भावी परिस्थितियां

इस भाग में आर्थिक मंदी अथवा व्यवसाय चक्र अथवा उसके कार्यों से संबंधित बाजारों में गिरावट का बैंक पर जो असर पड़ेगा उसे स्पष्ट किया जाएगा । भारतीय रिज़र्व बैंक यह जानना चाहेगा कि कोई बैंक अपना व्यवसाय तथा पूंजी का प्रबंध कैसे करेगा ताकि न्यूनतम विनियामक मानको को पूर्ण करते हुए वह मंदी का सामना कर सकेगा । विश्लेषण में व्यवसाय योजनाओं तथा शोध क्षमता अभिकलनों के आधार पर तीन से पांच वर्ष के लिए भावी वित्तीय पूर्वानुमान शामिल होंगे ।

इस विश्लेषण के प्रयोजन के लिए जिस मंदी की गणना की गई है उसकी गंभीरता सामान्यतः 25 वर्ष की अवधि में केवल एक बार होने वाली हो । समय अवधि होगी आइसीएएपी अभिकलन की तारीख से कम-से-कम परिकल्पित मंदी की सबसे अधिक तीव्रता के समय तक ।

सामान्यतः इन परिदृश्यों में निम्नलिखित शामिल होगा :

- किसी आर्थिक गिरावट से निम्नलिखित पर क्या असर होगा :
- बैंक की पूंजीगत निधियां तथा भावी उपार्जन; तथा
- बैंक के अनुमानित तुलन पत्र में भावी परिवर्तनों को ध्यान में लेते हुए बैंक का सीआरएआर
- दोनों मामलों में बेहतर होगा यदि इन अनुमानों में बैंक की व्यावसायिक कार्यनीति को बदलने की प्रबंध तंत्र की कार्रवाईयों तथा आकस्मिकता योजनाओं के कार्यान्वयन के प्रभावों को अलग से दर्शाया जाए।

- भावी सीआरएआर के अनुमानों में बैंक की ऋण जोखिम काउंटरपार्टियों की ऋण गुणवत्ता में (जिसमें मंदी के दौरान उनकी रेटिंग में अंतरण शामिल है) तथा बैंक की पूंजी तथा उसकी ऋण जोखिम पूंजी अपेक्षा में हुए परिवर्तनों के परिणाम शामिल होंगे ।

- बैंक द्वारा अपनी संबंधित कंपनियों अथवा नए शेयर निर्गमों से पूंजी वृद्धि करने जैसे कोई अन्य पूंजी आयोजन कार्रवाईयों का मूल्यांकन ताकि वह मंदी की संपूर्ण अवधि के दौरान अपनी विनियामक पूंजी अपेक्षाओं को पूरा करना जारी रख सके ।

- इस भाग में यह स्पष्ट किया जाएगा कि कौनसे मुख्य समष्टि आर्थिक तत्वों पर जोर दिया जा रहा है और बैंक के उपार्जनों के प्रमुख द्योतकों के रूप में उनका निर्धारण कैसे किया गया है। बैंक दोनों के बीच के संबंध कों किस तरह स्थापित किया गया है उसे सिद्ध करके यह भी स्पष्ट करेगा कि समष्टि आर्थिक तत्वों का आंतरिक मॉडेल के मुख्य मानदंडों पर क्या असर होगा।

प्रबंध तंत्र की कार्रवाईयां

इसमें आइसीएएपी की व्युत्पत्ति में परिकल्पित प्रबंधतंत्र की कार्रवाईयों को विशेष रूप से निम्नलिखित को विस्तारपूर्वक दिया जाएगा :

- प्रबंधतंत्र की कार्रवाईयों का मात्रात्मक प्रभाव - इसमें प्रबंधतंत्र की प्रमुख कार्रवाईयों के संवेदनशीलता परीक्षण तथा प्रबंधतंत्र की कार्रवाईयों के साथ संशोधित आइसीएएपी आंकडे शामिल नहीं किए जाएंगे।

- समान प्रकार के आर्थिक दबाव की अवधियों के दौरान पूर्व में कार्यान्वित की गई प्रबंधतत्र की कार्रवाईयों की साक्ष्य।

VII **<u>एकत्रीकरण तथा विविधिकरण</u>**

इस भाग में यह बताया जाएगा कि विभिन्न जोखिम मूल्यांकनों के परिणामों को कैसे एकत्रित किया जाता है और पूंजी पर्याप्तता पर समग्र निर्णय लिया जाता है। अतः तकनीकी स्तर पर इसके लिए कुछ उचित मात्रात्मक तकनीकों का प्रयोग करते हुए विभिन्न जोखिमों को संयोजित करने के लिए कुछ पद्धति आवश्यक होगी। व्यापक स्तर पर, मात्रात्मक रूप देने के विस्तृत दृष्टिकोणों के समग्र औचित्य की पूंजी आयोजना के विश्लेषण के निष्कर्षों के साथ तुलना की जा सकती है और वरिष्ठ प्रबंधतंत्र उचित समझे गए पूंजी के समग्र स्तर के संबंध में निर्णय ले सकता है।

- तकनीकी एकत्रीकरण की प्रक्रिया देते समय निम्नलिखित पहलुओं को शामिल किया जाए :

  i) विविधीकरण के लिए रखी गई कोई अतिरिक्त छूट जिसमें जोखिमों के भीतर तथा जोखिमों के बीच कल्पित सहसंबंध तथा ऐसे सहसंबंधों का

मूल्यांकन तथा दबाव की स्थितियों में भी वह मूल्यांकन कैसे किया गया है , शामिल होगा।

ii) विधिक संस्थाओं के बीच विविधीकरण लाभों के लिए लिए गए ऋण का औचित्य तथा वित्तीय दबाव की स्थिति में उनके बीच पूंजी की निर्बाध आवाजादी, यदि कोई कल्पित हो, का औचित्य;

iii) विविधीकरण लाभों का प्रभाव जिसमें प्रबंधतंत्र की कार्रवाईयों को शामिल नहीं किया गया है। आइसीएएपी के संशोधित आंकड़ों की गणना करते समय यह सहायक होगा कि सभी सहसंबंधों को '1' अर्थात् विविधीकरण रहित, माना जाए तथा वही आंकड़ों की गणना में सभी सहसंबंध '0' अर्थात् यह कल्पना करते हुए कि सभी जोखिम स्वतंत्र हैं अर्थात् पूर्ण विविधिकरण माना जाए।

- समग्र मूल्यांकन के संबंध में, उसमें यह दिया जाए कि बैंक को आवश्यक पूंजी के समग्र मूल्यांकन की बैंक ने गणना कैसे की है और उसके लिए निम्नलिखित मामलों को ध्यान में लिया जाए :

  i) किसी भी मॉडेलिंग दृष्टिकोण में अंतरनिहित अनिश्चितता;

  ii) बैंक के जोखिम प्रबंधन क्रियाविधियों, प्रणालियों अथवा नियंत्रणों में खामियां;

  iii) विनियमक पूंजी तथा आंतरिक पूंजी के बीच की भिन्नताएं; तथा

  iv) पूंजी के विभिन्न प्रयोजन; शेयरधारक चुकौतियां, संपूर्ण बैंक के लिए अथवा बैंक द्वारा जारी कुछ लिखतों के लिए रेटिंग संबंधी उद्देश्य, विनियामक हस्तक्षेप से बचना, अनिश्चित घटनाओं से सुरक्षा, जमाकर्ता सुरक्षा, कार्यकारी पूंजी, कार्यनीति अर्जनों के लिए धारित पूंजी आदि।

VIII. आइसीएएपी का परीक्षण तथा उसे अपनाना

इस भाग में आइसीएएपी के प्रति प्रकट आपत्तियों तथा परीक्षण की सीमा को व्यक्त किया जाएगा। अतः उसमें आइसीएएपी मॉडेलों तथा अभिकलनों पर लागू की गयी परीक्षण तथा नियंत्रण प्रक्रियाओं को शामिल किया जाएगा। उसमें बोर्ड अथवा वरिष्ठ प्रबंधतंत्र द्वारा परीक्षण के परिणामों की समीक्षा की प्रक्रिया तथा उनके अनुमोदन को भी दिया जाएगा। इस संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक को भेजे गए आइसीएएपी दस्तावेज से बैंक के बोर्ड अथवा वरिष्ठ प्रबंधतंत्र के समक्ष रखी कोई भी संबंधित रिपोर्ट की प्रति, उस पर उनकी प्रतिक्रिया सहित संलग्न की जा सकती है।

परीक्षण प्रक्रिया के दौरान , उदाहरण के लिए आर्थिक परिदृश्यों को तैयार करने के लिए, किसी बाहरी सेवा प्रदाताओं अथवा परामर्शदाताओं पर बैंक की निर्भरता को भी यहां बताया जाए।

इसके अलावा, किसी बाहरी समीक्षक अथवा आंतरिक लेखापरीक्षा से कोई रिपोर्ट प्राप्त हुई हो तो उसकी प्रति भी भारिबैं को भेज दें।

IX. बैंक में आइसीएएपी का प्रयोग

इसमें पूंजी प्रबंधन की संकल्पना बैंक में कितनी रच-बस गई है -इस संबंध में जानकारी दी जाएगी। साथ ही, बैंक की पूंजी प्रबंधन नीति में पूंजी मॉडेलिंग अथवा सिर्नेरियो विश्लेषणों तथा दबाव परीक्षण के प्रयोग तथा सीमा संबंधी जानकारी भी दी जाएगी। उदाहरण के लिए कीमतों तथा प्रभारों तथा भावी व्यवसाय के स्तर तथा स्वरूप को निर्धारित करने में आइसीएएपी का प्रयोग इसका संकेतक हो सकता है।

इस भाग में इसमें पूंजी प्रबंधन पर बैंक का वास्तविक परिचालनगत तत्व तथा प्रस्तुत आइसीएएपी दस्तावेज के साथ उसकी अनुरूपता संबंधी विवरण भी शामिल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए आइसीएएपी दस्तावेज को तैयार करने में प्रयोग में लाई गई जोखिम लेने की अभिलाषा की तुलना में व्यवसायिक निर्णयों के लिए प्रयोग में लाई गयी जोखिम लेने की अभिलाषा के बीच के अंतरों पर चर्चा की जा सकती है।

अंत में, बैंक द्वारा आइसीएएपी दस्तावेज की समीक्षा करने में भारतीय रिज़र्व बैंक को सहायक समझी गई कोई अन्य जानकारी के अलावा बैंक आइसीएएपी में परिकल्पित प्रत्याशित भावी परिशुद्धताओं के ब्यौरे (जो कार्य चल रहें है उन पहलुओं को विशिष्ट रूप से व्यक्त किया जाए) भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

अनुबंध 16

(आवरक पत्र का पैरा 1देखें)

शब्दावली

1.	**परिसंपत्ति/आस्ति**	किसी व्यक्ति अथवा कारोबार के स्वामित्व वाली कोई भी ऐसी वस्तु जिसका मूल्य है, परिसंपत्ति अथवा आस्ति कहलाती है।
	बिक्री के लिए उपलब्ध	बिक्री के लिए उपलब्ध प्रतिभूतियां वे प्रतिभूतियां हैं जहां बैंक का उद्देश्य न तो व्यापार का है न ही परिपक्वता तक धारण करने का । इन प्रतिभूतियों को उचित मूल्य पर मूल्यन किया जाता है। यह उचित मूल्य चालू बाज़ार भाव अथवा चालू मूल्य से संबंधित अन्य आंकड़ों के उपलब्ध सर्वोत्तम स्रोत के आधार पर निर्धारित किया जाता है ।
	तुलन पत्र	तुलन पत्र किसी विशिष्ट समय पर अभिलेखबद्ध किसी व्यापारी संस्था की आस्तियों तथा देयताओं का वित्तीय विवरण है।
	बैंकिंग बही	बैंकिंग बही में ऐसी आस्तियां तथा देयताएं होती हैं जिन्हें मूलतः संबंधों के कारण अथवा नियमित आय तथा सांविधिक बाध्यताओं के लिए संविदाकृत किया जाता है और सामान्यतः परिपक्वता तक रखा जाता है ।
	बासल पूंजी समझौता	बासल पूंजी समझौता विभिन्न देशों में कार्यरत बैंकों के लिए मानकीकृत जोखिम आधारित पूंजी अपेक्षाओं को विकसित करने के लिए 1988 में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के बीच किया गया एक करार है। इस समझौते के स्थान पर जून 2004 में प्रकाशित नया पूंजी पर्याप्ता ढांचा (बासल II) लाया गया। बासल II आपस में एक दूसरे को सुदृढ़ करने वाले ऐसे तीन स्तंभों पर आधारित है जो बैंकों तथा पर्यवेक्षकों को बैंकों के समक्ष विभिन्न जोखिमों का सही मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं। ये तीन स्तंभ निम्नानुसार हैं : • न्यूनतम पूंजी अपेक्षाएं, जो वर्तमान मापन ढांचे को और परिष्कृत करने का प्रयास करती हैं। • किसी संस्था की पूंजी पर्याप्तता तथा आंतरिक मूल्यांकन प्रक्रिया की पर्यवेक्षी समीक्षा ; • सुरक्षित तथा सुदृढ़ बैंकिंग प्रथाओं को प्रोत्साहन देने के लिए प्रभावी प्रकटीकरण के माध्यम से बाजार अनुशासन
	बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासल समिति	बासल समिति, बैंक पर्यवेक्षकों की ऐसी समिति है जिसमें जी-10 देशों में से प्रत्येक देश के सदस्य शामिल हैं। यह समिति विशिष्ट पर्यवेक्षी समस्याओं के निपटान पर विचार-विमर्श करने के लिए एक मंच है। यह समिति बैंकों के विश्व व्यापी गतिविधियों का प्रभावी पर्यवेक्षण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बैंकों के विदेशी प्रतिष्ठानों के संबंध में राष्ट्रीय प्राधिकरणों के बीच पर्यवेक्षी जिम्मेदारियों को आपस में बांटने के लिए समन्वय करती है।
1.	**मूल संकेतक**	बासेल II के अंतर्गत अनुमत परिचालनगत जोखिम की माप की

	दृष्टिकोण	तकनीक है। यह दृष्टिकोण एकल संकेतक के सुनिश्चित प्रतिशत (अल्फा फैक्टर) के रूप में परिचालनगत जोखिम के लिए भार निर्धारित करता है। यह संकेतक बैंक के जोखिम एक्सपोज़र के लिए परोक्षी (प्रोक्सि) का कार्य करता है।
	आधार जोखिम	विभिन्न आस्तियों, देयताओं तथा तुलन पत्र से इतर मदों की ब्याज दर अलग-अलग परिमाण में परिवर्तित हो सकने के जोखिम को आधार जोखिम कहते हैं।
	पूंजी	कारोबार चलाने, निवेश करने तथा भावी आय निर्माण करने के लिए उपलब्ध निधियों (उदा. मुद्रा, ऋण तथा ईक्विटी) को पूंजी कहते हैं। पूंजी उन भौतिक आस्तियों को भी कहते हैं जिनका उपयोग भावी आय निर्माण करने के लिए किया जाता है।
	पूंजी पर्याप्तता	किसी संस्था की वर्तमान देयताओं की तुलना में तथा उसकी आस्तियें से संबद्ध जोखिमों की तुलना में उसके पूंजीगत संसाधनों की पर्याप्तता की माप । पूंजी पर्याप्तता का उचित स्तर यह सुनिश्चित करता है कि किसी संस्था के पास उसकी गतिविधियों के समर्थन के लिए पर्याप्त पूंजी है तथा उसकी निवल मालियत उसकी आस्तियों के मूल्य में होनेवाले प्रतिकूल परिवर्तनों को दिवालिया न होते हुए आत्मसात करने के लिए पर्याप्त है। उदाहरण के लिए, बीआइएस (बैंक फॉर इंटरनैशनल सेटलमेंट्स) के नियमों के अंतर्गत बैंकों को अपने जोखिम समायोजित आस्तियों के लिए पूंजी का एक निर्धारित स्तर बनाए रखना अपेक्षित है।
	पूंजी आरक्षित निधियां	कंपनी के लाभों का वह हिस्सा जिसका शेयरधारकों को लाभांश के रूप में भुगतान नहीं किया गया है। उन्हें अवितरणीय आरक्षित निधि भी कहा जाता है।
	परिवर्तनीय बॉण्ड	ऐसा बॉण्ड जो निवेशक को निश्चित परिवर्तन कीमत पर अथवा पूर्व-निर्धारित कीमत निर्धारण फॉर्म्यूला के अनुसार बॉण्ड को ईक्विटी में परिवर्तित करने का विकल्प देता है।
	स्थायी पूंजी	टीयर 1 पूंजी को सामान्यतः स्थायी पूंजी कहा जाता है।
	ऋण जोखिम	यह जोखिम कि संविदात्मक करार अथवा लेनदेन करनेवाली कोई पार्टी, अपनी बाध्यताएं पूर्ण नहीं कर सकेगी अथवा बाध्यताएं पूर्ण करने में चूक करेगी। ऋण जोखिम लगभग किसी भी लेनदेन अथवा लिखत, यथा स्वैप्स, रिपो, सीडी, विदेशी मुद्रा लेनदेन आदि से संबद्ध हो सकता है। विशिष्ट प्रकार के ऋण जोखिमों में सम्प्रभु (सोवरिन) जोखिम, देश जोखिम, विधिक अथवा नियंत्रण से बाहर वाला जोखिम, सीमांत (मार्जिनल) जोखिम तथा निपटान जोखिम शामिल हैं।
	डिबेंचर	कंपनी द्वारा जारी किए गए ऐसे बांड जिनपर समान्यतः विनिर्दिष्ट

		तारीखों को छमाही आधार पर नियत ब्याज दर देय होता है तथा जिनकी मूल राशि की डिबेंचर के मोचन पर किसी विनिर्दिष्ट तारीख को चुकौती की जाती है ।
	आस्थगित कर आस्तियां	अनवशोषित मूल्यह्रास तथा अगले लाभ से घाटे की पूर्ति, जिसे भावी कर योग्य आय के प्रति प्रतिसंतुलित किया जा सकता है और जिसे समय निर्धारण में अंतर माना जाता है, आस्थगित कर आस्तियां माना जाता है । आस्थगित कर आस्तियों का लेखांकन मानक 22 के अनुसार लेखांकन किया जाता है। आस्थगित कर आस्तियों से भावी आय कर भुगतान कम हो जाते हैं, जिसका अर्थ यह है कि वे पूर्वदत्त आय कर हैं और आस्तियों की परिभाषा पूर्ण करते हैं। इसके विपरीत आस्थगित कर देयताओं से भावी वर्ष के आय कर भुगतान में वृद्धि होती है, जिसका अर्थ है कि वे उपचित आय कर हैं और देयताओं की परिभाषा पूर्ण करते हैं।
	डेल्टा (Δ)	किसी ऑप्शन या ऑप्शनों के पोर्टफोलियो का डेल्टा ऑप्शन (ऑप्शनों) की अंतनिर्हित आस्ति (आस्तियों) के मूल्य में परिवर्तन की तुलना में ऑप्शन/पोर्टफोलियो के मूल्य में परिवर्तन की दर है ।
	डेरिवेटिव	कोई भी डेरिवेटिव लिखत अपना ज्यादातर मूल्य किसी आधारभूत उत्पाद से प्राप्त करता है। डेरिवेटिव के उदाहरणों में फ्यूचर्स, ऑप्शन्स, फॉर्वर्डस् तथा स्वैप्स शामिल होते है। उदाहरण के लिए एक वायदा संविदा हाजिर मुद्रा बाज़ार तथा उधार लेने तथा देने के लिए हाजिर बाज़ारों से व्युत्पन्न की जा सकती है। पूर्व में डेरिवेटिव लिखत ज्यादातर केवल उन उत्पादों तक सीमित थे, जिन्हें हाज़िर बाज़ारों से व्युत्पन्न किया जा सकता था। तथापि, आज यह शब्द किसी भी ऐसे उत्पाद के लिए प्रयोग में लाया जाता है जिसे किसी अन्य उत्पाद से व्युत्पन्न किया जा सकता है।
	अवधि (ड्यूरेशन)	अवधि (मैकॅले अवधि) नियत आय प्रतिभूतियों की मूल्य अस्थिरता की माप करती है। यह अक्सर विभिन्न कूपनों तथा विभिन्न परिपक्वताओं वाली प्रतिभूतियों के बीच ब्याज दर जोखिम की तुलना में प्रयोग में लाया जता है। यह किसी नियत आय प्रतिभूति से संबद्ध सभी नकदी प्रवाहों के वर्तमान मूल्य का भारित औसत है। इसे वर्षों में अभिव्यक्त किया जाता है। नियत आय प्रतिभूति की अवधि हमेशा उसकी परिपक्वता की अवधि से कम होती है ।केवल शून्य प्रतिभूतियों के मामले में अवधि और परिपक्वता अवधि समान होती है।
	विदेशी संस्थागत निवेशक	भारत के बाहर स्थापित अथवा निगमित कोई संस्था जिसका भारत में प्रतिभूतियों में निवेश करने का प्रस्ताव हैं, बशर्ते कोई देशी आस्ति प्रबंधन कंपनी अथवा देशी संविभाग प्रबंधक जो किसी उप-खाते की

		ओर से, भारत में निवेश के लिए भारत के बाहर से जुटाई अथवा एकत्रित अथवा लाई गयी निधियों का प्रबंधन करता है, को विदेशी संस्थागत निवेशक समझा जाएगा।
	वायदा संविदा	एक वायदा संविदा दो पार्टियों के बीच सहमत भावी तारीख को सुपुर्दगी के लिए किसी सहमत मूल्य पर किसी वस्तु अथवा वित्तीय लिखत की सहमत मात्रा को खरीदने अथवा बेचने का करार है। फ्युचर्स संविदा के विपरीत, एक वायदा संविदा हस्तांतरणीय नहीं है अथवा उसकी स्टॉक एक्सचेंज पर खरीद-बिक्री नहीं हो सकती, उसकी शर्तें मानक नहीं हैं और किसी भी मार्जिन का लेनदेन नहीं होता है। वायदा संविदा के खरीदार को लॉंग द कॉन्ट्रॅक्ट कहते हैं और बेचने वाले को शॉर्ट द कॉन्ट्रॅक्ट कहते हैं।
	गामा (Γ)	किसी ऑप्शन/ऑप्शनों के पोर्टफोलियो का गामा ऑप्शन (ऑप्शनों) की अंतर्निहित आस्ति (आस्तियों) के मूल्य में परिवर्तन की तुलना में ऑप्शन/पोर्टफोलियो के डेल्टा में परिवर्तन की दर है ।
	सामान्य प्रावधान तथा हानि आरक्षित निधि	ऐसी निधियां जो किसी विशिष्ट आस्ति के मूल्य में वास्तविक गिरावट अथवा इंगित करने योग्य संभाव्य हानि के लिए न हो और अप्रत्याशित हानि को पूरा करने के लिए उपलब्ध हो तो उन्हें टीयर II पूंजी में शामिल किया जा सकता है।
	सामान्य बाज़ार जोखिम	वह जोखिम जो समग्र बाज़ार परिस्थितियों से संबंधित है, जबकि विशिष्ट जोखिम वह जोखिम है जो किसी विशिष्ट प्रतिभूति के जारीकर्ता से संबंधित है।
	प्रतिरक्षा या बचाव (हेजिंग)	जोखिम के प्रति एक्सपोज़र को हटाने अथवा कम करने के लिए कोई कदम उठाना।
	खरीद-बिक्री के लिए धारित	ऐसी प्रतिभूतियां जहाँ मूल्य/ब्याज दर में अल्पावधि उतार-चढ़ावों का लाभ उठाते हुए खरीद-बिक्री करने का उद्देश्य है।
	क्षैतिज अस्वीकृति (हॉरिज़ॉटल डिजएलाउंस)	अपेक्षित पूंजी में प्रतिसंतुलन करने की अस्वीकृति जिसका उपयोग विनियामक पूंजी के लिए बाज़ार जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए बीआइएस पद्धति में किया जाता है । ट्रेडिंग संविभाग पर ब्याज दर जोखिम के लिए अपेक्षित पूंजी के अभिकलन के लिए बीआइएस पद्धति में लॉंग तथा शॉर्ट पोज़िशन्स का प्रतिसंतुलन अनुमत है। फिर भी प्रतिफल वक्र के विभिन्न क्षैतिज बिंदुओं पर लिखतों के ब्याज दरों का जोखिम पूर्णतः सहसंबंधित नहीं है। इसलिए, बीआइएस पद्धति में इन प्रतिसंतुलनों के कुछ हिस्से को अस्वीकृत किया जाता है ।
	सम्मिश्र ऋण पूंजी लिखत	इस संवर्ग में ऐसे कई पूंजी लिखत है जिनमें ईक्विटी तथा ऋण के कुछ वैशिष्ट्यों का संयोग होता है। प्रत्येक की एक खास विशेषता होती है जिसका पूंजी के रूप में उसकी गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है।

		जहां इन लिखतों में ईक्विटी के जैसी समानताएं है, विशेषतः जब वे परिसमापन को रोककर निरंतर आधार पर हानियों का समर्थन कर सकते हों तो उन्हें टीयर II पूंजी में शामिल किया जा सकता है।
	ब्याज दर जोखिम	यह जोखिम कि ब्याज दरों में उतार-चढ़ावों के कारण आस्तियों अथवा देयताओं (अथवा आगमनों /बहिर्गमनों) के वित्तीय मूल्य में परिवर्तन होगा। उदाहरण के लिए यह जोखिम कि भावी निवेश निम्नतर दरों पर करने होंगे अथवा भावी उधार उच्चतर दरों पर लेने होंगे।
	लाँग पोज़िशन	लाँग पोज़िशन उस स्थिति (पोज़िशन) को कहते हैं जहां आधारभूत प्रतिभूति के मूल्य में हुई वृद्धि के कारण लाभों में वृद्धि होती है।
	बाज़ार जोखिम	किसी लेनदेन अथवा समझौते में निर्धारित दरों अथवा कीमतों की अपेक्षा बाज़ार कीमतों अथवा दरों में उतार-चढाव के कारण होने वाली हानि का जोखिम।
	आशोधित अवधि	आशोधित अवधि अथवा किसी ब्याज वाहक प्रतिभूति की अस्थिरता उसकी मैकॉल अवधि को प्रतिभूति की कूपन दर जोड़ एक से भाग देकर प्राप्त की जाती है। यह प्रतिफल में हुए 100 आधार अंकों के परिवर्तन के लिए प्रतिभूति की कीमत में हुए प्रतिशत परिवर्तन को दर्शाती है। यह सामान्यतः केबल प्रतिफल में अल्प परिवर्तनों के मामले में सही होती है। dp 1 ‡Ÿ¸"ú = ---- - जहां एमडी = आशोधित अवधि पी = सकल कीमत (अर्थात् स्पष्ट कीमत जोड़ उपचित ब्याज) डीपी = कीमत में तदनुरूप अल्प परिवर्तन डीवाई = प्रतिफल में अल्प परिवर्तन के साथ कूपन भुगतान की बारंबारता।
	बंधक-समर्थित प्रतिभूति	एक बॉण्ड जैसी प्रतिभूति जिसमें बंधकों के समूह द्वारा संपार्श्विक प्रदान किया जाता है। आधारभूत बंधकों से प्राप्त आय का ब्याज तथा मूलधन की चुकौतियों के लिए उपयोग किया जाता है।
	म्युच्युअल फंड	म्युच्युअल फंड, निवेशकों को यूनिट जारी करके संसाधनों को एकत्रित करने तथा प्रस्ताव दस्तावेज में प्रकट किए गए उद्देश्यों के अनुसार प्रतिभूतियों में निधियों का निवेश करने का एक तंत्र है। यह मुद्रा बाज़ार लिखतों सहित प्रतिभूतियों में निवेश करने के लिए एक अथवा उससे अधिक योजनाओं के अंतर्गत आम लोगों अथवा उनके

		एक वर्ग को यूनिटों की बिक्री के माध्यम से धन राशि जुटाने के लिए न्यास के रूप में स्थापित निधि है ।
	निवल ब्याज मार्जिन	निवल ब्याज मार्जिन है औसत ब्याज अर्जक आस्तियों द्वारा विभाजित निवल ब्याज आय।
	निवल अनर्जक आस्तियां (एनपीए)	निवल एनपीए = सकल एनपीए - (ब्याज उचंत खाते में शेष + समायोजन होने तक प्राप्त तथा धारित डीआइसीजीसी/ ईसीजीसी दावे + उचंत खाते में रखा गया प्राप्त आंशिक भुगतान + धारित कुल प्रावधान)
	नॉस्ट्रो खाते	विदेशी मुद्रा निपटान खाते जो एक बैंक अपने विदेशी प्रतिनिधि बैंकों के पास रखते हैं। ये खाते देशी बैंक की आस्तियां हैं।
	तुलन-पत्रेतर एक्सपोज़र	तुलन-पत्रेतर एक्सपोज़र बैंक की उन व्यवसायिक गतिविधियों को कहा जाता है जिनमें सामान्यतः आस्तियों (ऋण) को दर्ज करना तथा जमाराशियां स्वीकार करना शामिल नहीं होता। तुलन-पत्रेतर गतिविधियों से सामान्यतः शुल्क मिलता है लेकिन उनसे आस्थगित अथवा आकस्मिक देयताएं अथवा आस्तियां निर्माण होती है और इसलिए वे वास्तविक आस्तियां अथवा देयताएं बनने तक संस्था के तुलन पत्र में प्रकट नहीं होती हैं।
	ओपन पोज़िशन	किसी लिखत अथवा पण्य में देय तथा प्राप्य राशियों के बीच का निवल अंतर ओपन पोजिशन है । यह अंतर किसी लिखत अथवा पण्य में निवल लाँग अथवा निवल शॉर्ट पोज़िशन के आस्तित्व के कारण निर्माण होता है।
	ऑप्शन	ऑप्शन एक ऐसी संविदा है जो खरीदार को सहमत तारीख (समाप्ति अथवा निपटान की तारीख) को अथवा उससे पूर्व सहमत दर (निष्पादन दर) पर किसी आस्ति, पण्य, मुद्रा अथवा वित्तीय लिखत को खरीदने (कॉल ऑप्शन) अथवा बेचने (पुट ऑप्शन) का अधिकार प्रदान करता है लेकिन उसे ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं करता है। खरीदार बिक्रीकर्ता को इस अधिकार के बदले में एक रकम जिसे प्रीमियम कहा जाता है, अदा करता है। यह प्रीमियम ऑप्शन का मूल्य है।
	आरएचओ (p)	किसी ऑप्शन/ऑप्शनों के पोर्टफोलियो का आरएचओ ब्याज दरों के स्तर में परिवर्तन की तुलना में ऑप्शन/पोर्टफोलियो के मूल्य में परिवर्तन की दर है ।
	जोखिम	अपेक्षित परिणाम घटित न होने की संभावना । जोखिम की माप की जा सकती और वह अनिश्चितता के समान नहीं है जिसकी माप नहीं की जा सकती है। वित्तीय संदर्भ में जोखिम का अर्थ होता है वित्तीय हानि की संभावना। इसे ऋण जोखिम, बाज़ार जोखिम तथा

		परिचालनगत जोखिम के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
	जोखिम आस्ति/ परिसंपत्ति अनुपात	बैंक का जोखिम आस्ति अनुपात बैंक की जोखिम आस्तियों का उसकी पूंजीगत निधियों के प्रति अनुपात होता है । जोखिम आस्तियों में उच्च श्रेणी निर्धारित सरकारी आस्तियों तथा सरकारी एजेंसियों की बाध्यताओं तथा नकद राशि से इतर आस्तियां शामिल की जाती हैं - उदाहरण के लिए कंपनी बांड तथा ऋण। पूंजीगत निधियों में पूंजी तथा अवितरित आरक्षित निधियां शामिल होती हैं । जोखिम आस्ति अनुपात जितना कम होता है उतना ही बैंक का 'पूंजी समर्थन' बेहतर होता है ।
	जोखिम भार	बासल II में बाध्यताधारियों के ऋण जोखिम की माप के लिए जोखिम भारांकन अनुसूची निर्धारित की गयी है । सम्प्रभुओं, वित्तीय संस्थाओं तथा निगमों को बाहरी श्रेणी निर्धारक एजेंसियों द्वारा दिए गए रेटिंग से यह जोखिम भार जुड़ा होता है।
	प्रतिभूतीकरण	प्रतिभूतीकरण ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत समान ऋण लिखत/ आस्तियों को एकत्रित किया जाता है और उन्हें बाजार में बिक्री योग्य प्रतिभूतियों में परिवर्तित किया जाता है ताकि बेचा जा सके । ऋण प्रतिभूतीकरण की प्रक्रिया बैंकों द्वारा अपने पूंजी आस्ति अनुपातों को सुधारने के लिए अपनी आस्तियों को तुलन पत्र से हटाने के लिए प्रयोग में लायी जाती है ।
	शॉर्ट पोज़िशन	शॉर्ट पोजिशन उस स्थिति (पोजिशन) को कहा जाता है जहां आधारभूत प्रतिभूति अथवा उत्पाद के मूल्य में हुई गिरावट से लाभ होता है । बिक्रीकर्ता के पास लॉंग पोजिशन न होते हुए भी प्रतिभूति की बिक्री करने को भी शॉर्ट पोजिशन कहते हैं ।
	विशिष्ट जोखिम	बाज़ार जोखिमों पर बीआइएस के प्रस्तावों के ढांचे के भीतर, किसी बाज़ार अथवा बाज़ार क्षेत्र (सामान्य जोखिम) से संबद्ध जोखिम के विपरीत किसी खास प्रतिभूति, जारीकर्ता अथवा कंपनी से संबद्ध जोखिम को विशिष्ट जोखिम कहा जाता है ।
	गौण ऋण	गौण ऋण, ऋण की स्थिति दर्शाता है । ऋणकर्ता के दिवालिया होने अथवा परिसमापन की स्थिति में गौण ऋण की चुकौती अन्य ऋणों की चुकौती के बाद ही की जा सकती है । चुकौती के लिए उसका दावा गौण होता है ।
	थीटा (θ)	किसी ऑप्शन/ऑप्शनों के पोर्टफोलियो का थीटा सभी अन्य घटकों के पूर्ववत बने रहने पर समय बीतने के साथ ऑप्शन/ऑप्शनों के मूल्य में परिवर्तन की दर है । इसे ऑप्शन का "काल क्षरण" भी कहा जाता है ।
	टीयर वन (अथवा टीयर I) पूंजी	विनियामक पूंजी के एक घटक को टीयर I पूंजी कहते है। उसमें मुख्यतः शेयर पूंजी तथा प्रकट आरक्षित निधि (साख (गुडविल)

		यदि हो को घटाकर) शामिल होती है। टीयर I की मदें उच्चतम गुणवत्ता की समझी जाती हैं क्योंकि वे हानियों के समर्थन के लिए पूर्णतः उपलब्ध होती हैं। बासल II में परिभाषित पूंजी की अन्य श्रेणियां हैं टीयर II (अथवा अनुपूरक) पूंजी तथा टीयर II (अथवा अतिरिक्त अनुपूरक) पूंजी ।
	टीयर टू (अथवा टीयर II) पूंजी	यह विनियामक पूंजी का एक घटक है। इसे अनुपूरक पूंजी भी कहा जाता है और इसमें कुछ आरक्षित निधियां तथा गौण ऋण के कुछ प्रकार शामिल होते हैं। बैंक की गतिविधियों से होने वाली हानियों को आत्मसात करने में जहां तक टीयर II मदों का प्रयोग किया जा सकता है उस हद तक वे विनियामक पूंजी होती हैं। टीयर II पूंजी की हानि आत्मसात करने की क्षमता टीयर I पूंजी से कम होती है।
	खरीद-बिक्री (ट्रेडिंग) बही	दीर्घावधि निवेश के लिए रखी जाने वाली प्रतिभूतियों के विपरीत अल्पावधि खरीद-बिक्री के प्रयोजन के लिए धारित वित्तीय लिख्तों की बही को खरीद-बिक्री बही अथवा संविभाग कहा जाता है। खरीद-बिक्री बही का संबंध उन आस्तियों से है, जिन्हें मुख्यतः कीमतों /प्रतिफलों में अल्पावधि अंतरों पर लाभ कमाने के लिए धारित किया जाता है। खरीद-बिक्री बही में बैंकों के लिए कीमत जोखिम मुख्य चिन्ता है।
	हामीदारी	सामान्यतः, हामीदारी देने का अर्थ है कुछ शुल्क के बदले में जोखिम का दायित्व लेना। उसके दो सबसे समान्य संदर्भ हैं : क) प्रतिभूतियां : कोई व्यापारी अथवा निवेश बैंक, जारीकर्ता से प्रतिभूतियों का नया निर्गम खरीदने और निवेशकों को इन प्रतिभूतियों को वितरित करने के लिए तैयार होता है । हामीदार एक व्यक्ति अथवा किसी हामीदारी समूह का एक भाग हो सकता है। अतः जारीकर्ता के पास अनबिकी प्रतिभूतियां रहने का कोई जोखिम नहीं रहता है। ख) बीमा : कोई व्यक्ति अथवा कंपनी प्रीमियम कहे जानेवाले शुल्क के लिए आग, चोरी, मृत्यु, असमर्थता आदि के जोखिम के समक्ष वित्तीय मुआवजा देने के लिए सहमत हो जाती है।
	जोखिम मूल्य (वीएआर)	यह बाजार जोखिम के प्रति एक्सपोज़र के अभिकलन तथा नियंत्रण की पद्धति है। वीएआर एकल अंक (मुद्रा की राशि) है जो निर्धारित समयावधि (धारण अवधि) के दौरान तथा निर्धारित आत्म विश्वास के स्तर पर किसी संविभाग की अधिकतम अपेक्षित हानि का अनुमान लगाता है।
	वेगा (v)	किसी ऑप्शन/ऑप्शनों के पोर्टफोलियो का वेगा ऑप्शन (ऑप्शनों) की अंतर्निहित आस्ति (आस्तियों) की अस्थिरता की तुलना में ऑप्शन/पोर्टफोलियो के मूल्य में परिवर्तन की दर है ।

	जोखिम पूंजी निधि	ऐसे नये कारोबारों में निवेश करने के प्रयोजन वाली निधि, जिनकी संवृद्धि की उत्तम संभावनाएं है लेकिन जिनकी पूंजी बाज़ारों में पहुंच नहीं है।
	वर्टिकल डिसॅलाउअॅन्स	बाज़ार जोखिम के लिए आवश्यक विनियामक पूंजी निर्धारित करने के लिए बीआइएस पद्धति में अलग-अलग ऋण जोखिम वाली प्रतिभूतियों के संबंध में प्रतिफल वक्र में एक ही टाइम बैंड में दो या अधिक प्रतिभूतियों में शॉर्ट पोजिशन द्वारा किसी लांग पोजिशन के सामान्य जोखिम प्रभार को प्रति-संतुलित किये जाने की अस्वीकृति को वर्टिकल डिसॅलाउअॅन्स कहा जाता है ।

अनुबंध - 17

(देखें आवरक परिपत्र का पैरा 3)

इस मास्टर परिपत्र में समेकित परिपत्रों की सूची

(मूल परिपत्र 27 अप्रैल 2007 का बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 90/20.06.001/2006-07)

क्रम सं.	परिपत्र सं.	समेकित परिपत्र का पैरा/ प्रावधान	विषय	मास्टर परिपत्र का पैरा सं.
1	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 42/ 21.01.002/2007-08 दिनांक 29 अक्तूबर 2007	अनुबंध पैरा 1.1	विनियामक पूंजी के भाग के रूप में अधिमान शेयर जारी करने से संबंधित दिशानिर्देश	4.2.5 (ii) और (iii)
2	-वही-	पैरा 1	- वही-	4.3.3
3	बैंपविवि.सं. 67/20.06.001/ 2007-08 दिनांक 31 मार्च 2008	क्रमांक सं 1 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन - संशोधन	4.3.5
4	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 88/ 21.06.001/2007-08 दिनांक	2.2	पूंजी पर्याप्तता मानदंड - बैंकों का सहायक/सहयोगी कंपनियों में	4.4.10

	30 मई 2008		निवेश तथा मूल बैंक में सहायक/सहयोगी कंपनियों के निवेश पर कार्रवाई	
5	बैंपविवि.सं. 67/20.06.001/ 2007-08 दिनांक 31 मार्च 2008	क्रमांक सं 3 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन - संशोधन	5.2.2
6	- वही-	क्रमांक सं 4 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन - संशोधन	5.4.2, 5.8.1 सारणियां
7	- वही-	क्रमांक सं 5 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन - संशोधन	5.6.1
8	दिनांक 21 मई 2008 का मेल बॉक्स स्पष्टीकरण		बैंकों पर दावे - प्रधान कार्यालयों/विदेशी शाखाओं द्वारा गारंटी/काउंटर गारंटी प्राप्त विदेशी बैंकों की भारतीय शंखाओं के एक्सपोज़र	5.6.2
9	दिनांक 21 मई 2008 का मेल बॉक्स स्पष्टीकरण		जोखिम भार और प्रावधानन मानदंड - आस्ति वित्त कंपनियां	5.8.1
10	बैंपविवि.सं. 67/20.06.001/ 2007-08 दिनांक 31 मार्च 2008	क्रमांक सं 6 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन - संशोधन	5.8.1 सारणी 6ः भाग-ख
11	दिनांक 21 मई 2008 का मेल बॉक्स स्पष्टीकरण		पूंजी पर्याप्तता और बाज़ार अनुशासन पर विवेकपूर्ण मानदंड - कार्यान्वयन	7.3.7 (ii) सारणी 14 (डी)
12	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 83/ 21.06.001/2007-08 दिनांक 14 मई 2008	पैरा 2	आवासीय संपत्ति द्वारा सुरक्षित दावे - जोखिम भार के लिए सीमा में परिवर्तन	5.10
13	बैंपविवि.सं. 67/20.06.001/2007 -08 दिनांक 31 मार्च 2008	क्रमांक सं 7 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाज़ार अनुशासन पर विवेकपूर्ण मानदंड - कार्यान्वयन	5.13.3
14	दिनांक 21 मई 2008 का मेल बॉक्स स्पष्टीकरण		पूंजी पर्याप्तता और बाज़ार अनुशासन पर विवेकपूर्ण मानदंड - कार्यान्वयन	5.13.5
15	बैंपविवि.सं. 67/20.06.001/ 2007-08 दिनांक 31 मार्च 2008	क्रमांक सं 8 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाज़ार अनुशासन पर विवेकपूर्ण मानदंड - कार्यान्वयन	5.15.2 (v)
16	- वही-	क्रमांक सं 9 अनुबंध	- वही -	7.3.4 (i)
17	- वही-	क्रमांक सं 11 अनुबंध	- वही -	'ईक्विटी' इंडेक्स से संबंधित

				मौजूदा पैरा 7.3.5(viii) हटाया गया
18	- वही-	क्रमांक सं 12 अनुबंध	- वही -	7.3.7
19	- वही-	क्रमांक सं 13 अनुबंध	- वही -	7.3.8
20	- वही-	क्रमांक सं 14 अनुबंध	- वही -	7.6.1
21	- वही-	क्रमांक सं 15 अनुबंध	- वही -	विद्यमान पैरा 8.2.2 हटाया गया
22	- वही-	क्रमांक सं 16 अनुबंध	- वही -	8.3
23	- वही-	क्रमांक सं 17 अनुबंध	- वही -	8.4.1
24	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 66/ 21.06.001/2007-08 दिनांक 31 मार्च 2008	संपूर्ण परिपत्र	नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे के अंतर्गत पर्यवेक्षीय समीक्षा प्रक्रिया - स्तंभ 2 के लिए दिशानिर्देश	10.0, 11 और अनुबंध 9 से 14
25	बैंपविवि.सं. 67/20.06.001/ 2007-08 दिनांक 31 मार्च 2008	क्रमांक सं 18 अनुबंध	पूंजी पर्याप्तता और बाज़ार अनुशासन पर विवेकपूर्ण मानदंड - कार्यान्वयन	अनुबंध - 7
26	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 31/ 21.04.157/2008-09 दिनांक 8 अगस्त 2008	अनुबंध II	बैंकों के तुलनपत्रेतर एक्सपोज़र से संबंधित मानदंड	विद्यमान पैरा 5.15.4 बदला गया
27	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 76/ 21.04.132/2008-09 दिनांक 3 नवंबर 2008	पैरा 4	बैंकों द्वारा अग्रिमों की पुनर्रचना से संबंधित विवेकपूर्ण दिशानिर्देश	5.10.4
28	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 83/ 21.01.002/2008-09 दिनांक 15 नवंबर 2008	पैरा 2(क) (ख) और (ग)	विवेकपूर्ण मानदंडों की समीक्षा - मानक आस्तियों के लिए प्रावधानीकरण तथा कंपनियों, वाणिज्यिक स्थावर संपदा और एनबीएफसी एनडी-एसआइ के प्रति एक्सपोज़र के लिए जोखिम भार	5.8.1, 5.11.2 और 5.13.5
29	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 92/ 21.06.001/2008-09 दिनांक 4 दिसंबर 2008	3	नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन - समांतर प्रयोग का रिपोर्टिंग फार्मेट	2.4
30	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 118/ 21.01.002/2008-09 दिनांक 25 मार्च 2009	पैरा (ii) और (iii)	ऋण संविभाग के संबंध में विभिन्न प्रकार के प्रावधानों पर विवेकपूर्ण कार्रवाई	4.3.2
31	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 120/ 21.01.002/2008-09 दिनांक 2 अप्रैल 2009	अनुबंध 1 और अनुबंध 2	विनियामक पूंजी के अंग के रूप में अधिमान शेयर जारी करने के लिए दिशानिर्देश	अनुबंध 3 पैरा (vii) और अनुबंध

				5 पैरा (vii)
32	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 134/ 21.06.001/2008-09 दिनांक 26 मई 2009	पैरा 3	केंद्रीय काउंटर पार्टियों के प्रति बैंकों के एक्सपोज़र के लिए पूंजी पर्याप्तता मानदंड	पैरा 5.14.3 और 5.15.3(vi)
33	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 23/ 21.06.001/2009-10 दिनांक 7 जुलाई 2009	पैरा 2,3,4,5	भारत में बासल II की उन्नत विधियां आरंभ करना	पैरा 2.5 और 2.5.1 से 2.5.3
34	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 29/ 21.06.001/2009-10 दिनांक 12 अगस्त 2009	पैरा 3	पूंजी पर्यापतता और बाजार अनुशासन के सबंध में विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नया पूंजी पर्याप्तता ढांचा (एनसीएएफ)	पैरा 10.7 और पैरा 12.3.3.7
35	मेल बॉक्स स्पष्टीकरण दिनांक 24 अगस्त 2009	समस्त मेल बॉक्स स्पष्टीकरण	प्रतिभूतिकरण एक्सपोज़र (ऋण संवर्धन) के लिए पूंजी पर्याप्तता मानदंड	अनुबंध 7 का पैरा 12 और 13
36	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 33/ 21.04.048/2009-10 दिनांक 27 अगस्त 2009	पैरा 3	अस्थायी प्रावधानों के संबंध में विवेकपूर्ण कार्रवाई	पैरा 4.3.4 का फुट नोट 7
37	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 38/ 21.01.002/2009-10 दिनांक 7 सितंबर 2009	परिपत्र के अनुबंध के भाग I में क्रम. सं. 1 से 6	टीयर II पूंजी जुटाने के लिए गौण ऋण जारी करना	अनुबंध 6
38	बैंपविवि. सं. बीपी. बीसी. 69/ 21.01.002/2009-10 दिनांक 13 जनवरी 2010	परिपत्र के क्रम सं. 2	टीयर II पूंजी जुटाने के लिए गौण ऋण का खुदरा निर्गम	अनुबंध 6
39	मेल बॉक्स स्पष्टीकरण दिनांक 18 जनवरी 2010		सुरक्षा रसीदों पर विशेष जोखिम पूंजी भार	पैरा 8.4.3
40	मेल बॉक्स स्पष्टीकरण दिनांक 25 जनवरी 2010		बैंकों के पूंजी लिखतों पर प्रतिफल की गारंटी देना	पैरा 4.2.4 (v)
41	मेल बॉक्स स्पष्टीकरण दिनांक 28 जनवरी 2010		पूंजी पर्याप्तता की गणना के लिए तिमाही अ-लेखापरीक्षित लाभ का समावेश	पैरा 4.4.11
42	बैंपविवि.सं.बीपी.बीसी.74 / 21.06.001 / 2009-10 दिनांक 12 फरवरी 2010 पैरा.2		इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त कंपनियों के रूप में वर्गीकृत गैर बैंकिंग कंपनियों को बैंक एक्सपोज़र के संबंध में जोखिम भार और एक्सपोज़र मानदंड	पैरा 5.8.1
43	बैंपविवि.सं.बीपी.बीसी.87 / 21.06.001 / 2009-10 दिनांक 7अप्रैल 2010 Para 2		पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नये पूंजी पर्याप्तता ढांचे का कार्यान्वयन -समांतर प्रयोग और न्यूनतम विवेकपूर्ण सीमा	पैरा 4.1.2
44	बैंपविवि.सं.बीपी.बीसी.81/21.01.002/		तुलन पत्र में पूंजी लिखतों का	अनुबंध सं

	2009-10 दिनांक 30 मार्च 2010	वर्गीकरण	4,6 और 8